Carboxylic Acid

- Ester formation is catalysed by acid

प्रकाशक:—

नाहटा ब्रदर्स
४ जगमोहन मल्लिक लेन
कलकत्ता ७

चैत्र शुक्ला १३ वि० सं० २०१३ वीर सं० २४८२	प्रथमावृत्ति २०००	मूल्य ५)

मुद्रक:—

जैन प्रिन्टिंग प्रेस, कोटा.

१. जैन साहित्य महारथी स्व० श्री मोहनलाल द० देशाई



समर्पण

जिनके "कविवर समयसुन्दर" निबन्ध ने हमें साहित्यचेत्र में आगे बढ़ने का अवसर दिया, जिनके "जैन गूर्जर कवियो" भाग १-२-३ व "जैन साहित्य नो संक्षिप्त इतिहास" ग्रन्थ जैन साहित्य और इतिहास के लिए परम प्रकाश पुञ्ज हैं, उन्हीं सहृदय, परम अध्यवसायी, शोध निरत, महान् परिश्रमी और निष्णात साहित्य-महारथी स्वर्गीय श्री मोहनलाल दलीचन्द देसाई (एडवोकेट, बम्बई हाईकोर्ट) महोदय की मधुर स्मृति में यह समयसुन्दर कृति कुसुमाञ्जलि सादर समर्पित है।



अगरचन्द नाहटा,

भँवरलाल नाहटा.

भूमिका



मेरे मित्र श्री अगरचन्दजी नाहटा प्राचीन ग्रन्थों के अन्वेषक की अपेक्षा उद्धारक अधिक हैं, क्योंकि वे केवल पुस्तकों के भाण्डारों में गोते लगाकर सिर्फ पुरानी अज्ञात अपरिचित पुस्तकों और ग्रन्थकारों का पता ही नहीं लगाते हैं बल्कि पता लगाई हुई पुस्तक और लेखकों के अतिरिक्त वक्तव्य विषय का ऐतिहासिक वृत्त एवं सांस्कृतिक महत्त्व बताकर साहित्य प्रेमी जनता को उनके प्रति उत्सुक बनाते हैं और समय समय पर महत्व-पूर्ण ग्रन्थों का संपादन करके उन्हें सर्व-जन-सुलभ भी बनाते हैं। नाहटाजी ने अब तक सैंकड़ों अत्यन्त महत्वपूर्ण पुस्तकों का संधान बताया है और विभिन्न पत्र—पत्रिकाओं में सैंकड़ों लेख लिखकर विस्मृत ग्रन्थों तथा ग्रन्थकारों की ओर सहृदयों का ध्यान आकृष्ट किया है। नाहटाजी जैसे परिश्रमी और बहुश्रुत विद्वान हैं वैसे ही उदार और निस्पृह भी। उन्होंने अपने महत्व-पूर्ण लेखों को दोनों हाथ लुटाया है। छोटी-छोटी अपरिचित पत्रिकाएँ भी उनकी कृपा से कभी वञ्चित नहीं रहती हैं। इस अवढर दानी स्वाभाव का फल यह हुआ है कि उनके लेख इतने बिखर गए हैं कि साहित्य के विद्यार्थी के लिए एकत्र करके पढ़ना और लाभ उठाना लगभग असम्भव हो गया है। यदि ये सभी लेख पुस्तक रूप में एकत्र संगृहीत हो जाँय तो बहुत ही अच्छा हो। अस्तु।

उत्तर भारत में ईस्वी सन् की १० वीं शताब्दी के बाद विदेशी आक्रामकों के धक्के बार-बार लगते रहे हैं। इसका नतीजा यह हुआ है कि दसवीं से चौदहवीं शताब्दी तक देशी भाषाओं में जो साहित्य बना वह उचित संरक्षण नहीं पा सका। साधारणतः तीन प्रकार से प्राचीन काल में हस्तलिखित ग्रन्थों का रक्षण होता रहा है—(१) राजशक्ति के आश्रय में, (२) संघटित धर्म-संप्रदाय के संरक्षण में, और (३) लोक-मुख में। जिन प्रदेशों में परवर्तीकाल में अवधी और ब्रजभाषा का साहित्य लिखा गया, उनमें दुर्भाग्यवश चौदहवीं शताब्दी तक देशी भाषाओं में लिखे गए साहित्य के लिए प्रथम दो आश्रय बहुत कम उपलब्ध हुए। मुगल साम्राज्य की प्रतिष्ठा के बाद देश में शान्ति और सुव्यवस्था कायम हुई और हस्तलिखित ग्रन्थों के संरक्षण का सिलसिला भी जारी हुआ। परन्तु राजपूताने में दोनों प्रकार के आश्रय प्राप्त थे। इसीलिये राजस्थान में देशी भाषा के अनेक ग्रन्थ सुरक्षित रहे। यद्यपि विदेशी आक्रामकों ने राजपूताने पर भी आक्रमण किए परन्तु भौगोलिक कारणों से उस प्रदेश में बहुत-सी साहित्यिक संपत्ति सुरक्षित रह गई। अनेक राजवंशों के पुस्तकालयों में ऐसी पुस्तकें किसी न किसी रूप में सुरक्षित रह गईं। किन्तु पुस्तकों के संग्रह और सुरक्षण का सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य जैन-ग्रन्थ-भाण्डारों ने किया है। जैन मुनि लोग सदाचारी और विद्याप्रेमी होते थे। वे स्वयं शास्त्रों का पठन-पाठन करते थे, और लोक-भाषा में काव्य-रचना भी करते थे। इन ग्रन्थ भाण्डारों का इतिहास बड़ा ही मनोरंजक है। काल-क्रम से गृहस्थ भक्तों के चित्त में इन ग्रन्थ भाण्डारों के प्रति कभी कभी मोहान्ध भक्ति भी देखी गई है। कितने ही भाण्डारों के ताले वर्षों से खुले ही नहीं, कितने ही ग्रन्थ भाण्डारों में पुस्तकें रखी-रखी राख हो गईं, और जाने कितने बहुमूल्य

ग्रन्थ सदा के लिये लुप्त हो गए। फिर भी इस निष्ठा पूर्वक समाचरित अन्धभक्ति का ही सुफल है कि इन ग्रन्थ-भाण्डारों के ग्रन्थ बिना हेर—फेर के शताब्दियों से ज्यों के त्यों सुरक्षित रह गए हैं। इन ग्रन्थ-भाण्डारों की पूर्ण परीक्षा अभी नहीं हुई है। परन्तु जिन लोगों को भी इन महत्त्वपूर्ण भाण्डारों को देखने का सुअवसर मिला है; वे कुछ न कुछ महत्त्व-पूर्ण ग्रन्थ अवश्य (प्रकाश में) ला सके हैं। नाहटाजी को कई भाण्डारों के देखने का अवसर मिला है और उन्होंने अनेक ग्रन्थ-रत्नों का उद्धार भी किया है। समयसुन्दर कृति 'कुसुमाञ्जलि' भी ऐसी ही खोज का सुफल है। यह ग्रन्थ भाषा, छन्द, शैली और ऐतिहासिक सामग्री की दृष्टि से बहुत महत्व-पूर्ण है। इसमें सन् १६८७ ई० के अकाल का बड़ा ही जीवन्त वर्णन है। यह अकाल गोसाईं तुलसीदास के गोलोकवास के सिर्फ सात वर्ष बाद हुआ था। कवि ने इसका बड़ा ही हृदय-द्रावक और जीवन्त वर्णन किया है। इस ग्रन्थकार के बारे में नाहटाजी ने नागरी-प्रचारिणी पत्रिका के सं० २००६ के प्रथम अंक में जो लिखा था, उससे ज्ञान पड़ता है कि इस ग्रन्थकार की जन्म-भूमि मारवाड़ प्रांत का सांचौर स्थान है। ये पोरवाड़ वंश के रत्न थे और इनका जन्मकाल संभवतः सं० १६२० वि० है। अकबर के आमंत्रण पर ये लाहौर में सम्राट से मिलने गए थे। इनके लिखे संस्कृत ग्रन्थों की संख्या पच्चीस है और भाषा में लिखे ग्रन्थों की संख्या भी तेईस है। इन्होंने 'सात छत्तीसियों' की भी रचना की थी। कई अन्य रचनाएं भी इनके नाम पर चलती हैं पर नाहटाजी को उनकी प्रामाणिकता पर सन्देह है। सं० १७०२ में चैत्र शुक्ला त्रयोदशी (महावीर जन्म जयन्ती) के दिन अहमदाबाद में इन्होंने अनशन आराधना पूर्वक शरीर त्याग किया।

इनके द्वारा रचित साहित्य की नामावली देखने से यह स्पष्ट हो जाता है कि वह कितना महत्त्व पूर्ण है। उसमें रास, चौपाई आदि कई ऐसे काव्य रूप मिलते हैं, जो अपभ्रंश-काल से उस समय तक बनते चले आ रहे थे। इनके प्रकाशित होने पर उन छूटी हुई कड़ियों का पता लग सकता है, जो अब तक अज्ञात हैं। नाहटाजी ने जिस ग्रन्थ का संपादन किया है वह इनकी कवित्व-शक्ति की प्रौढ़ता का उदाहरण है। इसकी भाषा में भावों को अभिव्यक्त करने की अद्भुत क्षमता है। कवि का ज्ञान-परिसर बहुत ही विस्तृत है, इसलिये वह किसी भी वर्ण्य विषय को बिना आयास के सहज ही संभाल लेता है।

इस पुस्तक के छन्दों और रागों से तत्कालीन ब्रजभाषा में प्रचलित पद-शैली के अध्ययन में सहायता मिलेगी। नाथ-पंथी योगियों और निर्गुणियों सन्तों की भाषा और शैली की तुलना की जा सकती है। जान पड़ता है कि इस ग्रन्थ का लेखक निर्गुण भाव से भजन करने वाले सन्तों की साखी तथा सबदी शैली से पूर्णतः परिचित है और सूरदास, तुलसीदास जैसे सगुण भाव से भजन करने वाले भक्त कवियों की पदावली से भी प्रभावित है। कई पदों में सूरदास और तुलसीदास की शैलियों का रस मिलता है। यह ग्रन्थ सन् ई० की सोलहवीं और सत्रहवीं शताब्दी की भाषा और शैली के अध्ययन में बहुत सहायक सिद्ध होगा।

नाहटाजी ने इस ग्रन्थ का संपादन करके हिन्दी-साहित्य के अध्येताओं के सामने बहुत अच्छी सामग्री प्रस्तुत की है। मैं हृदय से उनके प्रयत्न का अभिनन्दन करता हूँ। भगवान से मेरी प्रार्थना है कि नाहटाजी को दीर्घायुष्य और पूर्ण स्वास्थ्य प्रदान करें; जिससे वे अनेक महत्त्व-पूर्ण ग्रन्थ-रत्नों का उद्धार करते रहें। तथास्तु।

काशी
११-३-५६

हजारीप्रसाद द्विवेदी

वक्तव्य

महोपाध्याय कविवर समयसुन्दर की लघु रचनाओं का यह संग्रह प्रकाशित करते हुए २८ वर्ष पूर्व की मधुर स्मृतियें उभर आती हैं। वैसे तो कविवर की रचनाओं का रसास्वाद हमें अपने बाल्यकाल में ही मिल गया था, क्योंकि राजस्थान में, विशेषतः बीकानेर में आपके रचित शत्रुञ्जय रास, ज्ञान पञ्चमी और एकादशी के स्तवन, वीर स्तवन (वीर सुणो मोरी वीनती), शत्रुञ्जय आलोयणा स्तवन (कृपानाथ मुझ वीनती अवधार) और कई अन्य स्तवन और सज्झायें जैन जनता के हृदयहार बन रही हैं। इनमें से कई रचनायें तो किसी गच्छ और सम्प्रदाय के भेदभाव बिना समस्त श्वेताम्बर जैन समाज में खूब प्रसिद्ध हैं। हमारे पिताजी प्रातःकाल की सामायिक में आपके रचित शत्रुञ्जय रास, गौतमगीत, नाकोड़ा स्तवन आदि नित्य पाठ किया करते थे और माताजी एवं अन्य परिवार वालों से भी आपकी रचनाओं का मधुर गुञ्जारव हमने बाल्यकाल में सुना है। पर सं० १६८४ को माघ शु० ५ को खरतरगच्छ के बड़े प्रभावशाली और गीतार्थ आचार्य श्रीजिनकृपाचंद्रसूरिजी हमारे पिताश्री और बाबाजी आदि के अनुरोध से बीकानेर पधारे। वह विशेष रूप से उल्लेखनीय है। हमारी कोटड़ी में ही उनके विराजने से हम भी व्याख्यान, प्रतिक्रमण आदि का लाभ उठाने लगे। इससे पूर्व भी कलकत्ता में सरवसुखजी नाहटा के साथ प्रतिदिन सामायिक में गाते हुए शत्रुञ्जय रास आदि तो हमने कण्ठस्थ कर लिये थे और ज्ञानपञ्चमी-एकादशी के स्तवन आदि भी समय समय पर बोलने और सुनाने के कारण अभ्यस्त हो गये थे। आचार्यश्री के साथ उपाध्याय सुखसागरजी, विनयी राजसागरजी और लघु शिष्य

मंगलसागरजी थे, उनसे भी प्रतिक्रमण आदि में आपके कई स्तवन-सज्झाय सुनते रहते थे। पर एक दिन उनके पास आनन्द-काव्य महोदधि का सातवाँ मौक्तिक देखा, जिसमें जैन-साहित्य महारथी स्व० मोहनलाल दलीचन्द देसाई का "कविवर समय-सुन्दर"[1] निबन्ध पढ़ने को मिला। इस ग्रन्थ में कविवर का चार प्रत्येकबुद्ध रास भी छपा था। देसाई के उक्त निबन्ध ने हमें एक नई प्रेरणा दी। विचार हुआ कि समयसुन्दर राजस्थान के एक बहुत प्रसिद्ध कवि हैं और बीकानेर की आचार्य खरतर शाखा का उपाश्रय तो समयसुन्दर जी के नाम से ही प्रसिद्ध है। अतः उनके सम्बन्ध में गुजरात के विद्वान ने इतने विस्तार से लिखा है तो राजस्थान में खोज करने पर तो बहुत नई सामग्री मिलेगी। बस, इसी आंतरिक प्रेरणा से हमारी शोध प्रवृत्ति प्रारम्भ हुई। श्रीजिन-कृपाचन्द्रसूरिजी के उपाश्रय में ही हमें आपकी अनेक रचनाएँ मिलीं, जिनमें से चौबीसी को तो हमने अपने 'पूजा संग्रह' के अन्त में सं० १९८५ ही में प्रकाशित करदी थी और बड़े उपाश्रय के ज्ञान-भंडार, जयचंदजी भंडार, श्रीपूज्यजी का संग्रह, यति चुन्नीलालजी भं० अनूप संस्कृत लाइब्रेरी और पार्श्वचंद्रसूरि उपाश्रय भं० व खरतर आचार्य शाखा का भण्डार मुख्यतः इसी दृष्टि से देखने आरम्भ किये कि कविवर की अज्ञात रचनाओं का संग्रह और प्रकाशन किया जाय। ज्यों ज्यों इन संग्रहालयों की हस्तलिखित प्रतियां देखने लगे, त्यों त्यों कविवर को अनेक अज्ञात रचनाएं मिलने के साथ अन्य भी नई नई सुन्दर सामग्री देखने को मिली उससे हमारा उत्साह बढ़ता चला गया। सबसे पहले महावीर मण्डल के पुस्तकालय में हमें एक ऐसा गुटका मिला जिसमें कविवर की छोटी छोटी पचासों रचनाएँ संगृहीत थीं। साथ ही विनयचन्द्र आदि सुकवियों की मधुर

---

1 यह गुजराती साहित्य परिषद में पहले पढ़ा गया फिर जैन साहित्य संशोधक भा० २ अं० ३-४ में छपा था।

रचनाएँ भी देखने को मिलीं। हमने बड़े उत्साह के साथ उन सब की नकलें करलीं। उस समय की लिखी हुई स्तवन सज्झाय संग्रह की दो कापियां आज भी हमें उस समय की हमारी रुचि और प्रवृत्ति की याद दिला रही हैं। साथ ही दूसरे कवियों की जो छोटी छोटी सुन्दर रचनाएँ हमें मिलीं, उनके नोट्स भी दो छोटी-कॉपियों में लेते रहे, जो अब तक हमारे संग्रह में हैं। कविवर की रचनाएँ इतनी अधिक प्रचलित हुई व इतनी बिखरी हुई हैं कि जिस किसी संग्रहालय में हम पहुंचते, वहां कोई न कोई अज्ञात छोटी मोटी रचना मिल ही जाती। इसलिये हमारी शोध प्रवृत्ति को बहुत वेग मिला। बड़े-बड़े ही नहीं, छोटे-छोटे भण्डारों के फुटकर पत्रों और गुटकों को भी हमने इसी लिये छान डाला कि उनमें कविवर की कोई रचना मिल जाय। आशानुरूप हर जगह से कुछ न कुछ मिल ही जाता। इस तरह वर्षों के निरन्तर लगन और श्रम से इस सग्रह को हम तैयार कर सके हैं।

कविवर के सम्बन्ध से ही हमें बड़े बड़े विद्वानों से पत्र व्यवहार करने, मिलने और भण्डारों को देखने का सुयोग मिला। अन्यथा पांचवी कक्षा तक के विद्यार्थी और व्यापारी घराने में जनमे हुए साधारण व्यक्ति के लिये वैसे सम्पर्कों की कल्पना भी नहीं की जा सकती। इस लिये कविवर का जितना ऋण हमारे पर है, उससे थोड़ा सा उऋण होने का हमारा यह प्रकाशन-प्रयास है। देसाई के उल्लिखित कविवर की कई रचनाओं के सम्बन्ध में हमें उन्हें पूछ-ताछ करना आवश्यक था। इसलिये हमने अपनी जिज्ञासा कई प्रश्नों के रूप में उन्हें लिख भेजी। किसी भी साहित्यिक विद्वान से पत्र व्यवहार करने का हमारा यह पहला मौका था। कई महीनों तक उनका उत्तर नहीं आया तो बड़ा विचार और निरुत्साह होने लगा। पर कई महीनों बाद (ता० १६-९-३० को) उनका एक विस्तृत पत्र आया और फिर तो हमारा और उनका घनिष्ट सम्बन्ध होगया। उनके करीब ५० महत्त्वपूर्ण

पत्र हमारे संग्रह के हजारों पत्रों में निधिरूप हैं। फिर तो देसाईजी ने हमारे युं० जिनचन्द्रसूरि ग्रन्थ की विस्तृत प्रस्तावना लिखी। वे बीकानेर भी आये और कई दिन हमारे यहां रहे। तत्पूर्व और तब सैंकड़ों अज्ञात ग्रन्थों की जानकारी हमने शताधिक पृष्ठों की उन्हें दी, जिसका उपयोग उन्होंने 'जैनगूर्जर कविओ' के तीसरे भाग में किया है। इसी तरह पं० लालचन्द भगवानदास गाँधी, बड़ौदा इन्स्ट्रीच्यूट के बड़े विद्वान हैं; उन्होंने जेसलमेर भांडागारीय सूची में समय-सुन्दरजी की रचनाओं की सूची दी है, उसमें से कई रचनाएँ हमें कहीं नहीं मिली थीं। इसलिये उनसे भी सर्व प्रथम (ता० २७-१२-२६ के हमारे पत्र का उत्तर ता० १-२-३० को मिला) पत्र व्यवहार कवि की उन रचनाओं के लिये ही हुआ। कलकत्ते के अद्वितीय संग्राहक स्व० पूर्णचन्द्रजी नाहर से भी हमारा सम्बन्ध कविवर की आलो-यणा छत्तीसी को लेकर हुआ। हम कविवर की अज्ञात रचनाओं की जानकारी के लिए उनके यहाँ पहुंचे तो आलोयणा छत्तीसी का नाम उनकी सूची में पाप छत्तीसी लिखा देखकर दोनों रचनाओंकी अभि-न्नता की जांच करने के लिए उसकी प्रति निकलवाई। तभी से उनसे हमारा मधुर सम्बन्ध दिनों दिन बढ़ता गया। वे कई बार हमारे इस प्रारम्भिक सम्पर्क की याद दिलाते हुए कहा करते थे कि हमारा और आपका सम्बन्ध उस "पाप छत्तीसी" के प्रसङ्ग से हुआ है। ये थोड़े से उदाहरण हैं, जिनसे पाठक समझ सकेंगे कि कविवर की रचनाओं की शोध के द्वारा ही हमारा साहित्यिक, ऐतिहासिक, अन्वेषणात्मक जीवन का प्रारम्भ हुआ और बड़े बड़े विद्वानों के साथ सम्पर्क स्थापित हुआ।

उपाध्याय सुखसागरजी की प्रेरणा और सहयोग भी यहां उल्लेखनीय है। उन्हें भी कविवर के ग्रन्थों के प्रकाशन की ऐसी धुन लगी कि बीकानेर चातुर्मास के बाद सर्व प्रथम सं० १९८८ में कल्याण मन्दिर वृत्ति, जिसकी उस समय एक मात्र प्रति पार्श्वो-

चन्द्रसूरि गच्छ के उपाश्रय में ही मिली थी, प्रकाशित करवाई और उसके बाद क्रमशः गाथा सहस्री, कल्पसूत्र की कल्पलता टीका, कालिकाचार्य कथा (सं० १९९६), समस्मरण वृत्ति, समाचारी शतक (सं०१९९६) आदि बड़े-बड़े ग्रंथ सम्पादित कर प्रकाशित करवाये। इसके पूर्व भी विशेषशतक (सं० १९७३), जयतिहुअणवृत्ति, दुरियर-वृत्ति (सं० १९७२-७३), जिनदत्तसूरि ग्रन्थमाला से वे प्रकाशित करवा चुके थे। इनके अतिरिक्त इससे पूर्व कविवर की संस्कृत रचनाओं में दशवैकालिकवृत्ति, अल्पबहुत्त्वगर्भित वीरस्तवस्वोपज्ञ-वृत्ति, श्रावकाराधना और अष्टलक्षी ये चन्द ग्रन्थ ही विविध स्थानों से छपे थे। सं० २००८ में बुद्धिमुनिजी ने चातुर्मासिक व्याख्यान पद्धति प्रकाशित की। राजस्थानी भाषाओं की रचनाओं में शत्रुञ्जय रास, दानादि चौढालिया, ज्ञानपञ्चमी, एकादशी आदि के पूर्व वर्णित स्तवन, सज्झाय, 'रत्नसागर', 'रत्न समुच्चय' और हमारे प्रकाशित 'अभयरत्नसार' आदि में बहुत पहले ही छप चुके थे। देसाई ने भी उन्हें प्राप्त कुछ छोटे-मोटे गीत और वस्तुपाल तेजपालरास, सत्यासिया दुष्काल वर्णन आदि जैनयुग (मासिक) में प्रकाशित किये थे। हमने कविवर की रचनाओं में सर्वप्रथम 'जैनज्योति' मासिक पत्र में पुन्जा ऋषिरास सं. १९८७ में प्रकाशित करवाया और कवि के मृगावतीरास के आधार से 'सती-मृगावती' पुस्तक लिखकर सं० १९८९ में प्रकाशित की। उसके बाद तो कविवर सम्बन्धी कई लेख जैन, कल्याण (गुज०), भारतीय विद्या (सत्यासीया दुष्काल वर्णन छत्तीसी), नागरी प्रचारिणी पत्रिका, जैन-भारती,¶ जैन जगत आदि पत्रों में प्रकाशित किये।

सं० १९८६ मे ही हमें कविवर के जीवनी संबंधित उन्हीं के शिष्य हर्षनंदन और देवीदास रचित 'समयसुंदरोपाध्यायनाम् गीत द्वयम्' का एक पत्र प्राप्त हुआ, जिनकी नकल हमने देसाईजी को भेजकर जैनयुग

¶ गत वर्ष धनदत्त रास व प्रियमेलक रास का सार भी जैनभारती और मरुभारती में प्रकाशित किया गया है।

के सं० १९८६ के वैशाख जेठ अङ्क के पृ० ३५२ में प्रकाशित करवाये। साथ ही सत्यासिया दुष्काल वर्णन के अपूर्ण प्राप्त १६ पद्य देसाई ने जैनयुग सं० १९८५ के भादवे से कार्तिक अङ्क के पृ० ६८ में छपवाये थे, उनके कुछ और पद्य हमें प्राप्त हुए उन्हें भी अगमवाणी के साथ इसी वैशाख-जेठ के अङ्क में प्रकाशित करवा दिये। गीत द्वय को प्रकाशित करते हुये उस समय हमारे सम्बन्ध में देसाई जी ने लिखा था—"आ कवि श्री सम्बन्ध मां में भावनगर गुजराती साहित्य परिषद् माटे एक निबन्ध लख्यो हतो अने ते जैन साहित्य संशोधक ना खण्ड २ अङ्क ३।४ मां अने ते सुधारा वधारा सहित आनन्द काव्य महोदधि ना मौक्तिक ७ मां नी प्रस्तावना मां प्रकट थयो छे। ते कवि सम्बन्धी बीकानेर ना एक सज्जन श्रीयुत अगरचन्द भँवरलाल नाहटा घणो प्रयास करता रह्या छे अने अप्रकट कृतिओ तेमणे मेलवी छे। ए शोधना परिणाम रूपे तेमना सम्बन्ध मां तेमना शिष्य हर्षनन्दने अने देवीदासे गीतो रच्या छे ....आ बन्ने गीतो अमे नीचे उतारीने आपिये छीये अने तेनो उपगार श्रीयुत नाहटाजी ने छे कारण के तेमने पोताना संग्रह मां थी उतारी ने मोकल्या छे।"

कविवर की जीवनी संबन्धी जो दो गीत उपर्युक्त 'जैन-युग' में प्रकाशित करवाये गये, उनमें सं० १६७२ तक की घटनाओं का ही उल्लेख था। इसके बाद बाड़मेर के यतिवर्य नेमिचन्दजी से कविवर के प्रशिष्य राजसोमरचित 'महोपाध्याय समयसुन्दरजी गीतम्' प्राप्त हुआ, जिसमें उनके उपाध्यायपद, क्रियाउद्धार और अहमदाबाद में सं० १७०२ के चैत्र शु० १३ को स्वर्गवास होने का महत्त्वपूर्ण उल्लेख पाया गया। उसके बाद आज तक भी उनकी जीवनी सम्बन्धी कोई रचना और कहीं से प्राप्त नहीं हुई।

कविवर के प्रगुरु अकबर प्रतिबोधक युगप्रधान श्रीजिनचन्द्र-सूरि थे। कविवर के प्रसङ्ग से ही उनका संक्षिप्त परिचय पहले लिखा गया जो बढते बढते ४५० पृष्ठों के महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ के रूप में परिणित हो गया। शताधिक ग्रन्थों के आधार से हमारा यह सर्वप्रथम विशिष्ट ग्रन्थ लिखा गया, उसका श्रेय भी कविवर को ही है। इस ग्रन्थ में विद्वत् शिष्य समुदाय नामक प्रकरण में कविवर का भी परिचय दिया गया था। उसी के साथ-साथ हमारा दूसरा वृहद् ग्रन्थ 'ऐतिहासिक जैन काव्य संग्रह' छपना प्रारम्भ हुआ, जिसमें कविवर के जीवन सम्बन्धी उपर्युक्त तीनों गीत प्रकाशित किये गये।

कविवर ने अपनी लघु रचनाओं का संग्रह स्वयं ही करना प्रारम्भ कर दिया था। क्योंकि वैसी रचनाओं की संख्या लगभग एक हजार के पास पहुंच चुकी होगी। अतः उनका व्यवस्थित संकलन किये बिना इन फुटकर और बिखरी हुई रचनाओं का उपयोग और संरक्षण होना बहुत ही कठिन था। हमें उनके स्वय के हाथ के लिखे हुए कई सकलन प्राप्त हुए हैं और कई संकलनों की नकलें भी प्राप्त हुई हैं, जिनसे उन्होंने समय-समय पर अपनी लघु रचनाओं का किस प्रकार सङ्कलन किया था उसकी महत्वपूर्ण जानकारी मिलती है। उनके किये हुए कतिपय संकलनों का विवरण इस प्रकार है—

छत्तीस की संख्या तो उन्हें बहुत अधिक प्रिय प्रतीत होती है। क्षमा छत्तीसी, कर्मछत्तीसी, पुण्य छत्तीसी, सन्तोष छत्तीसी, आलोयण छत्तीसी आदि स्वतंत्र छत्तीसियां प्राप्त होने के साथ-साथ निम्नोक्त संकलित छत्तीसियां विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं :—

१. ध्रुपद छत्तीसी—इसमें छोटे छोटे छत्तीस पद जो राग-रागनियों में हैं, उनका संकलन किया गया है। यद्यपि हमने

उनको उस रूप में इस ग्रन्थ में नहीं रखा है। हमारा वर्गीकरण कुछ विशेष प्रकार का होने से प्राप्त कई संकलनों का क्रम टूट गया है। इस ध्रुपद छत्तीसी की सं० १६७० की लिखित प्रति देसाई के संग्रह में है। अन्य प्रति बीकानेर के बड़े ज्ञान भंडार में है।

२. तीर्थ भास छत्तीसी—इसमें तीर्थों सम्बन्धी छत्तीस गीतों का संकलन किया गया है। इसकी ११ पत्रों की अहमदाबाद में सं० १७०० आषाढ वदि १ स्वयं की लिखित प्रति बंबई रॉयल एशियाटिक सोसाइटी से प्राप्त हुई है। अन्य प्रति हमारे संग्रह में है।

३. प्रस्ताव सवैया छत्तीसी—इसमें छत्तीस फुटकर सवैयों का संकलन है, जो समय समय पर रचे गये होंगे। इसकी स्वयं लिखी प्रति हमारे संग्रह में है।

४. साधु गीत छत्तीसी—इसके अंतिम २ पत्रों वाली प्रति हमारे संग्रह में है, जिसमें ३१ से ३६ तक के गीत व अन्त में ३६ गीतों की सूची है।

५. सत्यासिया दुष्काल वर्णन छत्तीसी—इसके फुटकर वर्णन वाले छन्दों की कई प्रकार की प्रतियां मिली हैं। जिनसे मालूम होता है कि समय समय पर उन छन्दों की रचना फुटकर रूप में हुई और अन्त में पूर्तिस्वरूप कुछ पद्य बनाकर यह छत्तीसी रूप संकलन तैयार कर दिया गया।

६. नेमिनाथ गीत छत्तीसी—इसकी स्वयं लिखित प्रति के नौ पत्र हमारे संग्रह में है, इसका अन्त का एक पत्र नहीं मिलने से ३४ वें गीत की एक पंक्ति के बाद शेष २ गीत अधूरे रह जाते हैं।

७. वैराग्य गीत छत्तीसी—इसमें वैराग्योत्पादक छत्तीस गीतों का संकलन था, पर इसकी प्रति भी त्रुटित (पत्रांक ५-१० वां, दो पत्र)

प्राप्त हुई है। उसके अन्त में जो सूची दी गई है, उसमें से तीन गीत तो अभी तक प्राप्त नहीं हुए हैं—१. मोरा जीवनजी, २. जपउ पञ्च परमेष्टी परभाति जापं, ३. मरण पगा माहि नित वहइ।

सांझी गीत पचीसी—इसी तरह सांझी गीतों का एक संग्रह तैयार किया गया, जिसकी एक प्रति पालनपुर भण्डार में इलादुर्ग में स्वयं की लिखी हुई सात पत्रों की मिली, जिसमें २१ सांझी गीत थे। इसके बाद बीदासर के यति गणेशलालजी के संग्रह में दूसरी प्रति मिली, जिसमें चार गीत और जोड़कर गीतों की संख्या २५ की करदी गई है। इसलिये हमारे इस ग्रन्थ के पृष्ठ ४६३ में सांझी गीतों का कलश रूप जो गीत छपा है, उसके अन्तिम पद्य में 'सांझी गीत सुहावणा ए, मैं गाया इकवीस' छपा है। यहां दूसरी प्रति में २१ के स्थान 'पचवीस' का पाठ मिलता है।

रात्रिजागरण गीत पंचास—इसमें धार्मिक उत्सवों के समय रात्रिजागरण करने की जो प्रणाली थी, उसमें गाये जाने योग्य ५० गीतों का संकलन कवि ने किया है। जिसका अंतिम कलश-गीत इसी ग्रन्थ के पृ० ४६३ में छपा है। इसकी स्वयं की लिखित प्रति हमारे संग्रह में है, जिसमें ४६ गीत हैं।

भास शतकम्—इसमें भास संज्ञावाली एक सौ रचनाओं का संकलन है। सं० १६६७ अहमदाबाद में स्वयं की लिखी हुई २६ पत्रों की प्रति महोपाध्याय विनयसागरजी को प्राप्त हुई। इसका प्रथम पत्र नहीं मिला है।

साधु गीतानि—इसमें मुनियों की जीवनी सम्बन्धी गीतों का संकलन किया गया है। इसकी भी स्वयं लिखित दो प्रतियां और अन्य लिखित कई प्रतियां मिली हैं। जिनमें एक के तो मध्य पत्र ही मिले हैं। उनमें संख्या २१ से ५१ तक के गीत ही मिले हैं।

सं० १६६५ में हरिराम का लिखा हुआ गीत भी इसमें है। प्रारम्भिक गीत स्वयं लिखित हैं और पीछे के गीत हरिराम के लिखित हैं। एक गीत में १॥ गाथा तो स्वयं की लिखित और पीछे का अंश हरिराम का लिखा मिला है। लींबड़ी भण्डार में 'साधुगीतानि' की जो दूसरी प्रति मिली है उसमें ४६ गीत हैं। इनमें सं० १६६२ मिग० सुदि १ अहमदाबाद के ईदलपुर में चातुर्मास करते हुये ४५ गीत लिखे और ४ गीत फिर पीछे से लिखे गये। ६ पत्रों की अपूर्ण अन्य प्रति में २३ गीत मिले हैं।

वैराग्यगीत-साधुगीतानि—की एक दूसरी प्रति के अंत के पत्रों में वैराग्य गीतों का संकलन किया है। पर वह प्रति अधूरी मिली है।

नाना प्रकार गीतानि—इसकी स्वयं लिखित एक प्रति २७ पत्रों की हमारे संग्रह में है, जिसमें १३५ गीत संगृहीत हैं। पर इसके प्रारम्भ और मध्य के कुछ पत्र नहीं मिले हैं।

पार्श्वनाथ लघुस्तवन—इसकी ८ पत्रों की स्वयं लिखित प्रति हमारे संग्रह में है। इसमें पार्श्वनाथ के १४ गीतों का संकलन है, सं० १७०० मार्ग० व० ५ अहमदाबाद के हाजा पटेल पोल के बड़े उपाश्रय में शिष्यार्थ यह प्रति लिखी गई।

अन्त समये जीव प्रतिबोध गीतम्—इसमें इस भाव वाले १२ गीत संकलित हैं। प्रथम पत्र प्राप्त नहीं होने से प्रथम के दो गीत प्राप्त नहीं हो सके। प्रति स्वयं लिखित है।

दादागुरु गीतम्—इसमें जिनदत्तसूरि और जिनकुशलसूरि जी के १० गीत हैं। इसका स्वयं लिखित सं० १६८८ के एक पत्र का आधा अंश ही मिला है। जिससे पांच गीत त्रुटित प्राप्त हुए हैं, जो इस ग्रन्थ के अन्त में दिये गये हैं। इनमें से अजमेर दादा जी स्तवनादि का एक पत्र स्वयं लिखित और हमारे संग्रह में था पर अभी नहीं मिला अन्यथा पूर्ति हो जाती।

जिनसिंहसूरि गीत—हमारे संग्रह की वृहद् संग्रह प्रति के बीच के पत्रांक ४३ से ५६ में जिनसिंहसूरि के २२ गीत लिखे हैं। पीछे

के कई पत्र नहीं मिले, उनमें और भी होंगे। इसी तरह जिन-सागरसूरि का गीत संग्रह आदि विविध प्रकार के अनेक सङ्कलन-संग्रह मिले हैं।

इस प्रकार और भी कई छोटे-बड़े संकलन कवि के स्वयं लिखित या उनकी प्रतिलिपि किये हुये प्राप्त हैं। हमें ये सङ्कलन आहिस्ता-आहिस्ता मिलते गए और कइयों की प्रतियां तो अधूरी ही मिली हैं। इसलिये बहुत से गीत अभी और मिलेंगे और कई जो त्रुटित रूप में अपूर्ण मिले हैं, उनकी भी अन्य प्रतियां प्राप्त होनी आवश्यक हैं। हमने उनको पूर्ण करने के लिए बहुत प्रयत्न किया। पचासों प्रतियों व सैंकड़ों फुटकर पत्र देखे, पर जिनकी अन्य प्रति नहीं मिली उन्हें जिस रूप में मिले उसी रूप में छपाने पड़े हैं।

अब हम इस संग्रह में प्रकाशित जिन रचनाओं में कुछ पाठ त्रुटित रह गये हैं। उनकी सूची नीचे दे रहे हैं, जिससे उन रचनाओं की किसी को पूरी प्रति प्राप्त हो तो वे पूर्ति के पाठ को लिख भेजें।

पृ० १६ 'चौवीस जिन सवैया' के ७ वें पद्य का प्रारंभिक अंश।
,, १७ ,, ,, ,, ८ वें पद्य का मध्यवर्ती अंश।
,, २२ 'ऐरवतक्षेत्र चतुर्विंशति गीतानि' के प्रारंभिक सात जिनगीत
,, १०४ 'पाटण शांतिनाथ स्तवन' की प्रारम्भिक १६ गाथाएँ।
,, १२६ 'नेमिनाथ गीत' की प्रथम पद्य के बाद की गाथाएँ।
,, १३३ 'नेमिनाथ सवैया' के प्रारम्भिक ८॥ सवैये।
,, १३६ ,, ,, पद्यांक १६ में इस प्रकार छपने से रह गया है—

'विजुरी विचइं डरावइ सखि मोहि नींद नावइ,
कृपाल कुंको कहावइ अेकु अरदास रे।'

,, १४२ 'नेमिनाथ सवैया' के पिछले २॥ सवैये।

पृ० १८८ श्लोक ८ की प्रथम पंक्ति में 'ललित' और 'विनात भव्ये' के वीच एक अक्षर त्रुटित है।

,, १९४ 'पार्श्वनाथ शृङ्गाटक वद्ध स्तवन' के ८ वें पद्य की तीसरी पंक्ति में ' ललनं ' और ' विधारिरिक्त ' के वीच में एक अक्षर त्रुटित है।

,, २४७ ' अइमत्ता मुनिगीत ' के सवा दो पद्यों के बाद के पद्य नहीं मिले हैं।

,, ३३२ 'चुलणी भास' के पद्य ३॥ से ४॥ नहीं मिले हैं।

,, ३४१ ' राजुल रहनेमि गीतम् ' के पद्य ५ की अन्तिम दूसरी पंक्ति का छूटा हुआ अंश त्रुटित है।

,, ३७१ 'जिनचन्द्रसूरि छन्द' के तीसरे छन्द की तीसरी पंक्ति त्रुटित है।

,, ३७८ 'जिनसिंहसूरि आलीजा गीत' गाथा १० के बाद त्रुटित है।

,, ३८४ 'जिनसिंहसूरि गीत' के गीत नं० ७ की गाथा नं० १ का मध्यवर्त्ती अंश त्रुटित।

,, ४०३ 'जिनसिंहसूरि गीत' नं० २२ गाथा ४॥ के वाद त्रुटित।

,, ४०७ 'जिनसागरसूरि अष्टक' तीसरे श्लोक की अंतिम पंक्ति त्रु०.

,, ४४८ 'कर्मनिर्भरा गीत' चौथी गाथा की दूसरी पंक्ति त्रुटित।

,, ४५५ 'तुर्य वीसामा गीत' दूसरी गाथा की तीसरी पंक्ति त्रुटित।

,, ४७३ 'ऋषि महत्व गीत' दूसरी गाथा की अंतिम पंक्ति प्राप्त नहीं।

,, ४७६ 'हित शिक्षा गीत' ७ वें पद्य की दूसरी पंक्ति त्रुटित।

,, ४८७ 'आहार ४७ दूषण सज्झाय' गाथा २६ की अन्तिम पंक्ति के कुछ अक्षर त्रुटित।

,, ५०० फुटकर श्लोकों में सं० १ की अन्तिम और अन्त्य श्लोक को प्रत्येक पंक्ति का प्रारम्भिक अंश त्रुटित।

" ६१६ 'नानाविधकाव्यजातिमयं नेमिनाथ स्तवनम्' के प्रारम्भिक ६॥ श्लोक त्रुटित।

कई गीतों में कवि कल्पना भी बड़े सुन्दर रूप में प्रगट हुई है। इन सबके उदाहरण नोट किये हुये होने पर भी, यहां विस्तार भय से नहीं दिये जारहे हैं। कभी विस्तृत विवेचन का अवसर मिला तो अपने उन नोट्स का उपयोग किया जा सकेगा।

महोपाध्याय विनयसागरजी ने कवि का परिचय देते हुए कथाकोश की पूरी प्रति नहीं मिलने का उल्लेख किया है। यद्यपि इसकी कई प्रतियां हमें प्राप्त हुई हैं, जिनमें से एक तो कवि की स्वयं लिखित है। पर भिन्न-भिन्न प्रतियों के मिलाने से ऐसा मालूम पड़ता है कि कवि ने दो तरह के कथाकोश बनाये हैं। एक में अन्य विद्वानों के ग्रन्थों से कथाएं उद्धृत व संगृहीत की गई हैं और दूसरे में उन्होंने स्वयं बहुत सी कथाएँ लिखी हैं। इनमें से पहले प्रकार की एक प्रति नाहरजी के संग्रह में मिली, और दूसरी की एक पूरी प्रति स्व० जिनऋद्धिसूरिजी के संग्रह में से प्राप्त हुई है। इसमें १६७ कथाएँ हैं। पर कवि के अन्य ग्रन्थों की भाँति इसमें प्रशस्ति नहीं मिलने से सम्भव है कुछ और भी कथाएँ लिखनी रह गई हों या प्रशस्ति नहीं लिखी गई हों। 'कथापत्राणि' नामक कवि के स्वयं लिखित फुटकर पत्रों की एक प्रति मिली है, जिसके १३७ या १५५ पत्र (दोनों हांसियों पर दो संख्याक) थे। इसमें ११४ कथाएँ हैं और ग्रंथ परिमाण करीब ६००० श्लोक का लिखा है। अंत में कवि ने स्वयं लिखा है कि—

"सं० १६६५ वर्षे चैत्र सुदि पंचमी दिने श्री जालोर नगरे लिखितं श्री समयसुन्दरउपाध्यायैः। इयं कथाकोशप्रति मयि जीवति मदधीना, पश्चात् पं० हर्षकुशलमुनेः प्रदत्तास्ति। वाच्यमाना चिरं विजयताम्।"

अर्थात् कविवर स्वयं जहां तक जीवित रहे अपनी रचनाओं में उचित परिवर्तन-परिवर्द्धन करते रहे हैं।

कवि के रचित माघ काव्य की टीका के केवल तृतीय सर्ग की वृत्ति के मध्य पत्र चूरु सुराना लाइब्रेरी में स्वयं लिखित मिले हैं। उसमें बीच

के पत्रांक दिये हैं। अतः वह टीका तो पूरी बनाई ही होगी, पर अभी तक अन्य सर्गों की टीका के पत्र नहीं मिले। जिसकी खोज अत्यावश्यक है। इसी प्रकार मेघदूत वृत्ति की अपूर्ण प्रति ओरियन्टल की लाइब्रेरी लाहौर में देखी थी, उसकी भी अन्य प्रति नहीं मिली। अतः पूरी प्रति अन्वेषणीय है।

सं० २००२ में जब कवि के स्वर्गवास को ३०० वर्ष हुये, हमने शार्दूल राजस्थानी रिसर्च इन्स्टीच्यूट की ओर से समयसुन्दर त्रिशती उत्सव मनाया था और कवि की रचनाओं का प्रदर्शन भी किया गया था, जो विशेष रूप से स्मरणीय है।

कवि की कई रचनाएँ अभी संदिग्धावस्था में हैं। उनकी अन्य प्रतियों की प्राप्ति होने से ही निर्णय किया जा सकेगा। जिस प्रकार जैन गुर्जर कविओं भाग ३ के पृ० ८४४ में स्थूलभद्र रास का विवरण छपा है। इस प्रति को हमने मँगवा कर देखी तो पद्यांक ६५ में समयसुन्दर नाम आता है, अन्यत्र 'कविचण' उपनाम प्रयुक्त है और ग्रन्थ का रचना काल संदिग्ध है—

इन्दु रस संख्याइं एह, संवत्सर मान
आदिनाथ थी नेमिजन, तेतमउ वरस प्रधान।

इसकी अन्तिम पंक्ति से देसाईजी ने २२ की संख्या ग्रहण की है, पर वह संदिग्ध लगती है। इसी प्रकार भडियालागुरु (पंजाब) की सूची में कवि के रचित शालिभद्र चौपाई और अगडदत्त कथा (सं० १६४३ में रचित पत्र १०) आदि का उल्लेख है। जैसलमेर भण्डार की सूची में पं० लालचन्द गांधी उल्लिखित कई रचनाएँ हमें अभी तक नहीं मिलीं। वे वास्तव में कवि की हैं या नहीं, प्रतियां मिलने पर ही निर्णय हो सकेगा।

हमारे संग्रह में एक व्रत ग्रहण टिप्पण मिला है। जिससे मालूम होता है कि सं० १६६७ के फाल्गुन शु० ११ गुरुवार को

अहमदाबाद में संखवाल गोत्रीय साह नाथा की भार्या श्राविका धन्नादे ने जो शाह कर्मशी की माता थी, महोपाध्याय समयसुन्दरजी के पास इच्छा परिमाण (१२ व्रत) ग्रहण किये थे। इस पत्र के पिछली ओर में कवि ने उन १२ व्रतों के ग्रहण का रास बनाया था, जिसकी कुछ ढालें स्वयं लिखित मिली हैं। इससे कवि के रचित १२ व्रत रास का पता चलता है, जिसकी पूरी प्रति अभी अन्वेषणीय है। और भी कई श्रावक-श्राविकाओं ने आपसे इसी तरह व्रत आदि ग्रहण किये होंगे, जिनके उल्लेख कहीं भण्डारों के विकीर्ण पत्रों में पड़े होंगे या ऐसे साधारण पत्र अनुपयोगी समझे जाते हैं; अतः उपेक्षावश नष्ट हो चुके होंगे। विविध विषयों के सैंकड़ों फुटकर पत्र कवि के लिखे हुए हमने भण्डारों में देखे हैं और हमारे संग्रह में भी हैं। उन सबसे इनकी महान् साहित्य-साधना की जो झांकी मिलती है, उससे हम तो अत्यन्त मुग्ध हैं। सुयोगवश कवि ने दीर्घायु पाई और प्रतिभा तो प्रकृति प्रदत्त थी ही। विद्वान् विद्यागुरुओं आदि का भी सुयोग मिला, सैंकड़ों ज्ञानभंडार देखे, विविध प्रान्तों के सैंकड़ों स्थानों में विचर कर विशेष अनुभव प्राप्त किया और सदा अप्रमत्त रहकर पठन-पाठन और साहित्य निर्माण में सारे जीवन को लगा दिया। बस गौरवमयी साहित्य-विभूति की स्मृति से मस्तक उनके चरणों में स्वयं झुक जाता है। उनके शिष्यों में हर्षनन्दन आदि बड़े विद्वान् थे। अभी अभी तक उनकी परम्परा विद्यमान थी।

उनकी चरण पादुका गड़ालय (नाल) में होने का उल्लेख तो म० विनयसागरजी ने किया ही है; पर जैसलमेर में भी दो स्थानों पर आपके चरण प्रतिष्ठित हैं। तीनों पादुका लेख इस प्रकार हैं:—

१. "संवत् १७०४ वर्षे (पें) फागुण सुदि ४ सोमे श्रीसमयसुन्दर महोपाध्याय पादुके कारिते श्रीसंघेन प्रतिष्ठितं हर्षनंदन (गणिभिः) ह्रीं नमः।"

(नाल गड्डालय में जिनकुशलसूरि गुरु मन्दिर के पास चौमुख स्तूप में आपके गुरु सकलचन्द जी की भी पादुका रीहड़ जयवंत लूणा कारित व यु० जिनचन्द्रसूरि प्रतिष्ठित है। (देखें, हमारा बीकानेर जैन लेख संग्रह ग्रन्थ। लेखांक २२८७।)

२. "सं० १७०५ वर्षे पोष वदि ३ गुरुवारे श्रीसमयसुन्दर-महोपाध्यायानां पादुका प्रतिष्ठिते वादि श्रीहर्षनन्दन गणिभिः।" (जैसलमेर के समयसुन्दरजी के उपाश्रय में)

३. जैसलमेर देदासर दादावाड़ी की समयसुन्दरजी की शाखा में स्तूप पर—

श्री जिनायनमः ॥ सं० १८८२ रा मिति आषाढ़ सुदि ५ श्री जैसलमेर नगरे राउल श्री गजसिंहजी विजयराज्ये आचारज गच्छे श्रीजिनसागरसूरि शाखायां भ। जं०। श्रीजिनउदयसूरिजी विजय-राज्ये ॥ उ०। श्री १०८ श्री समयसुन्दरजी गणि पादुकामिदं ॥ उ। श्री आणंदचंदजी तत्शिष्य पं। प्र। श्रीचतुरभुज जी तत्शिष्य पं०। लालचंद्रेण कारापितमियं थंभ पादुका शाखा सही २।

पादुकाओं पर

॥ उ ॥ श्री १०८ श्री समयसुन्दर गणि पादुका।

स्वर्ग स्थान अहमदाबाद में भी चरण अवश्य प्रतिष्ठित किये गये होंगे, पर वे शायद अब न रहे या खोज नहीं हुई।

कवि की प्राप्त लघु कृतियों का यह संकलन हमने अपने ढङ्ग से किया है। सम्भव है उसमें कुछ अव्यवस्था रह गई हो।

आभार—

इस ग्रंथ को इस रूप में तैयार करने और प्रकाशन करने में हमें अनेक भण्डारों के संरक्षकों और कई अन्य व्यक्तियों से

विविध प्रकार की सहायता मिली है। २७ वर्षों से हम जो निरन्तर इस सम्बन्ध में कार्य करते रहे हैं, उनमें इतने अधिक व्यक्तियों का सहयोग है कि जिनकी स्मृति बनाये रखना भी सम्भव नहीं। इसलिये जो सहज रूप में स्मरण आरहे हैं, उन्हीं का उल्लेख कर अवशेष सभी के लिये आभार प्रदर्शित करते हैं।

सबसे पहले जिनकृपाचन्द्रसूरिजी, उपाध्याय सुखसागरजी, बीकानेर के भण्डारों के संरक्षक, फिर स्वर्गीय मोहनलाल दलीचन्द देसाई, स्व० यति नेमचन्दजी बाड़मेर, पन्यास केशरमुनिजी और बाहर के अनेक भण्डारों के संरक्षकगण, फूलचन्दजी झाबक, मुनि गुलाबमुनिजी, आनन्दसागरसूरिजी, [redacted] पूर्णचन्दजी नाहर आदि से जो कवि की रचनाओं की उपलब्धि और अन्य प्रकार की सहायता मिली है, उसके लिये हम उनके बहुत आभारी हैं।

अन्त में महोपाध्याय विनयसागरजी, जिन्होंने इस सारे ग्रंथ का प्रूफ संशोधन का और कवि के विषय में अध्ययनपूर्ण निबन्ध लिखकर हमारे काम में बड़ी आत्मीयता के साथ हाथ बँटाया है, उनके हम बहुत ही उपकृत हैं।

हिन्दी साहित्य महारथी विद्वान् मित्र डा० हजारीप्रसादजी द्विवेदी ने हमारे इस ग्रंथ की भूमिका लिख भेजी है। जिसके लिये हम उनके बहुत आभारी हैं।

इस ग्रन्थ के प्रकाशन में एक प्रेरणा रूप श्री अनोपचन्दजी झाबक, फलूर ने हमें रु० १५१) अपनी सद्भावना से भेजकर इस ग्रंथ को तत्काल प्रेस में देने को प्रेरित किया, अतः वे भी स्मरणीय हैं।

कवि की लिखी हुई सैकड़ों प्रतियों और फुटकर पत्र हमारे संग्रह में हैं। उनमें से संवतोल्लेख वाले २ पत्रों का सम्मिलित ब्लॉक इस ग्रन्थ में छपाया जा रहा है। कवि का कोई चित्र

नहीं मिलता तो उनकी अक्षर देह को ही प्रकाश में लाना आवश्यक समझा गया। दूसरा ब्लॉक कवि के एक चित्र-काव्य स्तोत्र का है, जिसका हारबद्ध चित्र पन्यास केशर मुनिजी ने पालीताना से बनाकर भेजा था और दूसरा चित्र-बद्ध उपाध्याय सुखसागरजी ने कवि की कल्याण मन्दिर स्तोत्रवृत्ति के साथ छपवाया है।

जैन साहित्य महारथी स्व० मोहनलाल दलीचन्द देसाई अपनी विद्यमानता में हमारे इस संग्रह को प्रकाशित देखते तो हर्षोल्लास से झूम उठते। अतः उन्हीं की मधुर स्मृति में अपना यह प्रयास समर्पित करते हैं।

अगरचन्द नाहटा
भँवरलाल नाहटा

कविवर-लेखनदर्शनम्—(१)

[सं० १६६४ लि० करकण्डु प्रत्येक बुद्ध चौ० का अन्तिम पत्र]

कविवर-लेखनदर्शनम्—(२)

[सं० १६८४ लि० वेदूथपदविवेचना का अन्तिम पत्र]

महोपाध्याय समयसुन्दर



प्रस्तुत संग्रह के प्रणेता १७वीं शती के साहित्याकाश के जाज्वल्यमान नक्षत्र, महोपाध्याय पद-धारक, समय-सिद्धान्त (स्वदर्शन और परदर्शन) को सुन्दर मंजुल-मनोहर रूप में जनसाधारण एवं विद्वत्समाज के सन्मुख रखने वाले, समय-काल एवं क्षेत्रोचित साहित्य का सर्जन कर समय का सुन्दर-सुन्दरतम उपयोग करने वाले अन्वर्थक नाम धारक महामना महर्षि समयसुन्दर गणि हैं। इनकी योग्यता एवं बहुमुखी प्रतिभा के सम्बन्ध में विशेष न कहकर यह कहें तो कोई अत्युक्ति न होगी कि कलिकाल सर्वज्ञ हेमचन्द्राचार्य के पश्चात् प्रत्येक विषयों में मौलिक सर्जनकार एवं टीकाकार के रूप में विपुल साहित्य का निर्माता अन्य कोई शायद ही हुआ हो! साथ ही यह भी सत्य है कि आचार्य हेमचन्द्र के सदृश ही व्याकरण, साहित्य, अलङ्कार, न्याय, अनेकार्थ, कोष, छन्द, देशी भाषा एवं सिद्धान्तशास्त्रों के भी ये असाधारण विद्वान् थे। सङ्गीतशास्त्र की दृष्टि से एक अद्भुत कलाविद् भी थे।

कवि की बहुमुखी प्रतिभा और असाधारण योग्यता का मापदण्ड करने के पूर्व यह समुचित होगा कि इनके जीवन और व्यक्तित्व का परिचय दिया जाय; क्योंकि व्यक्तित्व के बिना बहुमुखी प्रतिभा का विकास नहीं हो पाता। अतः ऐतिह्य ग्रन्थों के अनुसार संक्षिप्त रूप से उनकी जीवन-घटनाओं का यहां क्रमशः उल्लेख कर रहा हूँ।

जन्म और दीक्षा

मरुधर प्रदेशान्तर्गत साचोर (सत्यपुर) में आपका जन्म हुआ था, जैसा कि कवि स्वयं स्वरचित सीताराम चतुष्पदी के खण्ड ६ ढाल तीसरी के अन्तिम पद्य में कहता है:—

"मुझ जनम श्री साचोर मांहि, तिहां च्यार मासि रह्या उछाहि ।"
[पद्य ५०]

आप पोरवाल* (प्राग्वाट) ज्ञाति के थे तथा आपके मातु† श्री का नाम लीला देवी और पिता श्री का नाम रूपसिंह (रूपसी) था। कवि का जन्म समय अज्ञात है, किन्तु जैन साहित्य के महारथी श्री मोहनलाल¶ दुलीचन्द देशाई बी० ए०, एल० एल० बी० के मत को मान्य रखते हुये जैन इतिहास के विद्वान् और मेरे मित्र श्री अगरचन्द जी नाहटा ने अपने "कविवर समयसुन्दर"‡ लेख में इनका जन्म काल अनुमानतः स० १६२० स्वीकृत

* "प्रज्ञाप्रकर्षः प्राग्वाटे, इति सत्यं व्यधायि यः ।१३।" वादी हर्षनन्दन प्रणीत मध्याह्नव्याख्यानपद्धति ।

† कवि देवीदास कृत समयसुन्दर गीत, "मातु लीलादे रूपसी जनमिया ।" [प० ६]

¶ "प्रथमनो ग्रन्थ भावशतक सं० १६४१ मां रचेलो मली आवे छे, तेथी ते वखते तेमनी उमर २१ वर्ष नी गणीए तो तेमनो जन्म सं० १६२० मां मूकी शकाय ।" कविवर समयसुन्दर निबन्ध, आनन्द काव्य महोदधि मौक्तिक ७, पृष्ठ २ ।

‡ "परन्तु इनकी प्रथम कृति 'भावशतक' के रचना काल के आधार पर श्री मोहनलाल दुलीचन्द देशाई ने उस समय इनकी आयु २०-२१ वर्ष अनुमानित कर जन्म काल वि० १६२० होने की सम्भावना की है जो समीचीन जान पड़ती है। वादी हर्ष-

किया है; किन्तु मेरे मतानुसार इससे कुछ पूर्व ज्ञात होता है। क्योंकि देखिये:—

महालाक्षणिक आचार्य मम्मट द्वारा प्रणीत काव्य प्रकाश नामक लक्षण ग्रन्थ में मम्मट ने वाच्यातिशायि व्यङ्ग्या ध्वनि काव्य की जो चर्चा की है, कवि उसी वाच्यातिशायि व्यङ्ग्या ध्वनि काव्य के भेदों का उद्धरण सहित लक्षण इस (भावशतक) ग्रन्थ में स्वोपज्ञ वृत्ति के साथ दे रहा है:—

"काव्यप्रकाशे शास्त्रे, ध्वनिरिति संज्ञा निवेदिता येषाम् ।
वाच्यातिशायि व्यङ्ग्यान, कवित्वभेदानहं वच्मे ॥२॥"

काव्यप्रकाश जैसे विलष्ट लक्षण ग्रन्थ का अध्ययन कर 'ध्वनि' जैसे सूक्ष्म विषय पर लेखिनी चलाने के लिये प्रौढ एवं तलस्पर्शी ज्ञान की आवश्यकता है; जो दीक्षा के पश्चात् ५-६ वर्ष में पूर्ण नहीं हो सकता। यह ज्ञान कम से कम भी १०-१२ वर्ष के निरन्तर अध्ययन के फलस्वरूप ही हो सकता है और दूसरी बात यह है कि यदि हम सं० १६३५ दीक्षा स्वीकार करें तो यह असंभव सा है कि ५-६ वर्ष के अल्प-दीक्षा पर्याय में 'गणि पद' प्राप्त हो जाय। अत: वि० १६२८ के आसपास या १६३० में दीक्षा हुई

नन्दन के "नवयौवन भर संयम संग्रह्यौ जी, सइं हथे श्रीजिनचंद" इस उल्लेख के अनुसार दीक्षा के समय इनकी अवस्था कम से कम १५ वर्ष होनी चाहिये। इस अनुमान से दीक्षा-काल वि० १६३५ के लगभग बैठता है।"

[नागरी प्रचारिणी पत्रिका, वर्ष ५७ अङ्क १, सं० २००९]

हो, यह मानना उचित होगा। और जहां वादी हर्षनन्दन अपने समयसुन्दर गीत में "नवयौवन भर संयम संग्रह्यौ जी" कहते हुये नजर आरहे हैं, वहाँ यह स्पष्ट हो जाता है कि "नवयौवनभर" परिपूर्ण तरुणावस्था का समय १६ से २० वर्ष की आयु को सूचित करता है। अतः दीक्षा का अनुमानतः संवत् १६२८—३० स्वीकार करते हैं तो जन्म सम्वत् १६१० के लगभग निश्चित होता है। इनका जन्म नाम क्या था और इनका प्रारम्भिक अध्ययन कितना था? इसका कोई उल्लेख नहीं मिलता है। किन्तु मरुधर प्रान्त जिसमें साचोर डिविजन में देवगिरा के पठन-पाठन का अत्यन्ताभाव होने से इनका अध्ययन दीक्षा पश्चात् ही हुआ हो, समीचीन मालूम होता है।

युगप्रधान आचार्य जिनचन्द्रसूरि ने सं० १६२८ में सांभलि के श्री संघ को पत्र दिया था, उसमें समयसुन्दर का नाम नहीं है। हो भी नहीं सकता, क्योंकि इस पत्र में उल्लिखित उपाधिधारक प्रमुख साधुओं के ही नामों का उल्लेख है। अतः सं० १६२८ में इस पत्र के देने के पूर्व या पश्चात् या आस-पास ही आचार्य श्री ने स्वहस्त * से इनको दीक्षा प्रदान कर अपने प्रमुख एवं प्रथम शिष्य श्री सकलचन्द्र गणि का शिष्य घोषित कर समयसुन्दर नाम प्रदान किया होगा।

कवि अपने को खरतरगच्छ का अनुयायी बतलाता हुआ, खरतरगच्छ ¶ के आद्याचार्य श्रीवर्धमानसूरि के प्रगुरु से अपनी परम्परा सिद्ध करता है। इस परम्परा में कवि केवल 'गणनायकों' के नामों का ही उल्लेख कर रहा है। अष्टलक्षी प्रशस्ति के अनुसार कवि का वंशवृक्ष इस प्रकार बनता है:—

* वादी हर्षनन्दन कृत गुरु गीत "सई हथे श्रीजिनचन्द्र"।

¶ खरतरगच्छ की उत्पत्ति के सम्बन्ध में देखें, मेरी लिखित वल्लभ-भारती प्रस्तावना।

नेमिचन्द्रसूरि
|
उद्योतनसूरि
|
वर्धमानसूरि[1] (सूरिमन्त्रशोधक)
|
जिनेश्वरसूरि[2] (वसतिमार्ग (खरतरगण) प्रकाशक)
|
जिनचन्द्रसूरि[3] (संवेगरंगशालाकार)
|
अभयदेवसूरि[4] (नवाङ्गीवृत्तिकारक)
|
जिनवल्लभसूरि[5]
|
जिनदत्तसूरि[6] (युगप्रधानपदधारक)
|
जिनचन्द्रसूरि[7] (नरमणिमण्डित भालस्थल)
|
जिनपतिसूरि (षट्त्रिंशद्वादविजेता)
|
जिनेश्वरसूरि
|
जिनप्रबोधसूरि
|
जिनचन्द्रसूरि[8]
|
जिनकुशलसूरि[9] (खरतरवसति प्रतिष्ठापक)
|
जिनपद्मसूरि[10] (कूर्चालसरस्वति)

१-५, देखें, मेरी लि० वल्लभभारती प्रस्तावना. ६ देखें, अगरचन्द भँवरलाल नाहटा द्वारा लि० युगप्रधान जिनदत्तसूरि. ७ लेखक वही, मणिधारी जिनचन्द्रसूरि. ८-९-१० लेखक वही, प्रगटप्रभावी दादा जिनकुशलसूरि.

सूत्रपात किया उस समय आचार्यश्री ने उसको शास्त्रार्थ के लिये आह्वान किया और उसके उपस्थित न होने पर तत्कालीन अन्य समग्र गच्छों के आचार्यों के समक्ष धर्मसागर जी को उत्सूत्र-

जो समाधान न थाय तो आ वा जैन-समाज मां दावानल अग्नि प्रकटे। आ माटे जोखमदार आचार्यों ने वच्चे पड्या वगर रही शकाय नहीं तेथी तपागच्छाचार्य विजयदानसूरिए उपरोक्त ग्रन्थ पाणी मां बोलावी दीधो अने तेने अप्रमाण ठेराव्यो। तेमणे जाहिरनामुं काढी 'सात बोल' नी आज्ञा काढी एक बीजा मत-वालाने वाद--विवाद नो अथडामण करता अटकाव्या हता। पण आटलाथी विरोध जोइए तेवो न शम्यो त्यारे विजयदानसूरि पछी आचार्य हीरविजयसूरि ए उक्त सात बोल पर विवरण करी 'बार बोल' ए नामनी बार आज्ञाओ जाहिर करी हती सं० १६४६। आथी जैन समाजमां घणी शान्ति आवी।" [पृ० ३]

× × × ×

"११. विक्रमनी सत्तरमी शताब्दि मां (सं० १६१७) अभयदेवसूरि खरतर हता के नहिं ते संबंधी पाटणमांज तपागच्छना धर्मसागर उपाध्याय अने खरतरगच्छना धनराज उपाध्यायने जबरो झगड़ो थयो हतो। धर्मसागरे एवु प्रतिपादन करवा मांड्युं हतुं के खरतरगच्छनी उत्पत्ति जिनेश्वरसूरि थी नहिं, पण जिनदत्तसूरि थी थई छे; अभयदेवसूरि खरतरगच्छमां थइ शकता नथी; जिनवल्लभसूरिए शास्त्र विरुद्ध प्ररूपणा करी छे–वगेरे चर्चाना विषयो पोताना औष्ट्रिक मतोत्सूत्र दीपिका नामना ग्रन्थमां मूक्या (रच्या सं० १६१७)। आ ग्रन्थनुं बीजुं नाम प्रवचन परीक्षा छे या बन्ने जूदा होय–बन्नेमां विषयो सरखा छे। तेमांना एकनुं बीजुं नाम कुमतिकंदकुद्दाल छे। आथी बहु होहाकार थयो। बे गच्छ वच्चे अथडामणी अने अन्ते प्रबल विखवाद उत्पन्न थतां ते क्यां अटकशे, ए विचारवानुं रह्युं।

वादी ¶ घोषित किया था। सम्राट् अकबर के आमन्त्रण से सूरिजी खम्भात से विहार कर सं० १६४८ फाल्गुन शुक्ला १२ के दिवस महोपाध्याय जयसोम, वाचनाचार्य कनकसोम, वाचक रत्ननिधान

जो जोखमदार आचार्यो ने वच्चे पड्या वगर चाले नहिं, ते थी तपागच्छना विजयदानसूरिए उक्त कुमतिकुद्दाल ग्रंथ सभा समक्ष पाणीमां बोलावी दीधो हतो अने ए ग्रन्थनी नकल कोईनी पण पासे होय तो, ते अप्रमाण ग्रन्थ छे माटे तेमानुं कथन कोइए प्रमाणभूत मानवुं नहिं, एवुं जाहेर कर्युं हतुं। खरतरगच्छ वालाए पोताना मतनुं प्रतिपादन करावा भगीरथ प्रयत्न सेव्यो हतो; ए वातना प्रमाणमां जणाववानुं के आपणा नायक समयसुन्दर उपाध्यायजी ना सं० १६७२ मां रचेला समाचारी शतक मां सं० १६१७ मां पाटण मां थयेला एक प्रमाण पत्र नी नकल आपेली छे के जेमां एवी हकीकत छे के अभयदेवसूरि खरतर-गच्छ मां थयेला छे, ए वात पाटणना ८४ गच्छो वाला माने छे, अने ए प्रमाण पत्र साचुं जणाय छे, अने तेनो हेतु उपरनो कलहवाद शमाववा अर्थे हतो।" [पृ० १५ टिप्पणी]

जहाँ प्रवचन-परीक्षा जैसे ग्रन्थ को अप्रामाणिक ठहराकर जल-शरण कराया गया और इसी कारण धर्मसागरजी को सात और बारह बोल निकाल कर गच्छ बाहर घोषित किया गया था। वहीं उन्हीं के विचारानुयायी उसी ग्रन्थ को प्रकाशित कर और उसी विचार सरणि को पुनः समाज पर लादकर जो समाज में विषमता का बीज बो रहे हैं, वह सचमुच में दयनीय विषय है। अस्तु, धर्मसागरजी कथित समस्त प्रश्नों का विशद-समाधान सह उत्तरके लिये देखें, मेरी लिखित वल्लभभारती प्रस्तावना।

¶ देखें, उ० समयसुन्दर रचित समाचारी शतक 'श्री अभयदेवसूरेः खरतरगच्छेशत्वाधिकारः' पृ० १६ [प्र० जि० भं० सूरत]

और पं० गुणविनय प्रभृति ३१ साधुओं के परिवार सहित लाहोर में सम्राट् से मिले और स्वकीय उपदेशों से प्रभावित कर आपने तीर्थों की रक्षा एवं अहिंसा प्रचार * के लिये आषाढी अष्टाह्निका एवं स्तम्भतीर्थीय जलचर रक्षक आदि कई फरमान प्राप्त किये थे। और सं० १६४६ फाल्गुन वदि १० के दिवस सम्राट के हाथ से ही युगप्रधान ¶ पद प्राप्त किया था: जिसका विशाल महोत्सव एक करोड़ रुपये व्यय कर महामन्त्री कर्मचन्द्रा बच्छावत ने किया था। एक समय जब कि सम्राट् जहांगीर अपने अन्तःपुर में सिद्धिचन्द्र नामक व्यक्ति को दुष्कृत्य करते हुए देखता है तो अत्यन्त ही कुपित होकर समग्र जैन साधुओं को कैद करने का और अपनी सीमा से बाहर करने का हुक्म निकाल देता है। उस समय जैन-शासन की रक्षा के निमित्त आचार्यश्री वृद्धावस्था में भी आगरा जाते हैं और

* युगप्रधान जिनचन्द्रसूरि परिशिष्ट ग.

विद्यामन्त्रविशेषैश्चमत्कृतः श्रीजलालुद्दीनोऽपि।
श्रीस्तम्भतीर्थजलनिधिजलजन्तुदयापरो वर्णम्। ८।
आषाढ–विमलपक्षे, दिनाष्टकं सर्वदेशसूत्रेषु।
अनुकम्पायाः पटहः साहेर्वचनेन दत्तो यैः। ६।
[उत्तराध्ययन वृत्ति प्रशस्तिः, हर्षनंदन कृता]

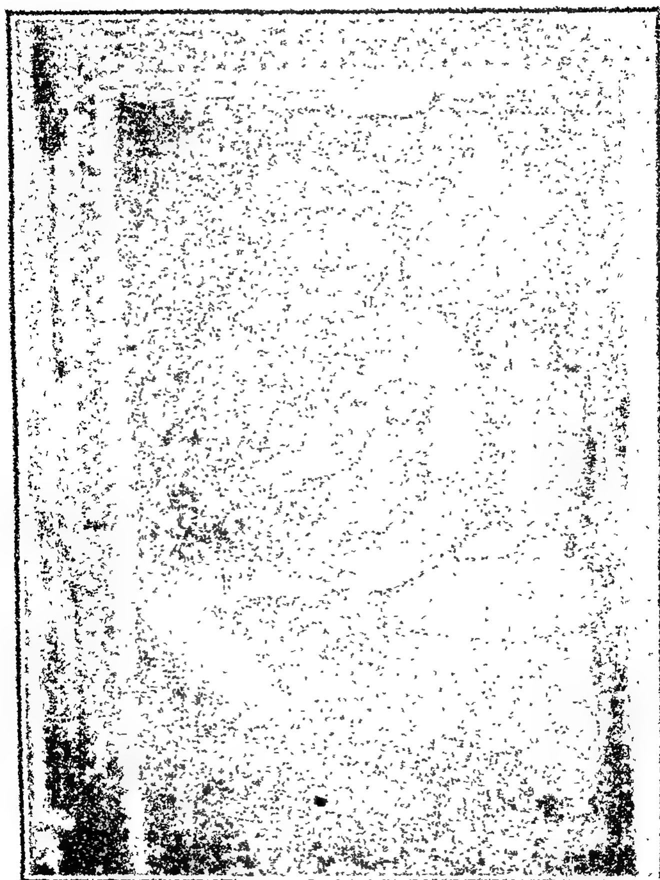
¶ तेजः श्रीमदकब्बराभिधनृपः श्रीपातिसाहिर्मुदा–
वादीद्यत्सु युगप्रधान इति सन्नाम्ना यथार्थेन वै ॥ ४ ॥
श्रीमन्त्रीश्वरकर्मचन्द्रविहितोद्यत्कोटिटङ्कव्ययं,
श्रीनन्द्युत्सवपूर्वकं युगवरा यस्मै ददौ स्वं पदम्।
श्रीमल्लाभपुरे दयाद्रढमति-श्रीपातिसाह्यामहा—
त्न्याच्छ्रीजिनचन्द्रसूरिसुगुरुः सत्स्फीततेजोयशाः ॥ ५ ॥
[श्रीवल्लभोपाध्याय कृत अभिधानचिन्तामणिनाममाला टीका.]

कर्मचन्द्रवंश प्रबन्ध वृत्ति सह.

स्वनामधन्य मन्त्रिवर श्री कर्मचन्द्रजी बच्छावत



२. युगप्रधान जिनचन्द्रसूरि मूर्तिः



(बीकानेर ऋषभदेव मन्दिर)

सम्राट् जहांगीर (जो उनको अपना गुरु मानता था) को समझा कर इस हुक्म को रद्द करवाते हैं।* सं० १६७० में आश्विन कृष्णा द्वितीया को बिलाड़ा में आपका स्वर्गवास हुआ था। महामन्त्री कर्मचन्द्र बच्छावत और अहमदाबाद के प्रसिद्ध श्रेष्ठी संघपति श्री सोमजी शिवा † आदि आपके प्रमुख उपासक थे। आपने सं० १६१७ विजयदशमी के दिवस पाटण में आचार्य प्रवर जिनवल्लभसूरि प्रणीत पौषधविधि प्रकरण पर ३५५४ श्लोक परिमाण की विशद टीका की रचना की; जो सैद्धान्तिक और वैधानिक दृष्टि से बड़ी ही उपादेय है।

कवि के गुरु श्री सकलचन्द्रगणि हैं; जो रीहड़ गोत्रीय¶ हैं, और जो हैं युगप्रधान जिनचन्द्रसूरि के आद्य शिष्य। जिनचन्द्रसूरि ने सं० १६१२ में गच्छनायक बनने पर सर्वप्रथम नन्दी 'चन्द्र' ही स्थापित की थी। अतः इनकी दीक्षा भी सं० १६१२ के अन्त में या १६१३ के प्रारंभ में ही हुई होगी। अथवा सं० १६१४ में आचार्य श्री बीकानेर पधारे, वहीं हुई हो। क्योंकि आपकी चरणपादुका नाल में रीहड़ गोत्रियों द्वारा स्थापित है। अतः शायद ये बीकानेर

* येभ्यस्तीर्थकरस्तदीय नृपतेः क्रोसं परित्यक्तवान,
येभ्यः साधुजनाः तुरुष्कनृपतेर्देशे विहारं व्यधुः। ६।
[हर्षनन्दन कृत मध्याह्नव्याख्यानपद्धति-प्रशस्तिः]

इसका विशेष अध्ययन करने के लिए देखें, नाहटा बन्धु लिखित युगप्रधान जिनचन्द्रसूरि पुस्तक का 'महान् शासन सेवा' नामक ग्यारहवां प्रकरण।

† देखें, ताजमल बोथरा लि० संघपति सोमजी शिवा।

¶ गणिः सकलचन्द्राख्यो, रीहडान्वयभूषणम् ॥ १० ॥ [कल्पलता प्रशस्तिः]

के निवासी हों और वहीं दीक्षा हुई हो! सं० १६२८ के सांभलि वाले पत्र में आपका नामोल्लेख है अतः सं० १६२८ से १६४० के मध्यकाल में ही आपका स्वर्गवास हुआ हो, ऐसा प्रतीत होता है। आपकी जो चरण पादुका* नाल (बीकानेर) दादा-वाड़ी में स्थित है जिसके निर्मापक रीहड़ गोत्रीय हैं, सम्भव है ये आपके ही संबंधी हों! पादुका के प्रतिष्ठा-कारक हैं आचार्य जिनचन्द्रसूरि और जिनकी उपाधि युगप्रधान सूचित की गई है जो आपको सं० १६४९ में प्राप्त हुई थी। अतः पादुका की प्रतिष्ठा इसके बाद ही हुई है।

श्री देशाई ने सकलचन्द्र गणि के सम्बन्ध में अपने लेख में लिखा है:—

"सकलचन्द्र गणि—तेओ विद्वान् पंडित अने शिल्पशास्त्रमां कुशल हता। प्रतिष्ठाकल्प श्लोक (११०००) जिनवल्लभसूरि‡ कृत धर्मशिक्षा पर वृत्ति (पत्र १२८), अने प्राकृतमां हिताचरण नामना औपदेशिक ग्रन्थ पर वृत्ति १२४२९ श्लोकमां सं० १६३० मां रचेल छे।"

जो वस्तुतः भ्रमपूर्ण है। इन ग्रन्थों के रचयिता पं० सकल-

* "...........वर्षे ....सुदि ३ दिने शनौ सिद्धियोगे श्री जिनचन्द्रसूरि शिष्यमुख्य पं० सकल........चरण पादुका श्री खरतरगणाधीश्वर युगप्रधानप्रभु श्री...........श्रीजिनचन्द्र सूरिभिः प्रतिष्ठितं ....हड़ जयवंत लूणाभ्यां कारिते ॥"

† कविवर समयसुन्दर पृ. १६ टि० १३.

‡ जिनरत्नकोष और जैन ग्रन्थावली में यही उल्लेख है। किन्तु मेरे नम्र विचारानुसार विजयचन्द्रसूरि प्रणीत धर्मशिक्षा पर वृत्ति होगी न कि जिनवल्लभीय धर्मशिक्षा पर। विशेष विचार तो प्रति सन्मुख रहने पर ही हो सकता है। अस्तु,

चन्द्र गणि तपगच्छीय विजयदानसूरि के शिष्य हैं तथा भानुचन्द्र महोपाध्याय के दीक्षा गुरु हैं। नाम और समय की साम्यता वश ही देशाईजी भूल कर गये हैं।

शिक्षा और पद

कवि ने अपना विद्यार्जन यु० जिनचन्द्रसूरि वाचक महिमराज (श्री जिनसिंहसूरि *) और समयराजोपा-

* आचार्य जिनसिंहसूरि युगप्रधान जिनचन्द्रसूरि के पट्टधर थे और साथ ही थे एक असाधारण प्रतिभाशाली विद्वान्। इनका जन्म वि० १६१५ के मार्गशीर्ष शुक्ला पूर्णिमा को खेतासर ग्राम निवासी चोपड़ा गोत्रीय शाह चांपसी की धर्मपत्नी श्री चाम्पलदेवी की रत्नकुक्षि से हुआ था। आपका जन्म नाम था मानसिंह। स० १६२३ में जब आचार्य जिनचन्द्रसूरि खेतासर पधारे थे, तब आचार्यश्री के उपदेशों से प्रभावित होकर एवं वैराग्यवासित होकर आठ वर्ष की अल्पायु में ही आपने आचार्यश्री के पास ही दीक्षा ग्रहण की। दीक्षावस्था का आपका नाम रखा गया था महिमराज। आचार्यश्री ने स० १६४० माघ शुक्ला ५ को जेसलमेर में आपको 'वाचक' पद प्रदान किया था। '*जिनचन्द्रसूरि अकबर प्रतिबोध रास*' के अनुसार सम्राट् अकबर के आमंत्रण को स्वीकार कर सूरिजी ने वाचक महिमराज को गणि समयसुन्दर आदि ६ साधुओं के साथ अपने से पूर्व ही लाहोर भेजा था। लाहोर में सम्राट् आपसे मिलकर अत्यधिक प्रसन्न हुआ था। सम्राट् के पुत्र शाहजादा सलीम (जहांगीर) सुरत्राण के एक पुत्री मूलनक्षत्र के प्रथम चरण में उत्पन्न थी; जो अत्यंत ही अनिष्टकारी थी। इस अनिष्ट का परिहार करने के लिये सम्राट् की इच्छानुसार सं० १६४८ चैत्र शुक्ला पूर्णिमा को महिम-

ध्याय¶ के चरण कमलों में रहकर किया था। यही कारण है कि कवि अपनी सर्वप्रथम रचना भावशतक और अपनी विशिष्ट कृति अष्टलक्षी में इन दोनों को मेरी विद्या के 'एक मात्र गुरु' श्रद्धा-पूर्वक कहता हुआ नजर आ रहा है:—

"श्रीमहिमराजवाचक–वाचकवर–समयराजपुण्यानाम् ।
मद्विद्यैकगुरूणां, प्रसादतो सूत्रशतकमिदम् ॥"

[भावशतक]

"श्रीजिनसिंहमुनीश्वर–वाचकवर–समयराज–गणिराजाम् ।
मद्विद्यैकगुरूणामनुग्रहो मेऽत्र विज्ञेयः ॥"

[अष्टलक्षी पृ० २८]

¶ उपाध्याय समयराज भी आचार्य जिनचन्द्रसूरि के प्रमुख शिष्यों में से हैं। आपके सम्बन्ध में कोई ऐतिह्य वृत्त प्राप्त नहीं है। 'राज' नंदी को देखते हुए आपकी दीक्षा भी जिनसिंहसूरि के साथ ही या आस-पास सं० १६२३ में ही हुई होगी। आपकी प्रणीत निम्न कृतियां प्राप्त हैं :--

१. धर्ममंजरी चतुष्पदी (१६६२) मेरे संग्रह में ।
२. पर्युषण व्याख्यान पद्धति (नाहटा संग्रह में)
३. जिनकुशलसूरि प्रणीत शत्रुञ्जय ऋषभजिनस्तव अवचूरि (मेरे संग्रह में)
४. साधु-समाचारी (आगरा विजय धर्म लक्ष्मी ज्ञान मन्दिर) आदि कई संस्कृत भाषा के स्तोत्र ।

राजजी ने अष्टोत्तरी शान्तिस्नात्र करवाया; जिसमें लगभग एक लाख रुपया व्यय हुआ था और जिसकी पूजा की पूर्णाहुति (आरती) के समय शाहजादा ने १००००) रु० चढ़ाये थे।

काश्मीर विजय यात्रा के समय सम्राट की इच्छा को मान

अध्येता समयसुन्दर ने इन दोनों विद्वानों के समीप किन किन ग्रन्थों का अध्ययन किया, इसका कोई उल्लेख नहीं मिलता है। किन्तु कवि की जिस प्रतिभा का परिचय हमें तत्प्रणीत द्वितीय कृति अष्टलक्षी से मिलता है; उससे अनुमान करने पर यह सिद्ध है कि आपने वाचकों से सिद्धहेमशब्दानुशासन, अनेकार्थ संग्रह, विश्वशंभुनाममाला, काव्यप्रकाश, पंच महाकाव्य आदि ग्रन्थों के साथ साथ जैन आगमिक साहित्य का और जैन दर्शन का विशेपतया अध्ययन किया था। इनके ज्ञानार्जन की योग्यता के सम्बन्ध में हम अगले प्रकरणों में विचार करेंगे। अस्तु

देते हुए आचार्यश्री ने वा० महिमराज को हर्षविशाल आदि मुनियों के साथ काश्मीर भेजा। काश्मीर के प्रवास में वा० महिमराज की अवर्णनीय उत्कृष्ट साधुता और प्रासंगिक एवं मार्मिक चर्चाओं से अकबर अत्यधिक प्रभावित हुआ। उसी का फल था कि वाचकजी की अभिलाषानुसार गजनी, गोलकुण्डा और काबुल पर्यन्त अमारि (अभयदान) उद्घोषणा करवाई और मार्ग में आगत अनेक स्थानों (सरोवर) के जलचर जीवों की रक्षा कराई। काश्मीर विजय के पश्चात् श्रीनगर में सम्राट् को उपदेश देकर आठ दिन की अमारी उद्घोषणा कराई थी।
(देखें, जिनचन्द्रसूरि प्रतिबोध रास)

"शुभ दिनइ रिपुबल हेलि भेजी, नयर श्रीपुरि उतरि।
अमारी तिहां दिन आठ पाली, देश साधी जयवरी ॥"
(जि० प्र० प्र० रास)

"श्रीपुरनगर आई, अमारि गुरु पलाई;
मछरी सबई छोराइ, नीकउ भमउ भइयारी।" (कु० पृ० ३६२)

वाचकजी के चारित्रिक गुणों से भावित होकर, स० अकबर ने आचार्यश्री को निवेदन कर बड़े ही उत्सव के साथ में आपको

गणिपद—भावशतक (र० सं० १६४१) में सूचित 'गणि'* शब्द को देखते हुये ऐसा प्रतीत होता है कि आपकी मेधावी प्रतिभा और संयमशीलता से आकर्षित होकर आचार्य श्रीजिनचन्द्रसूरि ने स्वकरकमलों से वाचक श्री महिमराज के साथ ही सं० १६४० माघ शुक्ला पंचमी को जेसलमेर में कवि को 'गणि' पद प्रदान किया होगा !

* "तच्छिष्य समयसुन्दरगणिना स्वाभ्यास वृद्धिकृते ॥६६॥ शशिसागररसभूतल (१६४१) संवति विहितं च भावशतकमिदम् ॥१००॥"

सं० १६४६ फाल्गुन कृष्णा १० के दिन आचार्यश्री के ही करकमलों से आचार्य पद प्रदान करवा कर जिनसिंहसूरि नाम रखवाया। (देखिये, उ० समयसुन्दर रचित 'जिनसिंहसूरि पदोत्सव काव्यं')

सम्राट् जहांगीर भी आपकी प्रतिभा से काफी प्रभावित था। यही कारण है कि अपने पिता का अनुकरण कर स० जहाँगीर ने आपको युगप्रधान पद प्रदान किया था।

(देखें, राजसमुद्र कृत 'जिनसिंहसूरि गीतम्')।

गच्छनायक बनने पश्चात् आपकी अध्यक्षता में मेड़ता निवासी चौपड़ा गोत्रीय शाह आसकरण द्वारा शत्रुञ्जय तीर्थ का सङ्घ निकाला गया था।

सं० १६७४ में आपके गुणों से आकर्षित होकर, आपका सहवास एवं धर्मबोध प्राप्त करने के लिये सम्राट जहांगीर ने शाही स्वागत के साथ अपने पास बुलाया था। आचार्यश्री भी बीकानेर से विहार कर मेड़ता आये थे। दुर्भाग्यवश वहीं सं० १६७४ पोष शुक्ला त्रयोदशी को आपका स्वर्गवास हो गया।

आपके जिनराजसूरि और जिनसागरसूरि आदि कई विद्वान् शिष्य थे।

वाचनाचार्य पद— ° १६४६ फाल्गुन शुक्ला द्वितीया को लाहोर में जिस समय वाचक महिमराज को आचार्य श्री ने आचार्य पद प्रदान कर जिनसिंहसूरि नाम उद्घोषित किया था; उसी समय गणि पद भूषित कवि को 'वाचनाचार्य'¶ पद प्रदान कर सम्मानित किया था।

उपाध्याय पद—श्री राजसोम गणि प्रणीत 'समयसुन्दर गुरु गीतम्'† के अनुसार यह निश्चित है कि तत्कालीन गच्छनायक श्रीजिनसिंहसूरि ने लवेरा में आपको 'उपाध्याय' पद से अलंकृत किया था, किन्तु संवत् का इस गीत में उल्लेख न होने से हमें उनके ग्रन्थों के आधार से ही निश्चित करना है।

सं० १६६८ तक की आपकी कृतियों में उपाध्याय पद का कहीं भी उल्लेख नहीं है। नाहटाजी के लेखानुसार सं० १६७१ में लिखित अनुयोगद्वारसूत्र की पुष्पिका में भी वाचक पद का ही उल्लेख है। किन्तु कवि की १६७१ के पश्चात् की रचनाओं में उपाध्याय पद का उल्लेख है। देखिये:—

"तेषां शिष्यो मुख्यः, स्वहस्तदीक्षित सकलचन्द्रगणिः।
तच्छिष्य-समयसुन्दर सुपाठकैरकृत शतकमिदम् ॥४॥"

[विशेषशतक* सं० १६७२]

¶ "तेषु च गणि जयसोमा, रत्ननिधानाश्च पाठका विहिता।
गुणविनय-समयसुन्दरगणिकृतौ वाचनाचार्यौ ॥"

[कर्मचन्द्रवंश प्रबन्ध]

† "श्रीजिनसिंहसूरिंद, सहेर लवेरइ हो पाठक पद कीयउ"

* "विक्रमसंवति लोचनमुनिदर्शनकुमुदबांधव (१६७२) प्रमिते।
श्रीपार्श्वजन्मदिवसे, पुरे श्रीमेडतानगरे ॥ २ ॥"

"जयवंता गुरु राजीयारे, श्रीजिनसिंहसूरि राय ।
समयसुन्दर तसु सानिधि करी रे, इम पभणइ उवझाय रे ॥६॥"
[सिंहलसुत प्रियमेलक रास¶ सं० १६७२]

अतः यह निश्चित है कि सं० १६७१ के अंतिम भाग में या १६७२ के पोष मास के पूर्व ही आपको उपाध्याय पद प्राप्त हो गया था।

महोपाध्याय पद—परवर्ती कई कवियों ने आपको 'महोपाध्याय' पद से सूचित किया है; जो वस्तुतः आपको परम्परानुसार प्राप्त हुआ था। सं० १६८० के पश्चात् गच्छ में आप ही वयोवृद्ध, ज्ञानवृद्ध और पर्यायवृद्ध थे। साथ ही खरतरगच्छ की यह परम्परा रही है कि उपाध्याय पद में जो सबसे बड़ा होता है, वही महोपाध्याय कहलाता है। अतः स्वतः सिद्ध है कि आपकी महिमा और योग्यता से प्रभावित होकर यह पद लिखा गया है। यही कारण है कि वादी हर्षनन्दन उत्तराध्ययन सूत्र के आरम्भ में "श्रीसमयसुन्दर महोपाध्याय चरणसरोरुहाभ्यां नमः" लिखता है।

प्रवास और उपदेश

कवि के स्वरचित ग्रन्थों की प्रशस्तियाँ, तीर्थमालायें और तीर्थस्तव साहित्य को देखते हुये ऐसा प्रतीत होता है कि कवि का प्रवास उत्तर भारत के क्षेत्रों में बहुत लम्बा रहा है। सिन्ध, उत्तरप्रदेश, राजस्थान, सौराष्ट्र, गुजरात के प्रदेशों में विचरण अत्यधिक रहा है। प्रशस्तियाँ आदि के अनुसार वर्गीकरण किया जाय तो इस प्रकार होगा:—

¶ "संवत सोलबहुत्तरि समइ रे, मेडतानगर मझारि।"

सिन्ध—मुलतान, मरोठ, उच्चनगर, सिद्धपुर, देरावर।

पंजाब—लाहोर, सरसपुर, पीरोजपुर, कसूर।

उत्तरप्रदेश—उग्रसेनपुर (आगरा), अकबरपुर[1], सिकंदरपुर[2], श्रीचीपुर[3]।

राजस्थान—सांगानेर, चाटसू, मंडोवर, तिमरी, मेड़ता, फलवर्धी पार्श्वनाथ, हिंडवाणा, नागोर, जालोर, नाकोड़ा, विलाड़ा, लवेरा, सेत्राश, सांचोर, सेत्रावा, घंघाणी, वरकाणा, नडुलाइ, नलोल,[4] राणकपुर, आबू, अचलगढ़, देलवाड़ा, जीरावला, जेसलमेर, अमरसर, लौद्रवा, वीरमपुर, बीकानेर, नाल, रिणी, लूणकरणसर, चंदवारि[5] (?)

सौराष्ट्र—नागद्रह,[6] नवानगर,[7] सौरिपुर,[8] गिरनार, शत्रुञ्जय।

गुजरात—अांकेट, पालनपुर, ईडर, शंखेश्वर, सेरीसर, पाटण, नारंगा,[9] देवता,[10] भडकुच,[11] भोडुआ,[12] अमदाबाद, गौडी-पार्श्वनाथ, खंभात, परिमताल, कलिकुंड, कंसारी, अंबावती,[13] मगलोर, अजाहरा।

श्री देशाई[14] तीर्थमालाओं में उल्लिखित सम्मेतशिखर, राज-

---

१. कुसुमाञ्जलि पृ० ३०६
२. वही पृ० १७१
३. वही पृ० १७८
४. ,, पृ० १७०
५. वही पृ० १७, ६६,
६. ,, पृ० १५२
७. ,, पृ० ५८,
८. ,, पृ० ११२
६. ,, पृ० १७३,
१०. ,, पृ० १७७
११ ,, पृ० १७८,
१२. ,, पृ० २०६.
१३. ,, पृ० १६०,
१४. देखो, कविवर समयसुन्दर निबंध पृ० २६–२७,

गृही के पांच पहाड़, क्षत्रियकुण्ड, चम्पानगरी, पावापुरी, अंतरीक्ष और मक्षी आदि प्रदेशों में विचरण का अनुमान करते हैं; जो समुचित नहीं है। क्योंकि इस बात का कोई पुष्टप्रमाण नहीं है कि कवि का इन प्रदेशों में विचरण हुआ हो ! किन्तु कवि की रचनाओं और प्रवास को देखते हुये यह सिद्ध है कि कवि का इन प्रदेशों में विचरण नहीं हुआ है . किन्तु, प्रसिद्ध तीर्थ-स्थान होने से स्तव रूप में नमस्कार-मात्र ही किया है।

कवि अपने प्रवास को तीर्थयात्रा और प्रचार का माध्यम बनाकर सफलता प्रदान कर रहा है। जहां जहां भी तीर्थस्थल आते हैं, वहां-वहां कवि मुक्त हृदय से भक्ति करता हुआ भक्त के रूप में दिखाई पड़ता है, नूतन स्तवन बनाकर अर्चा करता रहता है। कवि के तीर्थयात्रा सम्बन्धी कई स्तव भी ऐतिहासिक तथ्यों का उद्घाटन करते हैं। उदाहरण स्वरूप घंघाणी* और राणकपुर¶ का स्तवन देखिये।

कवि विचरण करता हुआ अपने समाज में तो ज्ञान और धर्म का प्रचार करता ही रहा है; किन्तु साथ ही राजकीय अधिकारियों से भी सम्बन्ध स्थापित कर, अहिंसा-धर्म का भी मुक्तरूप से प्रचार करता रहा है। कवि अपनी वृत्ति को संकीर्ण न रखकर, केवल स्वसमुदाय में ही नहीं, अपितु सामान्य जनता और मुसल-

---

* कुसुमाञ्जलि पृ० २३२।

¶ वही पृ० २८। इस स्तवन में कवि खरतरवसही का भी उल्लेख करता है:—

'खरतर वसही खांतीसु रे लाल, निरखंता सुख थाय मन मोह्यउ रे।६।'

जो कि वर्तमान में नहीं है। किन्तु सं० २००९ वैशाख शुक्ला में मैं यात्रार्थ राणकपुर गया था। वहां वेश्या का मन्दिर नाम से प्रसिद्ध मन्दिर के तल घर में पिप्पलक खरतर शाखा के प्रवर्तक आचार्य जिनवर्धनसूरि के पौत्र शिष्य, श्रीजिनचन्द्रसूरि

मानों तक से अपना संपर्क स्थापित कर उपदेश देता है। यही कारण है कि वह सिद्धपुर (सिन्ध) के कार्यवाहक (अधिकारी) *मखनूम मुहम्मद शेख काजी* को अपनी वाणी से प्रभावित कर समग्र सिन्ध प्रान्त में गौमाता का, पञ्चनदी के जलचर जीव एवं अन्य सामान्य जीवों की रक्षा के लिये अभय की उद्घोषणा करवाता है†। इसी प्रकार जहां जेसलमेर में मीना-समाज सांडों का

के पट्टधर श्रीजिनसागरसूरि प्रतिष्ठित एक मूर्ति (जो संभवतः मूलनायक की होगी !) लगभग ४५ अंगुल की थी और १०-१२ मूर्तियां छोटी मौजूद हैं। इससे निश्चित है कि कवि वर्णित खरतरवसही का ध्वंस होने से मूर्तियें उक्त मन्दिर के तलघर में रखी गई हों।

† शीतपुर मांहे जिण समझावियउ, मखनूम महमद सेखोजी।
जीवदया पड़इ फेराविय़ो, राखी चिहुँ खंड रेखोजी ।३।
[देवीदास कृत समयसुन्दर गीतम्]
सिंधु विहारे लाभ लियो घणो रे, जी मखनूम सेख।
पांचे नदियां जीवदया भरी रे, वलि धेनु विशेष ॥ ५ ॥
[वादी हर्षनन्दन कृत समयसुन्दर गीतम् ।]

वादी हर्षनन्दन तो कवि के उपदेश द्वारा अकबर के हुक्म से सम्पूर्ण गुर्जरभूमि में किया हुआ अमारि पटह का भी उल्लेख करता है :—

"अमारिपटहा यैस्तु, साहिपत्रप्रमाणतः।
दापयांचक्रिरे सर्व-गुर्जराधरणीतले ।१०।
श्रीउच्चनगरे शेष, श्रीमखतूम जिहानीयाम्।
प्रतिबोध्य गवां घातो, वारितस्तारितारभिः । ११ ।"
[ऋषिमण्डल टीका प्र०]

"मखतूमजिहानीया, म्लेच्छगुरु प्रबोधकाः।
सिन्धौ गोमरणभय-त्रातारः पापहर्तारः । १४ ।"
[उ० टी० प्र०]

वध किया करता था, वहां ही जैसलमेर के अधिपति रावल भीमजी[१] को बोध देकर इस हिंसा-कृत्य को बन्द करवाया था और मंडोवर[२] (मंडोर, जोधपुर स्टेट) तथा मेड़ता[३] के अधिपतियों को ज्ञान-शिक्षा देकर शासन-सेवी बनाया था।

औदार्य और गुणग्राहकता

कवि सचमुच में ही भावुकता और औदार्य के कारण कवि ही था। वैसे तो कवि खरतरगच्छ का अनुयायी और महास्तंभ गीतार्थ था; किन्तु अनुयायी होने पर भी उसके हृदय में श्रुतदेवी का विलास होने कारण किंचित् भी हठाग्रह या संकीर्णता नहीं थी; थी तो केवल उदारता ही। उदाहरण स्वरूप देखियेः—

तपागच्छ के धर्मसागरजी जहां प्रलापी की तरह खरतरगच्छ को और उसके कर्णधार महाप्रभावी आचार्यों को खर-तर, निह्नव, उत्सूत्रभाषी, मिथ्याप्रलापी और जार-पुत्र आदि अशिष्ट विशेषण दे रहा था वहां कवि अपने गच्छ और आचार्यों की मर्यादा तथा अपनी वैधानिक परम्पराओं को सुरक्षित रख रहा था। 'समाचारी शतक' में कवि अभयदेवसूरि की खरतरगच्छीयता, षट्कल्याणक निर्णय, अधिकमास निर्णय, उपवास सह पौषध और खरतरगच्छ की परिभाषा एवं ऐतिहासिकता सिद्ध करता हुआ शास्त्रीयता का प्रतिपादन कर रहा है। किन्तु क्या मजाल की कहीं भी धर्मसागर का नामोल्लेख भी किया हो अथवा कहीं भी, किसी के लिये भी अशिष्ट विशेषणों का या शब्दों को प्रयोग किया हो ! अपितु देखा ऐसा जाता है कि कवि, धर्मसागर जी के ही सहपाठी, गुरुभ्राता और तपागच्छनायक हीरविजयसूरि

१-२-३ देखें, युगप्रधान जिनचन्द्रसूरि पृ० १६७।

को अपने गणनायक के समान ही प्रभाविक और जिनशासन का सितारा मानकर स्तुति करता है:—

भट्टारक तीन भये बड़भागी।
जिण दीपायउ श्रीजिनशासन, सबल पडूर सोभागी। भ० १।
खरतर श्रीजिनचन्द्रसूरीसर, तपा हीरविजय वैरागी।
विधिपक्ष धरममूरति सूरीसर, मोटो गुण महात्यागी। भ० २।
मत कोउ गर्व करउ गच्छनायक, पुण्य दशा हम जागी।
समयसुन्दर कहइ तत्त्वविचारउ, भरम जाय जिम भागी। भ० ३।

कवि गुणों का ग्राहक और साधुता का पूजक था। न तो उसके सामने गच्छ का ही महत्त्व था और न था छोटे-मोटे का ही महत्त्व, अपितु महत्त्व था तो केवल गुणों का आदर करना। यही कारण है कि पार्श्वचन्द्रगच्छ (लघु-समुदायी) के आचार्य विमलचन्द्रसूरि के शिष्य पूँजा ऋषि थे जो रातिज (गुजरात) ग्राम निवासी कडुआ पटेल गोरा और धनबाई का पुत्र था और जिसने १६७० में अहमदाबाद में दीक्षा ली थी। बड़ा ही उग्र तपस्वी था। देखा जाय तो कवि, पुञ्जा ऋषि से अवस्था, ज्ञान, प्रतिभा और चारित्र में अधिक सम्पन्न होने पर भी पूँजा ऋषि की तपस्या से अत्यधिक प्रभावित होता है और श्लाघा पूर्वक रास में वर्णन करता है :—

श्रीपार्श्वचन्द्र ना गच्छ मांहे, ए पुंजो ऋषि आज।
आप तरैं नें तारिवै, जिम बड़ सफरी जहाज। ८।

× • × ×

ऋषि पुंजो अति रूड़ो होवइ, जिन शासन मांहे शोभ चढावइ।१४।
तेहना गुणगातां मन मांहइ, आनन्द उपजै अति उछाहे।
जीभ पवित्र हुवे जस भणतां, श्रवण पवित्र थाये सांभलतां।१५।

ऋषि पुंजे तप कीधौ ते कहुं, सांभलजो सहु कोई रे।
आज नइ कालै करइ कुण एहवा, पणि अनुमोदन थाई रे।१६।

× × ×

पुंजराव मुनिवर वंदो, मन भाव मुनीसर सोहै रे।
उग्र करइ तप आकरौ, भवियण जन मन मोहै रे।३२।

× × ×

आज तो तपसी एहवो, पुंजा ऋष सरीखो न दीसइ रे।
तेहनै वांदता विहरावतां, हरखै कवि हियड़ो हींसइ रे।३५।
एक वे वैरागी एहवा, श्रीपासचन्द गच्छ मांहि सदाई रे।
गरुयड वाढइ गच्छ मांहि, श्रीपासचन्द्रसूरिनी पुण्याई रे।३६।

× × ×

इतना ही नहीं कवि के हृदय में गच्छ वाद तो दूर रहा किन्तु श्वेताम्बर-दिगम्बर जैसे विवादास्पदीय विषयों से भी वे दूर रहे। उनके तीर्थों के प्रति भी इनकी वैसे ही श्रद्धा और आदर भक्ति है, जैसे कि अपने तीर्थों के प्रति। दिगम्बर प्रसिद्ध तीर्थस्थलों में भी कवि यात्रा करने जाता है और भाव अर्चा करता है:—

"चन्द्रपुरी अवतार, लक्ष्मणा माता मल्हार,
चन्द्रमा लांछन सार, उरु अभिराम में।
वदन पूनिमचंद, वचन शीतलचंद,
महासेन नृपचंद, नवनिधि नाम में।
तेज करइ झिग झिग, फटित रतन बिंब,
सांछ्यो है............दिगम्बर धाम में।
समयसुन्दर इम, तीरथ कहइ उत्तम,
चन्द्रप्रभ भेट्यो हम, चांदवारि गाम में। ८।

इस प्रकार की विशालहृदयता और उदारता उस समय के महर्षियों में भी विरलता से प्राप्त होती है जैसे कि कवि में थी।

सचमुच में कवि के जैसी गुणग्राहकता तत्कालीन मुनि-जनों में होती तो आज 'गच्छवाद' का विकृत स्वरूप हमें देखने को प्राप्त नहीं होता और न समाज की ऐसी करुणदशा ही होती। आज भी हम यदि कवि की इस गुणग्राहकता को अपना करके चलें तो निश्चय ही हम विश्व में अपना स्थान बना सकेंगे। अस्तु.

गुजरात का दुष्काल और कवि का क्रियोद्धार

कवि के जीवन को करुण और दयनीय स्वरूप प्रदान करने वाला गुर्जर देश का संवत् १६८७ का भयंकर दुष्काल है। इस दुष्काल ने अन्नाभाव के कारण इस प्रकार की दुर्दशा कर दी थी-कि चारों तरफ त्राहि-त्राहि की पुकार मची हुई थीः—

अध पा न लहै अन्न भला नर थया भिखारी,
मूकी दीधउ मान, पेट पिण भरइ न भारी,
पमाडियाना पांन, केइ बगरी गइ कांटी,
खावे खेजड़ छोड़, शालितुस सबला बांटी।
अन्नकण चुणइ के अइंठि में, पीयइ अइंठि पुसली भरी।
समयसुन्दर कहइ सत्यासीया, एह अवस्था तइं करी ॥८॥

× × ×

मांटी मुंकी घइर, मुक्या बइरे पणि मांटी,
बेटे मुक्या बाप, चतुर देतां जे चांटी,
भाई मुकी भइण, भइणि पिण मुंक्या भाइ,
अधिको व्हालो अन्न, गइ सहु कुटुम्ब सगाइ।
घरबार मुंकी माणस घणा, परदेशइ गया पाधरा,
समयसुन्दर कहइ सत्यासीया, तेही न राख्या आधरा ॥९॥

× × ×

इस दुष्काल ने अपने भयंकर वरद हस्त से समाज के रुधिर और मज्जा से यमराज को भी काफी प्रसन्न किया थाः—

मूआ घणा मनुष्य, रांक गलीए रडवडिया,
सोजो वल्यउ शरीर, पछइ पाज मांहे पडिया;
कालइ कवण वलाइ, कुण उपाडइ किहा काठी,
ताणी नाख्या तेह, मांडि थइ सगलां माठी।
दुरगंधि दशो दिसि उछली, मडा पड्या दीसइ मुआ,
समयसुन्दर कहइ सत्यासीया, किण घरइ न पड्या कुकुआ ॥१६॥

× × ×

ऐसी भयंकर अवस्था में, जो उपासक, देव-गुरु और धर्म के परमपूजारी और श्रद्धालु थे वे भी अपने कर्त्तव्यों से पराङ्मुख हो गये थे। अतः उपासकों के भगवत्तुल्य ८४ गच्छ के साधुओं की दशा भी आहार न मिलने के कारण बड़ी विचित्र हो गई थी। देवमंदिर शून्य से हो गय थे :—

घर तेडी घणी वार, भगवान ना पात्रा भरता,
भागा ते सहु भाव, निपट थया बहिरण निरता;
जिमता जडइ किमाण, कहै सवार छै केई,
घइ फेरा दस पांच, जती निठ जायइ लेई।
आपइ दुखइ अणछूटतां, ते दूषण सहु तुझ तणउ;
समयसुन्दर कहइ सत्यासीया, विहरण नहीं विगुचणउ।१५।

× × ×

पडिकमणउ पोसाल, करण को श्रावक नावइ,
देहरा सगला दीठ, गीत गंधर्व न गावइ;
शिष्य भणइ नहीं शास्त्र, मुख भूखइ मचकोडइ,
गुरुवंदण गइ रीति, छती प्रीत माणस छोडइ।
वखाण खाण माठा पड्या, गच्छ चौरासी एही गति;
समयसुन्दर कहइ सत्यसीया, कांइ दीधी तइं ए कुमति।१५।

× × ×

इस सत्यासीया भाग्यशाली ने तो कई आचार्यो को अपना ग्रास बनाया था। कितने गीतार्थों को अपने अधिकार में किया था; कल्पना ही नहीं :—

श्री, ललितप्रभसूरि, पाटण, पूनमिया सुगुरु,
प्रभु लहुडी पोसाल, पूज्य वे पींपलिया खरतर;
गुजराती गुरु वेउ, वहउ जसवंत नइ केसव,
शालिवाडियउ सूरि, कहूँ किंतो पूरो हिसब।
सिरदार घणेरा सहरया, गीतारथ गिणती नहीं;
समयसुन्दर कहइ सत्यासीया, तुं इतियारउ सालो सही।।१८।

ऐसी अवस्था में कई साधुओं ने उल्टा लाभ उठाया था। श्रावकों की अनिच्छा होते हुये भी अनेकों अनाथ बच्चों को दीक्षित कर जमात बढ़ाई थी। इसी पर कवि व्यंग्य कसता हुआ कहता हैः—

आपणा वाल्हा आंत्र, पड्या जे आपणां पेटा,
नाण्यो नेह लिगार, बापइ पिण वेच्या वेटा;
लाधउ जतीए लाग, मूं ही नइं मांहइ लीधा;
हुंती जितरी हुंस, तीए तितराहिज कीधा।
फूकीया पणु श्रावक किता, तदि दीक्षा लाभ देखाडीया;
समयसुन्दर कहइ सत्यासीया, लइं कुटुम्ब विछोहा पाडीया।१०।

× × ×

कवि भी इस दुष्काल की मार से बचा नहीं। इधर तो कवि की वृद्धावस्था और इधर शिष्यों द्वारा त्याग; ऐसी अवस्था में यह ८४ गच्छ का सर्वमान्य कवि अति-दुर्बल और पीड़ित हो जाता है। फिर भी क्षीण देही कवि अपने शिष्यों के मोह में ग्रसित होकर, साधुओं के लिये अनाचरणीय, शास्त्र, पात्र और वस्त्र बेचकर कितना ही काल व्यतीत करता है*। पर, हा, हतभाग्य! कवि के वे ही शिष्य उसका त्याग कर जाते हैं:—

दुःखी थया दरसणी, भूख आधी न खमायइ;
श्रावक न करी सार, लिए धीरज किम थायइ,
चेले कीधी चाल, पूज्य परिग्रह परहउ छांडउ;

* यह दशा उस समय सर्व साधारण की थी।

पुस्तक पाना वेचि, जिम तिम अम्हनइ जीवाडइ।
वस्त्र पात्र वेची करी, केतोक तो काल काढियउ,
समयसुन्दर कहइ सत्यासीया, तुनइ निपट निरधाटीयउ।१३।

× × ×

इस प्रकार दुर्भिक्ष से स्वस्थ होने पर कवि अनुभव करता है कि स्वसाधना और परार्थसाधना जो हमारा जीवन का लक्ष्य है, उससे हम दूर होते चले जा रहे हैं। साध्वाचार के प्रतिकूल शिथिलता में पनपते जा रहे हैं जो हमारे साध्यजीवन के लिये अत्यन्त ही घातक है। हमें पुनः उत्थान की तरफ चलकर आदर्श-मय बनना होगा। इन्हीं विचारों में अग्रसर होकर कवि वृद्धावस्था में भी सं० १६६१ में शैथिल्य का त्याग कर सुविहित साधुता अप-नाते हुये 'क्रियोद्धार' करता है और भावी-समाज के लिये आदर्श की भूमिका छोड़ जाता है।

जीवन की कातरता

यह जीवन का सत्य है कि भौतिकवाद की दृष्टि से मानव की सम्पूर्ण आकांक्षायें कदापि पूर्ण नहीं होती। किसी न किसी प्रकार की कमी रहती ही है और वही कमी जीवन का शल्य बनकर सम्पूर्ण भौतिक सुखों पर पानी फेर देती है तथा जीवन को दुःखी बना देती है। यही दुःखीपना कातरता का स्वरूप धारण कर मनुष्य को दीन भी बना देता है। यही जीवन की एक आकांक्षा कवि जैसे सक्षम व्यक्ति को भी कातर बना देती है।

कवि का जीवन अत्यन्त सुखमय रहा है। क्या शारीरिक दृष्टि से, क्या अधिकार की दृष्टि से, क्या उपाधियों की दृष्टि से, क्या सन्मान की दृष्टि से और क्या शिष्य-प्रशिष्य बहुल परिवार की दृष्टि से। कहा जाता है कि कवि के स्वहस्तदीक्षित ¶ ४२ शिष्य

¶ दीक्षा तो स्वयं आचार्य देते थे; किन्तु जिनके द्वारा प्रतिबोधित होते थे, उन्हीं के शिष्य बनाया करते थे।

थे, जिसमें शायद प्रशिष्यों की संख्या सम्मिलित नहीं है उन शिष्यों में से कई तो शिष्य महा विद्वान्, वादी और प्रतिभा सम्पन मेधावी भी थे। किन्तु इतना होने पर भी कवि को शिष्यों का सुख प्राप्त नहीं हुआ। जिन शिष्यों को योग्य बनाने के लिये कवि ने अपना सर्वस्व त्याग किया, गुजरात के सत्यासीया दुष्काल में भी शिष्यों को सुखी रखने के लिये जिसने कोई कसर नहीं रखी, जिसने अपनी आत्मा को वंचित कर साधु-नियमों का उल्लङ्घन कर माता-पिता के समान ही शिष्यों का पुत्रवत् पालन किया था। व्याकरण, प्राचीन एवं नव्यन्याय, साहित्य और दर्शन का अध्ययन करवा कर, गणनायकों से सिफारिशें कर उपाधियां दिलवाई थी‡ और जो समाज एवं गच्छ प्रतिष्ठित यशस्वी माने जाते थे, वे ही शिष्य कवि को वृद्धावस्था में त्याग करके चले जाते हैं, सेवा शुश्रूषा भी नहीं करते हैं और जो पास में रहते हैं वे भी कवि की अन्तर्पीड़ा नहीं पहचान पाते हैं; तो कवि का हृदय रो उठता है और अनिच्छा होने पर भी बलात् वाचा द्वारा अभिव्यक्त करता हुआ अन्य साधुओं को सचेत करता है कि शिष्य-सन्तति नहीं है तो चिंता न करो। देखो, मैं अनेक शिष्यों का गुरु होता हुआ भी दुःखी हूँ:-

चेला नहीं तउ म करउ चिन्ता,
दीसइ घणे चेले पणि दुक्ख।
संतान करंमि हुआ शिष्य बहुला,
पणि समयसुन्दर न पायउ सुक्ख ॥ १ ॥
केइ मुया गया पणि केइ,
केइ जुया रहइ परदेस।
पासि रहइ ते पीड न जाणइ,

‡ देखिये, आगे का शिष्य-परिवार अध्याय।

कहियउ घणउ तउ थायइ किलेस ॥ २ ॥
जोड़ घड़ी विस्तरी जगत मइं,
प्रसिद्धि थइ पातसाह पर्यन्त ।
पणि एकणि बात रही अणूरति,
न कियउ किण चेलइ निश्चिन्त ॥ ३ ॥
समयसुन्दर कहइ सांभलिज्यो,
देतउ नहीं छुं चेला दोस ।

× × ×

इधर वृद्धावस्था, उधर दुष्काल से जर्जरित काय और ऐसी अवस्था में भी अपने प्राण प्यारे शिष्यों की उपेक्षा से कवि अत्यंत दुःखी हो जाता है जिसका वर्णन कवि अपने 'गुरु दुःखित वचनं' में विस्तार से प्रकट करता हुआ कहता है कि ऐसे शिष्य निरर्थक ही हैं:—

"क्लेशोपार्जितवित्तेन, गृहीत्वा अपवादतः ।
यदि ते न गुरोर्भक्ताः, शिष्यैः किं तैर्निरर्थकैः ।१।
वंचयित्वा निजात्मानं, पोषिता मृष्टभुक्तितः ।
यदि ते न गुरोर्भक्ताः, शिष्यैः किं तैर्निरर्थकैः ।२।
लालिताः पालिताः पश्चान्मातृपित्रादिवद् भृशम् ।
यदि ते न गुरोर्भक्ताः, शिष्यैः किं तैर्निरर्थकैः ।३।
पाठिता दुःखपापेन, कर्मबन्धं विधाय च ।
यदि ते न गुरोर्भक्ताः, शिष्यैः किं तैर्निरर्थकैः ।४।
गृहस्थानामुपालम्भाः, सोढा बाढं स्वमोहतः ।
यदि ते न गुरोर्भक्ताः, शिष्यैः किं तैर्निरर्थकैः ।५।

तपोपि चाहितं कष्टात्, कालिकोत्कालिकादिकम् ।
यदि ते न गुरोर्भक्ताः, शिष्यैः किं तैर्निरर्थकैः ।६।
वाचकादि पदं प्रेम्णा, दापितं गच्छनायकात् ।
यदि ते न गुरोर्भक्ताः, शिष्यैः किं तैर्निरर्थकैः ।७।
गीतार्थ नाम धृत्वा च, बृहत्क्षेत्रे यशोर्जितम् ।
यदि ते न गुरोर्भक्ताः, शिष्यैः किं तैर्निरर्थकैः ।८।
तर्क—व्याकृति—काव्यादि—विद्यायां पारगामिनः ।
यदि ते न गुरोर्भक्ताः, शिष्यैः किं तैर्निरर्थकैः ।९।
सूत्रसिद्धान्तचर्चायां, याथातथ्यप्ररूपकाः ।
यदि ते न गुरोर्भक्ताः, शिष्यैः किं तैर्निरर्थकैः ।१०।
वादिनो भुवि विख्याता, यत्र तत्र यशस्विनः ।
यदि ते न गुरोर्भक्ताः, शिष्यैः किं तैर्निरर्थकैः ।११।
ज्योतिर्विद्या चमत्कारं, दर्शितो भूभृतां पुरः ।
यदि ते न गुरोर्भक्ताः, शिष्यैः किं तैर्निरर्थकैः ।१२।
हिन्दू-मुसलमानानां, मान्याश्च महिमा महान् ।
यदि ते न गुरोर्भक्ताः, शिष्यैः किं तैर्निरर्थकैः ।१३।
परोपकारिणः सर्वगच्छस्य स्वच्छहृच्चितः ।
यदि ते न गुरोर्भक्ताः, शिष्यैः किं तैर्निरर्थकैः ।१४।
गच्छस्य कार्यकर्तारो, हर्तारोऽर्तेश्च भूस्पृशाम् ।
यदि ते न गुरोर्भक्ताः, शिष्यैः किं तैर्निरर्थकैः ।१५।
गुरुर्जानाति वृद्धत्वे, शिष्याः सेवाविधायिनः ।
यदि ते न गुरोर्भक्ताः, शिष्यैः किं तैर्निरर्थकैः ।१६।

गुरुणा पालिता नाऽऽज्ञाऽर्हतोऽतोऽतिदुःखभागभूत् ।
एषामहो ! गुरुर्दुःखी, लोकलज्जापि चेन्नहि ।१७।*

पराधीनता

यह भी एक जीवन का सत्य है कि मानव अपनी तारुण्यावस्था और प्रौढ़ावस्था में अपने विशद ज्ञान, अधिकार और प्रतिभा के बल पर सर्वतन्त्र स्वतन्त्र होकर जीवित रहता है किन्तु, वही वृद्धावस्था में अपने मनको मारकर पुत्रों की इच्छानुसार चलने को बाधित हो जाता है। उसकी सारी योग्यता, प्रतिभा और स्वाभिमान का नामोनिशान भी मिट जाता है। देखिये कवि के जीवन को ही। घटना इस प्रकार है:—

आचार्य जिनसिंहसूरि के पश्चात् श्रीजिनराजसूरि¶ गणनायक बने और जिनसागरसूरि आचार्य बने। जिनसागर-

* संभवतः यह 'दुःखित वचनं' वादी हर्षनन्दन को लक्ष्य कर लिखा गया प्रतीत होता है।

¶ आचार्य जिनराजसूरि—बीकानेर निवासी बोहित्थिरा गोत्रीय श्रेष्ठि धर्मसी के पुत्र थे। आपकी माता का नाम धारलदे था। आपका जन्म नाम राजसिंह था। सं० १६५६ मिगसर सुदि ३ को आपने आचार्य जिनसिंहसूरि के पास दीक्षा ग्रहण की। आपका दीक्षा नाम था राजसमुद्र। आपको उपाध्याय पद स्वयं युगप्रधानजी ने सं० १६६८ में दिया था। आ० जिनसिंहसूरि के स्वर्गवास होने पर आप सं० १६७४ वैशाख शुक्ला सप्तमी को मेड़ता में गणनायक आचार्य बने। इसका पट्टमहोत्सव मेड़ता निवासी चोपड़ा गोत्रीय सङ्घवी आसकरण ने किया था। अहमदाबाद निवासी सङ्घपति सोमजी कारित शत्रुञ्जय की खरतर वसही में सं० १६७५ वैशाख शुक्ला १३ शुक्रवार को

५०० मूर्तियों की आपने प्रतिष्ठा की थी। भाणवड पार्श्वनाथ तीर्थ के स्थापक भी आप ही थे। सं० १६७७ जेठ वदि ५ को घोघा आसकरण कारापित शान्तिनाथ आदि मन्दिरों की आपने प्रतिष्ठा की थी; (देखें, मेरी संपादित, प्रतिष्ठा लेख संग्रह प्रथम भाग)। जेसलमेर निवासी भणसाली गोत्रीय सङ्घपति थाहरु कारित, जैनों के प्रसिद्ध तीर्थ लौद्रवाजी की प्रतिष्ठा भी सं० १६७५ मार्गशीर्ष शुक्ला द्वादशी को आपने ही की थी और आपकी ही निश्रा में सं० थाहरु ने शत्रुञ्जय का सङ्घ निकाला था। कहा जाता है कि अंबिका देवी आपको प्रत्यक्ष थी और देवी की सहायता से ही घंघाणी तीर्थ में प्रकटित मूर्तियों के लेख आपने बांचे थे। आपकी प्रतिष्ठापित सैकड़ों मूर्तियाँ आज भी उपलब्ध हैं। सं० १६९९ आषाढ़ शुक्ला ९ को पाटण में आपका स्वर्गवास हुआ था। आप न्याय, सिद्धान्त और साहित्य के उद्भट विद्वान् थे। आपकी रचित निम्न कृतियें प्राप्त हैं:—

१. स्थानांग सूत्र वृत्ति (अप्राप्त, उल्लेख मात्र प्राप्त है)
२. नैषध महाकाव्य जैनराजी टीका श्लो० सं० ३६००० (उत्कृष्ट पाण्डित्यपूर्ण टीका, प्रति मेरे संग्रह में)
३. धन्ना शालिभद्र रास सं० १६७८, (सचित्र प्रति मेरे संग्रह में)
४. गुणस्थान विचार पार्श्वस्तवन सं० १६६५.
५. पार्श्वनाथ गुणवोली स्तव. ,, १६८९ पो० व० ८
६. गज सुकुमाल रास. ,, १६९९ अहमदाबाद (प्रति, मेरे संग्रह में)
७. प्रश्नोत्तर रत्नमालिका बालावबोध
८. चौवीसी
९. वीसी.
१०. शील बतीसी.
११. कर्म बतीसी.
१२. नवतत्त्व स्तबक.
१३. स्तवन संग्रह.

सूरि* १२ बारह वर्ष तक आ० जिनराजसूरि के साथ ही रहे। सं० १६८६ में कवि का प्रसिद्ध शिष्य, बहुश्रुत, प्रकाण्ड विद्वान्, नव्यन्याय वेत्ता, यशस्वी, वादी हर्षनन्दन के बखेड़े के कारण दोनों आचार्यों में मनोमालिन्य हुआ। फलस्वरूप अलग अलग हो गये। वादी हर्षनन्दन ने जिनसागरसूरि का पक्ष लिया था, क्योंकि इनका वह एक नेता रहा है। अतः कवि को भी प्रमुख आ० जिनराजसूरि का साथ छोड़कर, अपने शिष्य के हठाग्रह से पराधीन हो उसके मतानुसार ही चलना पड़ा। यहीं से खरतरगच्छ की एक 'आचार्य शाखा' का प्रादुर्भाव हुआ। हाय रे वार्धक्य! तेरे कारण ही कवि जैसे समदर्शी विद्वान् को भी एक पक्ष स्वीकार करना पड़ा।

* जिनसागरसूरि—बीकानेर निवासी बोहिथिरा गोत्रीय शाह बच्छराज और मृगादे माता की कुक्षि से सं० १६५२ कार्तिक शुक्ला १४ रवि अश्विनी नक्षत्र में इनका जन्म हुआ था। जन्म नाम था चोला। सं० १६६१ माह सुदि ७ को अमरसर में जिनसिंहसूरि ने आपको दीक्षा दी। दीक्षा महोत्सव श्रीमाल थानसिंह ने किया था। युगप्रधानजी ने बृहद्दीक्षा देकर इनका नाम सिद्धसेन रखा था। इनके विद्यागुरु थे उपाध्याय समयसुन्दरजी के शिष्य वादी हर्षनन्दन। सं० १६७४ फागुण सुदि ७ को मेड़ता में संघपति आसकरण द्वारा कारित महोत्सव पूर्वक आप आचार्य बने। जिनराजसूरि के साथ ही आप शत्रुञ्जय खरतर वसही की प्रतिष्ठा के समय मौजूद थे। १२ वर्ष तक आप जिनराजसूरि के साथ ही रहे। किन्तु सं० १६८६ में किंचित् मतभेद एवं वादी हर्षनन्दन के आग्रह के कारण आप पृथक् हुये। तब से आपकी शाखा आचार्य शाखा के नाम से प्रसिद्ध हुई। आपने अहमदाबाद में ११ दिन का अनशन कर सं० १७२० ज्येष्ठ कृष्णा ३ को स्वर्ग की ओर प्रस्थान किया था।

आप बड़े ही मनस्वी और श्रेष्ठ संयमी थे तथा आपकी

प्रसिद्धि भी अत्यधिक फैली हुई थी। इसके सम्बन्ध में कवि स्वयं उल्लेख करता है:—

"थोलइ थोड़ं बइठा रहइ रे, वाचइ सूत्र सिद्धान्त।
राति उभा काउसग्ग करइ रे, ध्यान धरइं एकांत।अ.।४।"

[कुसुमाञ्जलि पृ० ४१३]

"श्रीमज्जेसलमेरुदुर्गनगरे श्रीविक्रमे गुर्जरे,
थट्टायां भटनेर-मेदिनीतटे, श्रीमेदपाटे स्फुटम्।
श्रीजावालपुरे च योधनगरे श्रीनागपुर्यां पुनः,
श्रीमल्लाभपुरे च वीरमपुरे, श्रीसत्यपुर्यामपि।१।
मूलत्राणपुरे मरोट्टनगरे देराउरे पुग्गले,
श्रीउच्चे किरहोर-सिद्धनगरे धींगोटके संबले।
श्रीलाहोरपुरे महाजन-रिणी-श्रीआगराख्ये पुरे,
सांगानेरपुरे सुपर्वसरसि श्रीमालपुर्यां पुनः।२।
श्रीमत्पत्तननाम्नि राजनगरे श्रीस्तम्भतीर्थे तथा,
द्वीपश्रीभृगुकच्छ-वृद्धनगरे सौराष्ट्रके सर्वतः।
श्रीवाराणपुरे च राधनपुरे श्रीगुर्जरे मालवे,
....।३।
सर्वत्रप्रसरी सरोति सततं सौभाग्यामाबाल्यतः,
वैराग्यं विशदा मतिः सुभगता भाग्याधिकत्वं भृशम्।
नैपुण्यं च कृतज्ञता सुजनता येषां यशोवादता,
सूरिश्रीजिनसागरा विजयिनो भूयासुरेते चिरम्।४।

[कुसुमाञ्जलि पृ० ४०७]

स्वर्गवास

कवि वृद्धावस्था में शारीरिक क्षीणता के कारण संवत १६९६ से ही अहमदावाद में स्थायी निवास कर लेते हैं। वहीं रहते हुए आत्म-साधना और साहित्य-साधना करते हुए संवत् १७०३ चैत्र शुक्ला त्रयोदशी को इस नश्वर देह को त्याग कर समाधि पूर्वक स्वर्ग की ओर प्रयास कर जाते हैं। इसी का उल्लेख कवि राजसोम अपने "समयसुन्दर" गीत म करता है :—

"अणसण करि अणगार, संवत् सतरहो सय बीड़ोत्तरे।
अहमदाबाद मभार, परलोक पहुंता हो चैत्र सुदि तेरसै।।"

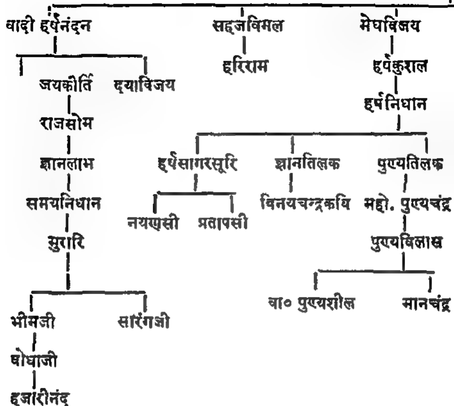
किन्तु यह ज्ञात नहीं होता कि सर्वगच्छ-मान्य कवि के स्वर्गारोहण स्थान पर अहमदावाद के उपासकों ने स्मारक बनवाया था या नहीं? सम्भव ही नहीं निश्चित है कि कवि का स्मारक अवश्य बना होगा, किन्तु अब प्राप्त नहीं है। सम्भव है उपेक्षा एवं सारसंभाल के अभाव में नष्ट हो गया हो! यदि कहीं हो भी तो शोध होनी चाहिये। अस्तु,

वादी हर्षनन्दन उत्तराध्ययन टीका में उल्लेख करता है कि गडालय (नाल, वीकानेर) में कवि की पादुका स्थापित है:—

"श्रीसमयसुन्दराणां गडालये पादुके वन्दे।५।"

शिष्य परिवार

एक प्राचीन पत्र के अनुसार ज्ञात होता है कि कवि के ४२ बयालीस शिष्य थे। कवि के ग्रन्थों की प्रशस्तियों को देखने से कुछ ही शिष्यों और प्रशिष्यों के नामोल्लेख प्राप्त होते हैं। अतः अनुमानतः आपके शिष्य-प्रशिष्यादिकों की संख्या विपुल ही थी। कौन-कौन और किस किस नाम के शिष्य थे? उल्लेख नहीं मिलता। कतिपय ग्रन्थों के आधार पर कवि की परम्परा का कुछ आभास हमें होता है :—



*सूरदासजी से उदेचंदजी तक की परंपरा; आचार्य शाखा भंडार, बीकानेरस्थ

(१) शत्रुञ्जय चैत्य परिपाटी स्तव र० स० १६७१
(२) मध्याह्न व्याख्यान पद्धति र० सं० १६७३ अक्षयतृतीया, पाटण [त्रिकशब्दाश्वषडेकाब्दे] ग्र० ६००१,
(३) गौडीस्तव र० सं० १६८३
(४) ऋषिमण्डल वृत्ति. र० सं० १७०४ वसंतपंचमी, बीकानेर, कर्णसिंह राज्ये, शिष्य दयाविजय पठनार्थ,
(५) स्थानाङ्ग वृत्तिगत गाथा वृत्ति र० सं० १७०५ माघ, अहमदाबाद ग्र० ११०००, सुमतिकल्लोल सह.
(६) उत्तराध्ययन सूत्र वृत्ति र० सं० १७११ अक्षयतृतीया, अहमदाबाद, ग्र० १८२६३. प्रथमादर्श लेखक शिष्य दयाविजय.
(७) आदिनाथ व्याख्यान.
(८) पार्श्व-नेमि चरित्र.
(९) ऋषिमण्डल बालाबोध.
(१०) आचार दिनकर लेखन प्रशस्ति.
(११) उद्यम कर्म संवाद (प्रति, तेरापंथी संग्रह, सरदार शहर)
(१२) जिनसिंहसूरि गीत आदि.

वादी की मध्याह्न व्याख्यान पद्धति, ऋषि मण्डल टीका, स्थानांग वृत्ति गत गाथा वृत्ति और उत्तराध्ययन सूत्र वृत्ति ये चारों ही ग्रन्थ बड़े ही महत्व के हैं।

मध्याह्न व्याख्यान पद्धति अर्थात् शास्त्रीय परिपाटी के अनुसार प्रातः आगमों का वाचन होता ही है। मध्याह्न में जनता को मनोरंजन के साथ उपदेश प्राप्त हो सके—इसी लक्ष्य से इसका प्रणयन किया गया है। वादी इस ग्रन्थ के प्रति गर्वोक्ति के साथ कहता है कि 'प्रतिभाशाली हो या अल्पज्ञ, सुस्वर हो या दुःस्वर, गीतार्थ हो या अगीतार्थ, पुरुषार्थी हो या प्रमादी, संकोचशील हो या धृष्ट

कवि की शिष्य परंपरा में अनेकों उद्‌भट विद्वान् मौलिक साहित्य-सर्जन कर सरस्वती के भण्डार को समृद्ध करने वाले हुये हैं जिनमें से कुछ विद्वानों का संक्षिप्त उल्लेख कर देना यहाँ अप्रासंगिक न होगा।

१. वादी हर्षनन्दन–कवि के प्रधान शिष्यों में से है। वादीजी गीतार्थ और उद्‌भट विद्वानों में से हैं। कवि स्वयं इनके सम्बन्ध में उल्लेख करता है:—

"प्रक्रिया-हैमभाष्यादि-पाठकैश्च विशोधिता।
हर्षनन्दनवादीन्द्रैः, चिन्तामणिविशारदैः ॥१२॥"

[कल्पलता प्रशस्तिः]

"सुशिष्यो वाचनाचार्यस्तर्कव्याकरणादिवित्।
हर्षनन्दनवादीन्द्रो, मम साहाय्यदायकः।"

[समाचारी शतक प्रशस्तिः]

इसी प्रकार की योग्यता का अङ्कन कवि ने कतिपय पद्यों द्वारा 'गुरुदुःखित वचनम्' में भी किया है। वादी ने कवि कृत कल्पलता, समाचारी शतक, सप्तस्मरण टीका, एवं द्रौपदी चतुष्पदी के संशोधन एवं रचना में सहायता दी थी। कवि ने हर्षनन्दन के लिये ही 'मंगलवाद' की रचना की थी।

वादी प्रणीत निम्नलिखित ग्रन्थ प्राप्त हैं:—

मान में पो० सेवली. (निजामस्टेट) में विद्यमान हैं। और यतिवर्य उ० श्री नेमिचन्द्रजी (बाड़मेर) के कथनानुसार "उ० समयसुन्दरजी की शाखा में अखेचन्दजी, हीराचन्दजी काल में थे और माणकजी, बच्छराजजी, सुगनजी, भवानीदास, रूपजी, अमरचन्दजी, हेमराजजी, दौलतजी आदि कईयों को हमने देखा है।" किन्तु ये किनकी शाखा में थे, ज्ञात नहीं।

द्वितीय विभागः—

१. मल्लि षड्मित्र
२. विष्णुकुमार
३. स्कन्दकशिष्य
४. कार्तिक शेठ
५. सुकोशल
६. अक्षोभ्यादिक
७. अक्षोभ्य
८. स्तमित दशार्ह
९. सागर दशार्ह
१०. हिमवद् दशार्ह
११. अचल „
१२. धरण पूरण
१३. अभिचन्द्र
१४. रथनेमि
१५. जालिमयालि उवयालि
१६. पुरुषसेन, वारिषेण
१७. दृढनेमि-सत्यनेमि
१८. प्रद्युम्न-शंब-अनिरुद्ध
१९. गजसुकुमाल
२०. ढंढण
२१. थावच्चासुत
२२. शुकपरिव्राजक शैलक राज
२३. शैलक पुत्र मण्डक
२४. सारण मुनि
२५. नवम नारद
२६. वज्र प्रत्येक बुद्ध
२७. पुत्र प्रत्येक बुद्ध
२८. असित बुद्ध
२९. अंग प्रत्येक बुद्ध
३०. दवदंत राजर्षि
३१. कुञ्जवार
३२. पाण्डव
३३. केशिकुमार
३४. कालिक पुत्र
३५ काला शर्वेसिक
३६. काला शर्वेसिकपुत्र
३७. पुण्डरीक-कंडरीक
३८. ऋषभदत्त-देवानंदा
३९ करकण्डू
४०. द्विमुख
४१. नमि राजर्षि
४२. नग्गइ राजर्षि
४३. प्रसन्नचन्द्र राजर्षि
४४. वल्कलचीरी
४५. अतिमुक्तक
४६. क्षुल्लककुमार
४७. द्रय श्रमण भद्र
४८. लोहार्य
४९. सुप्रतिष्ठ श्रेष्ठि

हो, सौभाग्यशाली हो या दुर्भागी; वक्ता सभा के समक्ष इन प्रबन्धों को निश्चित होकर वांचन करे:—

सुमेधाऽल्पमेधा वा, सुस्वरो दुःस्वरोऽपि वा ।
अगीतार्थः सुगीतार्थः, उद्यमी अलसोऽपि वा ॥१४॥
लज्जालुर्धृष्टचित्तो वा, सुभगो दुर्भगोऽपि वा ।
सभाप्रबन्ध सर्वोऽपि, निश्चिन्तो वाचयत्विदम् ॥१५॥

यह ग्रन्थ १८ विभाग-अध्यायों में विस्तार के साथ लिखा गया है।

ऋषिमण्डल टीका, ४ विभागों में विभाजित है। यह टीका अत्यन्त ही विस्तार के साथ लिखी गई है। इसमें दृष्टान्तों की भरमार है जिसका अनुमान निम्नतालिका से हो जायगा। उदाहरणों की विपुलता को देखते हुये हम इसे टीका की अपेक्षा एक बृहत्कथा कोष कह दें तो कोई अत्युक्ति न होगी। कथानकों की तालिका इस प्रकार है:—

प्रथम विभागः—

१. भरत	२. बाहुबलि	३. सूर्ययश
४. महायश	५. अतिबल	६. बलभद्र
७. बलवीर्य	८. जलवीर्य	९. कार्त्तवीर्य
१०. दण्डवीर्य	११. सिद्धिदण्डिका	१२. सगर चक्रवर्ती
१३. मघवा चक्रवर्ती	१४. सनत्कुमार चक्र०	१५. शान्ति ,,
१६. कुन्थु ,,	१७. अर ,,	१८. श्री पद्म ,,
१९ हरिषेण ,,	२०. जय ,,	२१. महाबल ,,
२२. अचल बलदेव	२३. विजय बलदेव	२४. बलभद्र बलदेव
२५ सुप्रभ ,,	२६. सुदर्शन ,,	२७. आनन्द ,,
२८. नन्दन ,,	२९. रामचन्द्र ,,	३०. बलदेव ,,

तृतीय विभाग सन्मुख न होने के कारण हम नहीं कह सकते कि इसमें कौन-कौन सी और कितनी कथायें हैं। इन कथाओं के लिये भी वादी का कथन है कि 'ये कथायें विकथायें नहीं हैं; अपितु जिन महापुरुषों के नाम स्मरण से ही चिर सञ्चित पापों का नाश होता है, वैसी ही सार-गर्भित कथायें हैं :—

चिरपापप्रणाशिन्यः, प्राज्ञनिर्ग्रन्थसत्कथा।
विकथा-वर्जितो वाचा, कथयामि निरन्तरम् ।४।

स्थानांगवृत्तिगत गाथावृत्ति, युगप्रधान जिनचन्द्रसूरि के विद्वान् शिष्य वाचनाचार्य सुमतिकल्लोल और वादी इस युग्म ने, आचार्य अभयदेव द्वारा स्थानांग सूत्र की टीका में 'कर्मग्रन्थादि प्रकीर्ण साहित्य, निर्युक्ति एवं भाष्य साहित्य, देवेन्द्रस्तव, विशेषणवती, षट् त्रिंशिकायें, सप्ततिकायें, संग्रहणी आदि, पंचाशक, सिद्धप्राभृत, सन्मतितर्क, आदि शास्त्र और ज्योतिष, संगीत, शिक्षा, प्राकृत, कोष, एवं सूक्तियें आदि सम्बन्धित विषयों के जो उद्धरण हजार के ऊपर दिये हैं; वे अत्यन्त क्लिष्ट हैं, अतः उन पर विशिष्ट प्रकाश डालते हुये विपुल परिमाण में यह टीका रची है :—

कर्मग्रन्थबहुप्रकीर्णकबृहन्निर्युक्तिभाष्योत्तराः ।
देवेन्द्रस्तवसद्विशेषणवती प्रज्ञप्तिकल्पा श्रेयो (?)।
अङ्गोपाङ्गकमूलसूत्रमिलिताः षट्त्रिंशिका-सप्ततिः,
श्लिष्यत् संग्रहणीसमप्रकरणाः पञ्चाशिका संस्थिताः ।८।
सिद्धप्राभृतसम्मतीष्टकरणो ज्योतिष्क – सङ्गीतक–
शिक्षा-प्राकृत-कोष-सूक्तललिता गाथाः सहस्रात्पराः ।

चतुर्थ विभाग:—

१. जम्बूस्वामी	२. कुबेरदत्त
३. महेश्वरदत्त	४. कर्णकः काक
५. वानर-वानरी	६. अंगारक
७. नूपुरपण्डित-शृगाल	८. ....
९. विद्युन्मालि	१०. शंखधामक
११. शिलाजपुत्र वानर	१२. सिद्धिबुद्धि
१३. जात्यश्विकिशोर	१४. ग्रामकूट सुत
१५. सोल्लक	१६. मासाहस
१७. त्रिमित्र	१८. नागश्री
१९. ललितांग	२०. शय्यंभवसूरि
२१. यशोभद्रसूरि	२२. संभूतिविजय
२३. भद्रबाहु	२४. स्थूलिभद्र
२५. चाणक्य-चन्द्रगुप्त	२६. भद्रबाहु के ४ शिष्य
२७. आर्य महागिरि	२८. आर्य सुहस्ति
२९. आर्य समुद्र	३०. आर्य मंगुल
३१. अवन्ती सुकुमाल	३२. कालिकाचार्य
३३. कालिक गणि	३४. सिंहगिरि
३५. सिंहगिरि के ४ शिष्य	३६. ....
३७. भद्रगुप्त	३८. समिताचार्य
३९. वज्रस्वामी	४०. वज्रसेन
४१. आर्य रक्षित	४२. दुर्बलिका पुष्यमित्र
४३. स्कन्दिलाचार्य	४४. देवर्धि क्षमाश्रमण
४५. ब्राह्मी-सुन्दरी	४६. राजीमती
४७. चन्दनबाला	४८. धर्मघोष

टीका और उत्तराध्ययन टीका की रचना की है। उत्तराध्ययन टीका का प्रथमादर्श भी इन्हीं ने लिखा था।

"दयाविजयशिष्यस्य, वाचनाय विरच्यते।"

[ऋ० टी०]

"प्रथमादर्शकोऽलेखि, दयाविजय साधुना।"

[उ० टी०]

(ग) वाचक जयकीर्ति के शिष्य राजसोम प्रणीत दो ग्रन्थ प्राप्त हैं:—

(१) श्रावकाराधना भाषा. सं० १७१५ जे० सु० नोखा

(२) इरियावही मिथ्यादुष्कृत बालावबोध

(घ) वाचक जयकीर्ति के पौत्र शिष्य समयनिधान द्वारा सं० १७३१ अकबराबाद में रचित सुसढ चतुष्पदी प्राप्त है।

२. सहजविमल और मेघविजय के पठनार्थ कवि ने रघुवंश टीका, नव तत्त्व टीका और जयतिहुअण स्तोत्र टीका की रचना की थी।

(क) सहजविमल के शिष्य हरिराम के निमित्त कवि ने रघुवंश टीका और वाग्भटालंकार टीका की रचना की है और इसे अपना पौत्र "पाठयता पौत्र हरिरामं" [रघु० टी०] बताया है। निश्चिततया नहीं कहा जा सकता कि हरिराम किसका शिष्य था, सहजविमल का या मेघविजय का? और यह भी नहीं कहा जा सकता कि हरिराम यह नाम इसका पूर्वावस्था का था या दीक्षितावस्था का? अथवा दीक्षितावस्था का नाम हर्षकुशल था? यहां इनका नाम सहजविमल के शिष्य रूप में अनुमानतः ही लिखा गया है।

सूत्रालापकमुद्रितार्थविवृतौ तत्सान्विभूता घृताः,
प्रायस्ताः कठिनास्तदर्थविवृतौ टीका विना दुर्घटाः ।६।

उत्तराध्ययन टीका भी साहित्यिक दृष्टि से काफी महत्व रखती है। इसकी प्रशस्ति में वादी स्वयं अपने को नव्यन्याय और महाभाष्य का विशारद कहता है:—

तच्छिष्यमुख्यदक्षेण, हर्षनन्दन वादिना।
चिन्तामणि–महाभाष्य–शास्त्रपारप्रदश्वना ।१५।

इन चारों ही कृतियों की भाषा अत्यन्त प्रौढ एवं प्राञ्जल होते हुये भी सरल–सरस प्रवाह युक्त है। वादी की लेखिनी में चमत्कार यह है कि पाठक स्वतः ही आकृष्ट होकर मननशील हो जाता है।

(क) वादी हर्षनन्दन के शिष्य वाचक जयकीर्ति गणि जैन-साहित्य के साथ-साथ ज्योतिष शास्त्र के भी अच्छे निष्णात थे। कवि 'दीक्षा प्रतिष्ठा शुद्धि' में स्वयं कहता है कि 'यह ज्योतिष शास्त्र का विद्वान है और इस की सहायता से इस ग्रन्थ की मैंने रचना की है:—

"ज्योतिःशास्त्र विचक्षण-वाचक-जयकीर्ति-दत्तसाहाय्यैः"

इनकी प्रणीत निम्न रचनायें प्राप्त हैं—

(१) पृथ्वीराज वेलि बालावबोध. सं॰ १६८६ बीकानेर.
(२) षडावश्यक बालावबोध. सं० १६६३
(३) जिनराजसूरि रास.

(ख) वादी हर्षनन्दन के द्वितीय शिष्य दयाविजय भी अच्छे विद्वान् थे। इन्हीं के पठनार्थ वादीजी ने ऋषिमण्डल

(ख) हर्षकुशल के पौत्र आचार्य हर्षसागर द्वारा सं० १७२६ कार्तिक कृष्णा नवमी को लिखित पुण्यसार चतुष्पदी (सेठिया लायब्रेरी, बीकानेर) प्राप्त है।

(ग) हर्षकुशल के द्वितीय पौत्र ज्ञान तिलक रचित ३-४ स्तोत्र और स्वयं लिखित फुटकर संग्रह का एक गुटका (मेरे संग्रह में) प्राप्त है और ज्ञान तिलक के शिष्य विनयचन्द्र गणि अच्छे कवि थे। इनकी प्रणीत निम्न-लिखित कृतियाँ प्राप्त हैं:—

(१) उत्तमकुमार चरित्र, र० सं० १७५२ फा० शु० ५ पाटण, (२) बीसी, र० सं० १७५४ राजलगढ़, (३) ग्यारह अंग सेज्झाय, र० सं० १७५५, (४) शत्रुञ्जय स्तव र० सं० १७५५ पो० शु० १०, (५) मदनरेखा रास (?), (६) चौवीसी, (७) रोहक कथा चौपाई (८) रथनेमि स्वाध्याय, (९) नेमि राजुल बारहमासा

(घ) हर्षकुशल के तृतीय पौत्र पुण्यतिलक प्रणीत 'नरपति-जय चर्या यन्त्रकोद्धार टिप्पनक (जिनहरिसागर-सूरि भं० लोहावट) प्राप्त है। इन्हीं पुण्यतिलक के पौत्र वाचक पुण्यशील द्वारा सं० १८१० में लिखित 'महाराजकुमार चरित्र चतुष्पदी' (चुन्नीजी का संग्रह, बीकानेर) प्राप्त है।

४. मेघकीर्ति के शिष्य रामचन्द्र प्रणीत एक बीसी प्राप्त है। और सं० १६८२ में लिखित लिंगानुशासन की प्रति भी (उ० जयचन्द्रजी सं० बीकानेर) प्राप्त है। इन्हीं की परम्परा में अमरविमलजी के तृतीय शिष्य आलमचन्दजी एक श्रेष्ठ कवि थे। इनकी निम्न रचनायें प्राप्त हैं:—

३. मेघविजय कवि का प्रिय शिष्य है। स्वयं कवि ने सं० १६८७ में 'विशेष शतक' की प्रति लिखकर इसको दी थी। कवि इस पर प्रसन्न भी अत्यधिक था। इसने दुष्काल जैसे समय में भी कवि का साथ नहीं छोड़ा था। यही कारण है कि कवि इसकी प्रशंसा करता हुआ लिखता है:—

"मुनि मेघविजयशिष्यो, गुरुभक्तो नित्यपार्श्ववर्ती च।
तस्मै पाठनपूर्वं, दत्ता प्रतिरेषा पठतु मुदा ॥६॥
[विशेषशतक लेखन प्रशस्तिः]

(क) मेघविजय के शिष्य हर्षकुशल अच्छे विद्वान् थे। जैसे कवि को 'गुरुभक्त' मेघविजय अत्यन्त प्रिय थे, तो वैसे उनसे भी अत्यधिक पौत्र हर्षकुशल कवि को प्रिय थे। ऐसा मालूम होता है कि वृद्धावस्था में कवि (दादागुरु) की इसने प्राण-पण से सेवा की होगी। यही कारण है कि कवि वृद्धावस्था में भी स्वयं अपने जर्जर हाथों से लिखित माघकाव्य तृतीय सर्ग टीका, रूपकमाला अवचूरि आदि पचासों महत्त्व के ग्रन्थ इसको देता है; जैसा कि कवि लिखित ग्रन्थों की प्रशस्तियों जाना जाता है। इसने 'द्रौपदी चतुष्पदी' की रचना में भी कवि को पूर्ण सहायता दी थी:—

वाचक हर्षनन्दन वलि, हर्षकुशलइ सानिधि कीजइ रे।
लिखन शोधन सहाय थकी, तिण तुरत पूरी करो दीधी रे।६।
[द्रौ० चौ० तृ० खं० ७ वीं ढाल]

इनकी स्वतंत्र रचना केवल 'चौसी' ही प्राप्त है।

(ख) महिमासमुद्र के पौत्र, श्रीविद्याविजय के शिष्य वीरपाल द्वारा सं० १६६६ में लिखित जिनचन्द्रसूरि निर्वाण रास एवं आलीजा गीत (अभय जैन ग्रन्थालय) प्राप्त हैं।

साहित्य-सर्जन

कविवर सर्वतोमुखी प्रतिभा के धारक एक उद्भट विद्वान् थे। केवल वे साहित्य की चर्चा करने वाले वाचा के विद्वान् ही नहीं थे, अपितु वे थे प्रकाण्ड-पाण्डित्य के साथ लेखनी के धनी भी। कवि ने व्याकरण, अनेकार्थी साहित्य, साहित्य, लक्षण, छन्द, ज्योतिष, पादपूर्ति साहित्य, चार्चिक, सैद्धान्तिक और भाषात्मक गेय साहित्य की जो मौलिक रचनायें और टीकायें प्रथित कर सरस्वती के भण्डार को समृद्ध कर जो भारतीय वाङ्मय की सेवा की है, वह वस्तुतः अनुपमेय है और वर्तमान साधु-समाज के लिये आदर्शभूत अनुकरणीय भी है। कवि की कृतियाँ निम्न हैं। जिनकी तालिका विषय-विभाजन के अनुसार इस प्रकार है:—

व्याकरण:— सारस्वत वृत्ति*, सारस्वत रहस्य, लिंगानुशासन अवचूर्णि¶, अनिट्कारिका‡,

* कवि, स्वयं लिखित सारस्वतीय शब्दरूपावलि में उल्लेख करता है:—

"सारस्वतस्य रूपाणि, पूर्वं वृत्तेरलीलिखत्।
स्तम्भतीर्थे मधौ मासे, गणिः समयसुन्दरः।१।"

कवि की यह कृति अभी तक अज्ञात ही है। शोध होनी चाहिये।

¶ कवि स्वयं लिखित पुल्लिङ्गान्त तक ही चूर्णि है।

‡ प्रति अ० जै० ग्र० में है।

(१) मौन एकादशी चौपाई, र० सं० १८१४ माघ शु० ५ रवि० मकसूदाबाद (मेरे संग्रह में), (२) सम्यक्त्व कौमुदी, र० सं० १८२२ मि० सु० ४ मकसूदाबाद (मेरे संग्रह में), (३) जीवविचार स्तव, र० सं० १८१५ चै० शु० ५ रवि मकसूदाबाद, (४) त्रैलोक्य प्रतिमा स्तव, र० सं० १८१७ श्रा० शु० २।

इन्हीं अमरविलासजी के पौत्र शिष्य, वाचक जयरत्न के शिष्य कस्तूरचन्द्र गणि एक प्रौढ़ विद्वानों में से थे। इनकी रची हुई केवल दो ही कृतियां प्राप्त हैं:-

(१) षड् दर्शन समुच्चय बालावबोध, सं० १८६४ वै० व० २ शनि, बीकानेर, (इसकी प्रति यति श्री मुकनचन्द्रजी के संग्रह, बीकानेर में प्राप्त है।)

(२) ज्ञातासूत्र दीपिका, जिनहेमसूरि राज्ये, सं० १८६६, प्रारम्भ जयपुर और समाप्ति इन्दोर, ग्रं० १८००० कृति अत्यन्त विद्वतापूर्ण है।

(प्रेस कॉपी मेरे संग्रह में)

मेघकीर्ति की परम्परा में कीर्तिनिधान के शिष्य कीर्तिसागर लिखित (१) रत्नपरीक्षा ले० सं० १७२२ (चुन्नीजी सं० बी०) और (२) स्याद्वादमंजरी ले० सं० १७२५ मेड़ता (अभय जैन ग्रन्थालय) प्राप्त हैं।

५. महिमासमुद्र के लिये कवि ने सं० १६६७ रुचानगर में श्रावकाराधना की रचना की थी।

(क) महिमासमुद्र के शिष्य धर्मसिंह द्वारा सं० १७०८ में लिखित थावच्चा चतुष्पदी (अभय जैन ग्रन्थालय) प्राप्त है।

टीका[७]।

भाषा काव्य पर संस्कृत टीकाः—	रूपकमाला अवचूरि[८]।
पादपूर्ति-साहित्यः—	श्रीजिनसिंहसूरि पदोत्सव काव्य (रघुवंश, तृतीय सर्ग पादपूर्ति), ऋषभ भक्तामर (भक्तामरस्तोत्र पादपूर्ति)।
लक्षणः—	भावशतक[९], वाग्भट्टालङ्कार टीका[१०]।
छन्दः—	वृत्तरत्नाकर वृत्ति[११]
न्यायः—	मङ्गलवाद[१२]

---

७ "इत्थं श्रीमाघकाव्यस्य, सर्गे किल तृतीयके।
वृत्तिः सम्पूर्णतां प्राप, कृता समयसुन्दरैः।१।"
स्वयं लिखित प्रति, सुराणा लायब्रेरी, चूरु।

८ "संवति गुणरसदर्शनसोमप्रमिते च विक्रमद्रङ्गे।
कार्तिक शुक्ल-दशम्यां विनिर्मिता स्व-पर-शिष्यकृते।४।"

९ "शशिसागररसभूतलसंवति विहितं च भावशतकमिदम्"

१० "अहमदावादे नगरे, करनिधिशृङ्गारसङ्ख्याब्दे।२।
× × ×
किन्त्वर्थलापनं चक्रे, हरिराममुनेः कृते।३।"

११ "संवति विधिमुख-निधि-रस-शशि (१६६४) सङ्ख्ये दीप-पर्व दिवसे च।
'जालोर' नामनगरे लूणेया फसलार्पितस्थाने ॥ २ ॥"

१२ "कृता लिखिता च संवत् १६५३ वर्षे आषाढ़ सुदि १० दिने श्रीइलादुर्गे चातुर्मासस्थितेन श्री युगप्रधान श्री ५ श्रीजिनचन्द्र-सूरिशिष्यमुख्यपण्डितसकलचन्द्रगणिस्तच्छिष्य वा० समय-सुन्दरगणिना पं० हर्षनन्दन-मुनि-कृते।"

सारस्वतीय शब्द रूपावली †, वेट्थपद विवेचना ɸ।

अनेकार्थी साहित्यः— अष्टलक्षी[१], मेघदूत प्रथम श्लोक के तीन अर्थ, द्व्यर्थराग गर्भित पाल्हणपुर मण्डन चन्द्रप्रभजिन स्तवनम्[२], चतुर्विंशति तीर्थंकर-गुरुनाम गर्भित श्री पार्श्वनाथ स्तवनम्[३], ६ राग ३६ रागिणी नाम गर्भित श्री जिनचन्द्रसूरि गीतम्[४], पूर्व कवि प्रणीत श्लोक द्व्यर्थकरण अमीझरा पार्श्वो स्तव[५], श्री वीतराग स्तव-छन्द जातिमयम्।

साहित्यः— रघुवंश टीका[६], शिशुपाल वध तृतीयसर्ग

† स्वयं लिखित प्रति अ० जै० ग्र० में है।

ɸ "सं. १६८४ वर्षे अक्षततृतीयायां श्रीविक्रमनगरे श्रीसमयसुन्दरोपाध्यायैर्व्यलेखि।" अ० जै० ग्र०

१ "श्रीविक्रमनृपवर्षात्, समये रसजलधिरागसोम (१६४६) मिते। श्रीमल् 'लाभ' पुरेऽस्मिन्, वृत्तिरियं पूर्णतां नीता ॥३२॥"

२ "संवत् १६७१ भादवा सुदि १२ कृतम्" (कुसुमाञ्जलि पृ० ६६)

३ "सूर्याचाररसेन्दुसंवति नुतिं श्री स्तम्भनस्य प्रभो!" (कुसुमाञ्जलि पृष्ठ १८५)

४ "सोलसइ बावन विजयदसमी दिने सुरगुरु वार। थंभण पास पसायइ त्रंबावती मझार॥" (कुसुमाञ्जलि पृ. ३८६)

५ कुसुमांजलि पृ० १६१

६ "संवत् १६६२ खम्भात"

"लोचनग्रहशृङ्गार वर्षे मासे च माधवे।
स्तम्भतीर्थेषु रेखाहृपावाटकप्रतिश्रये ।७।
× × ×
पाठयता पौत्र हरिरामम् ।८।"

कथा-साहित्यः— कालिकाचार्य कथा[२१], कथा-कोष[२२], महावीर २७ भव, द्रोपदी संहरण, देवदुष्यवस्त्रार्पण कथानक।

संग्रह-साहित्य— गाथा सहस्त्री[२३],

जैनागम एवं प्रकरण साहित्य—कल्पसूत्र टीका[२४], दशवैकालिक टीका[२५], नवतत्त्व शब्दार्थवृत्ति[२६], दण्डक वृत्ति[२७], चत्तारि परमंगाणि व्याख्या[२८], अल्पबहुत्वगर्भित स्तव स्वोपज्ञवृत्ति सह, चातुर्मा-

२१ "श्रीमद्विक्रम संवति, रस-तु-श्रृङ्गार-संख्यके सहसि।
श्रीवीरमपुरनगरे, राउलनृपतेजसी राज्ये ॥१॥"

२२ "सं० १६६७ वर्षे श्रीमरोट्टे वा० समयसुन्दरेण"।

२३ "ऋतु-वसु-रस-शशि (१६६८) वर्षे, विनिर्मितो विजयतां चिरं ग्रन्थः।
व्याख्यानपुस्तकेषु, व्याख्याने वाच्यमानोऽसौ ॥६॥"

२४ "लूणकर्णसरे ग्रामे प्रारब्धा कर्तुमादरात्।
वर्षमध्ये कृता पूर्णा, मया चैषा रिणीपुरे ॥१७॥ (१६८४-८५)"

२५ "संवत् १६६१ खम्भात"
"तच्छिष्य-समयसुन्दरगणिना चक्रे च स्तम्भतीर्थपुरे
दशवैकालिकटीका, शशिनिधिश्रृङ्गारमित वर्षे।"

२६ "संवत्वसुगजरसशशिमिते च दुर्भिक्ष-कार्तिके मासे।
अहमदाबादे नगरे पटेल हाजाभिध प्रोल्यां ॥१॥"

२७ "संवतिरसनिधिगुहमुखसोममिते नभसि कृष्णपक्षे च।
अमदाबादे हाजा पटेल पोलीस्थ शालायाम् ॥३॥"

२८ "नवीन शिष्यस्य पूर्वं अकृत व्याख्यानस्य हितकृते।
संवत् १६८७ फा० शु० ८ दिने श्रीपत्तने ॥"

ज्योतिष:—	दीक्षा प्रतिष्ठा शुद्धि[13]
वैधानिक:—	समाचारी शतक[14], संदेह दोलावली पर्याय[15]
सैद्धान्तिक-चर्चा:—	विशेष शतक[16], विचार शतक[17], विशेष संग्रह[18], विसम्वाद शतक, फुटकर प्रश्नोत्तर, प्रश्नोत्तर सार संग्रह[19]
ऐतिहासिक:—	खरतरगच्छ पट्टावली[20], अनेक गीत स्तवनादि

१३ "श्रीलूणकर्ण सरसि, स्मरशर-वसु षड्डुपति वर्षे ॥१॥
ज्योतिः शास्त्रविचक्षण-वाचक-जयकीर्तिदत्त-साहाय्यैः ।
श्री समयसुन्दरोपाध्यायैः सन्दर्भितो ग्रन्थः ॥२॥"

१४ "प्रारब्धं किल सिन्धुदेशविषये श्रीसिद्धपुर्यामिदं,
मूलत्राणपुरे कियद्विरचितं वर्षत्रयात् प्राग्मया ।
सम्पूर्णं विदधे पुरे सुखकरे श्रीमेडतानामके,
श्रीमद्विक्रमसंवति द्वि-मुनि-षट्-प्रालेयरोचिर्मिते १६७२ ॥३॥"

१५ "संवत् १६६३"

१६ "विक्रमसंवति लोचनमुनिदर्शनकुमुदबान्धवप्रमिते। (१६७२)
श्री पार्श्वजन्मदिवसे पुरे श्रीमेडतानगरे ॥२॥"

१७ "स्वच्छे 'खरतर' गच्छे विजयिनि जिनसिंहसूरिगुरुराजे।
वेदमुनिदर्शनेन्दु (१६७४) प्रमितेऽब्दे 'मेडता' नगरे ॥१॥

१८ "तैः शिष्यादिहितार्थं ग्रन्थोऽयं ग्रथितः प्रयत्नेन ।
नाम्ना विशेषसंग्रह इषुवसुश्रृङ्गार (१६८५) मितवर्षे ॥३॥

१९ "इति श्रीसमयसुन्दरकृत प्रश्नोत्तरसारसंग्रहसमाप्तः ।" प्रति, का० वि० भं० बड़ोदा । यह ग्रन्थ नामस्वरूप प्रश्नोत्तर रूप न होकर स्वयं संगृहीत शास्त्रालापकरूप है ।

२० "इमं गुर्वावली ग्रन्थं गणिः समयसुन्दरः ।
नभो-निधि-रसेन्द्वब्दे स्तम्भतीर्थपुरेऽकरोत् ।१।"

भाषा टीका:— षडावश्यक बालावबोध[३८]।
भाषा रास-साहित्य:— शांब प्रद्युम्न चौपाई[३९], दानादि चौढालिया[४०], चार प्रत्येक बुद्ध रास[४१], मृगावती रास[४२], सिंहलसुत प्रिय मेलकरास[४३], पुण्यसार-

---

३८ "श्रीमज्जेसलमेरुदुर्गनगरे, पूर्वं सदा वासित-
श्रत्वारंश्चतुरा श्रमीकृत चतुर्मास्यां मया पाठिताम् ।२।
× × ×
कल्याणाभिधराउल:क्षितिपतौ राज्यश्रियं शासति,
श्रीमद्विक्रमभूपतेस्त्रिवसुषट्ग्लौ संख्यके वत्सरे ।"

३९ "श्री संघ सुजगीस ए, हीयडइ श्र हरख अपार ।
थंभण पास पसाउलइ, खम्भायत सुखकार ।।
सुखकार संवत् सोल एगुणसट्ठि विजय दशमी दिनइ ।
एक बीस ढाल रसाल ए ग्रन्थ रच्यउ सुन्दर शुभ मनइ ।।"

४० "सोले सै बासठ समै रे, सांगानेर मझार ।
पद्मप्रभू सुपासउलै रे, एह थुण्यो अधिकारो रे। धर्म हिये धरो"

४१ "सोलसइ पांसठि समइए, जेठ पूनिम दिन सार,
चउथउ खंड पूरउ थयउ ए, आगरा नयर मझार,
विमलनाथ सुपसाउलइ ए, सानिधि कुशल सूरिंद,
च्यारे खंड पूरा थया ए, पाम्यउ परमानन्द" ।

४२ ' सोलसइं अड़सठी वरषे, हुई चउपइ घणे हरषे वे,
मृगावती चरण कया त्रिहुं खण्डे, घणे आनन्द घमण्डे वे ।६१।
× × ×
सहर बड़ा मुलताण विशेषा, कान सुण्या अब देखा वे,
सुमतिनाथ श्री पासजिणंद मूलनायक सुखकन्दा वे ।८२।'

४३ "संवत् सोल बहुत्तरि, मेडता नगर मझारि,
प्रिय मेलक तीरथ चोपइ रे, कीधी दान अधिकार ।२५।
कचरौ श्रावक कौतकी रे, जेसलमेरि जाणो,
चतुरे जोड़ावी जिणि ए चोपइ रे, मूल आग्रह मूलताण ।२६।"

सिक व्याख्यान[२९], श्रावकाराधना[३०], यति आराधना[३१]।

स्तोत्र-साहित्यः— सप्तस्मरण वृत्ति[३२], भक्तामर सुबोधिनी वृत्ति[३३], कल्याण मन्दिर वृत्ति[३४], जयतिहुअण वृत्ति[३५], दुरियर स्तोत्र वृत्ति[३६], विमल स्तुति वृत्ति, ऋषिमण्डल स्तोत्र अवचूरि[३७]।

---

२९ "श्रीमद्विक्रमसंवति, बाणरसभ्रमरचरणशशिसङ्ख्ये ।
श्रीअमरसरसि नगरे, चैत्रदशम्यां च शुक्लायाम् ॥"

३० उच्चाभिधान नगरे...............................
महिमासमुद्र-शिष्यार्थहेण मुनिषड्रसचन्द्रवर्षे ।"

३१ "संवत् १६८५"

३२ "संवत् १६६५"
"सप्तस्मरणटीकेयं, निर्मिता न च शोधिता ।
वृद्धावस्थावशाच्छोध्या, परं श्रीहर्षनन्दनैः ।६।
लूणियाफसला-दत्त-वसत्यां वृत्तिरुत्तमा ।।
श्रीजालोरपुरे बाणनिधिशृङ्गारसंवति ।७।"

३३ "पत्तने नगरे सप्तवसुशृङ्गारसंवति"

३४ "श्रीमद्विक्रमतः वरेषु नवषट्जैवातृके (१६६५) वत्सरे,
मासे फाल्गुनिके प्रपूर्णशशिनि प्रह्लादने सत्पुरे ।"

३५ "अणहिलपत्तननगरे, संवति मुन्यऽष्टशृङ्गारे १६८६ ॥१॥
मुनि-सहजविमल पण्डित-मेघविजय-शिष्य पठनार्थम् ॥३॥"

३६ "संवत् १६८४ लूणकरणसर"

३७ "इति श्रीसंग्रामपुरे सं० १६६२ वर्षे"

चौपाई५०, स्थूलिभद्र रास५१, क्षुल्लक कुमार रास५२, चम्पक श्रेष्ठि चौपाई५३, गौतम पृच्छा चौपाई५४, व्यवहार शुद्धि धनदत्त चौपाई५५, साधु-वन्दना, पुञ्जा ऋषि रास५६, केशी प्रदेशी प्रबन्ध५७, द्रौपदी चौपाई५८।

---

५० "संवत सोल एकाणू वरसे, काती वदी तृज हरपे वे. १६
श्री खम्भायत खार वाडइ, चउमास रया सुदिहाडइ वे. २०"

५१ "इन्दु रस संख्याइं एह संवच्छरमान,
आदिनाथ थी नेमिजिन तेतमउ वरस प्रधान।
ऋतु हेमंत थूलिभद्र दीक्षामास सुचंग,
पंचमी बुधवारइं रचीउ रास सुरङ्ग ॥६॥"

५२ "संवत् १६६४ जालौर"

५३ "संवत सोल पंचाणुयइ मइं, जालोर म ड़े ऊाड़ी रे।
चांपक सेठनि चउपइ अङ्गि, आलस नइ उंघ छोड़ी रे, के-१५

५४ "पाल्हणपुर थी पांचे कोसे, उत्तरदिशि चान्द्रेठ गामो रे।
तिहाँ खरतर श्रावक वसइ, साह नींवउ जसवंत नामो रे। पु० ५।
तेह नइ आग्रह तिहाँ रह्या, दिन पनरहसीम त्रिठाणु रे
तिहाँ कीधी ए चउपई, संवत सोल पंचाणु रे। पु० ६॥"

५५ "संवत सोल छनुं समइ ए, आसू मास मझारि।
अमदावादइ ए कहइ ए, धनदत्त नउ अधिकार।"

५६ "संवत सोल अठाणुअइ, श्रावण पंचमी अजुवालइ रे।
रास भण्यो रलियामणो, श्री समयसुन्दर गुण गाइ।३०।"

५७ "सं० १६६६ वर्षे चैत्र सुदि २ दिने कृतो लिखितश्च श्री अहमदावादनगरे श्रीहाजापटेलपोलमध्यवर्ती श्रीबृहत्खरतरोपाश्रये भट्टारक—श्रीजिनसागरसूरि—विजयिराज्ये श्रीसमयसुन्दरोपाध्यायैः, पं० हर्षकुशलगणिसहाय्यैः।"

रास४४, नलदमयन्ती चौपाई४५, सीताराम
चौपाई४६, वल्कलचीरी रास४७, शत्रुञ्जय
रास४८, वस्तुपाल-तेजपाल रास४९, थावचा

---

४४ "संवत सोल बिहुत्तरइ, भर भादव मास ।
'ए अधिकार पूरउ कह्यो, समयसुन्दर सुख-वास ॥"

४५ "तिलकाचारज कही एहनी, टीका सात हजार ।
दसविकलिक मूल सूत्रनी, महाविदेह क्षेत्र मझार ॥
× × ×
संवत सोल त्रिहुत्तरे, मास वसंत आणंद ।
नगर मनोहर मेडतो, जिहां वासुपूज्य जिणंद ॥
× × ×
ववझाय पभणइ समयसुन्दर, कीयो आग्रह नेतसी,
चउपइ नल दवदन्ती केरी, चतुर माणस चितवसी ।

४६ "त्रिणहजार नें सातसे माझने सहु ग्रन्थनुं मानो रे,१६
× × ×
खरतर गच्छ मांहि दीपता श्री मेडता नगर मझारो रे,
२०" (सं० १६७७ आदि)

४७ "जेसलमेरइ जिन प्रासाद जिहाँ घणा रे,
सोम वसु सिणगार १६८१ वरस वखाणीये रे" ५

४८ "भणशाली थिरु अति भलोए, दयावंत दातार,
शत्रुञ्जय संघ करावीयो ए, जेसलमेर मझार ।
'शत्रुञ्जय महात्म्य' ग्रन्थ थी ए, रास रच्यो सुखकार,
रास भण्यो शत्रुञ्जय तणो ए, नयर नागोर मझार।" २२-२३

४९ "संवत सोले बयांसीया वरसे, रास कीधो तिमिरीपुर हरषे,
वस्तपाल तेजपाल नो रास, भणतां सुणतां परम उल्लास।" ४०

	कर्मछत्तीसी[६४], पुण्य छत्तीसी[६५], सन्तोष छत्तीसी[६६], आलोयणा छत्तीसी[६७]।
फुटकर साहित्यः—	स्तोत्र, स्तव, स्वाध्याय, गीत, वेलि, भास आदि।

सैद्धान्तिक-ज्ञान

कवि के रचित विशेषशतक, विसंवादशतक और विशेष संग्रह आदि का आलोडन करने पर ऐसा प्रतीत होता है कि कवि ने अपने अनुपमेय आगमिक ज्ञान का निचोड़ इन ग्रन्थों में रखकर जो जैन-साहित्य की अनिर्वचनीय सेवा की है वह सचमुच में पीढ़ियों तक चिर-स्मरणीय रहेगी। क्योंकि, आगम-साहित्य में जो स्थल-स्थल पर पूर्वापरविरोधिनी और तर्क-विरोधी वक्तव्यों का उल्लेख है, जिससे आगम साहित्य; पर एक बहुत बड़ा धब्बा सा लगता है उन लगभग ३५० विरोधी वक्तव्यों का आगमिक-प्रमाणों द्वारा समाधान करते हुये जिस प्रकार सामञ्जस्य स्थापित किया है; वह हर एक के लिये साध्य नहीं। इस प्रकार का सामञ्जस्य बहुश्रुतज्ञ और प्रवर गीतार्थ ही कर सकता है। वही कार्य कवि ने करके अपनी 'महोपाध्याय'

---

६४ सकलचन्द सद्गुरु सुपसाये, सोलह सइ अड़सट्ठजी।
करम छत्तीसी ए मइं कीधी, माहतणी सुदी छट्ठजी। क० ।३५।

६५ संवत निधि दरसण रस ससिहर, सिधपुर नयर मझारजी।
शांतिनाथ सुप्रसादे कीधी, पुण्य छत्तीसी सारजी॥ पु० ॥३५॥

६६ संवत सोल चउरासी वरसइ, सर मांहे रह्या चउमास जी।
अस सोभाग थयउ जग मांहे, सहु दीधी साबासजी। सा० ।३६।

६७ संवत सोल अट्ठाणूए, अहमदपुर मांहि।
समयसुन्दर कहइ मइं करी; आलोयण उच्छाहि ॥ पा० ॥३६॥

चौवीसी-वीसी:— चौवीसी[५९], ऐरवतक्षेत्रस्थ चौवीसी[६०], विहरमानवीसी[६१]।

छत्तीसी-साहित्य:— सत्यासीया दुष्काल वर्णन छत्तीसी, प्रस्ताव सवैया छत्तीसी[६२], क्षमा छत्तीसी[६३],

---

५८ "द्रूपदीनी ए चउपइ, मइ बृद्ध पणइ पणि कीधी रे।
शिष्य तणइ आग्रह करी, मइ लाभ ऊपरि मति दीधी रे।२।
× × ×
अमदाबाद नगर मांहे, संवत सतरसइ वरषे रे।
माह मास थइ चउपई, हुंसी माणस ने हरषे रे। द्रू० ५।
वाचक हरषनन्दन वली, हरषकुशलइं सानिधि कीधइ रे।
लिखण सोभण सहाय थकी, तिण तुरत पूरी करि दीधी रे। द्रू. ६।

५९ "वसु इन्द्री रे रस रजनीकर संवच्छरें रे,
(१६५६) हरि अमदावाद मझार।
विजयादशमी दिनें रे गुण गाया रे,
तीर्थंकरना शुभ मनें रे। ती० २।"

६० "संवत् सोल सताणुया वरसे, जिनसागर सुपसाया।
हाथी साह तणइ आग्रह कहइ,
समयसुन्दर उवझाय रे। ऐ० २।"

६१ "संवत सोलह सत्ताणु, माह वदि नवमी वखाणु।
अहमदावाद मझारि, श्रीखरतरगच्छ सार। वी० ५।"

६२ सवत सोलनेउया वर्षो, श्री खंभाइत नयर मझारि;
कीया सवाया ख्याल विनोदइं, सुद्ध मंडण श्रवणे सुखकारि।

६३ नगर मांहि नागोर नगीनउ, जिहां जिनवर प्रासादजी।
श्रावक लोग वसइ अति सुखिया,
धर्म तणइ परसाद जी। आ०। ३४।

निशीथ चूर्णि[1] सह, जीतकल्प, यतिजीतकल्पसूत्र बृहद्वृत्ति सह[2] , विशेषकल्पचूर्णि[3] , दशाश्रुतस्कन्ध चूर्णि-टीका सह,

ओघनिर्युक्ति भाष्य-टीका सह, वीरर्षिकृता पिण्डनिर्युक्ति लघु टीका, अनुयोगद्वार सूत्र चूर्णि[4] टीका सह, नन्दीसूत्र टीका सह, प्रवचन सारोद्धार टीका सह, दसवैकालिक निर्युक्ति-टीका सह, उत्तराध्ययन सूत्र चूर्णि, लघु वृत्ति, शान्त्याचार्य कृत बृहट्टीका, कमलसंयमोपाध्याय कृत सर्वार्थसिद्धि टीका सह,

कल्पसूत्र, जिनप्रभीय संदेहविषौषधि टीका, पृथ्वीचन्द्रसूरि कृत कल्पटिप्पनक, विनयचन्द्रसूरि कृत कल्पनिरुक्त, कुलमण्डनसूरि कृत कल्पसूत्र अवचूरि और टिप्पनक, हेमहंससूरि कृत कल्पान्तवांच्य,

आवश्यक सूत्र—चूर्णि, निर्युक्ति, भाष्य सह, देवर्धिगणि कृत आवश्यक चूर्णि[5] , हारिभद्रीय बृहट्टीका, मलयगिरि कृता लघु टीका, तिलकाचार्य कृता लघु टीका, यशोदेवसूरि कृता पाक्षिक प्रतिक्रमण टीका,

षडावश्यक—नमि साधु और देवेन्द्रसूरि कृत टीका, तरुणप्रभसूरि-मुनिसुन्दरसूरि-उ० मेरुसुन्दर और हेमन्त गणि कृत बालावबोध, जयचन्द्रसूरि कृत

---

१. स० श० पृ० ४७   २. स० श० पृ० ३३
३. स० श० पृ० १२५   ४. स० श० पृ० ५७
५. स० श० पृ० ८

और ज्ञान-वृद्ध-गीतार्थ की योग्यता समाज के सन्मुख रखकर आगम-साहित्य की प्रामाणिकता और विशदता की रक्षा की है।

कवि का आगमिक ज्ञान अगाध था; जिसकी विशदता का आस्वादन करने के लिये हमें उपर्युक्त ग्रन्थों का अवलोकन करना चाहिये। कवि के जैन-साहित्य-ज्ञान की परिधि का अनुमान करने के लिये गाथा सहस्री, विशेषशतक और समाचारी शतक में उद्धृत ग्रन्थों की अधोलिखित तालिका से उसकी विपुल ज्ञान राशि का और अद्भुत स्मरण: शक्ति का 'स्केच' हमारे सामने आ जायगा।

आगम— आचारांग सूत्र नियुक्ति-चूर्णि-टीका सह, सूत्रकृतांग नियुक्ति-चूर्णि-टीका सह, अभयदेवीया टीका सह स्थानांग सूत्र, कलिकाल-सर्वज्ञ के गुरु देवचन्द्रसूरि कृत स्थानांग टीका सह (देखिये, स० श० पृ० ४३], समवायांग टीका सह, भगवती सूत्र लघु एवं बृहट्टीका सह, ज्ञाताधर्मकथा-उपासकदशा-प्रश्नव्याकरण - विपाकसूत्र-औपपातिक सूत्र-राजप्रश्नीय-प्रज्ञापना-जीवाभिगम-जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति टीका सह, सूर्यप्रज्ञप्ति नियुक्ति-टीका सह, चन्द्रप्रज्ञप्ति-निरयावलिका टीका सह, ज्योतिष्करण्डक प्रकीर्ण टीका सह, गच्छाचार प्रकीर्ण, भक्त प्रकीर्ण, संस्तारक प्रकीर्ण, मरण समाधि प्रकीर्ण, तीर्थोद्गालिक प्रकीर्ण, तीर्थोद्धार-प्रकीर्ण*, विवाह चूलिका।

बृहत्कल्पसूत्र भाष्य-टीका सह, व्यवहार सूत्र भाष्य टीका सह, निशीथ भाष्य चूर्णि सह, महा-

* देखिये, स० श० पृ० ४३.

सङ्घाचार भाष्य, 'निच्छय' गाथा वृत्ति[१], रत्नसञ्चय[२], यशोदेवसूरि एवं देवगुप्तसूरि कृत नवपद प्रकरण वृत्ति, हरिभद्रसूरि कृत ज्ञानपञ्चक विवरण, पञ्चलिङ्गी प्रकरण टीका सह, निर्वाण कलिका, विचारसार, कुलमंडनसूरि कृत विचारामृतसंग्रह, उमास्वाति कृत पूजा प्रकरण, आचारवल्लभ और प्रतिष्ठा कल्प, पादलिप्ताचार्य कृत प्रतिष्ठा कल्प, जिनप्रभसूरि कृत गृहपूजाविधि, जिनवल्लभसूरि कृत पौषधविधि प्रकरण, पिण्डविशुद्धि बृहट्टीका, जिनदत्तसूरि कृत उपदेश रसायन, चर्चरी, उत्सूत्रपदोद्घाटनकुलक, जिनपतिसूरि कृत प्रबोधोदय वादस्थल और सङ्घपटक टीका, देवेन्द्रसूरि कृत धर्मरत्न प्रकरण टीका, हेमचन्द्राचार्य कृत योगशास्त्र स्वोपज्ञ वृत्ति, योगशास्त्र अवचूरि और सोमसुन्दरसूरि कृत बालावबोध, नवतत्त्व बृहद्बालावबोध, उपदेश सत्तरी, चैत्यवन्दन भाष्य, प्रत्याख्यान भाष्य, प्रत्याख्यान भाष्य नागपुरीय तपागच्छका[३], अभयदेवसूरि कृत वन्दनक भाष्य, जीवानुशासन टीका, पीपलिया उदयरत्न कृत जीवानुशासन, चैत्यवन्दनकुलक टीका, आचारप्रदीप, उ० जिनपाल कृत संदेह दोलावली बृहद्वृत्ति (?), और द्वादशकुलक टीका, संबोधप्रकरण, कायस्थिति सूत्र, संघतिलकसूरि कृत सम्यक्त्व सप्तति वृत्ति, देवेन्द्रसूरि कृत प्रश्नोत्तर रत्नमाला टीका, मुनिचन्द्रसूरि कृत उपदेश (पद) वृत्ति, सोमधर्मकृत उपदेशसप्ततिका, मुनिसुन्दरसूरि कृत उपदेश तरङ्गिणी, उ० श्रीतिलक कृत गौतमपृच्छा प्र० टीका, वनस्पति सप्ततिका,

१ गा० पृ० ३४। २ गा० पृ० ३५। ३ स० श० पृ० १२७

प्रतिक्रमण हेतु, श्राद्धविधि प्रकरण सभाष्य, हरिभद्रसूरि कृत श्रावक प्रज्ञप्ति टीका सह, विजयसिंहसूरि कृत श्रावक प्रतिक्रमण चूर्णि, महाकवि धनपाल कृत श्रावकविधि६, जिनवल्लभसूरि कृत श्राद्धकुलक, जिनेश्वरसूरि कृत श्रावकधर्मप्रकरण, देवेन्द्रसूरिकृत श्राद्धदिनकृत्य टीका, रत्नशेखरसूरि कृत श्राद्धविधि कौमुदी, तपा कृत प्रतिक्रमण वृत्ती,

समाचारी— परमानन्द - अजितसूरि-इन्द्राचार्य-तिलकाचार्य-श्री चन्द्राचार्य कृत योगविधि, श्रीदेवाचार्य कृत यतिदिनचर्या टीकासह, जिनवल्लभसूरि-जिनदत्तसूरि-जिनपतिसूरि - तिलकाचार्य - देवसुन्दरसूरि - सोमसुन्दरसूरि और बृहद्गच्छीय सामाचारी, जिनप्रभसूरि कृत विधिप्रपा।

ऐतिहासिक—आमदेवसूरि और चन्द्रप्रभसूरि कृत प्रभावक चरित, कुमारपाल चरियं, भावहड़ा कृत गुरुपर्वप्रभावक, छापरिया पूनमीया गच्छीय-साधु पूनमीया गच्छीय-तपागच्छीय-तपा लघुशालीय पट्टावली, विजयचन्द्रसूरि कृत तपागच्छीय प्रबन्ध।

प्रकरण— उपदेशमाला, उपदेश कर्णिका, उपदेशमाला विवरण, उपदेशचिन्तामणि, मलयगिरि कृत बृहत्क्षेत्रसमास और बृहत्संग्रहणी प्रकरण टीका, धनेश्वरसूरि कृत सूक्ष्मार्थविचारसार प्र० टीका, देवेन्द्रसूरि कृत षडशीति प्रकरण, कम्मपयडी, पञ्चवस्तुक टीका सह, यशोदेवसूरि कृत पञ्चाशक चूर्णि, पञ्चाशक टीका सह, पुष्पमाला टीका सह, सिद्धप्राभृत टीका, मुनिचन्द्रसूरि कृत धर्मबिन्दु प्र० टीका, उ० धर्मकीर्ति कृत

६. गा॰ पृ॰ ६

चूर्णि, यतिजीत कल्पसूत्र बृहद्वृत्ति, विशेष कल्पचूर्णि, देवर्धिकृत आवश्यक-चूर्णि, श्राद्धविधि प्रकरण भाष्य, आमदेवसूरि कृत प्रभावक चरित, विजयचन्द्रसूरि कृत तपागच्छ प्रबन्ध, भावहडा गुरु-पर्वक्रम, छापरीया पूनमीया-साधुपूनमीया गच्छ की पट्टावलियें, देवसुन्दरसूरि कृत समाचारी, बृहद्गच्छी समाचारी, उमास्वाति कृत आचारवल्लभ और प्रतिष्ठा-कल्प, पादलिप्ताचार्य कृत प्रतिष्ठा कल्प, नागपुरीय तपागच्छ का प्रत्याख्यान भाष्य, पीपलिया उदयरत्न कृत जीवानुशासन, मानदेवसूरि कृत कुलक, वर्धमानसूरि कृत कथाकोष, देवधर प्रबन्ध आदि ग्रन्थ आज उपलब्ध नहीं है। अतः मनीषियों का कर्त्तव्य है कि इन अप्राप्त ग्रन्थों का अनुसंधान करें।

वैधानिकता

जिस चैत्यवास का खण्डन कर आचार्य जिनेश्वर ने सुविहित-विधिपक्ष-खरतर गच्छ का निर्माण किया था और जिसकी नींव दृढ़ करने के लिये आचार्य जिनवल्लभ, आचार्य जिनदत्त, आचार्य मणिधारी जिनचन्द्र[1] और आचार्य जिनपति ने वैधानिक ग्रन्थ निर्माण किये थे। आचार्य जिनप्रभ ने विधि प्रपा और रुद्रपल्लीय आचार्य वर्धमान ने आचार दिनकर रचकर जिसके अनुष्ठानों की वैधानिकता स्थापित की थी। वही गच्छ ४-५ शताब्दियों पश्चात् पुनः शैथिल्य के पन्जे में फँस चुका था—जिसका उद्धार युगप्रधान आचार्य जिनचन्द्रसूरि ने किया था, किन्तु जिसकी वैधानिक शास्त्रीय परम्परा पुनः स्थापित न कर पाये थे और इधर अन्य गच्छीयों ने (जिसमें विशेषकर तपागच्छ वालों ने) इस गच्छ की मान्य परम्पराओं पर कुठाराघात करना प्रारम्भ किया था। उसकी रक्षा के लिये तथा मर्यादा अक्षुण्ण और प्रतिष्ठित रखने के लिये

१ पद-व्यवस्था कुलक।

दर्शन सप्ततिका, आराधना पताका, नमस्कार पञ्जिका, भावना कुलक, मानदेवसूरि कृत कुलक[1], उ० मेरुसुन्दर कृत प्रश्नोत्तर ग्रन्थ, हीरप्रश्न।

स्तोत्र— जिनवल्लभसूरि कृत नन्दीश्वर स्तोत्र टीका सह, हेमचन्द्रसूरि कृत महादेवस्तोत्र और वीतराग स्तोत्र प्रभाचन्द्रसूरि कृत टीका सह, जिनप्रभसूरि कृत सिद्धान्त स्तव, देवेन्द्रसूरि कृत समवसरण स्तोत्र, ऋषिमण्डल स्तव, देवेन्द्रस्तव।

चरित्र— संघदासगणि कृत वसुदेवहिण्डी, पउम चरियं, जिनेश्वरसूरि कृत कथाकोष प्रकरण, देवभद्राचार्य कृत पार्श्वनाथ चरित और महावीर चरित, वर्धमानसूरि कृत कथाकोपर और आदिनाथ चरित, हेमचन्द्राचार्य कृत, आदिनाथ-नेमिनाथ-महावीर चरित, शान्तिनाथ चरित, चित्रावलीय देवेन्द्रसूरि कृत सुदर्शन कथा, देवधर प्रबन्ध[2] जयतिलकसूरि कृत सुलसा चरित महाकाव्य, पद्मप्रभसूरि कृत मुनिसुव्रत चरित, अभयदेवसूरि कृत जयन्तविजय काव्य, भावदेवसूरि एवं धर्मप्रभसूरि कृत कालिकाचार्य कथा, पूर्णभद्रगणि कृत कृतपुण्यक चरित, सिंहासन द्वात्रिंशिका।

लेख— आबू वस्तुपाल मंदिर-देवकुलिका प्रशस्ति[3], ऊनानगर प्रतिमालेख[5], बीजापुर शिलालेख[6]।

इन उल्लेखनीय ग्रन्थों में छोटे-मोटे प्रचलित प्रकरणों आदि का समावेश नहीं किया गया है। साथ ही इस सूची में आगत भी देवचन्द्रसूरि कृत स्थानाङ्ग टीका, तीर्थोद्धार प्रकीर्ण, महानिशीथ

१ स० श० पृ० ६७, ७१। २ स० श० पृ० ४। ३ स० श० पृ० ७।
४-५-६ स० श० पृ० २४।

व्याकरण

यह सत्य है कि कवि ने अपनी कृतियों में अन्य विद्वानों की तरह पण्डिताऊपन दिखाने के लिये स्थल-स्थल पर, शब्द-शब्द पर व्याकरण का उपयोग नहीं किया है। किन्तु यह नहीं कि कवि का व्याकरण ज्ञान शून्य हो! कवि की समग्र देववाणीमय रचनाओं को देख जाइये; कहीं भी व्याकरण ज्ञान की क्षति प्राप्त नहीं होगी। कवि को 'सिद्धहेमचन्द्र शब्दानुशासन, पाणिनीय व्याकरण, कलापव्याकरण, सारस्वत व्याकरण और विष्णुवार्तिक* आदि व्याकरण ग्रन्थों का भी विशद ज्ञान था। कवि की प्रकृति को देखते हुये ऐसा प्रतीत होता है कि उनका विचार था कि ऐसी वाणी का प्रयोग किया जाय जो सर्वग्राह्य हो सके और संस्कृत भाषा का सामान्य छात्र भी उसको समझ सके। यदि स्थल-स्थल पर व्याकरण का उपयोग किया गया तो वह कृति केवल विद्वद्भोग्या ही बनकर रह जायगी। यदि उस विद्वद्भोग्या कृति का सामान्य विद्यार्थी अध्ययन करेगा तो व्याकरण के दल-दल में फँसकर, सम्भव है देवगिरा के अध्ययन से पराङ्मुख हो जाय। अतः जहां विशेष मार्मिक-स्थल या अनेकार्थी या असिद्धाभास से स्थल हों, वहीं व्याकरण से सिद्ध करने की चेष्टा की जाय। इसी भावना को रखते हुये, व्याकरण के दल-दल में न फँसकर, कृति को निर्दोष रखते हुये जिस सरलता को अपनाया है; वह व्याकरण के सामान्य-अभ्यासी के अधिकार के बाहर की बात है। इस प्रकार का प्रयत्न पूर्ण वैयाकरणी ही कर सकता है और वह प्रतिभा इस कवि में विद्यमान है।

---

* अने० पृ० ५६

कवि ने अभूतपूर्व साहस कर इस गच्छ की रक्षा की थी। उसी का फल था समाचारी शतक का निर्माण।

समाचारी शतक में 'महावीर के षट् कल्याणक थे, अभयदेवसूरि खरतरगच्छ के थे, पर्व दिवस में ही पौषध करना चाहिये, सामायिक में पहले 'करेमिभंते' के पश्चात् इर्यापथिकी आलोचना करनी चाहिये, 'आयरिय उवज्झाय' श्रावकों को ही पढ़ना चाहिये, साध्वी को व्याख्यान देने का अधिकार है, देवपूजा शास्त्रीय है, तरुण स्त्रियों के लिये मूलनायक का स्नात्र-विलेपन निषिद्ध है, प्रासुक जल ग्रहण करना चाहिये, ५० वें दिन संवत्सरी पर्व मानना चाहिये, तिथियों की क्षय-वृद्धि में लौकिक पञ्चांगों को मान्यता देनी चाहिये, पौषध में भोजन नहीं करना चाहिये और साधु को पानी ग्रहण करने के लिये मिट्टी का घड़ा रखना चाहिये' आदि चार्चिक प्रश्नों का समाधान करते हुये शिष्टता के साथ शास्त्रीय-प्रमाणों को सन्मुख रखकर गच्छ की परम्परा को वैधानिक स्वरूप प्रदान किया है तथा अनुष्ठानीय कर्मकाण्ड-उपधान, दीक्षा-शान्ति-स्नात्र, प्रतिक्रमण, लुञ्चन, देवपूजन आदि का विधान निर्मित कर कवि ने स्थायित्व प्रदान किया है।

इस भगीरथ प्रयत्न में कहीं भी कवि ने अन्य विद्वानों की तरह कि 'मेरा सत्य है, तेरी मान्यता झूठी और अशास्त्रीय है' आदि अशिष्ट वाक्यों का प्रयोग कर, अन्य गच्छीयों का खण्डन कर; स्व मत के मण्डन का कहीं भी प्रयत्न नहीं किया है। किन्तु सैद्धान्तिक परम्परा को सन्मुख रखकर सभी जगह यह दिखाया है कि यह शास्त्रसिद्ध और सत्य है। इस प्रकार कवि को हम व्यावहारिक जीवन और प्ररूपक जीवन में देखते हैं तो वह विधानकार के रूप में दिखता हुआ 'वैधानिक' अनुष्ठानों का मूर्तिमान स्वरूप ही दिखाई पड़ता है।

राजाओं, सामन्तों और विद्वानों की परिषद् में कवि ने अपना यह नूतन ग्रन्थ सुनाकर सबके सन्मुख यह सिद्ध कर दिखाया कि मेरे जैसा एक अदना व्यक्ति भी एक अक्षर का एक लाख अर्थ कर सकता है तो सर्वज्ञ की वाणी के अनन्त अर्थ कैसे न होंगे? यह ग्रन्थ सुनकर सब चमत्कृत हुये और विद्वानों के सन्मुख ही सम्राट ने इस ग्रन्थ को प्रामाणिक ठहराया।

वस्तुतः कवि की यह कृति जैन-साहित्य ही क्या, अपितु समग्र भारतीय वाङ्मय में ही अद्वितीय है। क्योंकि, वैसे अनेकार्थी कृतियें अनेकों¶ प्राप्त हैं किन्तु एक अक्षर के हजार अर्थों के ऊपर किसी ने भी अर्थ कर रचना की हो, साहित्य-संसार को ज्ञात नहीं। अतः इस अनेकार्थी रचना पर ही कवि का नाम साहित्य जगत में सर्वदा के लिये अमर रहेगा।

इस कृति को देखने से ऐसा मालूम होता है कि कवि का व्याकरण, अनेकार्थी कोष, एकाक्षरी कोष और कोषों पर एकाधिपत्य था और एकाक्षरी तथा अनेकार्थी कोषों को तो कवि मानो घोट-घोट कर पी गया हो। अन्यथा इस रचना को कदापि सफलता के साथ पूर्ण नहीं कर पाता। कवि इस कृति में निम्न कोषों का उल्लेख करता है:—

अभिधान चिन्तामणि नाममाला कोष, धनञ्जय नाममाला, हेमचन्द्राचार्य कृत अनेकार्थ संग्रह, तिलकानेकार्थ, अमर एकाक्षरी नाममाला, विश्वशम्भु एकाक्षरी नाममाला, सुधाकलश

बहुप्रशंसापूर्वं 'पठतां पाठ्यतां सर्वत्र विस्तार्यतां सिद्धरस्तु।' इत्युक्त्वा च स्वहस्तेन गृहीत्वा एतत् पुस्तकं मम हस्ते दत्वा प्रमाणीकृतोऽयं ग्रन्थः। [अने० पृ० ६५]

¶ हीरालाल र० कापडिया लिखित 'अनेकार्थरत्नमंजुषा-प्रस्तावना'

अनेकार्थ और कोष

कहा जाता है कि एक समय सम्राट अकबर की विद्वत्सभा में किसी दार्शनिक विद्वान ने जैनों के आगम सम्बन्ध की 'एगस्स सुत्तस्स अनंतो अत्थो' 'एक सूत्र के अनन्त अर्थ होते हैं' पर व्यंग कसा¶। उससे तिलमिलाकर, कवि ने अपने शासन की सुरक्षा और प्रभावना, सर्वज्ञ के सर्वज्ञता और आगम साहित्य की अक्षुण्णता रखने के लिये सम्राट से कुछ समय प्राप्त किया। इसी समय में कवि ने "रा जा नो द द ते सौ ख्यम्" इन आठ अक्षरों पर ८ आठ† लाख अर्थों की रचना की। इस ग्रन्थ का नाम कवि ने 'अर्थरत्नावली' रखा और स० १६४६ श्रावण शुक्ला १३ की सांय को जिस समय अकबर ने काश्मीर विजय‡ के लिये श्रीराज श्री-रामदासजी की वाटिका में प्रथम-प्रयास किया था, वहीं समस्त

¶ उ० रूपचन्द्र (रत्नविजय) लिखित एक पत्रानुसार।

† मूलतः अर्थ १० लाख किये थे किन्तु पुनरुक्ति आदि का परि-मार्जन कर ८ लाख ही अर्थ सुरक्षित माने गये हैं।

‡ "संवति १६४६ प्रमिते श्रावण सुदि १३ दिनसन्ध्यायां 'कश्मीर' देशविजयमुद्दिश्य श्रीराज-श्रीरामदासवाटिकायां कृत प्रथमप्रयाणेन श्रीअकब्बरपातिसाहिना जलालुद्दीनेन अभिजातसाहिजात-श्रीसलेमसुरत्राणसामन्तमण्डलिकराजराजितराजसभायां अनेक-विधवैयाकरणतार्किकविद्वत्तमभट्टसमक्षं अस्मद्गुरुवरान् युगप्र-धानखरतरभट्टारकश्रीजिनचंद्रसूरीश्वरान् आचार्यश्रीजिनसिंहसूरि-प्रमुखकृतमुख्यमुख्यशिष्यव्रातसपरिकरान् असमानसन्मानबहु-मानदानपूर्वं समाहूय अयमष्टलक्षार्थी ग्रन्थो मत्पार्श्वाद् वाचया-ञ्चक्रे ऽथकेण चेतसा। ततस्तदर्थश्रवणसमुत्पन्नप्रभूतनूतनप्रमो-दातिरेकेण सञ्जातचित्तचमत्कारेण बहुप्रकारेण श्रीसाहिना

महोत्सव काव्य' और ऋषभ भक्तामर काव्य। इस काव्य में कवि ने शब्दालङ्कारों के साथ अर्थालङ्कारों में उपमा, रूपक, प्रतीप, वक्रोक्ति, अतिशयोक्ति, अन्योक्ति, स्वभावोक्ति, विभावना, निदर्शन, दृष्टान्त, संदेह और सङ्कर तथा संसृष्टि अलङ्कारों का सन्निवेश रस-परिपाक की दृष्टि से बहुत ही सुन्दर किया है।

स्तोत्र साहित्य में श्लेष और यमकालङ्कारों की प्रधानता कवि की शब्दालङ्कार प्रियता को प्रकट करती है।*

आनन्दवर्धनाचार्य ने 'काव्यस्यात्मा ध्वनिः' कहकर ध्वनि को काव्य की आत्मा स्वीकार की है। आचार्य मम्मट ने अपने काव्य-प्रकाश नामक लक्षणग्रन्थ में इसी ध्वनि को आश्रित करके वाच्यातिशायी व्यङ्ग के पूर्णकाव्य को उत्तम काव्य स्वीकार किया है। उसी उत्तम काव्य के कतिपय भेदों पर कवि ने 'भावशतक'† में विशदता से विचार किया है और इसके द्वारा ही रस-परिपुष्टि सिद्ध करता हुआ उत्तम काव्य की महत्ता पर विशद प्रकाश डाला है।

चित्रकाव्य

साहित्यशास्त्र की दृष्टि से चित्रकाव्य अधम काव्य माना गया है। परन्तु इसमें सन्देह नहीं कि चित्रकाव्य की रचना में छन्द-शास्त्र, व्याकरण, निर्वचन तथा कोष आदि पर पूर्ण अधिकार होना आवश्यक है। कवि ने भी अपने कतिपय स्तोत्रों में ऐसे ही पाण्डित्य का परिचय दिया है। इन चित्रकाव्यमय स्तोत्रों को भावाभिव्यक्ति या रसनिष्पत्ति की दृष्टि से चाहे उत्कृष्ट काव्य न मानें, किन्तु विचार वैदग्ध्य और रचना-कौशल की दृष्टि से इन स्तोत्रों को उत्कृष्ट काव्य मानना ही होगा। कवि प्रणीत चित्रकाव्यमय स्तोत्र निम्न हैं:—

* कु० पृ० १८७, १८८, १९२। † भावशतक पद्य २।

एकाक्षरी नाममाला, वररुचि एकाक्षरी निघंटु नाममाला*, जयसुन्दरसूरि कृत एकाक्षरी नाममाला† (?)

और इस प्रकार की अनेकार्थी तो नहीं किंतु द्व्यर्थी कृतियें स्तोत्र और गीत रूप में कवि को और भी प्राप्त हैं; जो 'साहित्य-सर्जन' अध्याय में अनेकार्थी-साहित्य की तालिका में उल्लिखित हैं।

छन्द

कवि प्रणीत 'भावशतक' और 'विविधछन्द जातिमय वीतरागस्तव' को देखने से स्पष्ट है कि कवि का 'छन्द' साहित्य पर भी पूर्ण अधिकार था। अन्यथा स्तोत्रों में छन्दनाम सह द्व्यर्थी रचना करना सामान्य ही नहीं, अपितु अत्यन्त दुष्कर कार्य है। कवि ने जिन जिन छन्दों का प्रयोग किया है उनमें से कतिपय तो साहित्य में अप्रयुक्त ही हैं, हैं तो भी क्वचित् ही। कवि प्रयुक्त छन्द निम्न हैं:—

आर्या, गीतिका, पथ्यावक्त्रा, वैतालीय, पुष्पिताग्रा, अनुष्टुप्, उपजाति, इन्द्रवज्रा, इन्द्रवंशा, सोमराजी, मधुमती, हंसमाला, चूडामणि, विद्युन्माला, भद्रिका, चम्पकमाला, मत्ताक्रीडा, दोधक, तोटक, मणिनिकर, मृदङ्गक, रथोद्धता, अश्विनी, शालिनी, स्रग्विणी, द्रुतविलम्बित, प्रभाणिका, वसन्ततिलका, मालिनी, हरिणी, मन्दाक्रान्ता, शिखरिणी, शार्दूलविक्रीडित, स्रग्धरा।

अलङ्कारः—रस

कवि की खण्ड काव्य अथवा महाकाव्य के रूप में रचनायें प्राप्त नहीं हैं; हैं तो भी केवल पादपूर्ति रूप 'जिनसिंहसूरि पद

* अने० पृ० ५४।

पञ्चमहाकाव्य, खण्डप्रशस्ति, चम्पू, मेघदूत, महाभारत आदि ग्रन्थों के अध्येता और अध्यापक भी थे। निष्णात होने के कारण ही ऐसे पादपूर्तिरूप और स्तोत्रात्मक स्वतन्त्र काव्यों की वे रचना कर सके। इनके काव्यों में शब्दमाधुर्य, लालित्य और ओज के साथ अलङ्कारों का पुट आदि सब ही गुण प्राप्त हैं। इनके काव्य रसाभिव्यक्ति के साथ ही अन्तस्तलस्पर्शी भी हैं। इनकी आश्चर्यकारी रचनाकौशल को देखिये:—

"भक्त्या जे···हं जरागणमदानन्दादयध्वंसकं,
लक्ष्मीदीप्रतनुं दयोगुणभुवं तातां सतां देव रम् ।
कृष्णास्फीतरुचिं नरा नमत भो ! जीवामतीति क्षिपं,
त्यागश्रेष्ठयशोरसं कृतनतिं नेमिं मुदा त्रायक ।६।"

देखिये, कवि इसी पद्य के अक्षरों को ग्रहण कर अनुष्टुब् का नया श्लोक निर्माण करता है:—

"भजेऽहं जगदानन्दं, सकलप्रसुतावरम् ॥
कृत राजीमतीत्यागं, श्रेयः सन्ततिदायकम् ।६।"

[नेमिनाथस्तव० कु० पृ० ६१६]

अनेकविध श्लेष और भङ्गश्लेष तथा यमकमय काव्य होते हुये भी इनकी स्वाभाविक सरलता और माधुर्य देखिये:—

"केवलागमसाश्रित्य, युष्मद्व्याकरणे स्थिताः ।
सिद्धिं प्रकृतयः प्रापुः, पार्श्व ! चित्रमिदं महत् ।४।"

[चिन्ता० पार्श्व० स्तोत्र श्लेष, कु० पृ० १८८]

"जय प्रभो ! कैतवचक्रहारी, यस्य स्मृतेस्त्वं तव चक्रहारी ।
मायामहीदारहलोभवामं, स्वर्गाधिपामार हलो भवाम ।४।

× × ×

१. पार्श्वनाथ शृङ्खलामय लघुस्तव ¶, २. जिनचन्द्रसूरि कपाट-लोह शृङ्खलाष्टक‡, ३. पार्श्वनाथ हारबन्धचलच्छृङ्खलागर्भित स्तोत्र†, ४. पार्श्वनाथशृङ्गाटकबन्धस्तव* ।

कवि का रचना-चातुर्य देखिये:—

"निखिल-निर्वृत-निश्चन-नर्दितं, नतजनं सम-नर्म्मद-दम्भमम् ।
दमपदं विमदं घन-नव्यमं, नमवनं हससं शिवसंभवम् ।२।
सतत-सज्जन-नंदित-नव्यमं, नयघनं वरलब्धिधरं समम् ।
रदन-नक्रमन-श्वलन-प्रियं, नलिन-नव्यय-नष्टवनं कलम् ।३।"

[पार्श्वनाथ-शृङ्गाटक-बन्धस्तव]

"श्रीजिनचन्द्रसूरीणां, जयकुञ्जरशृङ्खला ।
शृङ्खला-धर्मशालायां, चतुरे किमसौ स्थिता ।१।
शृङ्खला-धर्मशालायां, वासितां पापनाशिनाम् ।
शिवसद्मसमारोहे, किमु सोपानसन्तति ।२।"

[जिनचन्द्रसूरि-कपाटलोहशृङ्खलाष्टक]

कवि के उत्तम चित्रकाव्य के द्वारा पाठकों का रसास्वादन और मनोरंजन करने के लिये हारबन्ध स्तोत्र का उदाहरण पर्याप्त है ।×

पादपूर्ति और काव्य

कवि कृत ग्रन्थों में उद्धृत काव्यग्रन्थों की तालिका देखते हुये यह तो निश्चित है कि कवि साहित्य-शास्त्र के पूर्ण ज्ञाता थे ।

¶ कु० पृ० १८६ । ‡ कु० पृ० ३५६ । † कु० पृ० १६४ । * कु० पृ० १६३
× देखिये, सामने पृष्ठ पर ।

कवि की लेखिनी इस साहित्य पर भी स्वाभाविक गति से अविराम चलती हुई दिखाई पड़ती है। कवि प्रणीत दो ग्रन्थ प्राप्त हैं :—

१. जिनसिंहसूरि पदोत्सव काव्य,
२. ऋषभ भक्तामर,

इसमें प्रथम काव्य महाकवि कालिदास कृत रघुवंश महाकाव्य के तीसरे सर्ग के चतुर्थ चरण की पादपूर्ति रूप में है। इस काव्य में कवि अपने गणनायक, काकागुरु महिमराज के आचार्य पदोत्सव का वर्णन करता है। यह पद सम्राट अकबर के आग्रह पर यु० जिनचन्द्रसूरि ने दिया था—और इसका महामहोत्सव महामन्त्री स्वनामधन्य श्री कर्मचन्द्र बच्छावत ने किया था। इस प्रसङ्ग का वर्णन कवि ने बड़ी कुशलता के साथ, कालिदास की पंक्ति के सौन्दर्य को अक्षुण्ण रखते हुए किया है। उदाहरण स्वरूप देखिये:-

"यदूर्ध्वरेखाभिधमंह्रिपङ्कजे, भवान्ततः पूज्यपदं प्रलब्धवान्।
प्रभो! महामात्यवितीर्णकोटिशः-सुदक्षिणाऽदो हृद!
लक्षणं दधौ ।१।

अकब्बरोक्त्या सचिवेशसद्गुरुं, गणाधिपं कुर्विति मानसिंहकम्।
गुरोर्यकः सूरिपदं यतिव्रतिप्रियाऽऽअपेदे प्रकृतिप्रियं वद ।२।

× × ×

श्लेष का चमत्कार देखिये,

"अरे! महाम्लेच्छनृपाः पलाशिनः,
पशुव्रजां मां हत चेद्वितैषिणः।

त्वां नुवे यस्य तं शंकरे मे मते, देवपादाम्बुजेशं करे मे मते ।
मन्मन(?)चश्चरोकोपसंतापते, नाभिभूपाङ्गभूः को-पसंताप ते ।१२।"

[श्लेषमय आदिनाथस्तोत्र कु० पृ० ६१४]

"ततान धर्म्मं जगनाह तार, मदीदह दुःखतती-हतार ।
अचीकरच्छर्म सतां जनानां, जहार दीप्तारशितांजनानाम् ।३।
वेगाद्व्यनीपी दरिकाममादं, धियापि नो यो भविकाममादम् ।
नुत प्रभुं ते च नता रराज, शिवे यशः कैरवताररराज ।४।"

[यमकबद्ध पार्श्वस्तोत्र, कु० पृ० १८७]

"अमर-सत्कल-सत्कलसत्कलं, सुपदयाऽमलया मलयामलम् ।
प्रबलसादर-सादरसादरं, शमदमाकर-माकर-माकरम् ।२।"

[यमकबद्ध पार्श्वस्तोत्र कु० पृ० १६२]

एक ही स्वरसंयुक्त पद्य का रसास्वादन करियेः—
"पदकजनत सदमरशरण, वरकमलवदनवरकरचरण ! ।
शमदमधर नरदरहरण ! जय जलज-धरपमरकरकरण !"।११"।

× × ×

प्राच्य कवि के रचित काव्य के एक चरण को ग्रहण कर तीन नये चरणों का निर्माण-पादपूर्ति कहलाता है। यह कार्य अति-दुष्कर है। क्योंकि इसमें कवि को प्राच्य कवि के भाव, भाषा, शब्दयोजना को अक्षुण्ण रखते हुये, अपने भाव और विचारों का सन्निवेश करना होता है। यह कार्य प्रतिभा, पटुता और शब्द-योजना सम्पन्न कवि ही कर सकता है। इसीलिये कहा जाता है कि 'नवीन काव्य का निर्माण करना, पादपूर्त्ति साहित्य की अपेक्षा अत्यन्त सरल है।'

अस्पष्ट न रह जाय। सामान्यतः इस सम्बन्ध के एक दो उद्धरण ही देकर हम सन्तोष करेंगे। देखिये:—

'अथ' अधुना 'प्रजानामधिपः' दिलीपो राजा 'ऋषेः' वशिष्ठस्य 'धेनुं' गां प्रभाते वनाय मुमोच। किंविशिष्टां धेनुं ? 'जायाप्रतिग्राहितगन्धमाल्याम्' गन्धश्च माल्यं च गन्धमाल्ये यस्याः सा, कोऽर्थः ? राजा स्वयं गन्धमाल्ये गृह्णाति राज्ञीं च ग्राहति। पुनः किंविशिष्टां धेनुम् ? 'पीतप्रतिबद्धवत्सां' पूर्वं पीतः पश्चात् प्रतिबद्धो वत्सो यस्यां सा। पीत इति, कोऽर्थः ? पायितः पूर्वं, पश्चात् प्रतिबद्धो वत्सो यस्यां सा तां पी०। अथवा अयमपि अर्थः पीतः-शंकुरदाहृत इत्युक्तत्वात् पीति शंको प्रतिबद्धो वत्सो यस्याः सा पी० ताम्। किंविशिष्ट प्रजानामधिपः ? 'यशोधनः' यशः एव धनं यस्य स यशोधनः।१। [रघुवंश टीका, द्वि. स. प्र. श्लो.]

"हे अधीश !-हे स्वामिन् ! अस्मादृशा मन्दमतयः तव स्वरूपं वर्णयितुं सामान्यतोऽपि, आस्तां विशेषतः, प्रतिपादयितुं कथं अधीशाः-समर्था भवन्ति ? अपि तु न। अत्र दृष्टान्तमाह—'यदि वा' इति दृष्टान्ते। कौशिकशिशुः-घूकस्य बालो दिवसे अन्धः सन् 'किं घर्मरश्मेः' सूर्यस्य रूपं-भास्करविम्बस्वरूपं 'किल' इति प्रसिद्धवार्तायां किं प्ररूपयति-यथावस्थितं कथयति ? अपितु नेत्यर्थः। किंविशिष्टः कौशिकशिशुः ? धृष्टोऽपि दृढहृदयतया प्रगल्भोऽपि।३।" [कल्याणमन्दिर स्तोत्र श्लो. ३ टीका]

इसी स्तोत्र के पांचवे पद्य की व्याख्या के पूर्व भूमिका की विशदता देखिये:—

"ननु यदि भगवतो गुणान् प्रति स्तोतुं शक्तिर्नास्ति तदा स्तवं कर्त्तुं कथमारब्धवान् ? न चैवं वक्तव्यम्। यत एकान्तेन एवं नास्ति —यदुत सम्पूर्णशक्तावेव सत्यां कार्यं कर्त्तुमारभ्यते, यतो गरुडवदा-

त्वमाच्छमैवं निशि तान्, भृशं गुरो !
नवावतारं कमला-दिवोत्परम् ।३८।"

दूसरी कृति, आचार्य मानतुङ्गसूरि प्रणीत भक्तामर स्तोत्र के चतुर्थ चरण पादपूर्ति रूप है। इसमें कवि ने आचार्य मानतुङ्ग के समान ही भगवान आदिनाथ को नायक मानकर रचना की है। यह कृति भी अत्यन्त ही प्रोज्ज्वल और सरस-माधुर्य संयुक्त है।

कवि का स्तव के समय भावुक स्वरूप देखिये और साथ ही देखिये शब्द योजनाः—

"नमेन्द्रचन्द्र ! कृतभद्र ! जिनेन्द्रचन्द्र !
ज्ञानात्मदर्श-परिदृष्ट-विशिष्ट ! विश्व ! !
त्वन्मूर्तिरर्त्तिहरणी तरणी मनोज्ञे—
वालम्बनं भवजले पततां जनानाम् ।१।"

कवि की उपमा मह दृष्टेव्या देखियेः—
"केशच्छटां स्फुटतरां दधदङ्गदेशे,
श्रीतीर्थराजविबुधावलिसंस्थितस्त्वम् ।
मूर्धस्थकृष्णलतिका-सहितं न भृङ्ग—
मुच्चैस्तटं सुरगिरेरिव शातकौम्भम् ।३०।"

न्याय

कवि ने अपने प्रमुख शिष्य वादी हर्षनन्दन को नव्यन्याय का मौलिक एवं प्रमुख ग्रन्थ 'तत्त्वचिन्तामणि' का अध्ययन कराया

कथा-साहित्य के भण्डार को समृद्ध करने की दृष्टि से 'कथा-कोष' रचा गया। इसमें छोटे-मोटे, रसपूर्ण, अनेकों आख्यायिकायें हैं जो श्रोता को मुग्ध करने में अपनी सानी नहीं रखती हैं। किन्तु अफसोस है कि यह चुटकलों और आख्यायिकाओं भण्डार आज हमें प्राप्त नहीं है; है तो भी अपूर्ण रूप में। अतः तज्ञों का कर्त्तव्य है कि इसकी प्राप्ति के लिये अनुसन्धान करें।

संस्कृत भाषा सर्वग्राह्य न थी, क्योंकि सामान्य उपदेशक भी इससे अनभिज्ञ थे। अतः कवि ने सर्वग्राह्य दृष्टि से प्रान्तीय भाषाओं में 'रासक और चतुष्पदियों' की रचना की है; जिसकी तालिका हम ऊपर दे आये हैं। ये 'रास' संस्कृत के काव्यों की तरह ही काव्य शास्त्रों के लक्षणों से युक्त प्रान्तीय भाषा के कलेवर से सुसज्जित किये गये हैं। कवि के रासक साहित्य में 'सीताराम चतुष्पदी' और 'द्रौपदी चतुष्पदी' महाकाव्यों की तरह ही विशद और अनुपम सौन्दर्य को धारण किये हुये हैं। इनके रासक जन-रञ्जन के साथ विद्वज्जनों के हृदय को आह्लादित कर रसाभिव्यक्ति करने में भी समर्थ हैं। कवि ने 'कथा' के साथ प्रसङ्ग-प्रसङ्ग पर जो धार्मिक अनुष्ठानों को, उपदेशों की बहार दिखाई है, उससे रसाभिव्यक्ति के साथ जीवन की उत्कट श्रद्धा और विश्व-प्रेम का भी अभ्युदय होता दिखाई देता है।

कई संस्कृतनिष्ठ विद्वान भाषा-साहित्य की उपहास किया करते हैं, वे यदि कवि के रासक-साहित्य का अध्ययन करें तो उन्हें अपनी विचार-सरणि अवश्य बदलनी पड़ेगी।

भाषा-विज्ञान की दृष्टि से तो ये 'रास' बड़े ही उपयुक्त हैं। १७ वीं शती के भाषा के स्वरूप को स्थिर करने के लिये इन रासों में काफी सामर्थ्य है। आवश्यकता है केवल वैज्ञानिक दृष्टि से अनुसंधान करने की।

ो उड्डयितुमसमर्थोऽपि कीटिका किं स्वकीयेन चारेण न चरति ? रन्त्येव, चरन्ती न केनापि वार्यते। अतो जिनयोग्यस्य सद्भूत- । सम्पूर्णस्य स्तवस्य करणशक्तेरभावेऽपि भक्तिभरप्रेरितस्य मम कीयशक्त्यनुसारेण स्तोत्रकरणे प्रवृत्तस्य दोषो नाशङ्कनीय- देवाऽऽह—"

व्याख्या का चातुर्य देखना हो तो देखें, मेघदूत प्रथम श्लोक ी व्याख्या।

कवि ने केवल संस्कृत-प्राकृत भाषा-मथित ग्रन्थों पर ही का नहीं की है अपितु 'रूपकमाला' जैसे भाषा काव्य पर भी स्कृत में अवचूरि की रचना की है। वस्तुतः कवि कृत अवचूरि ठन योग्य है।

औपदेशिक और कथासाहित्य

कवि स्वयं तो सफल प्रचारक और उपदेशक थे ही। 'अन्य मण भी प्रचार और उपदेश में सफलता प्राप्त करें' इसी विचार- ारा से कवि ने औपदेशिक और कथा साहित्य की सृष्टि की।

व्याख्याता का 'जनरञ्जन' करना सर्वप्रथम कर्त्तव्य है और नरञ्जन तब ही संभव है जबकि उपदेश के बीच-बीच में प्रासं- ाक और औपदेशिक श्लोकों की छटा बिखेरी जाय और चुलबुले ुटकले या कहानियों का जाल बिखेरा जाय।

गाथा-सहस्री इसी औपदेशिक और प्रासंगिक श्लोकों की र्ति-स्वरूप ही बना है इसमें अनेकों ग्रन्थों के चुने हुये फूलों के मान सौगन्ध्य बिखेरते हुये उत्तम-उत्तम पद्यों का चयन किया या है; और वे भी सब ही विषयों के हैं। इससे कवि की भ्रमर ी तरह चयन शक्ति का श्रेष्ठ परिचय प्राप्त होता है।

सङ्गीत-शास्त्र

विश्व को आकर्षित और अभिभूत करने का जितना सामर्थ्य संगीत-शास्त्र में है उतना सामर्थ्य और किसी साहित्य में नहीं। यही कारण है कि महाकवियों ने अपने काव्यग्रन्थों को 'छन्दश्युत' किये हैं। पद्य में छन्दों का निर्माण संगीतशास्त्र की नैसर्गिकता और अनिर्वचनीयता प्रगट करता है। ताल, लय, गण, गति और और यति आदि संगीत के ही प्रमुख अंग हैं और ये ही छन्दज्ञों ने स्वीकार किये हैं। इसी कारण पद्य काव्य श्रव्य काव्य कहलाते हैं।

भाषा–साहित्यकारों ने जनता को आकृष्ट करने के लिये गेय पद्धति अपनाई। प्रसिद्ध–प्रसिद्ध देशीयें, ख्याल, तर्जें आदि का प्रमुखता से अपनी रचनाओं में स्थान दिया। यह अनुभव सिद्ध है कि जनता ने अपने हृदय में जितना स्थान इन 'गेयात्मक' काव्यों को दिया, उतना और किसी को नहीं।

संगीत में प्रमुख ६ राग और छत्तीस रागिनियाँ हैं और इन्हीं के भेदानुभेद, मिश्रभाव और प्रान्तीय आदि से सैंकड़ों नयी रागिनियों का निर्माण माना गया है।

कवि भी संगीत की प्रभावशालिता को पहिचान कर इसका आश्रय ग्रहण करता है और स्वछन्दता के साथ गंगा–प्रवाह के समान मुक्त रूप से गेय गीतों और काव्यों की रचना करता है। कवि का गेय साहित्य इतना प्रवाहशील और व्यापी है कि परवर्ती कवियों को यह कहना पड़ा कि "समयसुन्दर रा गीतड़ा, कुम्भे रांणे रा गीतड़ा।"

कवि का वर्चस्व इस साहित्य पर भी फैला हुआ है। कहीं तो कवि गुरुवर्णन* करता हुआ ६ राग और छत्तीस रागिणी के

* कु० पृ० ३६४.

गयूँ दुःखनासी, पुनः सौम्यदृष्ट्या,
थयुं सुक्ख झाझूँ, यथा मेघवृष्ट्या ।१।
जिके पार्श्व केरी, करिष्यन्ति भक्तिं,
तिके धन्य वारु, मनुष्या अशक्तिम् ।
भली आज वेला, मया वीतरागाः,
खुशी मांहि भेट्या, नमद्देवनागाः ।२।
तुमे विश्वमांहे, महाकल्पवृक्षा,
तुमे भव्य लोकां, मनोऽभीष्टदक्षा ।
तुमे माय बाप, प्रियाः स्वामिरूपाः,
तुमे देव मोटा, स्वयंभू स्वरूपाः ।३। आदि.
[पार्श्वनाथाष्टक, कु० पृ० १६६]

कवि जन्मतः राजस्थानी होता हुआ भी 'सिन्धी' भाषा पर अच्छा अधिकार रखता है । देखिये कवि की पटुताः—

"मरुदेवी माता इवें आखइ, इद्धर उद्धर कितनु झाखइ ।
आउ आषाढइ कोल ऋषभजी, आउ असाढइ कोल ।१।

× × ×

मिट्ठा ये मेवा तैकुं देवां, आउ इकट्ठे जेमण जेमां ।
लावां खूब चमेल ऋषभजी, आउ असाढइ कोल ।२।

× × ×

आवो मेरे बेटा दूध पिलावां, यही बेड़ा गोदी में सुख पावां ।
मन्न असाड़ा बोल ऋषभजी, आउ असाढा कोल ।७।

"लसरणाय-विन्नाण-सन्नाण-मेहं,
कलाभिः कलाभिर्युतात्मीयदेहम् ।
मणुरणं कलाकेलिरूवाणुगारं,
स्तुवे पार्श्वनाथं गुणश्रेणिसारम् ।१।
सुश्रा जेण तुम्हाण वाणी सहेणं,
गतं तस्य मिथ्यात्वमात्मीयमेयम् ।
कहं चंद मज्झिल्ल पीउसपाणं,
विषापोहकृत्ये भवेन्न प्रमाणम् ।२।
लुहप्पायपंके रुहे जे श्र भत्ता,
लभे ते सुखं नित्यमेकाग्रचित्ताः ।
कहं निप्फला कप्परुक्खस्स सेवा,
भवेत्प्राणिनां भक्तिभाजां सदेवा ।३।
[पार्श्वनाथाष्टक कु० पृ० १८२]

समसंस्कृत-प्राकृत की रचनायें साहित्य में नहीं के समान ही है। इस प्रकार की रचनाओं का प्रादुर्भाव आचार्य हरिभद्र की 'संसार दावा' स्तुति से होता है और विस्तार आचार्य जिनवल्लभ के 'भायारियारण स्तोत्र' और 'प्रश्नोत्तर षष्ठिशतक' काव्य में। इस प्रकार की कवि की यह एक ही रचना है। केवल संस्कृत-प्राकृत मिश्र ही नहीं, हिन्दी और संस्कृत मिश्र कृति का भी चमत्कार देखिये:—

"मलूँ आज भेट्युं, प्रभोः पादपद्मं,
फली आस मोरी, नितान्तं विपद्मम्।

प्रस्तुत-संग्रह

प्रस्तुत संग्रह क्या भक्त की दृष्टि से, क्या उपदेशक की दृष्टि से, क्या उपदेश-पदों की दृष्टि से, क्या क्रियावादियों की दृष्टि से, क्या वर्णनात्मक दृष्टि से, क्या लोकोक्तियों की दृष्टि से, क्या ऐतिहासिकों की दृष्टि से, क्या संस्कृत-प्राकृत के विद्वानों की दृष्टि से अर्थात् सर्वांग दृष्टि से अत्यन्त ही महत्वपूर्ण है। भक्त की दृष्टि से देखिये तो चौवीसी, वीसी, तीर्थंकरों के स्तव, तीर्थ-स्तव, प्राचीन महर्षियों के गीत, सद्गुरुओं के गीत आदि की सामग्री इतनी भरी पड़ी है कि भक्त इसी गंगा की पावन-धरा में डुबकियां लगाता चला जाय, आराध्यों और सद्गुरुओं को प्रसन्न करता चला जाय अर्थात् इस संग्रह में इतनी सामग्री है कि सबका अध्ययन कर, हृदयंगम करने में भक्त असमर्थ ही रहेगा। भक्त की भक्ति के लिये संग्रह के कुछ गीत और स्तवन ही पर्याप्त हैं। उदाहरण स्वरूप सुविधिनाथ का स्तवन ही देखिये :—

प्रभु तेरे गुण अनन्त अपार।
सहस रसना करत सुरगुरु, कहत न आवे पार। प्र०।१।
कोण अम्बर गिणै तारा, मेरु गिरी को भार।
चरम सागर लहरि माला, करत कोण विचार। प्र०।२।
भगति गुण लवलेश भाखुं, सुविध जिन सुखकार।
समयसुन्दर कहत हमकुं, स्वामी तुम आधार। प्र०।३।
(सुविधि जिन स्तवन, राग-केदार, पृ० ७)

प्रभु के सौन्दर्य का वर्णन करते हुये कवि की लेखनी का आस्वादन कीजिये :—

तुं जगजीवन प्राण आधारा, तूँ मेरा पुचा बहुत पियारा ।
तैथुँ वंजा घोल ऋषभजी, आउ असाड़ा कोल ।८।"
[कु० पृ० ६१]

❀ ❀ ❀

"साहिब मइडा चंगी सूरति, आ रथ चढीय आवंदा हे भइणा।
नेमि मइकुं भावंदा हे ।
भावंदा हे मइकुं भावंदा हे, नेमि असाड़े भावंदा हे ।१।
आया तोरण लाल असाड़ा, पसुय देखि पछितावंदा हे भइणा।२।
ए दुनिया सब खोटो यारों, घरमउ ते दिलु धाउंदा हे भइण।।३।
कूड़ी गल्ल जीवां दइ कारणि, जादुं कितकुँ जावंदा हे भइणा।४।
घोडु असाडइ संयम गिद्धा, सचा राह सुणावंदा हे भइणा ।६।
इंयै राजुल राणी आखै, संयम मइकुं सुहावंदा हे भइणा ।७।

❀ ❀ ❀

[नेमिस्तव कु० पृ० १३२]

इसी प्रकार मृगावती चतुष्पदी तृतीय खण्ड नवमी ढाल, सिन्धी भाषा में ही ग्रथित है।

कवि ने सर्व प्रथम राजस्थानी में ही लेखनी उठाई, किन्तु ज्यों ज्यों उसके भ्रमण का क्षेत्र विस्तृत होता गया त्यों-त्यों उसका भाषा-ज्ञान भी विस्तृत होता गया और वह प्राचीन हिन्दी, गुजराती सिन्धी आदि में भी साहित्य के भण्डार को भरता गया। प्राचीन हिन्दी, राजस्थानी और गुजराती सम्मिश्रित तो प्रस्तुत ग्रन्थ है ही।

तुम दरसण हो मुझ मन उछरंग कि,
मेह आगम जिम मोरड़ा। मो०.१२।
तुम नामइ हो मोरा पाप पुलाइ कि,
जिम दिन ऊगइ चोरड़ा।
तुम नामइ हो सुख संपति थाय कि,
मन वंछित फलइ मोरड़ा। मो० १३।
हुँ मांगूँ हो हिव अविहड़ प्रेम कि,
नित नित करूँय निहोरड़ा।
मुझ देज्यो हो सामी भव भव सेव कि
चरण न छोड़ूं तोरड़ा। मो०।१४।

(शीतलनाथ स्तवन)

कवि अपने को वीतराग के पथ पर चल सकने के अयोग्य अनुभव करते हुए भी, जो आत्म विश्वास प्रकट करता है वस्तुतः वह स्तुत्य है:—

सूधउ संजम नवि पलइ, नहिं तेहवउ हो मुज दरसण नाण।
पण आधार छइ एतलउ, एक तोरउ हो धरूँ निश्चल ध्यान। वी.१६।

(वीर स्तवन)

तूं गति तूं मति तूं धणी जी, तूं साहिब तूं देव।
आण धरुं सिर ताहरी जी, भव भव ताहरी सेव।२१। कृ०।

(आदिनाथ स्तव)

कवि केवल भगवद् स्वरूप को ही भक्ति का आधार मानकर नहीं चल रहा है, अपितु बाल्यक्रीड़ा को भी भक्ति का एक अङ्ग स्वीकार कर वात्सल्य-भावना में रस विभोर हो जाता है :—

पूरण चन्द जिसौ मुख तेरो, दंत पंक्ति मचकुंद कली हो ।
सुन्दर नयन तारिका शोभत, मानु कमल दल मध्य अली हो ।२।
(अजितजिन स्तवन)

भक्त कवि के कोमल-हृदय का अवलोकन कीजिये:—

तुम मूँ विचि अन्तर घणउ, किम करूँ तोरी सेव ।
देव न दीधी पांखड़ी, पणि दिल में तूँ इक देव ॥२॥
(सीमन्धर गीत)

विघा पांख विना किम वांदू, पणि माहरूँ मन त्यांह रे ॥२॥
(बाहुजिन गीत)

पणि मुझ नइ संभारज्यो, तुम्ह सेती हो घणी जाण पिछाण ।
तुमे नीरागी निसप्रीही, पणि म्हारइ तो तुमे जीवन प्राण ॥
(अजितवीर्य जिन गीतम्)

अहो मेरे जिन कुँ कुण ओपमा कहूं ।
काष्ठकलप चिन्तामणि पाथर, कामगवी पशु दोष ग्रहुँ ।अ०।१।
चन्द्र कलंकी समुद्र जल खारउ, सूरज ताप न सहूं ।
जल दाता पणि श्याम वदन घन, मेरु कृपण तउ हुं किम सदहुं ।२।
कमल कोमल पणि नाल कंटक नित, संख कुटिलता बहु ।
समयसुंदर कहइ अनंत तीर्थंकर, तुम मइं दोष न लहुँ । आ०।३।
(अनन्तजिन गीतम्)

प्रभु-दर्शन से कवि का मन-मयूर नाच उठता है:—

तुम दरसण हो मुझ आणंद पूर कि,
जिम जगि चन्द चकोरड़ा ।

दीप पतंग तणइ परि सुपियारा हो,
एक पखो मारो नेह; नेम सुपियारा हो।
हुं अत्यन्त तोरी रागिणी सुपियारा हो।
तुं काइ द्यै मुझ छेह; नेम सुपियारा हो।१।
संगत तेसुं कीजिये, सु० जल सरिखा हुवे जेह; ने० सु०।
आवटणु आपणि सहै, सु० दूध न दाझण देय; ने० सु०।२।
ते गिरुया गुणवंतजी, सु० चंदन अगर कपूर; ने० सु०।
पीडंता परिमल करैं, सु० आपइ आणंद पूर; ने० सु०।३।
मिलतां सुं मिलीयै सही, सु० जिम बापीयड़ो मेह; ने० सु०।
पिउ पिउ शब्द सुणी करी, सु० आम मिले सुसनेह; ने० सु०।४।
हुं सोना नी मूँदड़ी, सु० तुं हिव हीरो होय; ने० सु०।
सरिखइ सरिखइ जउ मिलइ, सु. तउ ते सुंदर होय; ने० सु०।५।

(नेमिस्तव)

× × ×

अनुराग के साथ साथ कवि राजीमती एवं गौतम के शब्दों द्वारा जिस सरणि से वियोग एवं बिछोह का वर्णन करता है; वह सचमुच में साहित्य-निधि में एक अनमोल रत्न है। वियोग सम्बन्धित अनेकों गीत इस संग्रह में संग्रहीत हैं। पाठकों को अवलोकन कर रसास्वादन कर लेना चाहिये।

कवि के हृदय में गुरु भक्ति और गच्छनायक के प्रति अटूट श्रद्धा थी। कवि ने दादा साहब श्री जिनदत्तसूरि और श्री जिन-कुशलसूरि जी के बहुत से स्तवन बनाए हैं। श्री जिनकुशलसूरि जी

पालणइइ पउढ्यउ रमइ म्हारउ वालुयड़उ,
हींडोलइ अचिरा माय म्हारउ नान्हड़ियउ ॥१॥
पग घूघरड़ी घमघमइ म्हारउ वालुयड़उ,
ठम ठम मेल्हइ पाय म्हारउ नान्हड़ियउ ।

(शान्तिनाथ हुलरामणा गीतम्)

मिट्ठा वे मेवा तैं कुँ देवा, आउ इकट्ठे जेमण जेमां ।
लावां खूब चमेल ऋषभजी, आउ असाड़ा कोल ।२।
कसबी चीरा पै बांधूँ तेरे, पहिरण चोला मोहन मेरे ।
कमर पिछेवड़ा लाल ऋषभजी, आउ असाड़ा कोल ।३।
काने केवटिया पैरे कड़िया, हाथे वंगा जवहर जड़िया ।
गल मोतियन की माल ऋषभजी, आउ असाड़ा कोल ।४।
बांगा लाटू चकरी चंगी, अजब उस्तादां वहिकर रङ्गी ।
आंगण असाड़े खेल ऋषभजी, आउ असाड़ा कोल ।५।
नयण वे तैंडे कजल पावां, मन भावंदा तिलक लगावां ।
रूढड़ा कैंदे कोल ऋषभजी, आउ असाड़ा कोल ।६।
आवो मेरे बेटा दूध पिलावां, वही वेड़ा गोदी में सुख पावाँ ।
मन असाड़ा बोल ऋषभजी, आउ असाड़ा कोल ।७।

(आदि स्तव)

× × ×

भक्ति की तन्मयता में कवि जीवन का अनुराग पक्ष भी नहीं भूलता है। राजीमति के शब्दों में अनुराग को किस खूबी से प्रकट करता है। देखिये:—

के महा महर्षि और महासतियों के स्वाध्याय और गीत प्राप्त होंगे। इन दोनों के आधार पर ही उपदेशक यदि चाहे, तो कुछ दिन या मास तो क्या, वर्षों व्यतीत कर सकता है और सफलता सह उपदेशों के साथ अपने धर्मं का प्रचार भी कर सकता है।

उपदेशक-पदों की दृष्टि से—मुमुक्षुओं के त्याग-वैराग्य में वृद्धि हो एवं प्रसंग आने पर वे क्रोध-कषाय आदि शत्रुओं से दूर रहकर आत्मगुण प्राप्ति के भिन्न-भिन्न साधनों द्वारा आत्मोन्नति कर सकें, इसके लिये कविवर ने पद-रचना कर पर्याप्त उपकार किया है। इस प्रकार के पदों का स्वाध्याय करने वाले की आत्मा कुव्यापारों से बचकर सदाचार की ओर अग्रसर होती है। इस प्रकार के गीतों में भिन्न-भिन्न राग-रागनियों के चमत्कार के साथ-साथ बोध देने वाली चेतावनी भी दी गई है। क्रोध, मान, माया, लोभ, निन्दा, स्वार्थ, मात्सर्य इत्यादि नाना विषयों के परिहार के साथ-साथ जीव प्रतिबोध, पारकी होड़ निवारण, घड़ी लाखीणी, उद्यम, भाग्य, घड़ियाली, जीवदया, मरण-भय सन्देह, वीतराग-सत्यवचन, पठन-प्रेरणा, क्रिया-प्रेरणा, दान, शील, तप, भावना, स्वर्ग प्राप्ति, नरक प्राप्ति आदि नाना प्रकार के विषयों पर पदों की रचना कर कवि ने सुन्दरतम भाव व्यक्त किये हैं।

क्रियावादियों की दृष्टि से—इसमें तनिक भी सन्देह नहीं कि आप ज्ञान के प्रबल पक्षपाती और उपासक थे आपकी दीर्घायु ज्ञानोपार्जन, ग्रन्थप्रणयन, स्वाध्याय, पठन-पाठन व धर्मोपदेश में व्यतीत हुई। आप ज्ञान के साथ-साथ क्रिया को भी बड़े आदर पूर्वक करते रहने का मनोभाव सर्वत्र व्यक्त करते रहे हैं। तपश्चर्या, पर्वाराधन आदि स्तवनों से यह स्पष्ट है। पञ्चमी स्तवन में "क्रिया सहित जो ज्ञान, हुवइ तो अति परधान। सोनो ने सुरो ए, सङ्ख दूधे भर्यो ए" कहकर क्रिया की महत्ता स्वीकार की है। क्रिया प्रेरक स्वाध्याय में क्रिया की सजीवता देखिये :—

के परचों का चमत्कारी * उल्लेख भी अपनी कृतियों में किया है। श्री जिनचन्द्रसूरि जी के बहुत से गीत, अष्टक आदि में ऐतिहासिक सामग्री के साथ-साथ गुरु-भक्ति भी प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर होती है। इसी प्रकार श्री जिनसिंहसूरि, श्री जिनराजसूरि और श्री जिनसागरसूरि के पद अष्टकादिक भी बनाये हैं। श्री जिनचन्द्रसूरि अष्टक व आलजा गीत आदि अनेक गीत भावपूर्ण व धारावाही मुक्तकों में बद्ध हैं। श्री जिनसिंहसूरि के प्रति अगाध भक्ति पूर्ण पंक्तियाँ उदाहरण स्वरूप देखिये:—

मुझ मन मोह्यो रे गुरुजी, तुम्ह गुणे जिम बाबीहड़उ मेहो जी।
मधुकर मोह्यो रे सुन्दर मालती, चन्द चकोर सनेहो जी। मु.।१।
मान सरोवर मोह्यो हंसलउ, कोयल जिम सहकारो जी।
मयगल मोह्यो रे जिम रेवा नदी, सतिय मोही भरतारो जी। मु.।२।
गुरु चरणे रंग लागउ माहरउ, जेहवउ चोल मजीठो जी।
दूर थकी पिण खिण नवि वीसरइ, वचन अमीरस मीठो जी। मु.।३।
सकल सोभागी सह गुरु राजियउ, श्री जिनसिंघ सूरीसो जी।
समयसुंदर कहइ गुरु गुण गावतां, पूजइ मनह जगीसो जी। मु.।४।

(कुसुमाञ्जलि पृष्ठ ३८७)

गुरु दीवउ गुरु चन्द्रमा रे, गुरु देखाड़इ वाट।
गुरु उपगारी गुरु बड़ा रे, गुरु उतारइ घाट ॥२॥

(जिनसिंहसूरि गीत)

× × ×

उपदेशक की दृष्टि से देखिये, तो पृष्ठ ४२० से ४६३ तक औपदेशिक गीत ही गीत मिलेंगे। पृष्ठ २४७ से पृष्ठ ३४३ तक पूर्व

* "आयो आयो जी समरंता दादो आयो"—कुसुमाञ्जलि पृष्ठ ३५०

फिरङ्गी आदि की वेशभूषा का भी सुन्दर निदर्शन किया है। इसी प्रकार स्त्रियों को आभूषण की कितनी चाह होती है, इस पर गौर्जरीय नारियों की मनोवृत्ति का दिग्दर्शन भी कराया है। कवि द्वारा प्राकृतिक सुषमा का चित्रण, प्रतिहारी का चित्रण, पूजारी, ब्राह्मणादि का और ज्योतिषी का चित्रण तो अपना स्वतन्त्र अस्तित्व रखता है। अन्तरङ्ग शृङ्गार गीत, नेमि शृङ्गार वैराग्य और चारित्र्य चूनड़ी आदि गीतों में तो उस युग के आभूषणों का भी उल्लेख किया है। उदाहरण स्वरूप देखिये:—

सिर राखड़ी, काने उगणियाँ, चुनी, कुण्डल, चूड़ा, हार, पमारड़उ, लोलणउ, चन्द्लउ, नख फूल, विन्दली, बींटी, कटिमेखला, वेडणी, काजल, महँदी, चिछिया, पुणछिया, गलइ टुलड़ी, चूनड़ी, नेउरी, तिलक आदि।

मुहावरों की दृष्टि से—कवि ने अपने युग में प्रचलित लोकोक्तियों का भी अपनी कृतियों में स्थान-स्थान पर, सुन्दर पद्धति से समावेश किया है। इससे उन कहावतों की प्राचीनता पर भी अच्छा प्रकाश पड़ता है। उदाहरण स्वरूप देखिये:—

आपणी करणी पार उतरणी, आप मुयाँ विन
सरग न जाइयइ, वातें पापड़ किमही न थाइ,
सूता तेह विगूता सही जागतां काऊ उर भय नाहि,
सूँतारी पाडा जिणइ एह वात जग जाणे रे,
आप डूबे सारी डूब नई दुनियां,
दाहिनी आँख सखीमोरी फरकी "रंगमें भंग जणावइ हो"

संगीत-शास्त्र की दृष्टि से—केवल छः राग और छत्तीस रागिनियों का ही इसमें समावेश नहीं है, प्रत्युत इसके

क्रिया करउ, चेला क्रिया करउ,
क्रिया करउ जिम तुम्ह निस्तरउ । क्रि० ।१।
पड़िलेहउ उपग्रण पातरउ,
जयणा सुं काजउ ऊधरउ । क्रि० ।२।
पड़िकमतां पाठ सुध उचरउ,
सहु अधिकार गमां सांभरउ । क्रि० ।३।
काउसग्ग करता मन पांतरउ,
चार आंगुल पग नउ आंतरउ । क्रि० ।४।
परमाद नइ आलस परिहरउ,
तिरिय निगोद पड़ण थी डरउ । क्रि० ।५।
क्रियावंत दीसइ फूटरउ,
क्रिया उपाय करम छूटरउ । क्रि० ।६।
पांगलउ ज्ञान किस्यउ कामरउ,
ज्ञान सहित क्रिया आदरउ । क्रि० ।७।
समयसुन्दर यह उपदेश खरउ,
सुगति तणउ मारग पाधरउ । क्रि० ।८।

ज्ञान क्रिया के सम्बन्ध में आपके उपरोक्त विचार आज भी समाज के लिये मार्ग दर्शक हैं।

वर्णनात्मक दृष्टि से—कवि ने पौराणिक चरित्रों के वर्णन में भी अपने युग की छाप अङ्कित की है, जिससे व्याख्यानादि में बड़ी ही सजीवता और रोचकता आ जाती है। मृगावती चौपाई में चित्रकार का वर्णन करते हुए अपने युग के भित्ति चित्रों का सुन्दर चित्रण किया है। राम, सीता, गणेश, काबुली,

यमकबद्ध-श्लेषबद्ध-शृङ्गाटकबद्ध-चलितशृङ्खलाबन्ध-कपाटशृङ्खलाबन्ध स्तवन-द्विअर्थीयुक्तस्तव (पृष्ठ १८६ से १६६, ३५७, ६१४)। नानाविध श्लेषमय आदिनाथ स्तोत्र (पृ० ६१५), नानाविध काव्य जातिमय नेमिनाथ स्तव (पृ० ६१६), समस्यामय पार्श्वनाथ बृहत्स्तव (पृ० ६१६), यमकमय पार्श्वनाथ लघुस्तव (पृ० ६२१), यमकमय महावीर बृहत्स्तव (पृ० ६२२)।

अष्टक और पादपूर्ति साहित्य भी देखने योग्य है :—

तृष्णाष्टक, रजोष्टक, उदच्छत्सूर्यबिम्बाष्टक, समस्याष्टक, समस्या-पूर्ति (पृष्ठ ४६४ से ५०० तक), पादपूर्ति रूप ऋषभ भक्तामर काव्य (पृष्ठ ६०३)

समस्या-पूर्ति में कवि-कल्पना की उड़ान तो देखिये:—

प्रभुस्नात्रकृते देवा नीयमानान् नभे घटान् ।
रौप्यान् दृष्ट्वा नराः प्रोचुः शतचन्द्रनभस्तलम् ॥१॥
रामया रममाणेन कामोद्दीपनमिच्छता ।
प्रोक्तं तच्चारु यद्येवं शतचन्द्रनभस्तलम् ॥२॥
हस्त्यारोहशिरस्त्राणश्रेणिमालोक्य संगरे ।
पतितो विह्वलोऽवादीत् शतचन्द्रनभस्तलम् ॥४॥
भुक्तघत्त्रपूरत्वाद्भ्रान्तदृष्टिरितस्ततः ।
अपश्यत्कोऽपि सर्वत्र शतचन्द्रनभस्तलम् ॥६॥

इस प्रकार अनेक विध दृष्टियों से देखने के पश्चात् हम निर्विवाद कह सकते हैं कवि असाधारण मेधा-सम्पन्न सर्वतोमुखी प्रतिभावान था और था एक साहित्य-यज्ञ का महास्रष्टा भी। इस स्रष्टा की न जाने कितनी कृतियाँ इस साहित्य-संसार से विदा हो चुकी होंगी और न जाने आज जो प्राप्त हैं, वे भी सरस्वती-

साथ ही सिन्ध, मारवाड़, मेड़ता, मालव, गुजरात आदि के प्रान्तों की प्रसिद्ध-प्रसिद्ध देशीयें, रागिनियाँ, ख्याल आदि सभी इसमें प्राप्त हो जायंगे। गेय-प्रेमी इस सङ्गीत-पद्धति से अत्यन्त ही प्रसन्न हो उठेगा, इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है। उदाहरण स्वरूप जैसलमेर मण्डन पार्श्वनाथ का स्तवन ही देखिये, जो सत्रह रागों में खचित है—(पृ० १४६)।

ऐतिहासिकों की दृष्टि से—तीर्थमालाएँ (पृष्ठ ५४ से ६०) और तीर्थों के 'भास', तीर्थों के 'स्तवन', घंघाणी पार्श्वनाथ स्तवन, सेत्रावा स्तवन, राणकपुर स्तव, युग-प्रधान जिनचन्द्रसूरि—जिनसिंहसूरि-जिनराजसूरि-जिनसागरसूरि गीत और संघपति सोमजी वेलि आदि कृतियाँ बहुत ही महत्त्व रखती हैं। यदि अनुसन्धान किया जाय, तो हमें बहुत कुछ नये तथ्य और नई सामग्री प्राप्त हो सकती है।

भाषा-विज्ञान की दृष्टि से तो यह संग्रह महत्व का है ही। १७वीं शताब्दी की प्राचीन-हिन्दी, मारवाड़ी, गुजराती, सिन्धी आदि भाषाओं के स्वरूप को समझने के लिये और शब्दों के वर्गीकरण के लिये यह अत्यन्त सहायक होगा।

संस्कृत और प्राकृत के विद्वानों को भी उनके काल को मनोविनोद में व्यतीत करने के लिये इसमें प्रचुर सामग्री प्राप्त होगी। पहले-प्राकृत भाषा के काव्यों को ही लीजिये—

स्तम्भन पार्श्वनाथ स्तोत्र (पृ० १५५), नेमिनाथ स्तव (पृ० ६१५), पार्श्वनाथ लघुस्तव (पृ० १८५), यमकबद्ध पार्श्वनाथ लघुस्तव (पृ० ६१८),

समसंस्कृत-प्राकृत भाषा में—पार्श्वनाथाष्टक (पृ० १८६)।

सम हिन्दी-संस्कृतभाषा में—पार्श्वनाथाष्टक (पृ० १८६)।

संस्कृत भाषा में—शान्तिनाथ स्तव (पृ० १०३), चतुर्विंशति तीर्थंकर गुरुनाम गर्भित पार्श्वनाथ स्तव (पृ० १८४), पार्श्वनाथ-

येषां वाणिविलासानां, गीतकाव्यादियोजना।
प्रकाशते कवीशत्वं, स्वगच्छ-परगच्छभिः।

× × ×

तेषां मुख्या शिष्याः, चतुर्थपरमेष्ठिनः कलाचतुराः।
कलिकालकालिदासाः उच्चालसरस्वतीरूपाः।

× × ×

सुसाधु हंस समयो सुरचन्द, शीतल वचन जिम शारद चन्द।
ए कवि मोटा, बुद्धि विशाल, ते आगलि हुँ मूरख बाल॥

(कवि ऋषभदास)

ज्ञानपयोधि प्रबोधि वारे, अभिनव शशिहर प्राय,
कुमुद चन्द्र उपमान वहेरे, समयसुन्दर कविराय।
ततपर शास्त्र समरथिवारे, सार अनेक विचार,
वलि कलिन्दिका कमलिनी रे, उल्लास दिनकार।

(पं० विनयचन्द्र)

श्री नाहटा जी ने महोपाध्याय समयसुन्दर के सम्बन्ध में लिखने का आग्रह कर, मुझे कवि के यशोगान का अवसर प्रदान किया, इसके लिये मैं नाहटा बन्धु को हार्दिक साधुवाद देता हूँ।

३१-८-१९५५
विवेक वर्धन सेवाश्रम
महासमुन्द (म० प्र०)

श्यामासूनु—
महोपाध्याय विनयसागर

भण्डारों में किस रूप में पड़ी-पड़ी बिलख रही होंगी ! नाहटा बन्धुओं ने कवि के फुटकर संग्रह को संगृहीत करने का और परिश्रम उठाकर प्रकाश में लाने का जो प्रयत्न किया है एतदर्थ वे साहित्य-समाज की ओर से अभिनन्दनीय हैं।

उपसंहार

अन्त में मैं कवि की प्रतिभा के सम्बन्ध में वादीन्द्र हर्षनन्दन, कवि ऋषभदास और पंडित विनयचन्द्र कृत स्तुति द्वारा पुष्पाञ्जलि अर्पित करता हुआ अपनी भूमिका समाप्त करता हूँ:—

"तच्छिष्य-मुख्यदक्षाः, विद्वद्वर-समयसुन्दराह्वयः।
कलिकालकालिदासाः, गीतार्था ये उपाध्यायाः।
प्राग्वाटशुद्धवंशाः, षड्भाषागीतिकाव्यकर्तारः।
सिद्धान्तकाव्यटीका—करणादज्ञानहर्तारः।
(उत्तराध्ययन टीका)

× × ×

वचनकला-काव्यकला, रूपकला-भाग्यरञ्जनकलानाम्।
निस्सीमावधिभूयान्, सदुपाध्यायान् श्रुताध्यायान्।

× × ×

तेषां शिष्या मुख्या, वचन-कला कविकलासु निष्णाताः।
तर्क-व्याकृति-साहित्य-ज्योतिः समयतत्त्वविदः।
प्रज्ञाप्रकर्षः प्राग्वाटे, इति सत्यं व्यधायि यः।
येषां हस्तात् सिद्धिः, सन्ताने शिष्य-शिष्यादौ।
अष्टौ लक्षानर्थानेकपदे प्राप्य ये तु निर्ग्रन्थाः।
संसारः सक सुभगाः, विशेषतः सर्वराजानाम्।
(मध्याह्नव्याख्यान पद्धति)

× × ×

ऐरवत क्षेत्र चतुर्विंशति गीतानि (प्रथम के ७ स्त० प्राप्त नहीं)

अनुक्रमणिका

चौवीसी

संकेत—स्त.=स्तवन, गी.=गीत, गा.=गाथा, ग.=गर्भित, मं.=मंडण.

विहरमान वीसी स्तवनाः

साधु गीतानि

चार प्रत्येक बुद्ध गीतः—

सती गीतानि

गुरु गीतानि

औपदेशिक गीतानि

छत्तीसी—

कविवर-लेखनदर्शनम्—(४)

[सं० १६९९ लि० केशी प्रदेशी प्रबन्ध का अन्तिम पत्र]

कविवर-लेखनदर्शनम्—(३)

[सं० १६६८ लि० प्रस्ताव सवैया छत्तीसी का अन्तिम पत्र]

पद्मनाभ सूरदेव सुपास,
स्वयंप्रभ सर्वानुभूति लील विलास ॥२॥ ए० ॥
देवश्रुत उदय पेढाल पोट्टिल स्वामी,
सत्कीर्त्ति सुव्रत असम नामी ॥३॥ ए० ॥
निःकषाय निःपुलाक निर्मम जिण,
चित्रगुप्त श्रीसमाधि अनंत गुण ॥४॥ ए० ॥
संवर यशोधर विजय मल्लि देव,
अनंतवीरज भद्रकृत भव भव सेव ॥५॥ ए० ॥
ए तीर्थंकर आगैं होस्यै गुण अभिराम,
समयसुन्दर तेह अवस्था करे प्रणाम ॥६॥ ए० ॥

श्री अतीत चौवीसी स्तवन

राग—प्रभाती

केवलज्ञानी नइ निर्वाणी,
सागर महायश विमल वखाणी ॥ के० ॥१॥
सर्वानुभूति श्रीधर दत्त नामी,
दामोदर श्री सुतेज स्वामी ॥ के० ॥२॥
मुनिसुव्रत सुमति शिवगति वर,
अस्ताग नमीश्वर अनिल यशोधर ॥ के० ॥३॥
कृतार्थ जिनेश्वर शुद्धमति शिवकर,
स्यंदन संप्रति चौवीसे तीर्थंकर ॥ के० ॥४॥
अतीत चौवीसी जग विख्याती,
समयसुन्दर प्रणमत प्रभाती ॥ के० ॥५॥
[कृतम् श्री सिद्धपुरे, स्वयं लिखित पत्र से]

समयसुन्दरकृतिकुसुमाञ्जलि

—×❀[○]❀×—

श्री वर्तमान चौवीसी स्तवन

जीव जपि जपि जिनवर अंतरयामी । जी० ।
ऋषभ अजित संभव अभिनन्दन,
सुमति पद्मप्रभु शिवपुर गामी ॥१॥ जी० ॥
सुविधि शीतल श्रेयांस वासुपूज्य,
विमल अनंत धरम हितकामी ।
शांति कुन्थु अर मल्लि मुनिसुव्रत,
नमि नेमि पार्श्व महावीर स्वामी ॥२॥ जी० ॥
चौवीस तीर्थंकर त्रिभुवन दिनकर,
नाम जपत जाके नवनिधि पामी।
मन वंछित सुख पूरण सुरतरु,
प्रणमत समयसुन्दर सिर नामी ॥३॥ जी० ॥

श्री अनागत चौवीसी स्तवन

राग—प्रभाती

ए अनागत तीर्थंकर चौवीस जिन,
प्रह उठी नइं नाम लेतां सफल दिन ॥१॥ ए० ॥

समयसुन्दर कहइ तेरे अजित जिन,
गुण गावा मोकुं रंगरली हो ॥३॥ अ० ॥

संभव जिन स्तवन

राग—काफी

आ हे रूप सुन्दर सोहइ, सखि सम्भवनाथ । रूप० ।
गुण अनन्त मन मोहन मूरति, सुर नर के मन मोहइ ॥१॥
समोसरण सामीं दयइ देशण, भविक जीव पडिबोहइ ।
केवलज्ञानी धर्म प्रकासइ, वयर विरोध विपोहइ ॥२॥ स० ॥
भवदधि पार उतार भगत कूं, सुगति—पुरी आरोहइ ।
समयसुन्दर कहइ तीन भुवन मइं, जिन सरिखउ नहि को हइ॥३॥

अभिनंदन जिन स्तवन

राग—मालवी गौड़ी

मेरे मन तूं अभिनन्दन देवा ।
सौंस करी मैं तेरे आगे, हरि हरि आन वहेवा ॥१॥ मे० ॥
मूरख कोण भखै नींव फल कुं, जो लहै वंछित मेवा ।
तूं भगवंत वस्यौ चित भीतर, ज्युं गज के मन रेवा ॥२॥ मे० ॥
तूं समरथ साहिब मैं सेव्यो, भव दुख भ्रांति हरेवा ।
समयसुन्दर मांगत अब इतनो, भव भव तुम्ह पाय सेवा ॥ ३ मे० ॥

चौवीसी

ऋषभ जिन स्तवन

राग—मारू

ऋषभदेव मेरा हो ऋषभदेव मेरा हो ।
पुन्य संयोगइ पामीया मइं, दरिसण तोरा हो ॥१॥ ऋ० ॥
चउरासी लख हूँ भम्यउ, भव का फेरा हो ।
दुख अनन्ता मइं सह्या, स्वामी तिहां बहुतेरा हो ॥२॥ ऋ० ॥
चरण न छोड़ं ताहरा, सामी अब की वेरा हो ।
'समयसुन्दर' कहइ तुम्ह थइ, स्वामी कउण भलेरा हो ।३।ऋ०॥

अजित जिन स्तवन

राग—गउड़ी

अजित तुं अतुल बली हो, मेरा प्रभु-अजित० ।
मोह महाभल हेलइ जीतउ,
मदन महीपति फौज दली हो ॥१॥ अ० ॥
पूरणचन्द जिसउ मुख तेरउ,
दंत पंक्ति मचकुन्द कली हो ।
सुन्दर नयन तारिका शोभित,
मानूं कमल दल मध्य अली हो ॥२॥ अ० ॥
गज लांछन विजया कउ अंगज,
मेटत भव दुख भ्रांति टली हो ।

केसर चंदन मृगमद मेली[1],
भगति करूँ बहु भतियां ।
आर्द्र कुमार सज्जंभव की परि,
बोध बीज आपतियां ॥२॥ मे० ॥
पदम लांछन पदमप्रभु सामी,
इतनी करूँ वीनतियां ।
समयसुन्दर कहै द्यो मेरे साहिब,
सकल कुशल संपतियां ॥३॥ मे० ॥

सुपार्श्व जिन स्तवन

राग—श्रीराग

वीतराग तोरा पाय सरणं ।
दीनदयाल सुपास जिणेसर, जोनी संकट दुख हरणं ।१। वी० ।
कासी जनम मात पृथिवी सुत, तीन भुवन तिलकाभरणं ।
पर उपगारी तुं परमेसर, भव समुद्र तारण तरणं ।२। वी० ।
अष्ट करम मल पंक पयोधर, सेवक सुख संपति करणं ।
सुर-नर-किन्नर-कोट[2] निसेवित, समयसुंदर प्रणमति चरणं ।३। वी०

चन्द्रप्रभ जिन स्तवन

राग—रामगिरि

चंद्रानगरी[3] तुम्ह अवतार जी, महसेन नरिंद मल्हार जी ।
भगवंत (तुं) कृपा भंडार जी, इक वीनतड़ी अवधार जी ।
चन्द्रप्रभस्वामी तार जी ॥ १ ॥ स्वामी तारि जी ।

१ मेली । २ कोडि निषेवित । ३ चंद ।

सुमति जिन स्तवन

राग—कांनड़ौ

जिन जी तारो हो तारो।
मेरा जिनराज जि०, विनती करूँ कर जोड़ी।
असरण सरण भगत साधारण,
भवोदधि पार उतारो ॥ जि० ॥ १ ॥
पर उपगारी परम करुणा पर[१],
सेवक अपणौं संभारो।
भगत अनेक भवोदधि तारे,
हम विरियां क्युं विचारो ॥ जि० ॥ २॥
मेघ मल्हार मात-मंगला सुत,
वीनती ए अवधारो।
समयसुन्दर कहै सुमति जिणेसर,
सेवक हुं छुं तुम्हारो ॥ जि० ॥ ३ ॥

पद्मप्रभ जिन स्तवन

राग—वेलाउल

मेरो मन मोह्यो मूरतियां।
अति सुन्दर मुख की छवि पेखत,
विकसत[२] होत मेरी छतियां ॥१॥ मे०॥

१ रस। २ हरषित

सकल सुरासुर वंदित पदकज, पुण्यलता घन पाथ ।
समयसुन्दर कहइ तेरी कृपा तें, होत सुगन सुख हाथ । ह० । ३ ।

श्रेयांस जिन स्तवन

राग—ललित

सुरतरु सुन्दर श्री श्रेयांस ।
सुमनस श्रेणि सदा प्रभु शोभित,
साधु साख की नीकी प्रशंस । सु० । १ ॥
मन वंछित सुख संपति पूरति,
आरति[1] विघन करत विध्वंश ।
इंद चंद किन्नर अप्सर गण,
गावत गुण वावति[2] मुखि वंश । सु० । २ ॥
खड्ग लंछन तप तेज अखंडित,
अरिहंत तीन भुवन अवतंस ।
समयसुन्दर कहै मेरो मन लीनों,
जिन चरणे जिम मानस हंस । सु० । ३ ॥

वासुपूज्य जिन स्तवन

राग—गोड़ी केदारो

भविका तुमे[3] वासुपूज्य नमो री ।
सुखदायक त्रिभुवन को नायक, तीर्थंकर बारमो री । १ । भ० ।

---

१ अरति । २ वावत सुख । ३ तुम्हें ।

स्वामी ए संसार असार जी, बहु दुख अनंत अपार जी।
मुझ[1] आवागमन निवार जी ॥ २ ॥ सा० ॥
मुझ नै हिव तुं आधार जी, सरणागत नै संभार[2] जी।
तुझ सम कोइ नहीं संसार जी, समयसुन्दर नै सुखकार जी।३ सा०

सुविधि जिन स्तवन

राग—केदारू

प्रभु तेरे गुण अनंत अपार।
सहस रसना करत[3] सुरगुरू, कहत न[4] आवै पार।प्र०।१।
कोण अंबर गिणै तारा, मेरु गिर को भार।
चरम सागर लहरि माला, करत कोण विचार।प्र०।२।
भगति गुण लवलेश भाखुं, सुविध जिन सुखकार।
समयसुन्दर कहत हमकुं, स्वामी तुम[5] आधार।प्र०।३।

शीतल जिन स्तवन

राग—केदारो

हमारे हो साहिब शीतलनाथ।
दीनदयाल भविक[6] कुं मेले, मुगतपुरी को साथ।ह०।१।
भव दुख भंजण स्वामी निरंजण, संकट कोट प्रमाथ।
दृढरथ वंश विभूषण दिनमणि, संजम रमणी सनाथ।ह०।२।

१ हुं भम्यउ अनंती वारजी। २ आधार। ३ धरइ। ४ नावइ। ५ तूं। ६ भगत

अनंत जीव कउ तूं आधार, अनंत दुख कउ छेदणहार।
हमकुं स्वामी पार उतार, तूं तो कृपा निधान री।३। अ०।
समयसुन्दर तेरे जिणंद, प्रणमति चरणारविंद।
गावति परमाणंद सारंग, राग तान मान री।४। अ०।

धर्म जिन स्तवन

राग—आसाउरी

अलख अगोचर तूं परमेसर, अजर अमर तूं अरिहंत जी।
अकल अचल अकलंक अतुल बल, केवलज्ञान अनंत जी।१ अ०।
निराकार निरंजन निरुपम, ज्योतिरूप निरखंत जी।
तेरा सरूप तुं ही प्रभु जाणइ, के जोगींद्र लहंत जी।२ अ०।
त्रिभुवन स्वामी तुं अंतरजामी, भय भंजण भगवंत जी।
समयसुन्दर कहे तेरे धरम जिन, गुण मेरे हृदय वसंत जी। ३ अ०।

शान्ति जिन स्तवन

राग—मारुणी

शांतिनाथ सुणहु[1] तूं साहिब, सरणागत प्रतिपालो जी।
तिण हूँ तोरइ सरणइ आयउ, स्वामी नयण निहालो जी।१।
दयाल राय तारउ जी, मुंने आवागमण निवारउ जी।
हूँ सेवक सामी तुमारो जी, तूं साहिब शांति हमारउ जी।२।द०।

---

१ सुणयउ

भाव भगति भगवंत मजोरी, चंचल इंद्री दमोरी।
निश्चल जाप जपो जिनजी को, दुर्गति दुख गमोरी।२।भ०।
मेरो मन मधुकर प्रभु के पदांबुज, अहिनिस रंग रमोरी।
समयसुन्दर कहै कोण कहुं जग, श्री जिनराज समो री।३।भ०।

विमल जिन स्तवन

राग—मारुवणी धन्यासिरी, जइतसिरी

जिनजी कुं देखि मेरउ मन रींझइ री।
तीन छत्र सिर ऊपर सोहइ, आप इन्द्र चामर वींझइ री।जि०।१।
कणक सिंहासण स्वामी वइसण, चैत्य वृक्ष शोभित कीजइ री।
भामंडल झलकै प्रभु पूठि, देखत[1] मिथ्यामति खीजइ री[2]।जि०२।
दिव्य नाद सुर दुन्दुभि वाजइ, पुष्प वृष्टि सुर विरचीजइ री।
समयसुन्दर कहइ तेरे विमल जिन, प्रातीहारज पेखीजइ री।जि०३।

अनन्त जिन स्तवन

राग—सारंग

अनंत तेरे गुण अनंत, तेज प्रताप तप अनंत।
दरसण चारित अनंत, अनंत केवल ज्ञान री।१।अ०।
अनंत सकति कउ निवास, अनंत मुक्ति-सुख विलास।
अनंत वीरज अनंत धीरज, अनंत सुकल ध्यान री।२।अ०।

१. पेखत। २. छीजई री

मल्लि जिन स्तवन

राग—सारंग मल्हार

मल्लि जिन मिल्यउ री सुगति दातार ।
फिरत फिरत आपति मइं पायउ, अरिहंत तुं आधार ।१। म०।
तुम्ह दरसण विन दुख सह्या वहुला[1], ते कुण जाणइ पार ।
काल अनंत भम्यो भवसागर, अब मोहि पार उतार ।२। म०।
सामल वरण मनोहर मूरति, कलस लांछण सुखकार ।
समयसुन्दर कहै ध्यान एक तेरउ, मेरे चित्त[2] मझार ।३। म०।

मुनिसुव्रत जिन स्तवन

राग—रामगिरी

सखि सुन्दर रे पूजा सतर प्रकार ।
श्री मुनिसुव्रत सांमो केरउ रे, रूप वण्यो जगि[3] सार ।स०।१।
मस्तकि मुकट हीरे जड्यउ रे, भालइ तिलक उदार ।
बांहिं मनोहर[4] बहिरखा रे, उर मोतिन कउ हार ।स०।२।
सामल वरण सोहामणो रे, पदमा मात मल्हार ।
समयसुन्दर कहइ सेवतां रे, सफल मानव अवतार[5] ।स०।३।

नमि जिन स्तवन

राग—आसाउरी

नमुं नमुं नमि जिन चरण तोरा,
हूँ सेवक तूं साहिब मोरा ।न०।१।

---

१ वहु । २ हृदय । ३ अति । ४ पहिर्यो । ५ पामीजइ भव पार।

पूरव भव राख्यो पारेवो, तिम मुभनें सरणइ राखि जी।
दीनदयाल कृपा करि स्वामी, मुझ नें दरसण दाखि जी।३।द०।
शांतिनाथ सोलमउ तीर्थंकर, सेवे सुरनर कोडि जी।
पाय कमल प्रभु ना नित प्रणमइ, समयसुन्दर कर जोड़िजी।४ द०।

कुन्थु जिन स्तवन

राग—भैरव

कुंथुनाथ कुं करूं प्रणाम, मन वंछित पूरवइ सुख काम। कुं०१।
अंतरजामी गुण अभिराम, अहिनिस समरूं अरिहंत नाम। कुं०२।
वीनति एक करूं मोरा स्वाम, द्यो मोहि मुगति पुरी को धाम। कुं०३।
किसके हरि हर किसके राम, समयसुन्दर कै जिनगुण ग्राम। कुं०४।

अर जिन स्तवन

राग—नट्टनारायण

अरनाथ अरियण गंजणं। अ०।
मोह महीपति मान विहंडण, भवियण के दुख भंजणं। अ०।१।
मालवकौसिक राग मधुर धुनि, सुरनर को मन रंजणं।
सुन्दर रूप वदन चंद सोभित, लोचन निरंजन खंजनं[१]। अ०।२।
हरि हर देव प्रमुख व्यासंगी, तूं सब सुख[२] को मंजणं[३]।
समयसुन्दर कहै देव[४] तूं साचो, जो निराकार निरंजणं। अ०।३।

१ खंडण। २ शोष। ३ भंजण। ४ सो देव सांचउ।

वीर जिन स्तवन

राग—परजयो

ए महावीर मो[1] कछु देहि दानं,
हूँ द्विज मीत तूं दाता प्रधानं। ए०।१।
ए वूठो तूं कनक की धार, अष्ट लक्ष कोटि मानं।
ए मैं कछु न पायो तास, आयति पुण्य विनानं। ए०।२।
ए तव देवदूष्य को अर्द्ध, दीनो कृपा निधानं।
ए गुण समयसुन्दर गाया, को नहीं प्रभु समानं। ए०।३।

कलश

राग—धन्याश्री

तीर्थंकर रे चोवीसे मैं संस्तव्या रे।
हां रे ऋषभादिक जिनराय, इणि परि वीनव्या रे। ती०।१।
वसु इन्द्री रे रस रजनीकर संवच्छरैं रे, हां रे अहमदावाद मझार।
विजयादसमी दिनें रे गुण गाया रे, तीर्थंकर ना शुभ मनैं रे। ती०।२।
खरतरगच्छ रे श्रीजिनचंद्रसूरीसरू रे, हां रे श्रीजिनसिंघसुरीस।
सकलचंद मुनिवरू रे सुपसायें रे, समयसुन्दर आणंद करू रे। ती०

इति श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर गीतम्।

[इति श्री चतुर्विंशतितीर्थंकराणां गीतानि संपूर्णानि समाप्तानि।
संवत् १७१४ वर्षे अहम्मदावादे लि०।
श्री पोकरण नगरे सं० १६८८ वर्षे श्रावण वदि ८ दिने।]

१ कछु मोहि देहु दानं।

जउ तूं जलधर तउ हूँ मोरा,
जउ तूं चंद तउ हूँ भी चकोरा। न०। २।
सरणइ राखि करइ क्रम जोरा,
समयसुन्दर कहइ[1] इतना निहोरा। न०। ३।

नेमि जिन स्तवन

राग—गूजरी

यादव राय जीवे तूं कोडि वरीस।
गगन मंडल उडत प्रमुदित चित, पंखीयां देतु आसीस। या०।१।
हम ऊपरि करुणा तइं कीनी, जग जीवन जगदीस।
तोरण थी रथ फेरि सिधारे[2], जोग ग्रह्यो सुजगीस। या०।२।
समुद्र विजय राजा कउ अंगज, सुर नर नामइ सीस।
समयसुन्दर कहै नेमि जिणंद कउ, नाम जपूं निसदीस। या०।३।

पार्श्व जिन स्तवन

राग—देवगंधार

माई आज हमारइ आणंदा।
पास कुमार जिणंद के आगइ, भगति करति धरणिंदा। मा०।१।
तता तता थेइ थेइ पद ठमकावति[3], गावत मुख गुण वृन्दा। मा०।२।
शास्त्र संगीत भेद पदमावति, नृत्यति नव नव छंदा। मा०।३।
सफल करत अपनी सुर पदवी, प्रणमत पाय अरविंदा। मा०।४।
समयसुन्दर प्रभु पर उपगारी, जय जय पास[4] जिणंदा। मा०।५।

---

१ करइ। २ सिधाये। ३ थेइ थेइ थेइ तत थेइ पद ठावति। ४ श्री जिणचंदा.

सुमति थकी लीजइ मन वंछित, इह लोक नैं परलोक अपार।
समयसुन्दर कहइ सुमति तीर्थंकर, सेवउ सुमति तणउ दातार ।४।

वदन पदम सम, कनक पदम क्रम,
पदम पाणि उपम, पदम ज्यूं पाय जु ।
पदम लंछन धर, पदम बांधव कर,
चरण पदम चर, पदम की छाय जु ॥
सुसीमा माता सुहाय, पदम सय्या विछाय,
पदम प्रभु कहाय, नामैं जिनराय जु ।
पदमनिधान पायउ, पदमसरसि न्हायउ,
समयसुन्दर गायउ, सुगुरु पसाय जु ॥६॥

........................थयउ आकाश,
इन्द्र सेवा आवै जास, करैं अरदास जु ।
पाप कौं करौं प्रणास, तोड़ौं कर्म बंध पास,
टालो भव केरउ त्रास, पूरो मन आस जु ॥
माता केरइ कर फास, पिता का थया सुपास,
सुकुमाल सुविलास, अधिक उल्हास जु ।
समयसुन्दर तास, चरण दासानुदास,
जपति सुजस वास, साहिब सुपास जु ॥७॥

चंद्रपुरी अवतार, लक्ष्मणा माता मल्हार,
चंद्रमा लांछन सार, उरु अभिराम में ।
वदन पुनिमचंद, वचन शीतलचंद,
महासेन नृपचंद, नव निधि नाम में ॥

श्री चौबीस जिन सवैया

नाभिराय मरुदेवी नंदन, युगलाधर्म निवारण हार।
सउ बेटां नै राज सौंपि करि, आप लियौ संयम व्रत भार॥
समौसरचा स्वामी सेत्रुंज गिरि, जिनवर पूर्व निवाणु वार।
समयसुन्दर कहै प्रथम तीर्थंकर, आदिनाथ सेवो सुखकार॥१॥

पंचास कोड़ी लाख सयरोपम, आदिनाथ थकी गया जाम।
वंस इखाग मात विजया कुखि, जनम अयोध्या नगरी ठाम॥
तारंगे मूरति अति सुन्दर, गज लंछन स्वामी अभिराम।
समयसुन्दर कहै अजितनाथ नैं, प्रह ऊठी नैं करूं प्रणाम॥२॥

सेना मात कूखि मानस सर, राजहंस लीला राजेसर।
प्रगट रूप पणि तूं परमेसर, अलख रूप पणि तूं अलवेसर॥
हय लंछण अति रूप मनोहर, वंश इक्खाग समुद्र शशिहर।
समयसुन्दर कहै ते तीर्थंकर, संभवनाथ अनाथ को पीहर॥३॥

सुरगुरु सहस करइ मुखि रसना, तउ पणि कहितां नावइ अंत।
गुण गिरुआ परमेश्वर केरा, प्रकट रूप त्रिभुवन पसरंत॥
भव समुद्र तारण त्रिभुवन पति, भय भंजण स्वामी भगवंत।
समयसुन्दर कहै श्री अभिनंदन, चौथउ तीर्थंकर अरिहंत॥४॥

शौक विहुं झगड़ौ समझाव्यउ, सुमति दीध माता नैं सार।
सुमति सहु वांछइ नर नारी, सुमति दो हे मुझ सरजनहार॥

कोई ईरान को दुख डारक हइ।
रागरु द्वेष जिते जिणदेव,
सोउ देव सुख कउ कारक हइ ॥
श्री वीतराग निरंजन देव,
दया गुण धर्म कौ धारक हइ।
समयसुन्दर कहइ भविका भजउ इक,
श्रेयांस तीर्थंकर तारक हइ ॥११॥
जम वाहण कहइ जाण नीर, पणि वहु निरंतर।
सुपन दीठ शुभ हाणि अशुभ, मारग अभ्यन्तर ॥
दसराहै वहु दुख हणइ, राजा हथियारे।
दूध न धावण देइ, महिष नहीं सुख जमारे ॥
कवि एम समयसुन्दर कहै, लाखीणौ अवसर लह्यौ।
वासुपूज्य शरण आव्यउ वही, लांछन सिशि लागी रह्यौ।१२।
विमल जाति कुल वंश, विमल सुर चवण विमानं।
विमल पिता कृतवर्म, विमल श्यामी सुवखानं ॥
विमल कंपिलावास, विमल तिहां दीक्षा महोत्सव।
विमल नाण निर्माण, विमल सर्व गुण संस्तव ॥
वलि चढ्यौ विमलगिरि विचरतौ, पणि सीधौ समेतगिरि।
कर जोड़ि समयसुन्दर कहइ, ते विमल नाथ नै तूं समरि।१३।
वल भी तेरो अनंत दल भी तेरो अनंत,
पुण्य कौ फल अनंत साधै षट खंड जु।

तेज करइ भिन्न भिन्न, फटिक रतन बिंब,
मांड्यौ है..........दिगम्बर धाम में ।
समयसुन्दर इम, तीरथ कहइ उतम,
चंद्रप्रभ भेट्यो हम, चंदवारि गाम में ॥८॥

काकंदी पुरी कहाय, राजा श्री सुग्रीव राय,
रमणीक रामा माय, उरे अवतार जू ।
मकर लंछन पाय, एकसौ धनुष कहाय,
प्रभु कौ दीक्षा पर्याय, वरस हजार जू ॥
निरमम निरमाय, कर्म आठ खपाय,
बि पूर्व लाख आयु, पाम्यौ भव पारजू ।
समयसुन्दर ध्याय, साचौ इक तु सखाय,
सुविधि जिणंदराय, सुगति दातार जू ॥९॥

नगर भद्दिलपुर, दढरथ नरवर,
नंदा कूखि सरवर, लीला राजहंस जू ।
श्रीवच्छ लांछनधर, धन राशि मनोहर,
अणसै नइ साठि कर, तनु परसंस जू ॥
एक असी गणधर, इक लाख मुनिवर,
सुगति समेतगिर, इक्ष्वाकु है वंस जू ।
प्रणमै समयसुन्दर, दसमो ए तीर्थंकर,
श्री शीतल सुरतर, कुल अवतंस जू ॥१०॥

कोउ ब्रह्मा भजौ कोई कृष्ण भजौ,

पचवीस सहस करइ यक्ष सेवा, चउदै रत्न नव निधि विस्तार ।
समयसुन्दर कहइ अर तीर्थंकर, चक्रवर्त्ती पण पदवी सार ॥१८॥
पूरव भव ना मित्र महीपति, प्रतिबोध्या पूतलि वइराग ।
स्त्री पणइ तीर्थ वरताव्यौ, स्त्री आगैं बैठी लहि लाग ॥
निराकार निरंजन स्वामी, उगणीसमौ ए श्री वीतराग ।
समयसुन्दर कहइ भव माहें भमतां, मल्लिनाथ मिल्यौ मुझ भाग ॥१६
हरि हर ब्रह्मा देव तणें रे, देहरइ भूला काय भमौ ।
समकित सूधो धरउ मन मांहे, मिथ्या मारग दूर गमौ ॥
आठ करम बंधन थी छूटौ, अरिहंत देव नैं आय नमौ ।
समयसुन्दर कहइ श्री मुनिसुव्रत, वांदउ तीर्थंकर वीसमौ ॥२०॥
गुरु मुख शुद्ध क्रिया विधि साचवी, सामायक नैं पोसउ करौ ।
दृढ आसन बैसी मन निश्चल, ध्यान एक अरिहंत धरौ ॥
जरा मरण दुख जल पूरण, भविक जेम संसार तरौ ।
समयसुन्दर कहै लय लगाड़ि नइ,
नमि नमि नमि नमि मुख उच्चरौ ॥२१॥
बे बब्बीहा भाई अरे काहे री राजुल बाई,
अरी तें कहां देखे नेमि मैं तो विरह न समाई ।
विरह कोकिल सहकार विरह गज रेवा होइ,
विरह बब्बीहा मेह विरह सर हंस विवोई ॥
चक्रवाक चकवी विरहा, विरह सहु व्यापी रह्यौ ।
म करि दुख राजुल सुथा कि, समयसुन्दर साचौ कह्यौ ॥२२॥

भोग भी तेरो अनंत जोग भी तेरो अनंत,
प्रयोग तेरो अनंत प्रताप प्रचण्ड जु ॥
ज्ञान भी तेरो अनंत दर्शन भी तेरो अनंत,
चरित्र भी तेरो अनंत आज्ञा अखण्ड जु ।
सुन्दर कहइ सत्यमेव (सुन्दर) सुरनर करइ सेव,
अनंत तीर्थंकर देव तारण तरण्ड जु ॥१४॥

श्रेयांस नी परै दान तुम्हे द्यउ, जिम संसार समुद्र तरौ ।
पालउ शील सती सीता जिम, तप सुन्दरि सरिखौ आदरौ ॥
भरत नाम चक्रवर्ती तणी परि, भवियण मन भावना धरौ ।
समयसुन्दर कहइ समवशरण मांहि धर्मनाथ कहै धर्म करौ ।१५।

विश्वसेन पिता माता अचिरा, मृग लांछन सोवन तनु कांति ।
चउसठ इन्द्र मिली न्हवराव्यौ, मेरि उपरि मनि आणी खांति ॥
मरकी गई प्रजा सुख पाम्यौ, देश मांहि थई सुख शान्ति ।
समयसुन्दर कहै मात पिता ए, पुत्र तणौ दीधौ नाम शांति॥१६॥

तीन छत्र सिर ऊपर सोहइ, सुर चामर ढालइ सुविहाण ।
दिव्यनाद सुरदुन्दुभि वाजइ, पुष्पवृष्टि पणि जानु प्रमाण ॥
कनक सिंहासण चारु चेइतरु, भामंडल झलकै जिम भाण ।
समयसुन्दर कहइ समोसरण में, कुन्थुनाथ इम करइ वखाण ।१७।

चुलसी लाख अश्व रथ हाथी, छन्नू कोडि पायक परिवार ।
बत्तीस सहस मुकुट-बद्ध राजा, चौसठ सहस अंतेउर नार ॥

सुगति जातां थकां मेलइ सत्थ । न० ।१।
पालउ जीव दया इह धरम पत्थ ।
भगवंत भाखइ सवत्थ सत्थ । न० ।२।
दुर्गति पड़तां आडउ दिइ हत्थ ।
समयसुन्दर कहइ प्रभु छइ समत्थ । न० ।३।

(१३) अरसंजल जिन गीतम्

राग—भूपाल अठतालउ

तेरमउ अरसंजल तीर्थंकर, तिण देशन ए दीधी रे।
छ जीव नी रक्षा तुम करजो, सुगति तणी वाट सीधी रे। ते०।१।
वीतराग नी वाणी मीठी, प्रेम करी जिण पीधी रे।
भव समुद्र मांहें ते भवियण, नहीं भमइ वात प्रसिद्धी रे। ते०।२।
आज्ञा सहित क्रिया सहु कीधी, दीक्षा पणि फलइ लीधी रे।
समयसुन्दर कहइ मन शुद्ध करजो, धर्म थकी राज रिद्धी रे। ते० ३।

(१४) अनन्त जिन गीतम्

राग—वेलावल इकताला

अहो मेरे जिन कुं कुण ओपमा कहूँ ।
काष्ठ कलप चिन्तामणि पाथर, कामगवी पशु दोष ग्रहुँ । अ०।१।
चन्द्र कलंकी समुद्र जल खारउ, सूरज ताप न सहूँ ।
जल दाता पणि श्यास वदन घन, मेरु कृपण तउ हुँ किम सदहुँ ।२।
कमल कोमल पणि नाल कंटक नित, संख कुटिलता चहुँ ।
समयसुन्दर कहइ अनंत तीर्थंकर, तुम मइं दोष न लहुँ । अ०।३।

वे नचीइ भाई,
आयउ री वसंत मास, सब जन पूगी आस,
रमत खेल रास, उडत अबीर जू ।
ऊछलै गुलाल लाल, लपटाणौ दोउ गाल,
वाहइ पिचरकें विचाल, भीजे चोली चीर जू ।
अति भलौ आम बाग, छैल छबीला लाग,
सुन्दर गीत सराग, सुन्दर सरीर जु ॥
समयसुन्दर गावै, परम आणंद पावै,
वसंत की तान भावै, गुहिर गंभीर जु ॥२३॥
पंच दिन करि ऊण, छमासी पारणा दिन,
झटकि पड़या बंधन पग का जंजीर जू ।
दुन्दुभि बाजी आकास, प्रगट्यौ पुण्य प्रकास,
चन्दना की पूगी आस, पाम्यौ भवतीर जू ॥
साध तौ चवदे हजार, साधवी छत्रीस सार,
वीरजी कौ परिवार, गौतम वजीर जु ।
समयसुन्दर वर, ध्यान धर निरंतर,
चौवीसमौ तीर्थंकर, वांद्यौ महावीर जु ॥२४॥
आदिनाथ दे आदि स्तव्या, चौवीस तीर्थंकर ।
पवित्र जीभ पण कीध, शुद्ध थयौ समकित सुन्दर ॥
सुणौ भणौ सहु कोइ, श्रवण रसना करौ सफला ।
इहु लोक नैं पर लोक, सफल करौ पणि सगला ॥
चौवीस सवैया चतुर नर, कह्जो कर मुख नो कला।
समयसुन्दर कहइ सांभलो, ए मीठा मिश्री ना डला।२५।

राशि मेल मल मेल विलाएगा लाहणा,
साहिब सेवक जोड़ सेवुं पय तुम तणा ।३।
भवि भवि देज्यौ सेव म करिस्यउ वेगलउ,
समयसुन्दर कहि एम ए प्रेम पूरउ मलउ।४।

(१७) अतिपास जिन गीतम्

राग—वेलावल

सतरमउ श्री अतिपास तीर्थंकर, मन वंछित फल नउ दातार।
वे बोल मांगु वे कर जोड़ी, भवि भवि व्रत के समकित सार।१।
भव्य अछुं पणि भारी करमउ, दुषम काल भरत अवतार।
पणि समरथ साहिब तु सेव्यउ, पहुंचाड़िसी जाणु छुं पार।२।
सिद्धि गमन परिपाक जे जिम छइ, ते तिम छइ तिम तउ निरधार।
समयसुन्दर कहइ जां छुं छदमस्थ, तां सीम धरम करिसी श्रीकार।

(१८) सुपास जिन गीतम्

राग—तोड़ी

सुपास तीर्थंकर साचउ सही री। सु०।
अलख अगोचर अकल सरूपी, राग द्वेष लव लेश नहीं री। सु०।
मीन लांछन तीस धनुष [illegible] कंचन वरण कही री।
श्री अरनाथ समउ [illegible] गिरि मुगति लही री। सु०।
गुण ग्राम कीधा [illegible] वात दूरी रही री।
कहइ [illegible] देवनी आण वही री।

(१५) उपशान्त जिन गीतम्

राग—मारुणी एकताली

चार परखदा बइठी आगलि, आप आपणइ ऊलासइ रे।
पनरमउ श्री उपशांत तीर्थंकर, चउविधि धर्म प्रकाशइ रे।१।
धन जीव्यु रे २ धन जीव्यु आज अम्हारु।
रंज्या लोक कहइ नरनारी, वचन सुण्यु जे तुम्हारु रे।
धन जीव्यु रे २ ॥ आंकणी॥
पंइतालीस धनुष नी उंची, कंचन वरणी काया रे।
सुन्दर रूप मनोहर मूरति, प्रणमइ सुरनर पाया रे।२ध०।
दस लाख वरस नु आऊखु, सुप्रतिष्ठ गिरि (वर) सीधा रे।
समयसुन्दर कहइ जीभ पवित्र थइ, जिन गुण ग्राम मइं कीधा रे।३।

(१६) गुप्तिसेण जिन गीतम्

राग—मिश्र विहागड़ड केदारऊ। एकताला

सोलमा श्री गुप्तिसेण[1] तीर्थंकर सांभलउ,
श्री शांतिनाथ समान[2] तुम्हे तउ ते सांभलउ।
पणि तिण तउ पारेवउ शरणे राखियउ,
तिम मुझ शरणे राखि मिलइ जिम भाखियउ।१।
चालिस धनुस शरीर सोवन मइ-सोहतउ,
आउखु लाख वरस लांछन मृग मोहतउ।२।

अशुद्ध—१ अनंतसेन-गजसेन। २ सरिखु।

(२१) सामकोठ जिन गीतम्

राग—केदारा गउड़ी

श्रीसामकोठ[1] तीर्थंकर देवा,
एकवीसमा हिव नाम कहेवा ।१। श्री सा० ।
जउ जाणउ भव समुद्र तरेवा,
तउ वीतराग नइ वचने रहेवा ।२। श्री सा० ।
मुझ मन भागु भव मइं भमेवा,
समयसुन्दर कहइ हुं करिस्युं सेवा ।३। श्री सा० ।

(२२) अग्गिसेण जिन गीतम्

राग—गउड़ी

अग्गिसेन[2] तीर्थंकर उपदिसइ, एह संसार असार रे ।
पुण्य करउ रे तुम्हे प्राणिया, सफल करउ अवतार रे ।१। अ्रा० ।
हरिवंश सामवरण तणू , संख लाछन छइ श्रीसार रे ।
चित्रकूट परवत ऊपरिं, पामीयुं शिव सुख सार रे ।२। आ० ।
एह अरिहंत बावीसमउ, ऐरवरत क्षेत्र मझार रे ।
श्री नेमिनाथ ना[3] सारिखउ, समयसुन्दर सुखकार रे ।३। आ० ।

(२३) अग्गपुत्त जिन गीतम्

राग—अधरस

वीतराग वांदिस्युं रे हिव हुँ, अग्गपुत्त[4] अरिहंत ।

१ समकोटि । २ अतिसेन । ३ सरिखुं सचि उपस । ४ हुउ पवित्र ।

(१९) मरुदेव जिन गीतम्

राग—मालवी गउड़उ

ओगणीसमउ मरुदेव अरिहंत, मल्लिनाथ समान रे।
नील वरणीं तनु विराजइ, पुरुष रूप प्रधान रे।१। ओ०।
जिण दिन जिन चारित्र लीधुं, तिण दिन केवल ज्ञान रे।
इन्द्र चउसठि मिली आवइं, गायइं गीत नइं गान रे।२। ओ०।
तुझ विना हुं भम्यउ भूलउ, जिम पड़यउ मृग रान रे।
समयसुन्दर कहइ हिव हुं, धरिस तोरुं ध्यान रे।३। ओ०।

(२०) श्री सीधर जिन गीतम्

राग—मल्हारउ कनड़उ

हिव हुँ वांदुं री वीसमउ सीधर।
सामि[1] नित ऊठी ल्युं नाम।हिव०।
हुं करुं गुण ग्राम, केवल मुगति काम।
प्रभु सोहइ अभिराम, ऐरवरत ठाम।हिव०।१।
हरिवंश कुल भाण, उपनुं केवल नाण।
सरस करइ वखाण, अमृत वाणि।
जीवदया पालउ जाण, आप समा पर प्राण।
समयसुन्दर कहइ, वचन प्रमाणि।हिव०।२।

१ स्वामि।

चन्द्रानन १ सुचन्द्र २ अग्गिसेण ३ नंदसेण ४ इसिदिन ५ वयधारि ६ सामचंद ७ जुत्तसेन ८ अजितसेन ६ शिवसेन १० देवसेन ११ नक्खत्तसत्थ १२ असिजल १३ अनंत १४ उवसंत १५ गुत्तिसेण १६ अतिपास १७ सुपास १८ मरुदेव १६ सीधर २० सामकोठ २१ अग्गसेण २२ अग्गिपुत्त २३ वारिसेण २४।

इति श्रीसमवायांगसूत्रोक्त ऐरवतक्षेत्र २४ तीर्थंकरनामानि।

[स्वयं लिखित प्रति से]

विहरमान-बीसी-स्तवनाः

१. सीमंधर जिन गीतम्

राग—मालवी

सीमंधर सांभलउ, हुं वीनति करूँ कर जोड़ि। सी०।
तूं समरथ त्रिभुवन धणी, मुं नइ भव बंधण थी छोड़ि। सी०।१।
तुम मूं विचि अंतर घणउ, किम करूँ तोरी सेव।
देव न दीधि पांखड़ी, पणि दिल मइं तुं इक देव। सी०।२।
चंद चकोर तणी परिं, तूं वस्यउ मोरइ चीति।
समयसुन्दर कहइ ते खरी, पे परमेश्वर स्युं प्रीति। सी०।३।

२. युगमंधर जिन गीतम्

राग—गौड़ी

तूं साहिब हूँ सेवक तोरउ, वीनतड़ी अवधारि जी।
हुं प्रभु तोरइ सरणै आयउ, तुं मुझ नइ साधारि जी।१।

संसार[1] समुद्र नइ पारि उतारइ, भय भंजण भगवंत।१।वी०।
नील वरण महिमा निलउ रे, सरप लांछण सोभंत।
तीर्थंकर तेवीसमउ रे, नव हथ तनु निरखंत।२।वी०।
पारसनाथ सरिखु सहु रे, एहना गुण छइ अनंत।
समयसुन्दर कहइ जउ मिलइ इन्द्र, तउ पिण कहिं न सकंत।वी०।

(२४) वारिसेण जिन गीतम्

राग—विहागड़उ

वारसेण तीर्थंकर ए चउवीसमउ,
सगली परि श्री महावीर समउ।१।वा०।
खरउ वीतराग देव खंति खमउ,
भजउ भगवंत जिम भव न भमउ।२।वा०।
चरणे[2] चित्त लगाइ नमउ,
समयसुन्दर कहइ सुगति रमउ।३।वा०।

[कलश]

राग—धन्याश्री

गाया गाया री ऐरवरत तीर्थंकर गाया।
चउवीसां ना नाम चीतार्या, समवायांग सूत्र मइं पाया री।१ ऐ०।
संवत सोल सताणुया वरसे, जिनसागर सुपसाया।
हाथी साह तणइ आग्रह करइ, समयसुन्दर उवभाया रे।२ ऐ०।

इति ऐरवरत क्षेत्र २४ तीर्थंकर गीतानि समाप्तानि।

---

१ अथाग। २ समयसुन्दर कहि ए चुवीसमु, श्री जिन वांदी भव मउ गमु। (पाठान्तर भद्रमुनि, बुद्धिमुनि प्रेषित कापी से)

५. सुजात जिन गीतम्

राग—गुंड

सुजात तीर्थंकर ताहरी, हुयइ देव किण होडि रे ।
देव बीजे तउ दूषण घणां, तुं मइ नहीं तिल खोडि रे ।१। सु०।
पूरव लाख त्र्यांसी पछी, छतो राज ऋद्धि छोडि रे ।
संयम मारग आदर्यउ, महा मोह दल मोडि रे ।२। सु०।
तुझ वीतराग नइ समरतां, तूटइ करम नी कोडि रे ।
समयसुन्दर कहइ ते भणी, तूंनइ नमूं कर जोडि रे ।३। सु०।

६. स्वयंप्रभ जिन गीतम्

राग—प्रभाती

सयंप्रभ तीर्थंकर सुन्दरु ए, मित्रभूति रायां चा कुंअरु ए ।१ स०।
सुमंगला राणी माता उरि धरू ए, वीरसेना राणी कंत सुखकरु ए ।
चंद लांछन देव दया परू ए, समयसुदर चा परमेसरू ए ।२ स०।

७. ऋषभानन जिन गीतम्

राग—श्रीराग

(ढाल :—ऐउ २ चंद्रानन जिणचंद नमो, ए चदनी जाति ।)

ऐउ २ रिषभानन अरिहंत नमो, भय भंजण श्री भगवंत नमो ।१।
धातकीखंड जिणिंद नमो, केवलज्ञान दिणिंद नमो ।२ रि०।
सिंह लांछन अभिराम नमो, समयसुन्दर चा सामि नमो ।३ रि०।

श्री युगमंधर करुणा सागर, विहरमाण जिणंद जी।
सेवक नी प्रभु सार करीजइ, दीजइ परमाणंद जी।२। श्री यु०।
जनम जरादिक दुख थी बीहतउ, हुं आव्यउ तुम्ह पासि जी।
मुझ ऊपरि प्रभु मया करी नइ, दीजइ निरभय वास जी।३ श्री यु०।
वीनतड़ी प्रभु सफल करेज्यो, श्री युगमंधरदेव जी।
समयसुन्दर कर जोड़ी वीनवइ, भवि भवि तुम पय सेव जी।४श्री०

३. बाहु जिन गीतम्

राग—आसाउरी

बाहु नाम तीर्थंकर द्यउ मुझ, दुरगति पडतां बांह रे।
हुं तपतउ आव्यउ तुम्ह पासे, तुम्हे करउ टाढी छांह रे।१। बा०।
पच्छिम महाविदेह रहउ तुम्हे, हूँ तउ भरत खेत्र मांहि रे।
विधा पांख विना किम वांदूं, पणि माहरूं मन त्यांह रे।२। बा०।
चउरासी लख मांहि भम्यउ हूँ, पणि सुख न लह्यउ क्यांह रे।
समयसुन्दर कहइ सुखिअउ राखज्यो, सासता सुख छइ ज्यांह रे।

४. सुबाहु जिन गीतम्

राग—आसावरी

सामि सुबाहु तूं अरिहंत देवा, चउसठि इंद्र करइ तुझ सेवा।
सुरनर ध्यावइ धरम सुणेवा, मीठी वाणि अमृत रस मेवा।१ सा०।
पूछइं प्रसन संदेह हरेवा, अपणउ समकित सुद्ध करेवा।२ सा०।
तुभ समरूं भव समुद्र तरेवा, समयसुन्दर कहइ गज जिम रेवा।३।

संसार समुद्र हुँ हेला हरिस्युं । श्री०॥१॥

पंच प्रमाद दूरि परिहरस्युं,
वीतराग देव ना वचन समरस्युं । श्री०॥२॥

अरिहंत अरिहंत नाम ऊचरिस्युं,
समयसुन्दर कहइ हूँ इम तरिस्युं । श्री०॥३॥

१० विशाल जिन गीतम्

राग—सुघडउ

(ढाल:—मन जाणइ के सिरजणहार । एहनी जाति)

जिनजी वीनति सुणउ तुम्हे स्वामि विसाला,
तुम्हनइ सुण्या मंइ दीनदयाला । जि०।१।

मिली न सकुं आया समुद्र विचाला,
पणि तुझ नाम जपुं जपमाला । जि०।२।

भगत ऊधरतां मत करउ टाला,
समयसुन्दर चा तुम्हे प्रतिपाला । जि०।३।

११ वज्रधर जिन गीतम्

राग—वसंत

(ढाल:—चंद्रप्रभ भेट्यउ मइ चंदवारि । एहनी जाति)

वज्रधर तीर्थंकर वांदुं पाय, जिहां छइ तिहां जाय ।
पणि पूरव विदेह मइ ते कहाय । १ । व० ।

८ अनन्तवीर्य जिन गीतम्

राग—कल्याण

(ढाल :—कृपानाथ तइ कूप नू उधर्यउ री । कृ० । एहनी जाति)

अनंतवीरिज आठमउ तीर्थंकर । अ० ।
राग द्वेष रहित कुण बीजउ,
देव कहुं हरि ब्रह्मा संकर । १ । अ० ।
त्रिभुवन नाथ अनाथ कउ पीहर,
गुण अनंत अतिसय अतिसुन्दर ।
सुर नर कोडि करइ तुम्ह सेवा,
चउसठि इंद्र तिके पणि किंकर । २ । अ० ।
धातकीखंड मइ धरम प्रकासइ,
अरिहंत भगवंत तु अलवेसर ।
समयसुन्दर कहइ मनसुधि माहरइ,
इहभवि परभवि तुं परमेसर । ३ । अ० ।

९ सूरिप्रभ जिन गीतम्

राग—गउडी

(ढाल:—छइ मोटुं पणि पदम सरोवर । एहनी जाति)

श्री सूरिप्रभ सेवा करस्युं,
ध्यान एह भगवंत नु धरिस्युं । श्री० ।
पाय कमल प्रभु ना अनुसरस्युं,

तुझ समरण थकी मुज्झ, करम मूंकइ केरउ ।
सहस किरण सूरिज ऊग्यां, किम रहइ अंधेरउ हो । चं० ॥२॥
वीतराग देव विना हुं, देव न मानुं अनेरउ ।
समयसुन्दर कहत मुज्झ, सरणउ एक तेरउ हो । चं० ॥३॥

१४ भुजंग जिन गीतम्

राग—मारुणी

भुजंग तीथंकर भेटियइ जी, त्रिभुवन केरउ ताय ।
ऊंची पांचसइ धनुपनी जी, कंचन वरणी काय । भु०॥१॥
पुष्करार्ध मांहे परगड़उ जी, केवलज्ञानी कहाय ।
विहरमान विचरइ तिहां जी, चउरासी पूरव लाख आय । भु०॥२॥
समोसरण मांहे बइसि नइ जी, देसणा द्यइ जिनराय ।
समयसुन्दर कहइ हूँ दूरि थी जी, प्रणमु प्रभु ना पाय । भु०॥३॥

१५ ईसर जिन गीतम्

राग—शुद्ध नट

ईसर तीथंकर आगइ आनइ इंदा । ए आ ।
बत्रीस बद्ध नाटक करइं, नव नव नव छंदा । ए आ । ई० ।१।
भवनपती देव व्यंतर, सूरिज चंदा । ए आ ।
देवलोक ना इन्द्र आवइ, गावइ गुण वृन्दा । ए आ । ई० ।२।
भगवंत नी भगति जुगति, मुगति आणंदा । ए आ ।
समयसुन्दर वंदण चाहइ, चरणारविन्दा । ए आ । ई० ।३।

मिलवानी मुझ नहि संगति काय,
दरसण दीठां विण दुख थाय ।
समयसुन्दर कहइ मुझ करि पसाय,
सुपनंतरि पणि दरसण दिखाय । २॥ स०।

१२ चन्द्रानन जिन गीतम्

राग—ललित

(ढाल:—मेरउ गुरु जिणचंद सूरि नएहनी जाति)

चंद्रानन जिणचंद, दरसण दीठां आणंद ।
धातकी खंड मंडाण, वीतराग विहरमाण ।
भविक कमल भाण, दूरि करइ दंद ।१। चं०।
वृषभ लांछन पाय, पदमावती राणी माय ।
पिता वालमीक राय, नमइ नर वृन्द ।२। चं०।
दक्षिण भरत वर, अयोध्या नामइ नगर ।
प्रणमइ समयसुन्दर, पाय अरविन्द ।३। चं०।

१३ चन्द्रबाहु जिन गीतम्

राग—मारुणी

(ढाल:—देखि २ जीव नटावइ अइमउ नाटक मंडाणउ री। देएहनी जाति)

चंद्रबाहु चरण कमल, मधुकर मन मेरउ हो। चं० ॥
अवर देव तिके चणराइ, नावइ कदि नेरउ हो । चं०॥१॥

कृपानाथ अनाथ-पीहर, भय भंजण भगवंत ।
पच्छिम महा विदेह विजया, नगरी मंइ विचरंत ।२। महा०।
उमादेवी मात अंगज, सकल गुण सोभंत ।
समयसुन्दर चरण तेरे, ग्रह ऊठी प्रणमंत ।३। महा०।

१९ देवयश जिन गीतम्

राग—मारुणी

देवजसा जगि चिर जयउ तीर्थंकर, देव पुष्करद्वीप मझार रे। ती०।
भव्य-जीव प्रतिबोधता ती०, क्रमि क्रमि करइ विहार रे। ती०।१।
सर्वभूति नामइं पिता ती०, गंगा मात मल्हार रे। ती०।
ए अरिहंत उगणीसमउ ती०, त्रिभुवन नउ आधार रे। ती०।२।
राजऋद्धि किसी वस्तु नी ती०, लालचि न करुं लिगार रे। ती०।
समयसुन्दर इम वीनवइ ती०, आवागमण निवारि रे। ती०।३।

२० अजितवीर्य जिन गीतम्

राग—मारुणी

हां मेरी माई हो, अजित वीरज जिन वीसमउ,
मोटुं मांड्युं हो समवसरण मंडाण ।
सुरनर कोड़ि सेवा करइ, वीतराग नुं सुणइ सरस वखाण। अ०१।
व्रत थी लाख पूरव वउले, स्वामी तुम्हे तउ पहुचिस्यउ निरवाण।
पणि मुझ नइ संभारज्यो, तुम्ह सेती हो घणी जाण पिछाण। अ०।
तुमे नीरागी निसप्रीही, पणि म्हारइ तो तुमे जीवन प्राण।
समयसुन्दर कहइ शिव पामुं, तां सीम तउ करज्यो कल्याण। अ०३।

१६ नेमि जिन गीतम्

राग—गउड़ी

विहरमान सोलमउ तु नेमि नाम ।
दक्षिण विदेह नलिनावती विजए, पुंडरीकिणी पुरी ठाम ।१ वि०।
वीरराज सेना कउ नंदन, इन्द्र नमै सिर नामि ।
सुरतरु चिन्तामणि सरिखउ तूं, पूरवइ वंछित काम ।२ वि०।
केवल ज्ञान अनंत गुणे करी, अरिहंत तूं अभिराम ।
समयसुन्दर कहइ तिण करूं तोरा, रात दिवस गुण ग्राम ।३ वि०।

१७ वीरसेन जिन गीतम्

राग—सबाब

वीरसेन जिन नी सेवा कीजइ,
पवित्र वचन अमृत रस पीजइ ।१। वीर०।
पुखरारध माहे दूरि कहीजइ,
तउ पणि अरिहंत ध्यान धरीजइ ।२। वीर०।
जनम जीवित नउ लाहउ लीजइ,
समयसुन्दर नइ दरसण दीजइ ।३। वीर०।

१८ महाभद्र जिन गीतम्

राग—केदारउ

महाभद्र अढारमउ अरिहंत ।
गज लांछन देवराज नंदन, सरिज कान्ता कंत ।१। महा०।

वीस विहरमान जिन स्तवन

[निजनाम १ मातृ २ पितृ ३ लांछन ४ सहितम्]

प्रणमिय शारद माय[1] समरिये सद्गुरु,
धर्म बुद्धि हियडे धरी ए ।
विहरमान जिन वीस थुणिसु मन थिरै,
माय ताय लंछण करी ए ॥१॥
श्री सीमंधर स्वामि सत्यकि नंदनो,
मन मोहन महिमा निलो ए ।
जास पिता श्रेयांस वृषभ लांछन वर,
श्री जिनवर त्रिभुवन तिलो ए ॥२॥
श्री युगमंधर देव सेव करु नित,
मात सुतारा नंदनो ए ।
सुदृढ़ पिता सुखकार गज लांछनवर,
वचन सुधारस चंदनो ए ॥३॥
बाहु नाम जिनराज विजया अंगज,
सुग्रीव वंश निसाकरु ए ।
अंके हरिण उदार रूप मनोहर,
वंछित पूरण सुरतरु ए ॥४॥

॥ ढाल ॥

श्री सुबाहु सुविख्यात, सु(व)नंदा अंग जात ।
तात निसढ वरु ए, कपि अंके धरु ए ॥५॥

---

१ पाय

॥ कलश ॥

राग—धन्याश्री 'धवल'

वीस विहरमान गाया, परमाणंद सुख पाया ।
जीभ पवित्र पिण कीधी, मिश्री दूधस्युं पीधी ।१। वी० ।
समकित पणि थयुं निरमल, पुण्य थयुं मुझ परिघल ।
सुणस्यइ ते पणि तरस्यइ, कान पवित्र पण करस्यइ ।२। वी० ।
जंबू द्वीप मंइ च्यार, महा विदेह मझार ।
धातकी पुष्कर जेथि, आठ आठ अरिहंत तेथि ।३। वी० ।
मसकति तुं फल मांगूं, वीतराग नइं पाए लागूं ।
जिहां हुयइ जिणधर्म सार, तिहां देज्यो अवतार ।४। वी० ।
संवत सोलह सइंत्राणुं, माह वदि नवमी वखाणुं ।
अहमदावादि मझारि, श्री खरतरगच्छ सार ।५। वी० ।
श्री जिनसागर सूरि, प्रतपइ तेज पडूरि ।
हाथी साह नी हूँसे, तीर्थंकर स्तव्या वीसे ।६। वी० ।
श्री जिनचंद सूरीस, सकलचंद तसु सीस ।
तेह तणइ सुपसायइ, समयसुन्दर गुण गायइ ।७। वी० ।

इति श्रीविद्यमानविंशति तीर्थङ्कराणां गेयपद्यानि

(लिखितानि वा० हर्षकुशल-गणिना १७१७)

प्रभुना पद पंकज, प्रणमंतां जयकार ॥१३॥
भव भय दुख भंजन, चंद्रबाहु भगवंत ।
रेणुका राणी सुत, महियल महिमावंत ॥
देवानंद नरवर, वंश विभूषण हंस ।
अद्भुत पद पंकज, लांछन जग अवतंस ॥१४॥
भवियण जण भेट्यो, श्रीभुजंग जिनराय ।
महिमा माता वलि, तातु महाबल राय ॥
अंके अति सुन्दर, सोहे जसु अरविंद ।
समरंतां सेवक, पामे परमाणंद ॥१५॥
ईश्वर परमेश्वर, प्रणमुं परम उल्लास ।
जयवंत जिणेसर, मात जशोजला जास ॥
गलसेन पिता गुण, माणिक रयण भंडार ।
शशि लंछन शोभित, सेवक जन(म) साधार ॥१६॥

॥ ढाल ॥

जगगुरु नेमि जिनेसरु, सेना मात मल्हारो जी ।
जीवयश नृप नंदनो, सूरज अंक उदारो जी ॥१७॥
वीरसेन[1] प्रभु वंदिये, भानुमती सुत सारो जी ।
भूमिपाल भूपति पिता, लांछन वृषभ अपारो जी ॥१८॥
स्वामी महाभद्र समरिये, ऊमा देवी नंदो जी ।
देवराज कुल चंदलो, गज लंछन जिनचंदो जी ॥१९॥

१ वीरराज

समरूं स्वामी सुजात, देवसेना जसु मात।
देवसेन अंगजु ए, रवि चिन्ह पदकजु ए ॥६॥
श्री स्वयंप्रभ स्वामि, मात सुमंगला नाम।
मित्रभूति कुलतिलो ए, चन्द्र लंछन मलो ए ॥७॥
ऋषभानन जिणचंद, श्री वीरसेना नंद।
कीर्त्तिराय कुंयरू ए, सिंह अंक सुंदरु ए ॥८॥

॥ ढाल ॥

अनंतवीर्य अरिहंतु ए, मंगलावती सुत गुणवंतु ए।
मेघराया घर अवतर्या ए, चंद लंछन गुणरयणे भरया ए ॥९॥
श्री सूरप्रभ वंदिये ए, विजया माता चिर नंदिये ए।
विजयराज तसु तातु ए, ससिहर लंछन अवदातु ए ॥१०॥
श्री विमल[1] सुप्रशंसु ए, भद्रा माता उर हंसु ए।
जासु पिता श्रीनागु ए, सूरिज लंछन सोभागु ए ॥११॥
श्रीवज्रधर लग जाणिये ए,श्रीसरस्वती मात वखाणिये ए।
जनक पद्मरथ जासु ए, संख[2] लांछन जासु प्रकाशु ए ॥१२॥

॥ ढाल ॥

चन्द्रानन जिनवर, त्रिभुवन जन आधार।
माता पद्मावती, राणी उर अवतार ॥
वाल्मीक पिता जसु, लांछन वृषभ उदार।

१ विशाल २ शंकर संख प्रगट भाखा ए।

विशाल तीर्थंकर वांदूं त्रिकालो जी ।
वज्रधर चंद्रानन प्रतिपालो जी ॥

प्रतिपाल चंद्रबाहु भुजंग ईश्वर, नेमि चरण कमल नमुं ।
वीरसेन महाभद्र देवयशा श्री अजितवीरिज वीसमुं ॥
ए वर्त्तमान जिणंद विचरैं, अढीय द्वीप विचालो ।
प्रह ऊठी प्रणमै समयसुन्दर, तीर्थंकर त्रिकालो ॥२॥

वीसे जिनवर ज्ञान दिणंदा जी ।
चौमुख सोहै पूनमचंदा जी ॥

पूनमचंद तणी परे, प्रभु समवसरण विराज ए ।
देशना अमृतधार वरसै, भविय संशय भाज ए ॥
पांचसइ धनुष प्रमाण काया, नमइ इंद्र नरिंदा ।
प्रह ऊठी प्रणमै समयसुन्दर, जिनवर ज्ञान दिणंदा ॥३॥

भवि भवि देज्यो तुम पाय सेवा जी ।
मिलन उमाह्यो गज जिम रेवा जी ॥

गज जेम रेवा मिलन उमह्यो, दैव न दीधी पांखड़ी ।
सो सफल दिवस गिणीस अपनौ, जिण दिन देखिस आंखड़ी ॥
दूरि थी मोरी वंदना हिव, जाणजो नित सेवा ।
प्रण ऊठि प्रणमै समयसुन्दर, भव भव तुम पय सेवा ॥४॥

——xox——

देश यशा जगि चिरजयो, गंगा देवी मायो जी।
सर्वभूति नामे पिता, शशिहर चिन्ह सुहायो जी ॥२०॥
अजितवीर्य जिन वीसमो, मात कनीनिका जासो जी।
राजपाल सुत राजियो, स्वस्तिक अंक विलासो जी ॥२१॥
प्रह उगमते प्रणमिये, विहरमान जिन वीसो जी।
नामे नवनिधि संपजे, पूरे[1] मनह जगीसो जी ॥२२॥

॥ कलश ॥

इह वीस जिनवर भुवन दिनकर, विहरमान जिनेसरा।
निय नाम माय सुताय लांछन, सहित हित परमेसरा॥
जिनचंद सूरि विनेय पंडित, सकलचंद महागुणी।
तसु सीस वाचक समयसुन्दर, संथुएया त्रिभुवन धणी ॥२३॥

वीस विरहरमान जिन स्तवन

वीस विहरमान जिनवर राया जी।
प्रह ऊठी नित प्रणमुं पाया जी॥
प्रह ऊठी नित प्रमणुं पाय प्रभुना, सीमंधर युगमंधरो।
बाहु सुबाहु सुजात स्वयंप्रभ, श्री ऋषभानन जिनवरो॥
श्री अनंतवीर्य श्री सूरिप्रभ के, चरण से चित लाया।
प्रह ऊठी प्रणमें समयसुन्दर, विहरमान जिनराया ॥१॥

---

१ पायइ

श्री सीमंधर जिन स्तवन

धन धन क्षेत्र महाविदेह जी, धन पुण्डरंगिणी गाम ।
धन्य तेहना मानवी जी, नित उठ करें रे प्रणाम ।१।
सीमंधर स्वामी, कइये रे हूँ महाविदेह आवीस ।
जयवंता जिनवर, कइये रे हूँ तुमनें वांदीस ।आ०।
चांदलिया संदेसड़ो जी, कहजे सीमंधर स्वाम ।
भरतक्षेत्र ना मानवी जी, नित उठ करइ रे प्रणाम ।२। सी०।
समवसरण देवे रच्यो तिहां, चौसठ इन्द्र नरेश ।
सोना तणै सिंहासण बैठा, चामर छत्र धरेश ।३। सी०।
इंद्राणी काढै गूंहली जी, मोती ना चौक पूरेश ।
ललि ललि लीयै लूँछणा जी, जिनवर दियै उपदेश ।४। सी०।
एहवइ समइ मंइ सांभल्यूं जी, हवे करवा पच्चक्खाण ।
पोथी ठवणी तिहां कणे जी, अमृत वाणी वखाण ।५। सी०।
राय नै व्हाला घोड़ला जी, वेपारी नै व्हाला छै दाम ।
अम्ह ने वाल्हा सीमंधर स्वामी, जिम सीता ने राम ।६। सी०।
नहीं मांगूं प्रभु राज ऋद्धि जी, नहीं मांगूं ग्रंथ भंडार ।
हूँ मांगूं प्रभु एतलो जी, तुम पासे अवतार ।७। सी०।
दैव न दीधी पांखड़ी जी, किम करि आवुं हजूर ।
मुजरो म्हारो मानजो जी, ग्रह उगमते सूर ।८। सी०।
समयसुन्दर नी वीनति जी, मानजो वारं वार ।
बेकर जोड़ी वीनवुं जी, वीनतड़ी अवधार ।९। सी०।

श्रीसीमन्धरस्वामिस्तवनम्

पूर्वसुविदेहपुष्कलविजयमण्डनं,
मोहमिथ्यात्वमतितिमिरभरखण्डनम् ।
वर्त्तमानं जिनाधीश-तीर्थङ्करं,
भव्य भक्त्या भजे स्वामि-सीमन्धरम् ॥१॥
असुर-सुर-खचर-नरवृन्दकृतवन्दनं,
रूपसुररमणिसम-सत्यकिनन्दनम् ।
वृषभलाञ्छनधरं ज्ञातगुणसुन्दरं,
भव्य भक्त्या भजे स्वामि-सीमन्धरम् ॥२॥
परमकरुणापरं जगति हितकारकं,
भीमभवजलधिजलपारउत्तारकम् ।
धर्म धारिमधरा धरणधरमन्दरं,
भव्य भक्त्या भजे स्वामि-सीमन्धरम् ॥३॥
ऋद्धिवर-सिद्धिवर-बुद्धिवर-दायकं,
त्रिदशपति-भवनपति-मनुजपतिनायकम् ।
भविकजननयनकैरववने शशिकरं,
भव्य भक्त्या भजे स्वामि-सीमन्धरम् ॥४॥
स्वर्णसमवर्णवरमूर्तिशोभाधरं,
सुगुरुजिनचंद्र-जितसिंहगुणसागरम् ।
समयसुन्दर-सदानन्द-मङ्गलकरं,
भव्य भक्त्या भजे स्वामि-सीमन्धरम् ॥५॥

चंदालाइ समयसुन्दर कहे एम चंदा,
चंदालाइ एकरसउ सुपनंतर साहिब आइये रे लो।३ चं०।

सीमंधर जिन स्तवन

सीमंधर जिन सांभलउ, वीनति करूं कर जोड़ ।
तूं समरथ त्रिभुवन धणी, मुने भव संकट थी छोड़ ।१। सी०।
तुम मूं विचि अंतर घणो, किम करूं तोरी सेव ।
पांख विना किउं मिलूं, पण दिल में तूं एक देव ।२। सी०।
जिम चकोर मन चंद्रमा, तिम तूं मोरे चित ।
सयमसुन्दर कहइ ते खरी, जे परमेसर सुं प्रीत ।३। सो१।

सीमंधर जिन गीतम्

राग—मारुणी

स्वामि तारि नइ रे मुझ परम दयाल, सीमंधर भगवंत रे।
सरणागत सेवक जन वच्छल, श्री जिनवर जयवंत रे।१। स्वा०।
पुखलावती विजय प्रभु विहरइ, महाविदेह मझारि रे।
हूँ अति दूरि थकां प्रभु तोरी, सेवा करुं किम सार रे।२। स्वा०।
हे हे दैव काय नवि दीधी, पांखड़ली मुझ दोय रे।
जिम हूँ जइ नइ जगगुरु वांदू, हीयड़लुं हरखित होय रे।३। स्वा०।
समवसरण सिंहासण स्वामी, वइठा करइ वखाण रे।
धन ते सुर किन्नर विद्याधर, वाणी सुणइ सुविहाण रे।४। स्वा०।

सीमंधर जिन स्तवन

विहरमान सीमंधर सामी, प्रह ऊठी प्रणमुं सिरनामी ।१। वि०।
सत्यकी माता उरि सर हंसि, लांछन वृषभ पिता श्रेयंसि ।२। वि०।
पूरव महाविदेह मझारी, पुखलावती विजयो अवतारी ।३। वि०।
कंचन वरणी कोमल काया, चउरासी लख पूरव आया ।४। वि०।
पांचसय धनुप शरीर प्रमाणा, अमृत वाणी करत वखाणा । वि०।
सकल लोक संदेह हरंता, समयसुन्दर वांदइ विहरंता ।६। वि०।

इति श्रीपुष्कलावतीविजयमण्डणश्रीसीमधरसामिभास ॥ २६ ॥

सीमंधर जिन स्तवन

चंदालाइ एक करूं अरदास चंदा,
चंदालाइ सीमंधर सामी नै कहे मोरी वंदना रे लो।
चंदालाइ मूरति मोहन वेल चंदा,
चंदालाइ सूरति तो अति सुन्दर शीतल चंदना रे लो।१ चं०।
चंदालाइ मो मन मिलन उमेद चंदा,
चंदालाइ देवड़ले न दीधी मुझने पांखड़ी रे लो।
चंदालाइ सकल दिवस मुझ सोइ चंदा,
चंदालाइ आपणड़ा वाल्हेसर देखिस आंखड़ी रे लो।२ चं०।
चंदालाइ मन मान्या मेलाप चंदा,
चंदालाइ पूरबलै सरजै विण क्युं करि पाइये रे लो।

सीमंधर स्वामी गीतम्

राग—कड़खा

सामि सीमंधरा तुम्ह मिलवा भणी,
हियड़लु राति नइ दिवस हीसै ।
ध्यान धरतां सुपन मांहि आवी मिलइ,
झबकि जागु तब कांइ न दीसै ।१। सा० ।
जउ तंइ रे देव दीधी हुंती पांखड़ी,
तउ हूं ऊडी प्रभु जांत पासे ।
सामि सेवा भणी अति घणउ अलजयउ,
देवतइ कां दिउ दूरि पासे ।२। सा० ।
ध्यान समरण प्रभु ताहरूं नित धरूं,
तूं पणि मुज्झ ने मत वीसारे ।
समयसुन्दर कर जोड़ि इम वीनवइ,
सामि सुंनइ भव समुद्र तारे ।३। सा० ।

युगमंधर जिन गीतम्

ढाल—उपशम तरु छाया रस लीजइ, एहनी

तूं साहिब हूं तोरउ, वीनतड़ी अवधारि जी ।
हूं प्रभु तोरइ शरणइ आव्यउ, तूं मुझ नइ साधारि जी ।१।
श्री जुगमंधर करुणा सागर, विहरमाण जिणंद जी । श्री० ।
सेवक नी प्रभु सार करीजइ, दीजइ परमाणंद जी ।२ श्री० ।

धन ते गाम नयर पुर मंदिर, जिहां विहरइ जिनराय रे।
विहरमाण सीमंधर स्वामी, सुरनर सेवइ पाय रे।५। स्वा०।
तुम दरसण विण चउगति मांहि, हूँ भम्यउ अनंतीवार रे।
हवइ प्रभु तोरइ सरणे आव्यउ, आवागमण निवारि रे।६। स्वा०।
सेवक नी प्रभु सार करी नइ, सारउ वंछित काज रे।
समयसुन्दर कर जोड़ी वीनवइ, आपउ अविचल राज रे।७। स्वा०।

(२)

राग—गउड़ी

पूरव माह विदेह रे, पुखलावती विजय जेह रे।
पुंडरीकणी पुरी नामि रे, विहरइ सीमंधर स्वामि रे ॥१॥
वृषभ लांछन सुखकार रे, श्री श्रेयांस मल्हार रे।
सत्यकी उरि अवतार रे, रुकमणि नउ भरतार रे ॥२॥
पांच सइ धनुष नी काय रे, सेवइ सुरनर पाय रे।
सोवन वरण शरीर रे, सायर जेम गंभीर रे ॥३॥
पल्क कमल पद ठावइ रे, सुर किन्नर गुण गावइ रे।
भवियण जण नइ साधारइ रे, भवजल पार उतारइ* रे ॥४॥
धन धन ते पुरगाम रे, विहरइ सीमंधर स्वामि रे।
धन धन ते नर नारी रे, भगति करइ प्रभु सारी रे ॥५॥
श्री सीमंधर स्वामी रे, चरण नमुं सिर नामी रे।
समयसुन्दर गुण गावइ रे, मन वंछित फल पावइ रे ॥६॥

* पाठान्तर—सांभलइ देसणा सार रे, हियडइ हरख अपार रे।

॥ ढाल ॥

हवइ नवग्रैवेकइ पंचाणुत्तर सार,
चेइहर त्रणसइ त्रेवीसा सुविचार।
प्रत्येकइ प्रतिमा वीसा सउ तिहां जाणि,
अठत्रीस सहस सत साठ साठि गुण खाणि ।४।
नंदीसर बावन कुंडल रुचक वखाणि,
चउ चउ चेईहर साठि सवे त्रिहुं ठाणि।
एकसउ चउवीस गुणी प्रतिमा चिहुं नामि,
च्यार सइ च्यालीसा सात सहस प्रणमामि ।५।
नंदीसर विदसइ सोलस कुलगिरि तीस,
मेरु वणि अइसी दस कुरु गजदंते वीस।
मानुषोत्तर पर्वति च्यार च्यार इषुकारि,
अइसा अति सुन्दर वृत्तसकारि मझारि ॥६॥

॥ ढाल ॥

दिग्गज गिरि च्यालीस असिय द्रहे सुजगीस,
कंचण गिरि वरइ ए, एक सहस धर ए ॥७॥
वृत्त दीरघ वेताढ्य, वीस सतरि सउ आद्य,
सत्तरि महा नदी ए, पंच चूला सदी ए ॥८॥
जंबू प्रमुख दस रुक्ख, इग्यारइ सत्तरि सुक्ख,
कुंड त्रण सइ असी ए, वीस जमग वसी ए ॥९॥

जन्म जरादिक दुख थी बीहतउ, हूँ आव्यउ तुम्ह पासि जी।
मुझ ऊपरि प्रभु महिर करी नइ, आपउ निरभय वास जी।३ श्री०।
पूरव पुण्य संजोगइ पाम्यउ, तूं त्रिभुवन नउ नाह जी।
एक वार मुझ नयण निहालउ, टालउ भव दुह दाह जी।४ श्री०।
वीनतड़ी प्रभु सफल करेज्यो, श्री जुगमंधर देव जी।
समयसुन्दर कर जोड़ी मांगइ, भव भवि तुम्ह पय सेव जी।५ श्री०।

इति श्रीयुगमंधरस्वामिगीतम् सं० १३ ॥

शाश्वतजिनचैत्यप्रतिमावृहत्स्तवनम्

रिषभानन वधमान, चन्द्रानन जिन,
वारिषेण नामइ जिणा ए।
तेह तणा प्रासाद, त्रिभुवनि सासतां,
प्रणमुं बिंब सोहामणा ए ॥१॥
चेइहर सगकोडि लाख बहुत्तरि,
चेइ चेइ प्रतिमा सउ असी ए।
तेरसइ नव्यासी कोडि साठि लाख सुंदर,
भवनपती मांहि मनि वसी ए ॥२॥
बार देवलोक प्रासाद चउरासी लख,
सहस छन्नू नइ सातसइ ए।
एक सउ असी गुण बिंब बावन सउ कोटि,
चउराणुं लख सहस छइ ए ॥३॥

स्वर्गे च मर्त्यलोके, पाताले ज्योतिषां च जिनभवने ।
शाश्वतरूपाः प्रतिमाः वन्दे श्रीवीतरागाणाम् ॥१५॥
इति जिनेश्वरतीर्थपरम्परा, सकलचंद्र-मुनिस्वमनोहरा ।
सुरनरादिनुता भुवि विश्रुता, समयसुन्दर सन्मुनिना स्तुता । १६ ।

इति श्रीशत्रुञ्जयादितीर्थबृहत्स्तवनं समाप्तम् *

तीर्थमाला स्तवन

सेत्रुञ्जे ऋषभ समोसरचा, भला गुण भरचा रे ।
सीधा साधु अनंत, तीरथ ते नमुं रे ॥ १ ॥
तीन कल्याणक जिहां थया, मुगते गया रे ।
नेमीश्वर गिरनार, तीरथ ते नमुं रे ॥ २ ॥
अष्टापद इक देहरउ, गिरि सेहरउ रे ।
भरते भराव्या बिंब, तीरथ ते नमुं रे ॥ ३ ॥
आबू चौमुख अति भलो, त्रिभुवन तिलो रे ।
विमल वसही वस्तुपाल, तीरथ ते नमुं रे ॥ ४ ॥
समेत शिखर सोहामणो, रलियामणो रे ।
सीधा तीर्थंकर वीस, तीरथ ते नमुं रे ॥ ५ ॥

---

*स्वयं शोधित प्रति से । रचनाकाल सं० १६७२ से पूर्व सुनिश्चित है क्योंकि राणकपुर की यात्रा से पूर्व इसकी रचना हुई । सं० १६६६ के पश्चात् की कृति में लिखी मिलने से अनुमानतः इसकी रचना सं० १६६६ पश्चात् हुई होगी ।

॥ ढाल ॥

त्रण सहस सउ एक नवाणु रे,
जिणवर प्रासाद वखाणु रे।
बीसा सउ ए अंक गुणीयइ रे,
तीर्थंकर प्रतिमा सुणियइ रे ॥१०॥
त्रिण लाख सहस वलि आसी रे,
प्रतिमा आठसइ नइ अइसी रे।
सिर वालइ सत्रि मेलिजइ,
त्रिभुवन प्रासाद नमिजइ रे ॥११॥
आठ कोडि सतावन लक्खा रे,
दुय सत ब्यासी कय रक्खा रे।
हियइ प्रतिमा गान कहीजइ रे,
जिणवर नी आण वहीजइ रे ॥१२॥
पनर सइं बइतालीस कोड़ी रे,
अड़वन लख अधिका जोड़ी रे।
छत्रीस सहस असि कहियइ रे,
प्रतिमा सगली सरदहियइं रे ॥१३॥

॥ ढाल ॥

जोइसवंतर प्रतिमा सासती, असंख्यात वलि जेहोजी।
पाय कमल तेहना नित प्रणमियइ, सोवन वरण सुदेहो जी ॥१४॥

शत्रुञ्जय नी कोरणी, नवा नगर में रे ।
श्री राजसी भराया बिंब, तीरथ ते नमु रे ॥१६॥]
नंदीसर ना देहरा, बावन बरा रे ।
रुचक कुण्डल च्यार च्यार, तीरथ ते नमु रे ॥१७॥
शासती नइ असासती, प्रतिमा छती रे ।
स्वर्ग मर्त्य पाताल, तीरथ ते नमु रे ॥१८॥
तीरथ यात्रा फल तिहां, होजो मुझ इहां रे ।
समयसुन्दर कहै एम, तीरथ ते नमु रे ॥१९॥

तीर्थमाला स्तवन

श्री सेत्रुञ्जि गिरि शिखर समोसरचा,
त्रेवीस तीर्थंकर श्री अरिहंत ।
आठ करम नउ अंत करी नइ,
सीधा मुनिवर कोड़ि अनंत ।१।प्र०।
प्रह ऊठी ने नित प्रणमीजइ,
तीरथ सेत्तुंजि प्रमुख प्रधान ।
हियड़इ ध्यान धरंतां आपइ[1],
अष्ट महासिद्धि नवे रे निधान ।२।प्र०।
श्री गिरनार नमु नेमीसर,
श्री जिनवर जादव कुल भाण ।

---

१ हुयई

नयरी चंपा निरखिये, हियै हरखियै रे।
सीधा श्री वासुपूज्य*, तीरथ ते नमुं रे॥ ६॥
पूरब दिसि, पावापुरी, ऋद्धे भरी रे।
मुगति गया महावीर, तीरथ ते नमुं रे॥ ७॥
जेसलमेरि जुहारियइ, दुख वारियइ रे।
अरिहंत बिंब अनेक, तीरथ ते नमुं रे॥ ८॥
बीकानेर ज वंदियइ, चिर नंदिये रे।
अरिहंत देहरा आठ, तीरथ ते नमुं रे॥ ९॥
सैरीसरउ संखेसरउ, पंचासरउ रे।
फलोधी थंभण पास, तीरथ ते नमुं रे॥१०॥
अंतरीक अजाहरउ, अमीझरउ रे।
जीरावलउ जगनाथ, तीरथ ते नमुं रे॥११॥
त्रैलोक्य दीपक देहरउ, जात्रा करो रे।
राणपुरे रिसहेस, तीरथ ते नमुं रे॥१२॥
श्री नाडुलाई जादवो, गौड़ी स्तवो रे।
श्री वरकाणा पास, तीरथ ते नमुं रे॥१३॥
[क्षत्रियकुण्ड सोहामणउ, रलियामणो रे।
जनम्यां श्री महावीर, तीरथ ते नमुं रे॥१४॥
राजगृही रलियामणी, सोहामणी रे।
फिरस्युं पहाड़ां पंच, तीरथ ते नमुं रे॥१५॥

* प्रणमुं पगलाभारि

आबू आदीसर वरकाणइ,
जीराउलि गउड़ी प्रभु पास ।
साचउरउ वर्धमान जिणेसर,
प्रणमंता पूरइ मन आस ।९।प्र०।
भुवनपति व्यंतर नइ ज्योतिषि,
वैमाणिक नरलोक मझारि ।
जे जिणवर तीर्थंकर प्रतिमा,
प्रणमति समयसुन्दर सुखकार ।१०।प्र०।

इति श्री तीर्थमाला भास १३।
[प्रसिद्धतीर्थस्थिततीर्थंकरप्रतिमागीतम्]

—०—

तीरथभास

सखि चालउ हे, सखि चालउ हे चतुर सुजाण,
भावइ हे, आपे भावइ हे तीरथ भेटस्यां ।
सखि करस्यां हे, सखि करस्यां हे जनम प्रमाण,
दुरगति हे, आपे दुरगति ना दुख मेटस्यां ॥१॥
सखि सेत्रुञ्ज हे, सखि सेत्रुञ्ज तीरथ सार,
पहिलुं हे, आपे पहिलुं रिषभ जुहारस्यां ।
सखि पछइ हे, सखि पछइ हे करिय प्रणाम,
बीजा हे, आपे बीजा बिंब संभारिस्यां ॥२॥
सखि वारू हे, सखि वारु हे गढ गिरनारि,
ऊँचा हे, आपे ऊँचा हे टूंक निहालस्यां

जिहां प्रभु त्रिएह कल्याणक हूयउ,
दीक्षा ग्यान अनइ निरवाण ।३।प्र०।
अष्टापदि प्रणमुं चउवीसे,
भरत कराव्या जिन प्रासाद ।
गौतम सामि चढ्यां जिहां लबधि,
प्रतिबोध्या तापस सुप्रसाद ।४।प्र०।
श्री सम्मेत शिखर समरीजइ,
अजित प्रमुख तीर्थंकर वीस ।
सुकल ध्यान धरी शिव पहुंता,
जगबंधव जगगुरु जगदीश ।५। प्र०।
नंदीसर वर दीपि नमीजइ,
सासता तीर्थंकर च्यार ।
ऋषभानन वधमान जिणेसर,
वारिषेण चन्द्रानन सार ।६।प्र०।
अभयदेव सूरि खरतर गच्छ पति,
प्रगट कियउ प्रभु बिंब उलास ।
देहनउ रोग हरयउ तिहां ततखिण,
प्रणमुं श्री थंभणपुर पास ।७।प्र०।
जरासिंधु विद्या बल गंजण,
हरिसेना मनि कियो रे आणंद ।
जय जय जादव वंश जीवाडण,
श्री संखेसर पास जिणंद ।८।प्र०।

सगर तणै सुत खाई खणावी,
भगति दिखाड़ी भूरि मेरे लाल।
इण गिरि गंग भागीरथ आणी,
पाखलि जल भरपूर मेरे लाल।मो०।२।
रिषभदेव तिहां मुगति पहुंता,
भरत कराव्या थूंभ मेरे लाल।
सुरनर किन्नर नइं विद्याधर,
सेवा सारइ ऊभ मेरे लाल।मो०।३।
जोयण जोयण पावड़ शाला,
आठ जोयण ऊंचाति मेरे लाल।
गौतम सामि चढ्या जिहां लब्धि,
अवलंबि रवि कांति मेरे लाल।मो०।४।
संवत सोल अठावना वरसे,
अहमदाबाद मझारि मेरे लाल।
सुणि सखी अष्टापद मंडाव्यउ,
मनजी साह अपार मेरे लाल।मो०।५।
ते अष्टापद नयणे निरख्यउ,
सीधा वांछित काज मेरे लाल।
समयसुन्दर कहे धन्न दिवस ते,
तिहां भेट्यूं जिनराज मेरे लाल।मो०।६।

इति श्री अष्टापद तीरथ भास ॥१०॥

सखी नमिस्यां हे, सखि नमिस्यां नेमि जिणंद,
पगि पगि हे, आपे पगि पगि पाप पखालस्यां ॥३॥
सखि आबू हे, सखि आबू अचलगढ आवि,
चौमुख[1] हे, आपे चौमुख मूरति चरचस्यां।
सखि प्रणमी हे, सखि प्रणमी हे विमल प्रासाद,
घरमइ हे, आपे घरमइ हे निज धन खरचस्यां ॥४॥
सखि जास्यां हे, सखि जास्यां हे राणकपुत्र जात्र,
देहरउ हे, आपे देहरउ देखी आणंदस्यां।
सखि नमिस्यां हे, सखि नमिस्यां आदि जिणंद,
दोहग हे, आपे दोहग दुख निकंदस्यां ॥५॥
सखि फलवधि हे, सखि फलवधि हे जेसलमेरि,
जास्यां हे, आपे जास्यां जात्रा करण भणी।
सखि लहिस्यां हे, सखि लहिस्यां हे लील विलास,
बोलइ हे, मइ बोलइ हे समयसुन्दर गणी ॥६॥

इति श्री तीरथ भास।

अष्टापद तीर्थ भास

मोरुं मन अष्टापद सुं मोह्युं,
फटित रतन अभिराम मेरे लाल।
भरतेसर जिहां भवन कराव्यउ,
कीधुं उत्तम काम मेरे लाल। मो०। १।

---

१ केसर हे, आपे केसर चंदन चरचस्यां

अष्टापदमण्डनशान्तिनाथगीतम्

राग—मालवी गउड्ड

सो जिनवर प्रिय कहउ मोहि कत री।
रावण वेणु बजावत मधुरी,
नृत्य करत मंदोवरी पूछत री।१।सो०।
शरणागत राख्यउ पारेवउ,
पूरब भव अइसउ चरित सुणत री।
जाकउ जनम भयउ सब जग मंइ,
शांति भई दुख दूरि गमत री।२।सो०।
पांचमउ चक्रवर्त्ती सोलमउ जिनपति,
साधत री षट खंड भरत री।
चउसठि सहस अंतेउरि मनोहरी,
तृण ज्युं तजी करि संयम गहत री।३।सो०।
तब लंकेश हसी प्रिया कर ग्रही,
देखावति अहो इनु न जानत री।
इया सो जिन मृग लांछन शोभित,
तीन भुवन जाकी आण मानत री।४।सो०।
त्रूटति तांति नसा सांधत री,
रावण तीर्थंकर गोत्र बांधत री।
अष्टापद गिरि शांति जिनेसर,
समयसुन्दर पाय प्रणमत री।५।सो०।

(२)

मनइं अष्टापद मोह्युं माहरुं रे,
हूँ नाम जपूं निशदीस रे।
चत्तारि अठ दस दोय नमुं रे,
चिहुं दिशि जिन चउवीस रे।१। म०।
जोयण जोयण आंतरइ रे,
पावड़सालां आठ रे।
आठ जोयण ऊँचो देखतां रे,
दुःख दोहग जायइं नाठि रे।२। म०।
भरत कराव्यउ भलउ देहरउ रे,
सउं भाई ना थूंभ रे।
आप मूरति सेवा करइ रे,
जाणे जोइयइ ऊभ रे।३। म०।
गौतम स्वामि चढ्या इहां रे,
आणी भागीरथ गंग रे।
गोत्र तीर्थंकर बांधव्यउ रे,
रावण नाटक रंग रे।४। म०।
दैव न दीधी मुंनइ पांखड़ी रे,
कहउ किम जाउं तिण ठाम रे।
समयसुन्दर कहै माहरउ रे,
दूरि थकी परणाम रे।५। म०।

इति श्रीअष्टापद तीरथ भास॥ ११॥

धन धन जोगी सोम जी, धन धन तुम्ह अवतार ।
सेत्रुञ्ज संघ करावियउ, पुण्य भर्यउ भण्डार । ६ । चा०।
संवत सोल त्रिमालमइ, मास सु चैत्र मझार ।
श्री जिनचंद्र सूरीसरू, जात्र करी सपरिवार ।१०। चा०।
श्री सेत्रुञ्ज गुण गावतां, हियडइ हरख अपार ।
समयसुन्दर सेवक भणइ, रिषभ जिणंद सुखकार ।११। चा०।

इति श्री सेत्तुञ्ज तीरथ भास ॥ २ ॥

—o—

शत्रुंजय आदिनाथ भास

मुझ मन उलट अति घणउ मन मोहउ रे,
सेत्रुञ्ज भेटण काज लाल मन मोहउ रे ।
चैत्री पूनम दिन चढ़ूं मन मोहउ रे,
पालीताणा पाजि लाल मन मोहउ रे ॥ १ ॥
संघ करइ वधामणा मन मोहउ रे,
तीरथ नयण निहालि लाल मन मोहउ रे ।
सेत्तुञ्ज नदीय सोहामणी मन मोहउ रे,
ललित सरोवर पालि लाल मन मोहउ रे ॥ २ ॥
केसर भरिय कचोलड़ी मन मोहउ रे,
पूज्या प्रथम जिणंद लाल मन मोहउ रे ।

श्री शत्रुंजय आदिनाथ भास

चालउ रे सखि शेत्रुञ्ज जइयइ रे,
तिहां भेटीइं रिषभ जिणंद रे।
नरग त्रयंच गति रुंधीयइ रे,
मुझ मनि अति परमाणंद रे।चा०।१।

पालीताणइ पेखियइ रे,
रूड़ी ललित सरोवर पालि रे।
सेत्रुञ्ज पाज चडीजियइ रे,
विमला नयण निहालि रे।चा०।२।

जगगुरु आदि जिणेसरू रे,
मरुदेवी मात मल्हार रे।
रायण रूंख समोसरचा रे,
प्रभु पूरव निवाणुं वार रे।चा०।३।

त्रेवीस तीर्थंकर समोसर्या रे,
इण मुगति निलइ निरकंख रे।
पांच पांडव शिव गया रे,
इम मुनिवर कोड़ि असंख रे।चा०।४।

देखूं चिहुं दिस देहरी रे,
रायण तलि पगलां जुहारि रे।

वाद भणी विद्या भणी जी, पर रंजण उपदेस ।
मन संवेग धर्यउ नहीं जी, किम संसार तरेस ।१७। कृ० ।
सूत्र सिद्धांत वखाणतां जी, सुणतां करम विपाक ।
खिण इक मन मांहि ऊपजइ जी, मुझ मरकट वइराग ।१८। कृ० ।
त्रिविध त्रिविध करि उचरुं जी, भगवंत तुम्ह हजूर ।
वार वार भांजू वली जी, छूटक बारउ दूर ।१९। कृ० ।
आप काज सुख राचनइ जी, कीधा आरंभ कोड़ ।
जयणा न करी जीवनी जी, देव दया पर छोड़ ।२०। कृ० ।
वचन दोष व्यापक कह्या जी, दाख्या अनरथ दंड ।
कूड़ कपट बहु केलवी जी, व्रत कीधा सत खंड ।२१। कृ० ।
अण दीधउ लीजइ तृणो जी, तोहि अदत्तादान ।
ते दूषण लागा घणा जी, गिणतां नावै ज्ञान ।२२। कृ० ।
चंचल जीव रहइ नहीं जी, राचइ रमणी रूप ।
काम विटंबन सी कहूं जी, ते तूं जाणइ सरूप ।२३। कृ० ।
माया ममता मंइ पड्यउ जी, कीधो अधिकउ लोभ ।
परिग्रह मेल्यउ कारमउ जी, न चढी संयम शोभ ।२४। कृ० ।
लागा मुझ नइ लालचइ जी, रात्रि भोजन दोप ।
मैं मन मूं क्यउ मोकलो जी, न धर्यउ धरम संतोष ।२५। कृ० ।
इण भवपर भव दूहव्या जी, जीव चउरासी लाख ।
ते मुझ मिच्छामि दुक्कडं जी, भगवंत ताहरी साख ।२६। कृ० ।
करमादान पनरं कह्या जी, प्रगट अठारै जी पाप ।
जे मंइ सेव्या ते हवइ जी, बगस बगस माइ बाप ।२७ कृ० ।

देव जुहारी देहरी मन मोह्यउ रे,
प्रगट्यउ परमाणंद लाल मन मोह्यउ रे ॥३॥
खरतर वसही वांदिया मन मोह्यउ रे,
संतीसर सुखकंद लाल मन मोह्यउ रे।
राइणि तल पगला नम्या मन मोह्यउ रे,
अदबुद आदि जिणंद लाल मन मोह्यउ रे ॥४॥
पांचे पांडव पूजिया मन मोह्यउ रे,
सोलमउ जिनवर राय लाल मन मोह्यउ रे।
सकल बिंब प्रणम्या मुदा मन मोह्यउ रे,
गज चढि मरुदेवी माय लाल मन मोह्यउ रे ॥५॥
चेलण तलाइ सिद्ध सिला मन मोह्यउ रे,
अति भलउ उलखा झोल लाल मन मोह्यउ रे।
सिद्ध वड़ कुंड सोहामणा मन मोह्यउ रे,
निरखंता रंगरोल लाल मन मोह्यउ रे ॥६॥
इण गिरि रिषभ समोसर्या मन मोह्यउ रे,
पूरव निवाणुं वार लाल मन मोह्यउ रे।
मुनिवर जे मुगति गया मन मोह्यउ रे,
ते कुण जाणइ पार लाल मन मोह्यउ रे ॥७॥
संवत सोल अठावनइ मन मोह्यउ रे,
चैत्री पूनम सार लाल मन मोह्यउ रे।

सामी ए संसार असार जी,
बहु दुख तणउ भंडार जी।
तिण मइ नहीं सुख लगार जी,
हुं भम्यउ अनंती वार जी ॥ सा० ॥२॥
चिंतामणि जेम उदार जी,
मानव भव पाम्यउ सार जी।
न धरयउ जिन धर्म विचारजी,
गयउ आलि तेण प्रकार जी ॥ सा० ॥३॥
मुझ नइ हिव तूं आधार जी,
तुझ समउ नहिं कोय संसार जी।
तोरी जाऊँ हुं बलिहार जी,
करुणा करि पार उतारि जी ॥ सा० ॥४॥
आज सफल थयउ अवतार जी,
भेट्यउ प्रभु हरख अपार जी।
मरुदेवी मात मल्हार जी,
समयसुन्दर नइ सुखकार जी ॥ सा० ॥५॥

इति सेत्तुंजमंडन श्री आदिनाथ भास ॥ ४ ॥

श्री शत्रुंजय तीर्थ भास

म्हारी वहिनी हे, वहिनी म्हारी सुणि एक मोरी वात हे,
के सेत्तुञ्ज तीरथ वडी।

मुझ आधार छइ एतलउ जी, सद्दहणा छइ शुद्ध ।
जिन ध्रम मीठउ मनगमइ जी, जिम साकर नइ दूध ।२८। कृ० ।
ऋषभदेव तूं राजियउ जी, शेत्रुञ्ज गिरि सिणगार।
पाप आलोया आपणा जी, कर प्रभु मोरी सार ।२६। कृ० ।
भरम एह जिन धरम नउजी, पाप आलोयां जाय ।
मनसुं मिच्छामि दुकडं जी, देतां दूर पुलाय ।३०। कृ० ।
तूं गति तूं मति तूं धणी जी, तूं साहिब तूं देव ।
आण धरुं सिर ताहरी जी, भव भव ताहरी सेव ।३१। कृ० ।

॥ कलश ॥

इम चडिय सेत्रुञ्जि चरण भेट्या, नाभिनंदन जिनतणा ।
कर जोड़ि आदि जिणंद आगल, पाप आलोया आपणा ॥
श्री पूज्य जिनचंद्रसूरि सद्गुरु, प्रथम शिष्य सुजस घणइ ।
गणि सकलचंद सुशीस वाचक, समयसुन्दर गुण भणइ ॥३२॥

—:०:—

शत्रुञ्जय मण्डन आदिनाथ भास

सामी विमलाचल सिणगारजी,
एक वीनतड़ी अवधार जी ।
सरणागत नइ साधार जी,
मुझ आवागमण निवारि जी ॥ सा० ॥१॥

शत्रुंजय मण्डन युगादिदेव गीतम्

राग—केदारा गवड़ी

इया मो जनम की सफल घरी री।
शत्रुञ्जय शिखरि ऋषभ जिन भेटे,
पालीताना की पाज चरी री।इया०।१।
प्रभु के दरस पाप गये सब,
नरग त्रिजंच की भीति टरी री।
इया सिद्ध क्षेत्र ऊपरि शुभ भाव धरि,
मुनिवर कोरि मुगति कुं वरी री।इया०।२।
अद्भुत चैत्य मनोहर मूरति,
करुं हुँ प्रणाम प्रभु पाय परी री।
समयसुन्दर कहै आज आणंद भयउ,
श्री शत्रुञ्जगिरि जात्र करी री।इया०।३।

विमलाचल मण्डन आदि जिन स्तवन

राग—तोड़ी

ऋषभ की मेरे मन भगति वसी री। ऋ०।
मालती मेघ मृगांक मनोहर,
मधुकर मोर चकोर जिसी री। ऋ०।१।
प्रथम नरेसर प्रथम भिक्षाचर,
प्रथम केवलधर प्रथम ऋषी री।

म्हारी बहिनी हे, बहिनी म्हारी पूज्या प्रथम जिणंद के,
मइ केसर भरिय कचोलड़ी । १ ।
म्हारी बहिनी हे, बहिनी म्हारी प्रणम्या श्री पुंडरीक हे,
देहरइ मांहि बिंब सोहामणा ।
म्हारी बहिनी हे, बहिनी म्हारी गज चढि मरुदेवी माय हे,
रायण तलि पगला प्रभु तणा । २ ।
म्हारी बहिनी हे, बहिनी म्हारी खरतर बसही खांति हे,
मंइ चउमुख नयणे निरखिउ ।
म्हारी बहिनी हे, बहिनी म्हारी चउरी लागउ चित्त हे,
देखतां हियड़उ हरखियउ । ३ ।
म्हारी बहिनी हे, बहिनी म्हारी अदबुद आदि जिणंद हे,
लाखीणो तोडर चाडीउ ।
म्हारी बहिनी हे, बहिनी म्हारी सिद्धसिला सिद्ध ठाम हे,
सुनइ सिद्धवड सुगुरु देखाड़ीउ । ४ ।
म्हारी बहिनी हे,बहिनी म्हारी धन धन श्री गुरुराज* हे,
मंइ देव जुहारया जुगति स्युं ।
म्हारी बहिनी हे, बहिनी म्हारी सफल कियउ अवतार हे,
भणइ समयसुन्दर इम भगति स्युं । ५ ।

इति श्रीशत्रुञ्जयतीरथभास ।

* गुजराति

जात्रा करी आठ्योतरइ आदीसर,
श्री संघ पूजा सनात्र रे आदीसर देव ।
समयसुन्दर कहइ सासती आदीसर,
भास भण्या हुयइ जात्र रे आदीसर देव ॥७॥

इति श्री आबू तीरथ भास ॥ ६ ॥

—:०:—

अर्बुदाचलमण्डन-युगादिदेवगीतम्

राग—गुंड

सफल नर जन्म मनु आज मेरउ ।
श्री अर्बुदगिरि श्री युगादीसर,
देखियउ दरसण सामि तेरउ ॥ स० ॥१॥
जिनजी ताहरा गुण अपणइ मुखि गावत,
पावत परम सुख नव नवेरउ ।
तूं जगन्नाथ जग मांहि सुरतरु समउ,
अउर सब देव मानूं बहेरउ ॥ स० ॥२॥
जिनजी राज नवि मांगत ऋद्धि नवि मांगत,
मांगत ही नहीं कछु अनेरउ ।
समयसुन्दर कर जोड़ि इहु मांगत,
भांजि भगवंत भव भ्रमण फेरउ ॥ स० ॥३॥

—०—

प्रथम तीर्थंकर प्रथम भुवनगुरु,
नाभिराय कुल कमल ससी री। ऋ० ।२।
अंश ऊपर अलिकावलि ओपत,
कंचन कसवट रेख कसी री।
श्री विमलाचल मंडन साहिब,
समयसुन्दर प्रणमत उलसी री। ऋ० ।३।

विमलाचल मण्डन आदि जिन स्तवन

क्यों न भये हम मोर विमल गिरि, क्यों न भये हम मोर।
क्यों न भये हम शीतल पानी, सींचत तरुवर छोर।
अहनिश जिनजी के अंग पखालत, तोड़त करम कठोर। वि० १।
क्यों न भये हम बावन चंदन, और केसर की छोर।
क्यों न भये हम मोगरा मालती, रहते जिनजी के मोर। वि० २।
क्यों न भये हम मृदंग झालरिया, करत मधुर ध्वनि घोर।
जिनजी के आगल नृत्य सुहावत, पावत शिवपुर ठोर। वि० ३।
जग मंडल साचो ए जिनजी, और न देखा राचत मोर।
समयसुन्दर कहे ये प्रभु सेवो, जन्म जरा नहीं और। वि० ४।

श्री आबू तीर्थ स्तवन

आबू तीरथ भेटियउ, प्रगट्यउ पुण्य पड़र मेरे लाल।
सफल जन्म थयउ माहरउ, दुख दोहग गया दूर मेरे लाल।१।

श्री राणपुर आदिजिन स्तवन

ढाल—रिषभ जिनेसर भेटिवा रे लाल

राणपुरइ रलिआमणउ रे लाल,
श्री आदीसर देव मन मोह्यउ रे।
उत्तंग तोरण देहरउ रे लाल,
निरखीजइ नितमेव मन मोह्यउ रे।१। रा०।
चउवीस मंडप चिहुं दिसइ रे लाल,
चउमुख प्रतिमा च्यार मन मोह्यउ रे।
त्रैलोक्य दीपक देहरउ रे लाल,
समवड़ि नहिं को संसार मन मोह्यउ रे।२। रा०।
दीठी बावन देहरी रे लाल,
मांड्यउ अष्टापद मेर मन मोह्यउ रे।
भलुं रे जुहारचउ भुंहरउ रे लाल,
सूतां उठि सवेर मन मोह्यउ रे।३। रा०।
देश जिणइ ए देहरउ रे लाल,
मोटउ देस मेवाड़ मन मोह्यउ रे।
लाख निवाणुं लगावियां रे लाल,
धन धरणउ पोरवाड़ मन मोह्यउ रे।४। रा०॥
आज कृतारथ हुं हुयउ रे लाल,
आज भयउ आणंद मन मोह्यउ रे।
जात्र करी जिनवर तणी रे लाल,
दूरि गयउ दुख दंद मन मोह्यउ रे।५। रा०।

श्री पुरिमताल मंडण आदिनाथ भास

ढाल—राती कांबलडी नी।

भरत नइ घइ ओलंभड़ा रे।
मरुदेवी अनेक प्रकार रे, म्हारउ बालूयडउ।
बालुयडउ नयणि दिखाडि रे, म्हारउ नान्हड़ियउ। आंकणी।
तूं सुख लीला भोगवइ रे, ऋषभ नी न करइ सार रे। म्हा० ।१।
पुरिमताल समोसरचा रे, ऋषभ जी त्रिभुवन राय रे। म्हा०।
भरत कुंयर सुं परिवरी रे, मरुदेवी वांदण जाय रे। म्हा० ।२।
ऋद्धि देखी मन चींतवइ रे, एक पखउ म्हारउ राग रे। म्हा०।
राति दिवस हूँ झूरती रे, ऋषभ तुं मन नीराग रे। म्हा० ।३।
पुत्र पहिली मुगतिं गयी रे, शिव वधू जोवा काज रे। म्हा०।
समयसुन्दर सुप्रसन्न सदा रे, आदीसर जिनराज रे। म्हा० ।४।

श्री आदिदेवचंदगीतम्

राग—श्रीराग

नाभिरायां कुलचंद आदि जिणंद,
मरुदेवी नंदन विश्वगुरो।
त्रिभुवन दिनकर जिनवर सुखकर,
वांछित पूरण कलपतरो ॥१॥ ना०॥
जग मग रंजणो दुख गंजणो,
प्रणमति समयसुन्दर चरणो ॥२॥ ना०॥

पंचाभिगम विधि सु करूं, शक्रस्तव स्तुधो उच्चरूं ।
जयवीयराय कहता कर्म कटै, देव जुहारूं चउवीसटै । ५ ।

प्रभु आगल भावु भावना, केवल मुगति तणी कामना ।
अंग अंग आणंद ऊलटै, देव जुहारूं चउवीसटै । ६ ।

श्रावक स्नात्र पूजा करै, भगवंत ना भगते भव तरै ।
नृत्य करै नाचै फिरगटै, देव जुहारूं चउवीसटै ।७।

पाषाण नै वलि पीतल तणी, गुंभारै प्रतिमा अति घणी ।
प्रणमै सहु ए को पिण भटइ, देव जुहारूं चउवीसटै । ८ ।

मातर मांडी डावै पास, मां हुलरावै पुत्र उलासि ।
तप पहुँचाड़ै भव नै तटै, देव जुहारूं चउवीसटै । ६ ।

जिनदत्तसूरि कुशलसूरि तणी, सुंदर मूरति सुहामणी ।
दुख जायै प्रणम्यां दहवटै, देव जुहारूं चउवीसटै ।१०।

संख शब्द झालर झणकार, घणावली घंटा रणकार ।
कानि सुणि रूंकटै, देव जुहारूं चउवीसटै ।११।

छोह पंकति देहरउ नहीं भींति, राजै कांगरा रूडी रीति ।
सखर समारचा सेलावटै, देव जुहारूं चौवीसटै ।१२।

दंड कलश ध्वज लहकै वली, कहै मुगति थई मोकली ।
मिथ्यामति दूरे आछटै, देव जुहारूं चौवीसटै ।१३।

श्री बीकानेर समौ नीपनौ, सोहइ जिम मोती सीपनौ ।
पूरव रात न का पालटै, देव जुहारूं चौवीसटै ।१४।

खरतर वसही खांत सुं रे लाल,
निरखंता सुख थाय मन मोह्यउ रे।
पांच प्रासाद वीजा वली रे लाल,
जोतां पातक जाय मन मोह्यउ रे।६। रा०।
संवत सोल विहुतरइ रे लाल,
मगसिर मास मझारि मन मोह्यउ रे।
राणपुरइ जात्रा करी रे लाल,
समयसुन्दर सुखकार मन मोह्यउ रे।७। रा०।

इति श्री राणपुर तीरथ भास ॥ ३ ॥

—:o:—

बीकानेर चौवीसटा—

चिन्तामणि आदिनाथ स्तवन

भाव भगति मन आणी घणी, समकित निरमल करवा भणी।
बीकानेर तणइ चउहटै, देव जुहारूं चउवीसटै।१।
पाखइ शाला पूंजी चढूं, हिव हुं नरक गति नवि पडूं।
दीठा पुण्य दशा परगटै, देव जुहारूं चउवीसटै।२।
निसही तीन कहूं तिणह ठोडि, जेहवइ सूरज काढइ मोडि।
पाप व्यापार न करवो घटै, देव जुहारूं चउवीसटै।३।
भमती मांहे भमूं मन रली, तिणह प्रदिक्षणा देऊं वली।
देखे अजयणा नो ओहटै, देव जुहारूं चउवीसटै।४।

जिम ए तीरथ जागता, तिम ए तीरथ सारो जी।
मारुयाड़ि मांहे वड़उ, सेत्रुञ्ज नउ अवतारो जी ।७। श्री०।
संवत सोल बासठि समइ, चैत्र सातमि वदि जेहो जी।
युग प्रधान जिणचंद जी, बिंब प्रतिष्ठ्या एहो जी ।८। श्री०।
मूलनायक प्रतिमा नमूं, आदीसर निसदीसो जी।
सुंदर रूप सोहामणा, बीजा बिंब चालीसो जी ।९। श्री०।
नाभिराया कुल चंदलउ, मरुदेवी मात मल्हारो जी।
वृषभ लांछन प्रभु वांदियइ, मन वंछित दातारो जी ।१०। श्री०।
एहवा आदि जिणेसरू, विक्रमपुर सिणगारो जी।
समयसुन्दर इम वीनवइ, संघ उदय सुखकारो जी ।११। श्री०।

इति श्री विक्रमपुर मंडण अदभुद आदिनाथ स्तवनम्।

—०—

गणधर वसही (जेसलमेर) आदिजिन स्तवन

१ ढाल—गलियारे साजन मिल्या

प्रथम तीर्थंकर प्रणमियैं हुँ वारी,
आदिनाथ अरिहंत रे हुं वारी लाल।
गणधर वसही गुण निलो हुं वारी,
भय भंजण भगवंत रे हुं वारी लाल। प्र० ।१।

२ ढाल—अलबेला नी

सच्चू गणधर शुभमती रे लाल,
जयवंत भवीज जास मन मान्या रे।

॥ कलश ॥

इम चैत्य चौवीसटौ अविचल, श्री बीकानेर विराजए।
श्री संघ आणंद उदयकारी, भव तणा दुख भाज ए॥
संवत सोलइ त्रेयासीयइ, तवन कीधउ मगसिरै,
पढ़इ समयसुन्दर भणइ तेहना, मन वंछित (कारज) सरइ।१५।

—:o:—

श्री विक्रमपुर आदिनाथ स्तवन

श्री आदीसर भेटियउ, प्रह ऊगमतइ सूरो जी।
दुख दोहग दूरि टल्या, प्रगट्यउ पुण्य पड़रो जी।१।श्री०।
अदबुद मूरति अति भली, जोतां त्रिपति न थायो जी।
सेत्रुञ्ज तीरथ सांभरइ, आदीसर जिणरायो जी।२।श्री०।
जिम सेत्रुञ्जगिरि जागतउ, मूलनायक आदिनाथो जी।
जिम गिरनारइ गाजतउ, अदबुद शिवपुर साथो जी।३।श्री०।
गणधर वसही गुण निलउ, जिम प्रभु जेसलमेरो जी।
नगरकोट प्रभु निरखतां, आणंद हुय अधिकेरो जी।४।श्री०।
अष्टापद जिम अरचियइ, भरत भराया बिंबो जी।
झालेरइ गरुयडि निलउ, बावन गज परलंबो जी।५।श्री०।
आबू आदीसर नमूं, विमल मंत्रि प्रासादो जी।
माणिकदेव दखिण मांहे, समर पढ़इ प्रभु सादो जी।६।श्री०।

८ ढाल—वीर वखाणी राणी चेलणा

जिन प्रतिमा जिन सारखी जी,
ए कह्यउ सुगति उपाय ।
नयणे मूरति निरखतां जी,
समकित निरमल थाय ।प्र० ।८।

९ ढाल—करम परीक्षा करण कुमर चाल्यो

आद्रकुमार तणी परें जी, सय्यंभव गणधार ।
प्रतिमा प्रतिबूझ्या थकी रे, पाम्या भव नो पार । प्र० ।९।

१० ढाल—चरणाली चामुंडा रण चढ़इ

नाभिराय कुल सिर तिलो, मरुदेवी मात मल्हारो रे ।
लंछन वृषभ सोहामणो, युगला धरम निवारो रे । प्र० ।१०।

११ ढाल—कर जोड़ी आगल रही

आज सफल दिन माहरो, भेट्या श्री भगवंत रे ।
पाप सहु पराभव गया, हियड़ो अति हरखंत रे । प्र० ।११।

१२ ढाल—राग धन्याश्री

इण परि वीनव्यो जेसलमेर मझार ।
गणधर वसही मुख मंडण जिन सुखकार ।।
संवत सोलह सइ एव असी नभ मास ।
कहइ समयसुन्दर कर जोड़ि ए अरदास । प्र० ।१२।

—:•:—

मिलि प्रासाद मंडावियो रे लाल,
आणी मन उल्लास मन मान्या रे । प्र० ।२।

३ ढाल—ओलगड़ी

धमसी जिनदत्त देवसी, भीमसी मन उच्छाहो जी।
सुत चारे सच्चू तणा, ल्यै लच्मी नो लाहो जी । प्र०।३।

४ ढाल—योगना री

फागुण सुदि पांचम दिने रे, पनरै सै छत्तीस।
जिनचंद्रसूरि प्रतिठिया रे, जगनायक जगदीश । प्र० ।४।

५ ढाल—

भरत बाहूबलि अति भला जिनजी,
काउसग्गिया बिहुं पास ।
मरुदेवी माता गज चढी जिनजी,
शिखर मंडप सुप्रकाश । प्र० ।५।

६ ढाल—वेगवती ते बांभणी

बिहूँ भमती बिंबावली,कोरणी अति श्रीकारो रे।
समोसरण सोहामणो, विहरमान विस्तारो जी । प्र० ।६।

७ ढाल—जलालिया नी

जिम जिम जिन मुख देखिये रे,
तिम तिम आनंद थाय म्हारा जिन जी।
पाप पुलायन पाछला रे,
जन्म तणा दुख जाय म्हारा जिन जी। प्र० ।७।

तूं प्रभु त्रिभुवन राजियो, वीनतड़ी अवधार ।
पूरि मनोरथ माहरा, आवागमन निवार ।मू० ।११।
तूं गति तूं मति तूं धणी, तूं भवतारण हार ।
तूं त्रिभुवन पति तूं गुरु, तूं मुझ प्राण आधार ।मू० ।१२।
मुझ मन मधुकर मोहियो, तुझ पद पंकज लीन ।
सेव करूं नित ताहरी, जिम सागर जल मीन ।मू० ।१३।
तुम दर्शन सुख संपजे, तुम दरशन दुख जाय ।
तुम दरसन संघ गहगहे, तुम दरसन सुपसाय ।मू० ।१४।
भगति भली परे केलवी, मीठी अमिय समान ।
भक्ति वच्छल भगवंत जी, द्यो मुझ केवल ज्ञान ।मू० ।१५।

॥ कलश ॥

इय नाभिनंदन जगत वंदन, सेत्रावापुर मण्डणो ।
वीनव्यो जिनवर संघ सुखकर, दुरिय दोहग खंडणो ॥
गच्छराज युग प्रधान जिनचंद सूरि शिष्य शिरोमणि ।
गणि सकलचंद विनेय वाचक, समयसुन्दर सुख भणी ।१६।

श्री ऋषभदेव हुलरामणा गीतम्

राग—परजीयउ

रूड़ा ऋषभ जी घरि आवउ रे, हालरियु गाऊं रे गाउं ।रू०।
मरुदेवीं माता इण परि बोलइ, जीवन तोरी वलि जाउं रे ।रू०।१।

सेत्रावा मंडन श्री आदिनाथ जिन स्तवनम

मूरति मोहन वेलड़ी, प्रगटी पुण्य पहूर।
ऋषभ तणी रलियामणी, प्रणमंता सुख पूर।मू०।१।
संवत सोल पंचावनइ, फागुण सुदि रविवार।
प्रगट थई प्रतिमा घणी, सेत्रावा सिणगार।मू०।२।
ऋषभ शीतल शांति वीरजी, श्री वासुपूज्य अनूप।
सकल सुकोमल शोभती, प्रतिमा पांचे सरूप।मू०।३।
श्री संघ रंग वधामणा, आणंद अंग न माय।
भाव भगति करि भेटियो, प्रथम जिणेसर राय।मू०।४।
सुंदर मूरति स्वामि नी, ज्योति जगमति थाय।
जोतां तृपति न पामियइ, पातक दूर पुलाय।मू०।५।
रूप अनुपम जिन तणो, रसना वरण्यो न जाय।
भगति भणी गुण भाखतां, सफल मानव भव थाय।मू०।६।
प्रतिमा नो मुख चन्द्रमा, लोचन अमिय कचोल।
दीप सिखा जिसी नासिका, कंचण द्रपण कचोल।मू०।७।
कुंद कली रदनावली, अद्भुत अधर प्रवाल।
सोवन देह सुहामणी, निर्मल शशि दल भाल।मू०।८।
जिन प्रतिमा जिन सारखी, बोली सूत्र मझार।
भवियण नैं भव तारिवा, त्रिभुवन नैं हितकार।मू०।९।
जिनवर दरसण देखतां, लहिये समकित सार।
आर्द्रकुमार तणी परइ, शय्यंभव गणधार।मू०।१०।

आवो मेरे बेटा दूध पिलावां, वही बेड़ा गोदी में सुख पावां।
मन्न असाड़ा बोल ऋषभ जी, आउ असाड़ा कोल । ७ ।
तुं जग जीवन प्राण आधारा, तूं मेरा पुत्ता बहुत पियारा।
तैथुं बंजा घोल ऋषभ जी, आउ असाड़ा कोल । ८ ।
ऋषभदेव कुं माय बुलावै, खुसिया करेदा आपे आपे आवै।
आणंद अम्मा अंग ऋषभ जी, आउ असाड़ा कोल । ९ ।
सच्चा वे साहिब तूं ध्रम धोरी, शिवपुर सुख दे में कुं भोरी।
समयसुन्दर मन रंग ऋषभ जी, आउ असाड़ा कोल ।१०।

—×—

श्री सुमतिनाथ वृहत्स्तवनम्

प्रह ऊठी नइ प्रणमुं पाय, सेवंता सुख संपति थाय ।
अरिहंत मुझ वीनति अवधार, जय जय सुमतिनाथ सुखकार ।१।
पुण्य संजोगइ तुं पामियउ, चरण कमल मस्तक नामियउ ।
सफल थयउ मानव अवतार, जय जय सुमतिनाथ सुखकार ।२।
प्रभु पूजा ना लाभ अनंत, हित सुख मोक्ष कह्या भगवंत ।
ज्ञाता भगवती अंग मझार, जय जय सुमतिनाथ सुखकार ।३।
प्रथम करूं प्रभु अंग पखाल, पाप करम जायर तत्काल ।
उत्तम अंग लूहण अधिकार, जय जय सुमतिनाथ सुखकार ।४।
कनक कचोली केशर भरूं, नव अंगि प्रभु नी पूजा करूं ।
कुंडल मुकुट मनोहर हार, जय जय सुमतिनाथ सुखकार ।५।

पगि घूघरड़ी घमतां करतउ, इक दिन आंगणि आवइ रे।
मरुदेवी माता हियडइ भीड़ी, आणंद अंगि न मावइ रे।रू०।२।
खोलइ मोरइ तूं कदे न खेलइ, सुर रमणी संग भावइ रे।
पुत्र मोरू दूध कदे न पीयइ, तोरी मावड़ी किम सुख पावइ रे।३।
सोभागी सहु नइ तूं वाल्हउ, हरखइ मां हुलरावइ रे।
रिषभदेव तणा मन रंगइ, समयसुन्दर गुण गावइ रे।रू०।४।

—

सिन्धी भाषामय श्री आदि जिन स्तवनम्

मरुदेवी माता इवें आखइ, इद्धर उद्धर कितनुं झाखइ।
आउ आसाड़इ कोल ऋषभ जी, आउ असाडइ कोल। १।
मिट्ठा थे मेवा तैं कुं देया, आउ इकट्ठे जेमण जेमां।
लावां खूब चमेल ऋषभ जी, आउ असाड़ा कोल। २।
कसबी चीरा पैं बांधू तेरे, पहिरण चोला मोहन मेरे।
कमर पिछेवड़ा लाल ऋषभ जी, आउ असाड़ा कोल। ३।
काने केवटिया पैरे कड़िया, हाथे वंगा जवहर जड़िया।
गल मोतियन की माल ऋषभ जी, आउ असाड़ा कोल। ४।
वांगा लाट्टू चकरी चंगी, अजब उस्तादां बहिकर रंगी।
आंगण असाडे खेल ऋषभ जी, आउ असाड़ा कोल। ५।
नयण वे नंदे कज्जल पावां, मन भावदंड़ा तिलक लगावां।
रस्ता फंदे कोल ऋषभ जी, आउ असाड़ा कोल। ६।

रिद्धि वृद्धि हुयइ रांन वेलाउल[२],
तइ-सारंग[३] दिन राति रे।से०।१।
भवसंतति[४] ना भय दुख भंजण,
पंचम[५] गति दातार रे।
त्रिभुवननाथ ललित[६] गुण तोरा,
गावइ देवगंधार[७] रे।से०।२।
के सेवइ गउरीवर[८] शंकर,
कै भजे कृष्ण भूपाल[९] रे।
के भयरव[१०] पणि हुँ भजु तुम्ह नइ,
करि कल्याण[११] कृपाल रे।से०।३।
नट[१२] विकट बहु कूड़ कपट केलवी,
परजीउ[१३] रंज्या कोड़ि रे।
पर सिरि[१४] राग धरचो मइ पापी,
परदउ[१५] रालि नइ छोड़ि रे।से०।४।
गउड़[१६] बंगाल[१७] तिलंग[१८] नइ सोरठ[१९],
मत भम्यउ देस प्रदेस रे।
चंद्र प्रभ सामी घर बइठां,
आसा[२०] पूरसि एस रे।से०।५।
भव सिंधुड़ो[२१] दूरि गमाड़ै,
धमारू[२२]-प तुझ ध्यान रे।
पुण्य दिसा-मेरी[२३] अब प्रगटी,
तुझ गुण धार[२४]-णि गान रे।से०।६।

पंचवरण फूलां नी माल, प्रतिमा कंठि ठवुं सुविशाल।
मृदमद अगर धूप घनसार, जय जय सुमतिनाथ सुखकार। ६।
एगसाड़ि करि उत्तरासंग, शक्रस्तव पभणुं मन रंगि।
गीत गान गुण गाऊँ सार, जय जय सुमतिनाथ सुखकार। ७।
प्रभु भजंतां पुण्य पडूर, दुख दोहग नासइ सवि दूरि।
पुत्र कलत्र वाधइ परिवार, जय जय सुमतिनाथ सुखकार। ८।
आरति चिन्ता अलगी टलइ, मन चिंतव्या मनोरथ फलइ।
राज तेज दीपइ दरबार, जय जय सुमतिनाथ सुखकार। ९।
आज मनोरथ सगला फल्या, सुमतिनाथ तीर्थंकर मिल्या।
अरिहंतदेव जगत आधार, जय जय सुमतिनाथ सुखकार।१०।
सुमतिनाथ जिनवर पांचमउ, कल्पवृक्ष चिंतामणि समउ।
मंगला राणी मेघ मल्हार, जय जय सुमतिनाथ सुखकार।११।
प्रतिमा अष्टकमलदल तणी, देहरासरि पूजूं सुख भणी।
अष्ट महानिधि रिधि दातार, जय जय सुमतिनाथ सुखकार।१२।
सुमतिनाथ साचउ तूं देव, भवि भवि हुइज्यो तोरी सेव।
समयसुन्दर पभणइ सुविचार, जय जय सुमतिनाथ सुखकार।१३।

—०—

पाल्हणपुरमण्डन-४४
द्व्यर्थरागगर्भित-चन्द्रप्रभजिनस्तवनम्

सेवो श्री चन्द्रप्रभ स्वामी,
भविक उठी परभाति[१] रे।

रंगे चौमालीसे रागैं,

समयसुन्दर सुखकार रे । से०।१२।

इति श्रीपाल्हणपुरमण्डन ४४ छ्यर्वरागगर्भित

श्रीचंद्रप्रभस्वामि बृहत्स्तवनम् ।

संवत् १६७१ भाद्रवा सुदि १२ कृतम् ।

—:०:—

चन्द्रवारि मण्डन श्री चन्द्रप्रभ भास

राग—वसंत

चन्द्रप्रभ भेट्यउ मंइ चंदवारि,

जमुना कइ पारि ।। चन्द्र० ।।

सुन्दर सूरति अइसी नहीं संसारि । चन्द्र० ।१।

निरमलदल फटिक रतन उदार,

दीपइ अति दीप शिखा मकार ।

चित हरख्यउ चंद्रप्रभ जुहारि,

समयसुन्दर नइ भव समुद्र तारि । चन्द्र० ।१।

इति श्री चन्द्रवारि मंडण चन्द्रप्रभ भास ।।२७।।

——

श्री शीतलनाथ जिन स्तवनम्

मुख नीको, शीतलनाथ को मुख नीको ।

उठि प्रभात जिके मुख देखत, जन्म सफल ताही को । मु० ।१।

नयन कमल नीकी मधतारा, उपमा ताहि अली को ।

सुन्दर रूप मनोहर मूरति, भाल ऊपर भल टीको । मु० ।२।

सगली दिसि यात्र २५-ति नी,
हुयइ सगले देकार२६ रे।
जइतसिरि२७ पामइ तुझ सेवका,
तुम्हे प्रभु दुख केन्दार२८ रे।से०।७।
पूरविअउ२९ तु मनोरथ मोरउ,
दुख तु-मेवारउ३० देव रे।
मरणं जरा भय भीम-पलासी३१,
करतां तोरी३२ सेव रे।से०।८।
सुंदर वयराडी३३ ललही करइ,
सुद्ध नाटक३४ सुध माख रे।
तुझ उलगूनरी ३५ दुखि न हुवै,
सगला लोक दे-साख३६ रे।से०।९।
मनमथ मधु माधव३७ चंद्रप्रभ,
लखमणा मात मल्हार३८ रे।
पुण्यलता आ-रामगिरि३९ सब,
धीर लो-कनरउ४० आधार रे।से०।१०।
करउ अलगुंड४१-र पाप समीरण,
शंकराभरण४२ ए काम रे।
तुझ प्रासाद हु-सेनी४३ की मुझ,
धन्या सिरि४४ सुख ठाम रे।से०।११।
इण परि श्री चन्द्रप्रभ स्वामी,
पाल्हणपुर सिणगार रे।

दुख भांजइ हो तुं दीनदयाल कि,
बात सुणी मइं तोरड़ी ।मो०।१।
तिण तोरइ हो हुँ आयउ पासि कि,
मुझि मन आसा छइ घणी ।
कर जोड़ी हो कहुं मननी बात कि,
तूं सुणिजे त्रिभुवन धणी ।मो०।२।
हूँ भमियउ हो भव समुद्र मझारि कि,
दुख अनंता मइं सह्या ।
ते जाणइ हो तूं हिज जिनराय कि,
मइं किम जायइ ते कह्या ।मो०।३।
भाग जोगइ हो तारेउ श्री भगवंत कि,
दरसण नयणे निरखियउ ।
मन मान्यउ हो मोरइ तूं अरिहंत कि,
हीयड़उ हेजइ हरखियउ ।मो०।४।
एक निश्चय हो मइं कीधउ आज कि,
तुझ विण देव बीजउ नहीं ।
चिंतामणि हो लउ पायउ रतन्न,
तउ काच ग्रहइ नहीं को सही ।मो०।५।
पंचामृत हो जउ भोजन कीध,
तउ खलि खावा किम मन थियइ ।
कंठ तांइ हो जउ अमृत पीध,
तउ खारउ जल कहउ कुण पीयइ ।मो०।६।

शीतलनाथ सदा सुखदायक, नायक सकल दुनी को ।
समयसुन्दर कहै जनम जनम लग, मैं सेवक जिन जी को । सु० ।३।

श्री शीतल जिन गीतम्

राग-देशाख

कहउ सखि कउण कहीजइ,
तुम कुं अवधि वरस की दीजइ । क० ।
सुत हरि वाचि सबद प्रथमाक्षर,
जगणी वास भणीजइ । क० ।१।
आदि विना जलनिधि नवि दीसइ,
मध्य विना सलहीजइ ।
अंत विना सब कुं दुखकारी,
सब मिली नाम सुणीजइ । क० ।२।
हरि सोदर रमणी सुरभी सिसु,
दो मिली चिन्ह धरीजइ ।
समयसुन्दर कहइ अहनिशि उनके,
पद पंकज प्रणमीजइ । क० ।३।

—x—

श्री अमरसर मण्डण श्री शीतलनाथ बृहत्स्तवनम्

पूजीजइ हे सखि फलवधि पास कि आसा पूरइ सुरमणी । एहनी ढाल ।

मोरा साहिब हो श्री शीतलनाथ कि,
वीनति सुणि एक मोरड़ी ।

तुम दरसण हो मुझ मन उछरंग कि,
मेह आगम जिम मोरड़ा ।मो०।१२।
तुम नामइ हो मोरा पाप पुलाइ कि,
जिम दिन ऊगइ चोरड़ा ।
तुम नामइ हो सुख संपति थाय कि,
मन वंछित फलइ मोरड़ा ।मो०।१३।
हुं मांगू हो हिव अविहड़ प्रेम कि,
नित नित करूंय निहोरड़ा ।
मुझ देज्यो हो सामी भव भवि सेव कि,
चरण न छोडूं तोरड़ा ।मो०।१४।

॥ कलश ॥

इम अमरसर पुर संघ सुखकर, मात नंदा नंदणो,
सकलाप शीतलनाथ सामी, सकल जण आणंदणो।
श्रीवच्छ लंछण वरण कंचण, रूप सुंदर सोह ए।
ए तवन कीधउ समयसुन्दर, सुणत जण मण मोहए।१५।

इति श्रीअमरसरमंडनश्रीशीतलनाथबृहत्स्तवनं संपूर्णं कृतं लिखितञ्च।

—०—

श्री मेडता मंडण विमलनाथ पंच कल्याणक स्तवनम्

विमलनाथ सुणौ वीनति, हूँ छुं तोरउ दासो जी।
तूं समरथ त्रिभुवन धणी, पूरि हमारी आसो जी।वि०। १।

मोती कउ हो जउ पहिरउ हार,
तउ चिरमठि कुण पहिरइ हियइ ।
जसु गांठि हो लाख कोड़ि गरथ,
ते ब्याज काढी दाम किम लीयइ ।मो० ।७।
घर मांहे हो जउ प्रगट्यउ निधान,
तउ देसंतरि कहउ कुण भमइ ।
सोना कउ हो जउ पुरुसउ सीध,
तउ धातुवादि नइ कुण धमइ ।मो० ।८।
जिण कीधा हो जवहर व्यापार,
तउ मणिहारो मनि किम गमइ ।
जिण कीधउ हो सदा हाल हुकम्म,
तउ वे तूं कारथउ किम खमइ ।मो० ।९।
तूं साहिब हो मोरउ जीवन प्राण कि,
हूं सेवक प्रभु ताहरउ ।
मोरउ जीवित हो आज जन्म प्रमाण कि,
भव दुख भागउ माहरउ ।मो० ।१०।
तुझ मूरति हो देखतां आय कि,
समोवसरण मुझ सांभरइ ।
जिन प्रतिमा हो जिन सारिखी जाण कि,
मूरिख जे सांसउ करइ ।मो० ।११।
तुम दरसण हो मुझ आणंद पूर कि,
जिम जगि चंद चकोरड़ा ।

साठ लाख वरसां लगी, पाली सगली आयो जी।
सप्तमी वदि आषाढ़ नी, सिद्ध थया जिनरायो जी। वि०।१२।
सुन्दर सूरति प्रभु तणी, निरखंतां सुख थायो जी।
हियड़ो हीसंइ माहरो, पातिक दूर पुलायो जी। वि०।१३।
प्रभु दर्शन सुख संपदा, प्रभु दरशन दुख दूरो जी।
प्रभु दरसन दौलति सदा, प्रभु दरसन सुख पूरो जी। वि०।१४।

॥ कलश ॥

इम पंच कल्याणक परंपर, मेदनी तट मंडणो,
श्रीविमल जिनवर संघ सुखकर, दुरिय दोहग खंडणो।
जिनचंद्रसूरि सुशिष्य पंडित, सकलचंद मुनीश ए,
तसु शिष्य वाचक समयसुन्दर, संथुण्योसु जगीश ए।१५।

—:०:—

श्री आगरा मंडण श्री विमलनाथ भास

देव जुहारण देहरइ चाली,
सहिय ससमाणी साथि री माई।
केसर चंदण भरिय कचोलड़ी,
कुसुम की माला हाथि री माई।१।
विमलनाथ मेरउ मन लागउ,
श्यामा कउ नंदन लाल री माई ॥ आंकणी ॥

तुम दरसन विन हूँ भम्यउ, काल अनादि अनंतो जी।
नाना विधि मंइ दुख सह्या, कहतां नावै अंतो जी। वि०। २।
पुण्य पसाये पामियउ, अरिहंत तूं आधारो जी।
मन वंछित फल्या माहरा, आणंद अंग अपारो जी। वि०। ३।
नगर कंपिल नरेसरू, राजा श्री कृतवरमो जी।
अद्भुत तासु अंतेउरी, श्यामा नाम सुधरमो जी। वि०। ४।
तासु उयरि प्रभु अवतर्या, सुदि बारस वैसाखे जी।
चवद स्वम राणी लह्या, सुपन पठिक सुत दाखे जी। वि०। ५।
जन्म कल्याणक जिन तणो, माह तणी सुदि त्रीजो जी।
दिन दिन वाधइ दीपता, चंद कला जिम बीजो जी। वि०। ६।
कंचन वरण कोमल तनु, क्रोड़ लांछन सुकुमालो जी।
साठि धनुप प्रभु शोभता, सुन्दर रूप रसालो जी। वि०। ७।
विमल थई मति मात नी, विमलनाथ तिण नामो जी।
राजलीला सुख भोगवै, पूरवे वंछित कामो जी। वि०। ८।
नव लोकान्तिक देवता, जस जंपे जयकारो जी।
माह तणः चौथ चांदणी, संयम ल्यै प्रभु सारो जी। वि०। ९।
च्यार कर्म प्रभु चूरिया, धरिय अनुपम ध्यानो जी।
पोंष शुक्र छठि परगड़ा, पाम्यो केवल ज्ञानो जी। वि०।१०।
समवशरण प्रभु देशना, बैठी परपदा बारो जी।
संघ चतुर्विध थापना, सत्तावन गणधारो जी। वि०।११।

कनकपङ्कजकदम्बेषु सञ्चारिणं,
कारिणं सम्पदां भागधेयम् ।
अत्रिसुत वाहनेनाङ्कितं जिनवरं,
पापकुंभीनसे वैनतेयम् ।शां०।२।
विकटसंकटपयोराशिघटसंभव,
विश्वसेनाङ्गजं विश्वभूपम् ।
सौख्यसन्तानवल्लीविताने घनं,
समयसुन्दरसदानन्दरूपम् ।शां०।३।

श्रीपाटण–शांतिनाथपंचकल्याणकगर्भित देवगृहवर्णनयुक्तदीर्घस्तवनम्

...................मूरत सोवन वान ।
सूरत सोहती ए, जन मन मोहती ए ॥१७॥
पीतल पड़िमा पासि, भेटयउ अधिक उलासि ।
संतीसर तणी ए, तिहुअण जण धणी ए ॥१८॥
प्रभु तोरण मझारि, सुन्दरि पूतलि च्यारि ।
प्रभु सेवा करि ए, दोइ दीवी धरी ए ॥१९॥
पंच वरण वर पाट, रचिय रसाल सुघाट ।
चिहुं दिसि चंदुआ ए, ऊपरि बांधिया ए ॥२०॥
जोवउ जण सव कोई, पीतल घंटा दोइ ।
रण रण रणझणइ ए, जिण जय जय भणइ ए ॥२१॥

पग पूंजी चढ़ूं पावड़ साले,
अरिहंत देव दुवारि री माई।
निसही तीन करे तिहुँ ठामे,
पांचे निगमन सार री माई।२। वि०।
त्रिण्ह प्रदक्षिण भमती देऊं,
त्रिण्ह करूं परणाम री माई।
चैत्य वंदन करि देव जुहारुं,
गुण गाऊं अभिराम री माई।३। वि०।
भमती मांहि भमवि जे भवियण,
ते न भमइ संसार री माई।
समयसुन्दर कहइ मन वंछित सुख,
ते पामइ भव पार री माई।४। वि०।

इति श्री आगरामण्डन श्री विमलनाथ भास ॥ २५ ॥

—:o:—

श्री शान्तिनाथ गीतम्

राग—केदारव

शान्तिनाथं भजे शांतिसुखदायकं,
नायकं केवलज्ञानगेहम्।
कर्ममलपङ्कजादम्बिनीसन्नमं,
गगनसागरघनुमानदेहम् ।शां०।१।

नान्हा मोटा थंभ छोह पंक्ति भीति,
चारु चित्र वलि चिहुं दिसइ ए।
एहवउ जिणहर गेह अहनिशि निरखंता,
भवियण जण मण उल्हसइ ए ॥२४॥

इम थुणयउ जिणवर संति दिणयर, भरिय तिमिर विहंडणो।
अणहिल्ल पाटण मांहि श्री, ग्रंवाड़वाड़ा मंडणो ॥
गच्छराय जिनचंद सूरि सीसय, सकलचंद्र मुणीसरो।
तसु सीस पभणइ समयसुन्दर, हवउ जिन मुह सुह करो ॥२५॥

इति श्रीशांतिनाथपंचकल्याणकगर्भितदेवगृहवर्णनयुक्तदीर्घ स्तवनम् समाप्तम्।*

—०—

जैसलमेर मण्डन श्री शांति जिन स्तवनम्

अष्टापद हो ऊपरलो प्रासादक, थींदे जी संघवी कराविय।
जिण लीधो हो लक्ष्मी नो लाहक, पुण्य भंडार भराविय ॥१॥
मोरा साहिब हो श्री शांतिजिणंदक, मनोहर प्रतिमा सुंदरु।
निरखंता हो थाये नयणानंदक, वंछित पूरण सुरतरु ॥२॥
देहरइ में हो पेसंता दुवार क, सेत्रुञ्जे पाट सु देखियइ।
भमती मंइ हो बहु जिनवर बिंबक, नयण देखि आणंदियइ ॥३॥

* जैसलमेर बड़ा ज्ञान भण्डार—द्वितीय पत्र से

॥ ढाल ॥

जसु मंडप चिहुं पासि नित नाटक करइ,
मिलि चउवीसे पूतली ए।
दोय वजावइ ताल दोय वीणा वंसी,
दोय वजावइ वांसली ए॥
दोइ करि धरि श्रवाव तांत वजावए,
गीत गान जिन ना करइ ए।
दोय वजावइ सार घों घों मद्दला,
दोय करियलि चामर धरइ ए॥२२॥
दोय करि पूरण कुंभ जाणे जिणवर,
स्नान भणी पाणी भर्या ए।
एक वजावइ भेरि तिय मुहि करि,
धरि जोतां जिण जण मण हर्या ए॥
नव पूतलि नव वेष करिय नवे पदे,
नाचइ सोचइ मनि करी ए।
जाणे शांति जिणंद आगलि अहनिशि,
नृत्य करइ सुर सुन्दरी ए॥२३॥
चउदंती चउपासि रूप मणोहर,
पूर्ण कुंभ निय करि धरइ ए।
जाणे चउ दिगदंती सामि सेवा थकी,
भवसागर लीला तरइ ए॥

श्री शान्तिनाथ हुलरामणा गीतम्

ढाल—१ गुण वेलड़ी नी
२ गुजराती सहेलड़ी नी

शांति कुंयर सोहामणउ म्हारउ वालुयड़उ,
त्रिभुवन केरो राय म्हारउ नान्हड़ियउ।
पालणड़इ पउढ्यउ रमइ म्हारउ वालुयड़उ,
हींडोलइ अचिरा माय म्हारउ नान्हड़ियउ ॥१॥
सोभागी सहु ने वालहउ म्हारउ वालुयड़उ,
सुरनर नामइ सीस म्हारउ नान्हड़ियउ।
हुलरावइ हरखे घणइ म्हारउ वालुयड़उ,
जीवउ कोड़ि वरीस म्हारउ नान्हड़ियउ ॥२॥
पग घूघरड़ी घमघमइ म्हारउ वालुयड़उ,
ठम ठम मेल्हइ पाय म्हारउ नान्हड़ियउ।
हेजइ मां हियड़इ भीड़इ म्हारउ वालुयड़उ,
आणंद अंगि न माय म्हारउ नान्हड़ियउ ॥३॥
बलिहारी पुत्र ताहरी म्हारउ वालुयड़उ,
तूं मुझ प्राण आधार म्हारउ नान्हड़ियउ।
शांति कुंयर हुलरामणुं म्हारउ वालुयड़उ,
समयसुन्दर सुखकार म्हारउ नान्हड़ियउ ॥४॥

सत्तरइ से हो तीर्थंकर देवक, तिहुं पासे नमुं बारणै ।
गज ऊपर हो चढ़िया माय ने बापक, मूरति सेवा कारणै ॥ ४ ॥
अति ऊँचा हो सोहै श्रीकारक, दंड कलश ध्वज लहलहै ।
धन्य जीव्यो हो तसु तो परमाणक, यात्रा करी मन गहगहै ॥ ५ ॥
जेसलमेर हो पनरै छत्रीसक, फागुण सुदि तीज जस लियो ।
खरतर गच्छ हो जिन समुद्र सुरिन्दक, मूल नायक प्रतिष्ठियो । ६।
हित जाणयो हो श्री शांति जिणंदक, तूं साहिब छइ माहरउ ।
समयसुंदर हो कहै बेकर जोड़क, हूं सेवक छुं ताहरउ ॥ ७ ॥

श्री शान्ति जिन स्तवनम्

सुंदर रूप सुहामणो, श्री शान्ति जिणेसर सोहइ रे ।
त्रिभुवन केरउ राजियउ, प्रभु सुरनर ना मन मोहइ रे ॥ १ ॥
समवसरण सुरवर रच्यउ, तिहां बैठा श्री अरिहंतो रे ।
द्यै भवियण नैं देसणा, भय भंजण भगवंतो रे ॥ २ ॥
त्रिणह छत्र सुरवर धरइ, त्रिहुं दिशि सुर चामर ढालइ रे ।
मोहन मूरति निरखतां, प्रभु दुरगति नां दुख टालइ रे ॥ ३ ॥
आज सफल दिन माहरउ, आजपाम्यउ त्रिभुवन राजो रे ।
आज मनोरथ सवि फल्या, जउ भेट्या श्री जिनराजो रे ॥ ४ ॥
बेकर जोड़ी वीनवुं, प्रभु वीनतड़ी अवधारो रे ।
मुझ ऊपरि करुणा करी, आवागमन निवारो रे ॥ ५ ॥
चिन्तामणि सुरतरु समउ, जगजीवन शांति जिणंदो रे ।
समयसुंदर सेवक भणइ, मुझ आपौ परमाणंदो रे ॥ ६ ॥

समयसुन्दर अंतरयामी रे,
प्रभु नामइ नव निधि पामी रे। सु० ।५।

—:०:—

श्री शान्ति जिन गीतम्

आंगण कल्प फल्यो री हमारे माई,
आंगण कल्प फल्यो री।
ऋद्धि सिद्धि वृद्धि सुख संपति दायक,
श्री शांतिनाथ मिल्यो री ॥ह०॥१॥
केशर चंदन मृगमद मेली,
मांहि वरास मिल्यो री।ह०।
पूंजत शांतिनाथ की प्रतिमा,
अलग उद्वेग टल्यो री ॥ह०॥२॥
शरणे राख कृपा करि साहिब,
ज्यूं पारेवो पल्यो री ॥ ह० ॥
समयसुन्दर कहइ तुम्हरी कृपा ते,
हिव रहिस्यूं सोहिलो री ॥ह०॥३॥

—:०:—

श्री गिरनार तीरथ भास

श्री नेमीसर गुण निलउ, त्रिभुवन तिलउ रे।
चरण विहार पवित्त, जय जय गिरनार गिरे॥१॥

कत्र गिरनार गढइ चढू, जपतउ अहनिशि जाप।
आपति विण किम पामिइं, मन मान्या मेलाप। ने०। दू०।२।
तुम सुं मांड्यउ नेहलउ, पूरउ नवि निरवाह।
आगे पणि राजिमती, नारी करी निरुच्छाह। ने०। दू०।३।
तूं समरथ त्रिभुवन धणी, अंतराय सवि मेटि।
समयसुन्दर कहइ नेमिजी, वेगी देज्यो भेटि। ने०। दू०।४।

इति श्री गिरनार तीरथ नेमिनाथ उलंभा भास ॥ ६ ॥

(२)

परतिख प्रभु मोरी वंदना, आज चडी परमाण। नेमिजी।
भाग संजोगउ तूं भेटियउ, जादव प्रीति सुजाण। नेमिजी।१। प०।
परम प्रीति खरी प्रभु ताहरी, निरवाहइ निरवाण। नेमिजी।
नव भव नारि राजिमती, तारी आप समाण। नेमिजी।२। प०।
अंतरजामी आपणउ, तेसूं केही काणि। नेमिजी।
ओलंभा पिण आपीयइ, कीजइ कोडि वखाण। नेमिजी।३। प०।
उलंभउ उतारियउ, आपणउ सेवक जाणि*। नेमिजी।
श्री गिरनार यात्रा करी, समयसुन्दर सुविहाण। नेमिजी।४। प०।

इति श्री नेमिनाथ उलंभा उतारण गिरनार भास ॥ ७ ॥

श्री सौरीपुर मंडन नेमिनाथ भास

राग—गूजरी

सौरीपुर जात्र करी प्रभु तेरी।
जन्म कल्याणक भूमिका फरसी, मन आस्या फली मेरी। सौ०।१।

---

* श्री गिरनार जुहारियो जगजीवन जग भाण। ने०।

त्रण कल्याण जिन तणा, उच्छव घणा रे।
दीक्षा ज्ञान निर्वाण, जय जय गिरनार गिरे ॥२॥

श्रंब कदंब केली घने, सहसावने रे।
समोसरचा श्री नेमि, जय जय गिरनार गिरे ॥३॥

जदुपति वंदन जावती, राजीमति रे।
प्रतिबोध्या रहनेमि, जय जय गिरनार गिरे ॥४॥

संब प्रजुम्न कुमर वरा, विद्याधरा रे।
क्रीड़ा गिरि अभिराम, जय जय गिरनार गिरे ॥५॥

संघपति भरतेसरू, जात्रा करू रे।
थाप्या प्रथम प्रासाद, जय जय गिरनार गिरे ॥६॥

फल अनंत सेत्रुञ्ज कह्या, शिव सुख लह्या रे।
तेह तणउ ए शृङ्ग, जय जय गिरनार गिरे ॥७॥

समुद्र विजय नृप नंदना, कृत वंदना रे।
समयसुन्दर सुखकार, जय जय गिरनार गिरे ॥८॥

इति श्री गिरनार तीरथ भास ॥ ८ ॥

—०—

श्री गिरनार तीर्थ नेमिनाथ उलंभा भास

दूरि थकी मोरी वंदणा, जाणे ज्यो जिनराय। नेमिजी।
उमाहउ करि आवियउ, पणि कोई अंतराय। ने०। दू०।१।

मेरी बहिनी मन मान्या नी वात, मकरउ को केहनी तात । मे०।
सहुनी एहीज थात । मे० । आंकणी ।
आक तणा अक डोडिया, खावंता खारा होय ।
ईसर देव नइ ते चडइ, मन मानी वात जोय । मे०।२।
रयणायर रयणे भरयउ, गंभीर सुंदर रीति ।
राजहंसा राचइ नहीं, मान सरोवर प्रीति । मे०।३।
आंबलउ ऊंठइ परिहरयउ, नींब सु नेह सुचंग ।
कुमुदिनी सूरज परिहरयउ, चंद्र कलंकी सु संग । मे०।४।
राजमती कहइ हुं सखी, गुणवंत रूप निधान ।
तउ ही नेमि परिहरी, निरगुण मुगति बहु मान । मे०।५।
जउ पणि नीरागी नेमि जी, तउ पणि न मूकुं तास ।
ऊजल गिरि राजुल मिली, समयसुन्दर प्रभु पास । मे०।६।

इति श्री नेमिनाथ गीतम् ॥ १५ ॥

श्री नेमि जिन स्तवनम्

दीप पतंग तणी परइ सुपियारा हो,
एक पखो मारो नेह; नेम सुपियारा हो ।
हूं अत्यंत तोरी रागिणी सुपियारा हो,
तूं कांइ द्यै मुझ छेह; नेम सुपियारा हो ॥ १ ॥
संगत तेसुं कीजिये सुपियारा हो,

धन ध्यावउ नेमि जिइं जनमे, धन खेलण की सेरी ।
जरासंध विरताव वसावी, द्वारिका नगरी नवेरी ।सौ०।२।
नेमि अनि रहनेमि सहोदर, मूरति राजुल केरी ।
भाव भगति रिकी मांहि भेटी, जिन प्रतिमा बहुतेरी ।सौ०।३।
आज जावत आवत हम वइठे, जमुना जल की वेरो ।
समयसुन्दर कहइ अठ नेमीसर, राखि संसार की फेरी । सौ०।४।

इति श्री सौरीपुर मंडन नेमिनाथ भास ।

श्री नडुलाई मंडण नेमिनाथ भास

राग—सारंग

नडुलाई निरख्यउ, जादवउ न०
ऊंचउ परवत उपरि उनयउ, मन मोरउ चातक हरख्यउ ।१। न०।
साम मूरति तेज वीजलि राजित, वसुधा जल वरख्यउ ।
समयसुंदर कहइ समुद्रविजय सुत, प्रभु जलधर समउ परख्यउ ।२।

इति श्री नडुलाई मंडण नेमिनाथ भास ॥ १८ ॥

श्री नेमिराजुल गीतम्

ढाल—मेरी बहिनी सेतुंज भेटूंगी—आदिनाथ नी बहिनी नी ।

चांपा[*] ते रूपइ रूयडा[*], परिमल सुगंध सरूप ।
भमरा मनि मान्या[‡] नहीं, गुण जाणइ न अनूप ।१।

---

[*] चांपलउ   [*] सूयडउ   [‡] मानइ

नेमजी थान नियउ वयरागी रे । नें० ।१।
हूँ भव भव की दासी रे नें० हूँ०,
नेमजी अब क्युं करत उदासी रे । नें० ।२।
तूं भोगी तउ हूँ भोगिणी रे नें० तूं०,
नेमजी तूं योगी तउ हूं योगिणी रे । नें० ।३।
तूं छोड़इ तउ हूँ छोड्डूं रे नें० तू०,
नेमजी कतुयारी ज्युं हूँ जोड्डूं रे । नें० ।४।
नेमि राजीमती तारी रे नें० नें०,
नेमजी समयसुन्दर कहइ हूँ वारी रे । नें० ।५।

नेमिनाथ गीतम्

नेमिजी सुं जउ रे साची प्रीतड़ी, तउ सु अवरां प्रीतो रे ।
गुणवंत माणस सेती गोठड़ी तउ सुं निरगुण रीतो रे ।१। नें०।
भाग संजोगइ रे अमृत पीजियइ, तउ कुण पीयइ नीरो रे ।
धावल कांबल थुंसइ को नहीं, जउ पामीजइ चीरो रे ।२। नें०।
मीठी द्राख चारोली चाखवी, नींबोली कुण खायो रे ।
रतन अमूलख चिंतामणी लही, काच ग्रहण कुण जायो रे ।३। नें०।
राजुल कहइ सखि नेम सुहामणउ, मुझ मन मान्यो एहो रे ।
अहनिशि एहना गुण मन मांहि वस्या, अवरां केहउ नेहो रे ।४। नें०।
राजुल उज्जल गिरि संयम लियउ, जपतां पिउ पिउ नेमो रे ।
समयसुन्दर कहइ साचउ एहतउ, अविहड़ बिहुं नउ प्रेमो रे ।५। नें०।

जल सरिखा हुवे जेह; नेम सुपियारा हो।
आवटणु आपणि सहै सुपियारा हो,
दूध न दाभण देय; नेम सुपियारा हो ॥ २ ॥
ते गिरुया गुणवंत जी सुपियारा हो,
चंदन अगर कपूर; नेम सुपियारा हो।
पीड़ंता परिमल करैं सुपियारा हो,
आपइ आणंद पूर; नेम सुपियारा हो ॥ ३ ॥
मिलतां सुं मिलीयै सही सुपियारा हो,
जिम चापीयडो मेह; नेम सुपियारा हो।
पिउ पिउ शब्द सुणी करी सुपियारा हो,
आय मिले सुसनेह; नेम सुपियारा हो ॥ ४ ॥
हूँ सोनी नी मुंदड़ी सुपियारा हो,
तूं हिव हीरो होय; नेम सुपियारा हो।
सरिखइ सरिखउ जउ मिलइ सुपियारा हो,
तउ ते सुंदर होय; नेम सुपियारा हो ॥ ५ ॥
नव भव न गिणयउ नेहलउ सुपियारा हो,
धिक् धिक् ए संसार; नेम सुपियारा हो।
समयसुन्दर प्रभु कूं मिली सुपियारा हो,
राजुल ल्यै व्रत सार; नेम सुपियारा हो ॥ ६ ॥

श्री नेमिनाथ राजेमती गीतम्

राग—परजियउ

नेम जी रे सामलियउ सोभागी रे,

गज चढ्या श्री जिनराज हे, चांवर ढोलइ देवता म्हां० ।
मस्तक छत्र विराज हे ॥ म्हां० ॥ २ ॥ ने० ॥
सुन्दर सेहरो सोहइ ए, सामल रूप सुहामणउ म्हां० ।
सुरनर ना मन मोहइ ए ॥ म्हां० ॥ ३ ॥ ने० ॥
इन्द्राणी गायइ गीत हे, वाजा वाजइ अति घणा म्हां० ।
रूयड़ी सगली रीत हे ॥ म्हां० ॥ ४ ॥ ने० ॥
आविया उग्रसेन बारि रे, तोरण थी पाछा वल्या म्हां० ।
पशुय सुनी पुकारि हे ॥ म्हां० ॥ ५ ॥ ने० ॥
राजुल करत विलाप हे, आपति विन किम पामियइ म्हां० ।
मन मान्यां मेलाप हे ॥ म्हां० ॥ ६ ॥ ने० ॥
जइ चढ्या गढ गिरनारि हो, संयम केवल शिवसिरी ।
तिण्ह वरी तिहां नारी हो ॥ म्हां० ॥ ७ ॥ ने० ॥
साचउ सोहलउ एह हे, समयसुन्दर कहइ सुभ हुज्यो म्हा० ।
नेमि वरो नारि तेह हे ॥ म्हां० ॥ ८ ॥ ने० ॥

नेमिनाथ गीतम्

ढाल (भलु थयु म्हारइ पूज जी पधार्या)

सुगति धूतारी म्हारउ उतार्यउइ,
धूतार्यउ, मुझ थी राग लहियइ ।१।
वाई जोयउ रे मु० ॥ आंकणी ॥
कर्म कथा कहउ केहनइ कहियइ,

नेमिनाथ फाग

राग वसंत—जाति फाग नी ढाल

मास वसंत फाग खेलत प्रभु, उडत अवल अबीरा हो।
गावत गीत मिली सब गोपी, सुन्दर रूप शरीरा हो।१। मा०।
एक गोपी पकरइ प्रभु अंचल, लाल गुलाल लपेटइ हो।
केशर भरी पिचरके छांटत, राजुल हइ अति सारी हो।२। मा०।
रुकमणी कहइ परणउ इकनारी, राजुल हइ अतिसारी हो।
तउ निर्वाह न होइ गउ तुम तइ तउ, करिस्यइ कृष्ण मुरारी हो।३मा०
नेमि हंसइ गोपी सब हरखी, नेमि विवाह मनाया हो।
छपन कोड़ यादव सुं यदुपति, उग्रसेन तोरण आया हो।४। मा०।
गोख चढी राजुल पिउ देखत, नव भव नेह जगावइ हो।
दाहिनी आंखि सखी मोरी फरुकी, रंग मंइ भंग जणावइ हो।५। मा०
पशुय पुकार सुणी रथ फेर्यउ, राजुल करत विलापा हो।
सरज्यां विन सखी क्युं कर पाइयइ, मन मान्या मेलापा हो।६मा०।
हुं रागिणी पण नेमि निरागी, जोरइ प्रीति न होइ हो।
एक हथि ताली पिण न पड़इ मुझ, मन तरसइ तोइ हो।७। मा०।
राजुल नेमि मिले ऊजल गिरि, दूरि गए दुःख दंदा हो।
नेमि कुमार फाग गावत मुज, समयसुन्दर आनंदा हो।८। मा०।

नेमिनाथ सोहला गीतम्

नेमि परणेवा चालिया, म्हारी सहियर रूयड़ि जादव जान हे।
छप्पन कोडि यादव मिल्या म्हां०, अति घणा आदर मान हे।१ ने०।

आहे प्रभु परणेवा चालिया, रूयड़ि यादव जान । प्र० ।
आहे छप्पन कोड़ि यादव मिल्या, सुरनर नउ नहीं गान ।७। छ०।
आहे नेमिजी तोरण आविया, सांभल्यउ पशुय पुकार । ने० ।
आहे तोरण थी रथ फेरियउ, जइ चड्या गढ गिरनार ।८। तो०।
आहे राजुल रोयइ रस वड़इ, भूंहि पड़इ करइ रे विलाप । रा०।
आहे नाह विहूणी किम रहुँ, किम सहुं विरह संताप ।९। ना०।
आहे मैं अपराध न को कियउ, किम गय कंत रिसाय । मैं०।
आहे मुगति वधु मन मोहियउ, दोष पशु दे जाय ।१०। मु० ।
आहे नव भव केरउ नेहलउ, छेहलउ दीधउ केम । न० ।
आहे नयण सलूणउ नाहलउ, नयणे न देखुं नेम ।११। न० ।
आहे वैरागे मन वालियउ, राजुल गइ गढ गिरनार । वै० ।
आहे पिउ पासइ संयम लियउ, पहुँता मुगति संस्कार ।१२। पि० ।
आहे जे नरनारी रंग सुं, गास्यइ नेमजी फाग । जे० ।
आहे ते मन वांछित पामस्यइ, समयसुन्दर सोभाग ।१३। ते० ।

नेमिनाथ बारहमासा

सखि आयउ श्रावण मास, पिउ नहीं मांहरइ पासि ।
कंत विना हुं करतार, कीधी किसा भणी नारि ॥१॥
भाद्रवइ वरसइ मेह, विरहणी धूजइ देह ।
गयउ नेमि गढ गिरनारि, निरवही न सकी नारि ॥२॥
आसू अमीझरइ चंद, संयोगिनी सुखकंद ।
निरमल थया सर नीर, नेमि विना हुं दिलगीर ॥३॥

सुख दुख सज्युं लहियइ ।२। वा० ।
इणरे धूतारी थाई अनंत धूतार्या,
वीजा सुं बोलता निवार्या ।३। वा० ।
मुझ पिउड़उ थाई नहीं म्हांरइ हाथि,
हुँ नहीं जाउं पिउ साथि ।४। वा० ।
राजुल पिउ थी पहिली गइ मुगति,
समयसुन्दर कहइ जुगति ।५। वा० ।

नेमिनाथ फाग

आहे सुन्दर रूप सुहामणउ, शिवादेवी मात मल्हार । सु ०।
आहे नव योवन भर आवियउ, लाडिलउ नेमकुमार ।१। नव यो०।
आहे निरमल नीर खंडोखलि, खेलण नेमि सराग । नि० ।
आहे हाव भाव विभ्रम करइ, गोपी गावइ फाग ।२। हाव०।
आहे लाल गुलाल चिहुं दिसइ, उडत अवल अबीर । ला० ।
आहे केसर भरि भरि पिचरका, छांटत सामि शरीर ।३। के० ।
आहे एक बजावइ वांसली, एक करइ गोपी नृच । ए० ।
आहे एक देउर हासा करइ, एक हरइ प्रभु चित्त ।४। ए० ।
आहे एक अंचल प्रभु गहि रही, एक कहइ परणउ नारि । ए० ।
आहे जउ निरवाह न होइ तउ, करिस्यइ कंत मुरारि ।५। ज० ।
आहे नेम हंस्या गोपि भणइ, देवर मान्यउ विवाह । ने० ।
आहे रमलि करि घर आविया, शिवा देवि मात उछाह ।६। र० ।

राजुल गई पिउ पास, संजम लियुं सुविलास ।
इम फलउ सहुनी आस, भणइ समयसुन्दर भास ॥१४॥

श्री नेमिनाथ गीत

राग—केदारउ

कांइ प्रीति तोड़इ हां नेमि जी हुं तोरी रागिणी ।
अष्ट भवन कउ तूं मेरउ साहिब,
बिन अपराध कहां अब छोरइ । हां ।१। ने०।
मेरे मनि तुंही तेरे मनि कछु नहीं,
तउ कीजइ कहा प्रीति जोरइ ।
समयसुन्दर प्रभु आणि मिलावउ,
जउ मानइ कब कीनइ निहोरइ । हां ।२। ने०।

श्री नेमिनाथ गीतम्

राग—देसाख

देखउ सखि नेमि कत आवइ, चिहुं दिशि चामर ढुलावइ । दे०।
नील कमल दल सामल मूरति, सूरति सबहि सुहावइ । दे०।१।
जय जयकार जपति सुरासुर, हरि रमणी गुण गावइ ।
सीस समारि पुहप कउ सेहरउ, शिवादेवि भामण भावइ । दे०।२।
राधा रुक्मणी घसि घसि नंदन, चंदन अंगि लगावइ ।
समयसुन्दर कहइ जो जिन ध्यावइं, सो शिव पदवी पावइ । दे०।३।

कातियइ कामिनी टोल, रमइ रासडइ रंग रोलि ।
हुं घरि वइसी रहि एथि, मन माहरउ पिउ जेथि ॥४॥
मगसरइ वाजइ वाय, विरहणी केम खमाय ।
मंइ किया के श्रंतराय, ते केवली कहिवाय ॥५॥
पापियउ श्राव्यउ पोष, स्यउ जीविवा नउ सोस ।
दिन घट्या वाधी राति, ते गमुं केण संघाति ॥६॥
मोह मास विरही मार, शीत पडइ सबल ठठार ।
भोगी रहइ तन मेलि, मुझ नइ पिपु मन मेल ॥७॥
फूटरा फागुण वाग, नर नारी खेलइ फाग ।
नेमि मिलइ नहीं जों सीम, तां सीम रमिवा नीम ॥८॥
चैत्र श्राम मउर्या चंग, कोयली मिली मन रंग ।
बाई माहरउ भरतार, की मेलस्यइ करतार ॥६॥
वैशाख वारु मास, नहीं ताढि तड़कउ वास ।
उंची चढि श्रावास, वइसयइ केहनइ पास ॥१०॥
जेठ मासि लू नउ जोर, मेहनइ चितारइ मोर ।
हूं पिण चितारुं नेम, पणि नेमि नाणइं प्रेम ॥११॥
श्रापाढ उमट्या मेह, गया पंथि श्रापणि गेह ।
हुं पथि जोउं प्रिपु वाट, खांति वछाउं खाट ॥१२॥
बार मास विरह विलाप, कीधा ते पोतइ पाप ।
मन वालिउं वैराग, साचउ करुं सोभाग ॥१३॥

दउरउ सखि पियु पाय परउ तुम, मोहन लाल मनाई।
समयसुन्दर प्रभु प्रेम उदक करि, अंतर ताप बुझाई।३। मो०।

श्री नेमिनाथ गीतम्

राग—परजियउ

एक वीनति सुणउ मेरे मीत हो ललना रे,
मेरा नेमि सु मोह्यां चीत हो।ल०।
अपराध विना तोरी प्रीति हो ल०,
इह नहीं सज्जन की रीति हो।ल०।१।
नेमि विन क्यु रहुं बोलइ राजुल रे। आंकणी॥
मोरइ नेमि जी प्राण आधार हो ल०,
अब जाउंगी गढ गिरनारी हो।ल०।
नीकउ लेउंगी संयम भार हो ल०,
समयसुन्दर प्रभु सुखकार हो। ल०।२।

नेमिनाथ गीतम्

राग—मारुणी

यादव वंश खाणि जोवतां जी, लाधु एक रतन्न नेमिजी हो।
जाति उत्तम कांति दीपतउ जी, करिस्यु कोडि जतन्न।१। ने०।
नेम नगीनउ मंइ पायउ सखिजी, एह अमूलिक नग्ग!
गुण गुंफी प्रेमकुन्दन जड़ी जी, राखिसि हियड़लइ रंग।२। ने०।

श्री नेमिनाथ गीत

राग—मुलतानी धन्याश्री

तोरण थी रथ फेरि चले, रथ फेरि चले दोष पशु दे जात।
प्यारउ लेहु मनाई, मुगति वधू मन मई वसी,
मन मइं वशी हमहिं रहे विललात। प्या० ।१।
हा जादव तंइ कहा किया तंइ कहा किया,
नव भव तोर्यउ नेह । प्या० ।
लाल मोहन बिन क्युं रहुं बिन क्युं रहुं,
विरह संतापइ देह । प्या० ।२।
राजुल पिउ संग आवि मिली हां आई मिली,
ऊजल गढ गिरनार । प्या० ।
समयसुन्दर गणि इम भणइ गणि इम भणइ,
नेमि सदा सुखकार । प्या० ।३।

श्री नेमिनाथ गीत

राग—केदारा गौडी

मोकुं पिउ बिन क्युं सखि रयणि विहाइ ।
मोर किशोर बप्पीहा बोलत, खिण खिण विरह जगाई ।१। मो०।
गुनह नहीं सखि कोउ न मेरा, यदुपति गए क्यों रिसाई ।
आएयउ री मरम मुगति वधु मोहइ, दोष पशु दे जाई ।२। मो०।

राजुल नारि कहइ मृग नयणी, मृग कउ कह्यउ म मानउ रे।
नयण विरोध हमारइ इण सुं, जादव ए मर्म जाणउ रे।२।रा०।
आगे पिण सीता नइ इण मृग, राम विछोहउ पाड्यउ रे।
रोहिणी कउ मन रंग गमाड्यउ, चंद कलंक दिखाड्यउ रे।३ रा०।
दोषी हुयइ ते देखि न सखइ, वात विचालइ घालइ रे।
समयसुन्दर प्रभु साजन सरिखा, पड़िवन्नउ पालइ रे।४।रा०।

नेमिनाथ गीत

राग—मारुणी

उग्रसेन की अंगजा, बोलति गदा गज वाणि ।
किण सुं ताणि न तोड़ियइ, जग जीवन चतुर सुजाणि।१। ह०।
हमारे मोहन विन अपराधि न छाड़ि ॥ आंकणी ॥
अष्ट भवन की प्रीतड़ी, नवमें ताणा ताणि ।
जल विन मछली किउं रहइ, कछु महरि हमारी आणि।२। ह०।
नेमिनाथ न की करी, तारी आप समानि ।
समयसुन्दर कहइ आपणी, प्रीत चाढी नेमि प्रमाणि।३। ह०।

नेमिनाथ गीतम्

राग—मारुणी

चंदइ कीधउ चानणउ रे, दीठउ मृग दुःख दाय ।
तुं दधि सुत तिण दाखवुं, भलउ समुद्रविजय सुत भाइ।१।

मन गमतउ माणक मंइ लह्यु जी, कहि राजुल कुल नारि।
समयसुन्दर भगतें भणइ जी, शीलाभरण सुखकारि।३। नें०।

श्री गिरनार मंडन नेमिनाथ गीतम्

राग—जयतश्री

श्री देखत उंचउ गिरनारि । श्री०।
जिण गिरि आय रहे जोगीसर,
नेमि निरंजन बाल ब्रह्मचारी । श्री०।१।
शाम्ब प्रज्जुन कुमर क्रीड़ा गिरि,
अंबिका टुंक प्रमुख विस्तारी । श्री०।
समवशरण शोभित सहसावन,
राजिमती रहनेमि विचारी । श्री०।२।
नेमिनाथ मूरति अति मनोहर,
धन्य दिवस मंइ आज जुहारी । श्री०।
समयसुन्दर प्रभु समुद्र विजय सुत,
जात करत सुखकारी । श्री०।३।

श्री नेमिनाथ गीतम्

राग—रामगिरि

छपन कोड़ि यादव मिलि आए, नयणे नेमि निहाल्यउ रे।
पशुप पुकार सुणी यदु नंदन, तोरण थी रथ वाल्यउ रे।१। रा०।

चारित्र चूनड़ी

तीन गुपति ताणो तण्यो रे, वीणो रे वण्यो गुण वृंद रे।
रंग लागो वैराग नो रे, विच में वण्यो चारित चंद ।१।
लाखीणी चूनड़ी रे लाल, मोलवि सखि केताउ मूल।
चूनड़ी चित मानी अमूल, मूनें नेम उढाड़ी रे। आं०।
अविहड़ रंग ए चूनड़ी रे, भल भल विच में भांति।
समयसुन्दर कहइ सेवतां रे, खरी पूगी राजुल खांति ।२।

गूढा गीत

लालण को लयुं री सखि समझाइ ।ला०।
अगनि भखी प्रिय जनक तणो सुत, आणि मिलावो भाइ। ला०।१।
ईस भूषण त्त त्त सुत सामि रिपु,-बंधु प्रीया मइ़रा साइ। ला०।
भोजन इन्द्र सहोदर सुत रिपु, कंठाभरण सुहाइ ।ला०।२।
अभिमानी पंखी भापा विणु, खिण इक में न रहाइ ।ला०।
राजुल नेमि मिले उज्वल गिरि, समयसुन्दर सुखदाई। ला०।३।

नेमिनाथ गीतम्

राग—मारुणी (धन्याश्री जयतश्री मिश्र)

एतनी बात मेरे जीउ खटकइ री।
विण अपराध छोरि गये जादु,
तोरी प्रीति तातण त्रटकइ री ॥१॥ ए०।

चंदलिया चित्त विचारइ रे, तुं तउ मृग नइ घर मंइ म राखि। चं०।
एतउ सीयलड़ी सयणा, एतउ वातलड़ी वयणा। चं०। आँकणी।
पापी विछोहउ पाड़ियउ, माहरउ भंभेरयउ भरतार।
सीता दुःख दिखाड़ियउ, चंदा हिव छइ ताहरी वार। चं०।२।
रोहिणी रंग गमाड़िस्यइ, कहिस्यइ लोक कलंक।
राजुल कहइ वात रूयड़ि, पछइ मानि म मानि मृगांक। चं०।३।
वइरागइ मन वालिउं रे, गई राजुल गिरनार।
समयसुन्दर कहइ सांभलउ ए, सतियां मांहि सिरदार। चं०।४।

— —

श्री नेमिनाथ गीतम्

राग—सुघड़ाइ

नेमि जी मन जाणइ के सरजण हारा,
तुं रे प्रीतम मुझ लागत प्यारा। १।
नव भव नेह न मुंक्या जावइ,
मुगति मुगति तुझ सेती भावइ। २।
राजुल नेमि मिले गिरनारी,
समयसुन्दर कहई बाल ब्रह्मचारी। ३।

श्री नेमिनाथ गीत

राग - आसावरी

सामलियउ नेमि सुहावइ रे सखियां,
कालउ पणि गुण भरियउ रे लखियां।१। सा०।

श्री नेमिनाथ गीतम्

राग—रामगिरी

विण अपराध तजि मुंनइ वालंम,
नेमि गयउ गिरनारी रे वहिनी।
सामलियउ सुहावइ रे वहिनी,
बीजउ कोइ दाय नावइ रे वहिनी ॥ आं० ॥
प्रियु छोडी पिण हूँ नवि छोडुं,
मइ आगमी इक त्यारी रे वहिनी ॥ १ ॥
पदक प्रियु तउ हूँ मोतिन माला,
हीरउ तउ हूँ मूंदरडी रे वहिनी।
चंद्र प्रियु तउ हूं रोहिणी थाऊं,
चंदन मलय डूंगरडी रे वहिनी ॥ २ ॥
प्रियु पासइ संयम लियउ राजुल,
पहिली मुगति सिधाई रे वहिनी।
मूलगी परि मत मूकी जायइ प्रियु,
समयसुन्दर मनि भाई रे वहिनी ॥ ३ ॥

सिन्धी भाषामय श्रीनेमिजिनस्तवनम्

साहिब मइडा चंगी सूरति, आ रथ चढीय आवंदा हे मइणा।
नेमि मइकुं भावंदा हे।
भावंदा हे मइकुं भावंदा हे, नेमि असाडे भावंदा हे ।१।

गिरिधर रामराय उग्रसेन हइ,
एसउ नहीं कोइ प्रियु हटकइ री ।
तोर तिहार दोर सब राजुल,
नाह विना कहा कीयइ भटकइ री ॥२॥ ए०।
इन्द्र चन्द्र नागेन्द्र बहुत हइ,
अउर ठौर मेरउ जीउ न टकइ री ।
समयसुन्दर प्रभु कोउ मिलावउ,
पाय परु नीकइ लटकइ री ॥३॥ ए०।

नेमिनाथ गीत

सखी यादव कोडिसुं परवरे, प्रीयु आए तोरण बारि रे ।
रथ फेरि सीधारे, पशु की सुणि पुकारि रे ।१।
मन मोहनगारो, कोइ आणी मिलावउ नेमि रे ।
मोहि विरह संतावइ, सखी पूरव भव कउ प्रेम रे । मन०। आं० ।
सखी मइ अपराध न को कियउ, यदुराय रीसखे केम रे ।
हां हां मरम पिछाण्यउ, सिव नारि धूतारे नेमि रे ।२। मन०।
सखी नयण न देखुं नेमजी, मोहि चित पटि लागी चीत रे।
पर पीर न जाणइ नहि को, मेरइ एहसउ मीत रे ।३। मन०।
सखी अबहु मौन करूंगी, मोहि लागी मोटी सीख रे ।
गिरनारि चढुंगी, प्रभु पासि लेऊंगी दीख रे ।४। मन०।
सखी राजुल संयम आदर्यो, मन माहि वस्यो वइराग रे ।
परमाणंद पायउ, समयसुन्दर कउ सोभाग रे ।५। मन०।

समयसुंदर के प्रभु मइ ओलखे,
सिवनारि सुँ वात कीनी हित की ॥१०॥
सुणि राजुल नारि कहइ गिरनार,
जिका वात तइ कही ते तउ खरी ।
पणि ए नेमिनाथ त्रिलोक कउ नाथ,
ताकुँ कहि ना कहुँ केण परी ॥
इण थीं अधिकी महिमा वाधस्यइ,
गिरनार तीरथ हुँ होस्युँ गिरी ।
समयसुंदर कउ प्रभु दीक्षा नइ ज्ञान,
मुगति त्रिणहे वरिस्यइ सुंदरी ॥११॥
एजु ईसर सेती राची ऊमया,
पणि ते तउ धतूरउ नइ भांगि भखी ।
अरु कृष्ट सेती तउ राची कामला,
पणि ते न रहइ महियारी पखी ॥
कहइ राजिमती रलियात थकी,
मुझ भाग वडउ महिला मइ सखी ।
समयसुन्दर कउ प्रभु मइ वर पायउ,
ते तउ ब्रह्मचारी आचार रखी ॥१२॥
एजु कीकी काली अजुयालउ करइ,
कसतूरी काली पणि महा महकइ ।
कालउ कृष्ण गोपांगना मन्न मोहइ,

आया तोरण लाल असाडा, पसुय देखि पछिताउंदा हे भइणा ।२।
ए दुनिया सब खोटी यारो, बरमउ ते दिलु धाउंदा हे भइणा ।३।
कूड़ी गल्ल जीवां दइ कारणि, जादु कितकु लावंदा हे भइणा ।४।
मीनति कोनी नेमु न मण्ड, माधउ बहुय मन विंदा हे भइणा ।५।
घोडु असाडइ संयम गिद्धा, सचा राह सुणावंदा हे भइणा ।६।
इवै राजुल राणी आखै, संयम मइकुं सुहावंदा हे भइणा ।७।
नेमि राजीमति नेहु निवाह्या, प्रीति मुक्ति सुख पावंदा हे भइणा ।८।
समयसुन्दर सचा दिल रेती, गुण वेडइ नितु गावंदा हे भइणा ।९।

— —

नेमिनाथ राजीमती सवैया

....
....
...........प्रभु मुझ पियुड़ा नउ,
नवउ कोइ दीसइ छइ जोग ॥ ६ ॥
एजु राजुल नारि गई गिरनारि,
कहइ हित बात हकीकत की ।
नेमिनाथ कुं टाम म देजे इहां,
समझात नहीं इणके चित्त की ॥
छोड़ी जिम मुंनइ तुंनइ छोडस्यइ,
पछइ लोक में हांसी हुस्यै नित की ।

ऊनई गगनि घटा बरषति मेग छटा,
रयणि भई बिकटा चित्त मोहि उदास रे ।
जोबन ऊलट्यउ जाइ पिउ बिण क्युं रहाइ,
जादव गयउ रिसाइ. अब कैसी आस रे ॥
जपति राजुल नारि जाऊंगी हूं गिरनारि,
लेउंगी संजमभार सुन्दर कन्त के पास रे ॥१६॥
गोपांगना मनावहीं आणंद अंगि पावहीं,
सुरिंद गुण गावहीं तोरण तांइ आउ री ।
पसु पोकार वीनती सुणी पिया जदुपति,
छोड़ाइ मोहि बंधणी फेराइ रथ ढारणी
कृपाल काहे जाउ री ॥
त्रटकि हार तोड़ती मटकि अंग मोड़ती,
छटकि बीण छोड़ती लटकि भुंहि लोडति
जपति राजु बाउरी ।
गुनह हम न को किया सुगति चित्त मोहिया,
सुजोग पंथ तें लोया मो ठउर क्युं रहइ हिया
सामि सुन्दर कुं समझाउ री ॥१७॥
कोकिल कल कंठ हंस गति हील्यां,
सुक नासा द्दग हरिण चकोर ।
केसरि कटि लंक सुं यालिम सिसलउ,
मंगल चाप[1] वेणी दंड मोर ॥

---

१ अफ प्रातिख्य में चाप को एक मात्रा स्वर वाला पत्नी लिखा है

काली कोयलि आंब बइठी टहुकइ ॥
कहइ राजुल गोरइ सुं काम नहीं,
नेमि नाम राखीसि लांबइ लहकइ ।
समयसुन्दर कउ प्रभु नेमि नीकउ,
गुणवंत भणी हियडइ गहकइ ॥१३॥

एजु गोरी कउ रूप रूडउ तबही,
जबही अणियाली अंजी अंखियां ।
बलभद्र महाबली कृष्ण करी,
आमला किसा मेघ घटा पखियां ॥
कपूर गोरउ कुंपलइ मांहि तउ,
जउ मिरची माहि हुयइ रखियां ।
समयसुन्दर कउ प्रभु गोरां थकी,
अधिकउ मुझ कंत सोहइ सखियां ॥१४॥

कोकिल कुल मधुर ध्वनि कूजति,
बोलति बप्पियारा प्रियु प्रियु रे ।
मलय वात वजति गयणंगणि,
गजति मेघ घटा क्रियु क्रियु रे ॥
रतिपति रयणि दिवस संतापति,
व्यापति विरह दुक्ख दियु दियु रे ।
राजुल कहइ सखि सामि सुन्दर विणु,
कइसइ ठौर रहइ जियु जियु रे ॥१५॥

देवमित्र २ चित्र हुं रत्नवती ३ ।
देवमित्र ४ अपराजित राजा,
प्रेम पात्र नारी प्रियमती ५ ॥
आरण सखा ६ तुं संख जसोमति ७,
सुरमित्र ८ हुं नारी तुं पती ।
समयसुन्दर प्रभु नवमइ भवि तइं,
किम मूंकी कहइ राजीमती ॥२१॥

चउसट्ठि कला चतुराई धरुं,
संजि सोल शृङ्गार रहुं सुघरी ।
भरतार करतार गिणुं सरिखउ,
हुँ मनावुं रीसायइ तउ पायु परी ॥
एक नेमि मेरइ एक नेमि मेरइ,
अरु बीजउ नहीं मइ तउ खूंस करी ।
समयसुन्दर के प्रभु कुं न गमी,
पणि मुं सरिखी कुण छइ सुन्दरी ॥२२॥

मद मत्त गंडस्थल मद झरइ,
भमरा भमरी चिहुं पासि भमइं ।
सिर लाल सिन्दूर कीयउ सिणगार,
सुंडा दंड उंचउ उलालइ नमइं ॥
घणणुं घणणुं गल घंट वगइं,
गज गर्ज करइ जाणै मेघ घुमइं ।

जदुपति मइं सगला ए जीता,
सहु दुसमिण मिलि करइ तिण सोर।
समयसुन्दर प्रभु मुझ मुंकउ मां,
राजुल नारी करइ निहोर ॥१८॥

राजा उग्रसेन समुद्र विजय हरि,
कृष्ण गोपी भी मिली एकठी।
कर जोड़ि करइ वीनति वार वार,
म मानइ का वात हीया मंइ गठी।
सब राजनइ रिद्धि छोड़ी नीसर्यउ,
कुण जाणइ देखां हिव जाइ कठी॥
समयसुन्दर कउ प्रभु देखि सखी,
कहइ राजुल नेमि निपट्ट हठी ॥१९॥

मन मान्या सेती एक वार की प्रीति,
जुड़ो जिरा ते पि न जात लोपी।
मेरे तउ प्रीति नवां भव कीन,
छोटावि सकइ नर नारि कोपी॥
नेमिनाथ विना तुम्हे का नाम ल्यउ,
सखि उप्परि राजमती कहइ कोपी।
समयसुन्दर के प्रभु नेमि विना,
न करूं वर हूं रही पग रोपी ॥२०॥

धनपति राय पिया वसु धनवति १,

मोती मणि माला लांबी लरकइ ॥
मेरइ तउ नेइ नवां भव कउं,
तिण अंग उपांग सवइ थरकइ ।
समयसुन्दर कउ प्रभु ओ सखि आवइ,
नीके पचरंगी नेजे फरकइ ॥२६॥
दादुर मोर करइं अति सोर,
प्रीयु प्रीयु बोलइ ए वप्पीउ रउ ।
मेहरउ टबकइ विजुरी झबकइ,
कहउ क्यूं करि ठउर रहइ हियरउ ॥
गिरिनारि गए ओ जोगीन्द्र भए,
अब हूं भी हठकि राखुं जीउरउ ।
समयसुन्दर के प्रभु नेमि छोरी,
पणि हुं तउ न छोरुं मेरउ पीयरउ ॥२७॥
अथ अमोला वे, काली कोयल काहे री गोरी राजुल ।
देख्या कहां, नेमि सरीर हइ जाका सामल ॥
वः हम देख्या गिरिनार, जोग मारग पणि लिया ।
करइ तपस्या कष्ट, देह सुख छारी दीया ॥
पाया केवल न्यान, इन्द्र करइ आवी सेवा ।
समयसुन्दर का सामि, देख्या ओ अरिहंत देवा ॥२८॥
वे वप्पीया भाई काहेरी,
राजुल बाई तुं प्रीयु कही केम सुणाई वः ।

समयसुन्दर के प्रभु नेमि की जान,
　　हाथी हम देखे सबइ कुं गमइ ॥२३॥

नीलड़े पीलड़े कालुए धउलुए,
　　रातड़े चतुराई हुंती चेतड़े ।
कसबी मुख मल्ल मोती मणि माणिक,
　　कंचण सेती पलाण जड़े ।
हांसले वांसले धूसरे दूसरे,
　　हीं हीं हींसते प्रभु पास खड़े ।
समयसुन्दर के प्रभु प्रभु की जान में,
　　हम तौ सखि देखि हराण पड़े ॥२४॥

मणि माणक रत्न प्रवाल जड़्यउ,
　　सिर उप्पर पंच रंगो सेहरउ ।
काने कुंडल ते झबकइ बीजुरी,
　　बग पंकति हार मोती तेहरउ ॥
गाजतइ गजराज उंचइ चढ्यउ आवइ,
　　जगावइ नवा भव कउ नेहरउ ।
समयसुन्दर कउ प्रभु नेमि देखउ,
　　जाणे स्याम घटा उमट्यउ मेहरउ ॥२५॥

चली चतुरंग सेना सबली रज,
　　ऊडी जे जाइ लागी अरकइं ।
इन्द्र चामर ढालइ धरइ सिर छत्र.

श्री जेसलमेर मण्डण पार्श्वजिन गीतम्

जेसलमेर पास जुहारउ ।
कुशलसूरि प्रतिमा प्रतिष्ठी, मांडि जेथि गुंभारउ । जे०।१।
धन्य जिके नर नारि निरंतर, प्रतिमा देखइ सवारउ ।
वेकर जोड़ी आगइ वइठी, शक्रस्तव करइ सारउ । जे०।२।
तूं साहिब हूँ सेवक तोरउ, दुर्गति दुख निवारउ ।
समयसुन्दर कहइ इण भव परभव, मुझ आधार तिहारउ । जे०।३।

श्री फलवर्द्धि पार्श्वनाथ स्तवनम्

फलवधि मंडण पास, एक करूं अरदास ।
कर जोड़ी करि ए, हरख हियड़उ धरि ए ।।१।।
मइ मन धरिय उमेद, यात्रा करुं (हुं) ध्रूवेद ।
पोष दसमी तणी ए, उत्कण्ठा घणी ए ।।२।।
आज चड़ी परमाण, भेट्या श्री जग भाण ।
मन वंछित फल्या ए, दुख दोहग टल्या ए ।।३।।
एकल मल्ल अरिहंत, भय भंजण भगवंत ।
मूरति सामली ए, सपत फणावली ए ।।४।।
लोक मिलइ लख कोडि, प्रणमइ वेकर जोडि ।
महिमा अति घणी ए, पास जिणंद तणी ए ।।५।।

मेरा पिऊ तउ मेह हुं तिण कुं,
पोकारूँ मास आठ थया मुझ पाणी
पीधा विण सारूँ ।
मन मान्या की बात हई,
लोक प्रेमइ लपटाणा,
समयसुन्दर प्रभु पासि जा,
तेरा मन तिहां लोभाणा ॥२६॥
वे मोर काहे री राजुल करइ जोर,
अरे मइ तउ करती हुं निहोर वः ।
कहि तेरा करूँ काम जहां मूंकइ तहां जाउं,
प्रीयु कउ काम कियां पछी,वेगि वधाइ पाउं ॥
गिरिनार गुफा मइं नेमि,
हइ देखि केही तेरी दया ।
समयसुन्दर प्रभु का सामि,
मुझ गुनह विगरि छोरी गया ॥३०॥
अरे कारे कउया कहिरी राजुल मयुया,
वीर कछु बोलि नइ वधुया वः ।
राहु बोलुं हुं साच जाण को माया जाणइ,
कुशल खेम छइ कंत आरति मत काइ आणइ ॥
पखि तुं जा प्रियु पासि,
चारित लीयां दुखच किस्यइ ।

शुभ अनुकूल समीरण वायउ,
आनंद अंग न मायउ ।
थाल विशाल भरी मुक्ताफल,
सारंग वदनी वधायउ ॥अश्व०॥१२॥

४ राग—वसंत

सुपन पन्नग पेख्यउ, जननियइ सार ।
तिण प्रभु नाम दीधुं, पार्श्व कुमार ॥१३॥
स्वामी नवकर तनु, नील वरण सोहइ ।
भुजंग लांछन रूपइ, जगत्र मोहइ ॥१४॥
प्रभावती राणी वर, गुण अनंत ।
सुर नर नारी चित्त, मांहे वसन्त ॥१५॥

५ राग—वैराड़ी

कमठ कठिन तप करति कानन,
मठ पंचाग्नि साधइ चित्त वहइ अभिमान ।
कुमति देखाड़इ बहु जन कुं मिथ्यात्व पाड़इ,
तव प्रभु गज चढे आए री उद्यान ॥क०॥१६॥
जलतउ भुजंग लीधउ परमेष्ठि मंत्र दीधउ,
धरणेन्द्र कीधउ कृपानिधि शुभ ध्यान ॥क०॥१७॥
मिथ्यात्व मारग टाल्यउ कमठ कउ मान गाल्यउ,
लोक देवइ राड़ी तेरउ तप अज्ञान ॥क०॥१८॥

परता पूरइ पास, सामी लील विलास।
तीरथ जागतउ ए, भव दुख भागतउ ए ॥६॥
आससेण कुल चंद, वामा राणी नंद।
अहि लांछण भलउ ए, तूं त्रिभुवन तिलउ ए ॥७॥
समरयउ देजे साद, टाले मन विषवाद।
सानिध सर्वदा ए, करजो संपदा ए ॥८॥
पास जिनेसर देव, भव भव देज्यो सेव।
मुझ सेवक भणी ए, तूं त्रिभुवन धणी ए ॥९॥

कलश

फलवधी मंडण पासनाह,
वीनवियउ जिनवर मन उच्छाह।
पोप मास जन्म कल्याणक जाण,
गणि समयसुन्दर जात्रा प्रमाण ॥१०॥

---

(२)
राग—परभातो

प्रभु फलवधी पास परभाति पूजउ,
दुनी मंइ नहीं को इसउ देव दूजउ ॥१॥
वडउ तीरथ एकलमल विराजइ,
नित आपणां सेवकां नइ निवाजइ ॥२॥

ए पिंडस्थ पद रूपस्थ रूपातीत ध्यान हर री,
ए मन भृङ्ग भजि भगवंत वहु पर दउर वइ री। तूं०॥३९॥

१४ राग—सूहव

संसार सागर दुख जल, निडवंत नर वोहित्थ।
शुभ भाव समकित वासना, शिव सुख करण समत्थ॥४०॥
जिन प्रतिमा जिन सरीखी वंदनीक, भक्ति करउ निर्भीक। जि०।
भगवती ज्ञाता प्रमुख मंइ, उपदिशि प्रतिमा एह।
तो पण जे मानइ नहीं, मूढ पसु हवइ तेह ॥ जि० ॥४१॥

१५ राग—खंभायति

जेसलमेरु जीराउलइ रे, नागद्रह करहेडइ रे।
सइरीसइ संखेश्वरइ रे, गउडी दुख फेडइ रे॥४२॥
तोरी जागती जगनायक, महिमा जगि घणी रे।
तूं तो सुख संपति पूरण, सुरमणि रे॥४३॥
कलिकुंड आबू अमीझरइ रे, फलवधि पुर जोधाणइ रे।
नारंगपुर पंचासरइ रे, खंभायति वरकाणइ रे॥४४॥

१६ राग—कल्याण

जिनजी मेरउ मानव भव आज प्रमाण रे मेरो। मा०।
तुं त्रिभुवन पति थुण्यउ, जग भाण रे,
भाव भगति आणंद, मन आण रे॥ मे० ॥४५॥

६ राग—श्री

लोकान्तिक सुर आये, जंपइ जयकार,
जिन नइ जणावइ, दीक्षा तणउ अधिकार । लो० ॥१६॥
इग्यारस वदि पोष तणी, त्रिभुवन धणी,
करम छेदन भणी, तजति संसार । लो० ॥२०
पंच मुष्टि लोच करि, प्रभु अणगार हुया,
संजम सिरी रा, गुणवंत भरतार ॥ लो० ॥२१॥

७ राग—कान्हरउ

अमम अमाय अमोह अमच्छर,
नहीं लवलेश लोभ मानरौ ।
अप्रतिबंध अकिंचन अमदन,
दायक सकल अभय दानरौ ॥२२॥
सुमति गुपति शोभित मुनि नायक,
उपयोग एक धरम ध्यान रौ ।
पंचेन्द्रिय विषया रस जीते,
फरसन रसन घाण चक्षु कान रौ ॥२३॥

८ राग—आसाउरी

पार्श्व जिन स्वामी हो तेरी अनंत चमा ।
सगति थकी तूं सहइ उपसर्गा,
ततखिण तोड़इ करम बंधन वर्गा ॥ पा० ॥२४॥

नयणां दीठां नित आणंद, सेवंतां सुरतरु ना कंद ।
लहियइ लच्मी लील विलास, सहसफणा चिंतामणि पास ।६।
द्राविड़ वारिखेल मुन्नीपति, सत्रुंजे सीधा दसक्रोड जती ।
कार्ती पूनम पुण्य प्रकाश, सहसफणा चिंतामणि पास ।७।
संवत सोल इक्यासी समइ, यात्रा कीधी काती पूनमें ।
तीरथ महिमा प्रगटी जास, सहसफणा चिंतामणि पास ।८।
भवना संकट भांजो साम, ग्रह ऊठी नइ करूं प्रणाम ।
समयसुन्दर कहइ ए अरदास, सहसफणा चिंतामणि पास ।६।

(२)

राग—कल्याण

चालउ लोद्रवपुरे ।
सहसफणा चिंतामणि स्वामी, भेटउ भाव धरे । चा० ॥१॥
भणसाली थिरु विंव भराया, जेसलमेरु गिरे ।
समयसुन्दर सेवक कहइ हमकुं, प्रभु सानिध करे । चा० ॥२॥

——

श्रीस्तंभन-पार्श्वनाथ-स्तोत्रम्

नमिरसुरासुरखयररायकिन्नरविज्जाहर ! ।
महुयराइविरायमाणपयपंकयसुंदर ! ॥
महिअलमहिमामेयमणवंछिअदायक ! ।

च्यवन जन्म दीक्षा ज्ञान निर्वाण रे,
इण परि पंच कल्याणक जाण रे ॥मे०॥४६॥

१७ राग—धन्याश्री

इम थुण्यउ जेसलमेरु मंडण, दुरित खंडण शुभ मनइ।
रस कर्ण दर्शन तरणि वरसइ, आदि जिन पारण दिनइ॥
जिनचंद-सूरति सकलचंदन, मृगमदा केसर करी।
ग्रह समइ-सुंदर पार्श्व पूजइ, तेहनी धन्यासिरी॥४७॥

—:o:—

श्री लोद्रवपुर सहसफणा पार्श्वनाथ स्तवनम्

लोद्रपुरइ आज महिमा घणी, यात्रा करउ श्री जिनवर तणी।
प्रणमंतां पूरइ मन आस, सहसफणा चिंतामणि पास।१।
जूनो नगर हुंतउ लोद्रवो, सुन्दर पोल सरवर चउहटउ।
सगर राय ना सखर आवास, सहसफणा चिंतामणि पास।२।
उगणीसम पाटइ जेहनइ, सीहमल साह थयउ तेहनइ।
जेसलमेरु नगर जस वास, सहसफणा चिंतामणि पास।३।
सीहमल नइ सुत थाहरू साह, धरम धुरंधर अधिक उच्छाह।
जीर्ण उद्धार करायो जास, सहसफणा चिंतामणि पास।४।
दंड कलस धज सोहामणा, रूडा नइ वलि रलियामणा।
निरखंतां थायइ पाप नो नास, सहसफणा चिंतामणि पास।५।

नवकरसुंदरभज्झरीत्र भज्झरिसमलंकित्र ।
ससिदलविमलविसालभालमंजुलअयलंकिय ॥
तुह मुहचंदविलोअरोण मह नाह सुहंकर ! ।
केरववणमिव लोअणाणि विअसति विअंवर ॥
जगबंधव ! जगमाइपिअ ! जगजीवण ! जिणराय ! ।
जगवच्छल ! जगपरमगुरु ! जय जय वंदिअपाय ! ॥५॥
धवलकमलकलकित्तिपूरधवलीकयमहिअल ! ।
पवलपमायकलावकुंभभंजणघणअविअल ॥
दुखदावानलसलिलवाह ! दोहग्गविहंडण ! ।
जय जय पास जिणंद ! देव ! थंभणपुरमंडण ! ॥
चउगइभयभंजणपवर, उपसामिअ दुहदाह ।
रोगसोगसंतावहर, जय जिण ! तिहुअणनाह ! ॥६॥
हिअयसरोवरसोहमाणगुणमुत्तिअसुत्ती ।
गल्लजुअलविलहिज्जमाणकुंडलकयदित्ती ॥
कयदाणवमाणवनरिंदकिन्नरपयभत्ती ।
पुरिसादाणिअ ! पासनाह ! रेहइ तुह मुत्ती ॥
केवलकमलासहसकर, सिवरमणीउरहार ।
सिद्ध ! बुद्ध ! निस्संग ! जिण ! सयलजीवसुहकार ! ॥७॥
इय पास जिणवर भुवणदिणयर, थंभतित्थपुरट्ठिओ ।
संथुओ सामी सिद्धिगामी सिद्धिसोहपइट्ठिओ ॥
जिणचंदसूरिसुरिंदकिन्नरसयलचंदनमंसिओ ।
मह देहि सिद्धि सुहसमिद्धिं समयसुन्दर संसिओ ॥८॥

इति श्रीस्तंभनकपार्श्वनाथस्य लघुस्तोत्रं प्राकृतभाषामयम् ।

जय जय थंभण पासनाह ! भुवणत्तयनायग ॥
पल्लवपारपायवपवरसिंचणमुहरसमाण ।
पुरिसादाणिअ पासजिण, गुणगणरयणनिहाण ॥१॥
आससेणनररायवंशमाणससरहंसं ।
नायरलोअपओअराइपडिबोहणहंसं ॥
वम्महकाणणदलणदंतिसनिहमचिरेण ।
पणमह पासजिणिंददेवमेगग्गमणेण ॥
कलाकेलियररूववर करुणाकेरवचंद ।
चरणिकमलसुंदरभमरपउमावइधरणिंद ॥२॥
वामादेवीउअरसुत्तिमंजुलमुत्ताहल ! ।
सयलकलावलिकलियकाय कलिमलिवसुहाहल ! ॥
मोहमहावलनीरपंकनिप्फेडणदिणयर ! ।
देहि दयापर परमदेव सेवं मह सुहयर ! ॥
अरिकरिनिअरिनिरागरणपंचाणण ! जय देव ! ।
थंभ(ण)पुरमंडणमउड सुरनरवंछिअसेव ॥३॥
कवडकडप्पकुडीरकुंठकमठासुरगंजण ! ।
सुललिअवयणसुहाछड्ढरिंछोलीरंजण ! ॥
पावसुरासुर पुंडरीअ रमणीअगुणालय ।
कलिजंबालजलाहओह पहुमं पडिवालय ॥
भवसमुद्दतारणतरण ! तिहुअणजणआधार ! ।
पास जिणेसर ! गरिमगुरु गंभीरिमगुणसार ! ॥४॥

जगि जागती ज्योति तीरथ उदार,
करै सुरनर कोडि प्रभु नइ जुहार।
सदा सेवकां लोक सानिध्यकारी,
प्रभु पास स्तंभनो विघ्न वारी ॥६॥
इम श्रीजिनचंद्र गुरु सकलचंद्र,
सुपसाउलै समयसुन्दर मुणिंद ।
थुण्यो त्रिभुवनाधीश संताप चूरइ,
प्रभु पास स्थंभणो आस पूरइ ॥७॥

इति श्रीस्थंभणकपार्श्वनाथलघुस्तवनं ।
श्रीस्तंभतीर्थीयसंघसमभ्यर्थनया कृता संपूर्णा ।

श्री स्तंभन पार्श्वनाथ स्तवनम्

राग—गुंड

सफल भयउ नर जन्म, जो भेट्यउ थंभणो रे ।
उपजत परमानंद, मेरे मन अति घणो रे ॥१॥
साहिब के सेवो चरणा, धनाघन सरीखे वरणा।
दुनीमइ दुख के हरणा, सेवक कुं सुख के करणा॥
राखि संसार के फिरणा, भये अब स्वामि के शरणा॥ आंकणी॥
श्री खरतर गच्छ नायक, सुखदायक यति रे ।
अभयदेवसूरीश्वर, प्रकटित मूरति रे ॥२॥ सा० ॥

श्री स्तंभन पार्श्वनाथ स्तवनम्

सदा सयल सुख संपदा हेतु जाणी,
हिये परम आणंद कल्लोल आणी ।
कर जोड़ि करि वीनवुं शीस नामी,
प्रभु पार्श्व श्री स्थंभणो मुक्ति गामी ॥१॥
जसु नयरी वाणारसी जन्म सार,
अश्वसेन नरराय वामा मल्हार ।
अरिहंत अति सुन्दर रूप सोहइ,
प्रभु पास श्री स्थंभणो चित्त मोहइ ॥२॥
जिणे कमठ अज्ञान करतो निवारयउ,
कृपा करी अहि अग्नि बलतो उगारयउ ।
कियउ पवर धरणिंद सुरपति समृद्ध,
प्रभु पास श्री स्थंभणो जग प्रसिद्ध ॥३॥
श्री खरतर गच्छ भृङ्गार सार,
अभयदेवसूरि नवांगी वृत्तिकार ।
तिणे प्रगटियउ सेढिका नदीय तीरे,
प्रभु पास श्री स्थंभनो घन सरीरे ॥४॥
धन्य आज मुझ दीह भगवंत भेट्यउ,
चिरकाल नो संचित पाप मेट्यउ ।
नव हत्थ तनु मान महिमा निधान,
प्रभु पास श्री स्थंभणो गुण प्रधान ॥५॥

सामी सीधा वंछित काज, आणंद अति घणउ रे ॥ भ०॥१॥
सामी तुं तउ त्रिभुवन केरउ राजियउ रे ।
सामी हूँ छूं तोरउ दास, करुणा करउ रे ॥
सामी माहरां रे, अलिय विघन दूरइ हरउ रे ॥ भ०॥२॥
सामी तुम नइं रे, वेकर जोडी वीनवुं रे ।
सामी देज्यो भवि भवि सेव, तुम्हे आपणी रे ॥
इम बोलइ रे, वाचक समयसुन्दर गणी रे ॥ भ०॥३॥

इति श्रीस्थंभण पार्श्वनाथ गीतं संपूर्णम् ॥ १६ ॥

श्रीकंसारी-त्रंबावती मंडन भीड़भंजन पार्श्वनाथ भास

(१)

चालउ सखी चित्त चाह सुं, त्रंबावती नगरी तेथि रे ।
कंसारी केरउ जागतउ, तीरथ छइ जेथि रे ॥१॥
भीड़भंजन सामी भेटियउ, सखी प्रह उगमतइ सूरि रे ।
पारसनाथ भेटियइ, दुख दोहग जायइ दूरि रे ॥२॥ भी०॥
सखि आरति चिंता अपहरइ, विछुरचा वाल्हेसर मेलइ रे ।
रोग सोग गमाडइ, कीनर[1] दुसमिण नइ ठेलइ रे ॥३॥ भी०॥
सखि स्नात्र कीधां सुख संपजइ, गुण गातां लाभ अनंत रे ।
समयसुन्दर कहइ सुणउ, भय भंजण श्री भगवंत रे ॥४॥ भी०॥

इति श्री कंसारीमंडण भीड़भंजण पार्श्वनाथ भास ॥२३॥

---

१ ठांभर

तुझ मुख जिनवर देखि, नयण मेरे उल्लसइ रे।
चंद चकोर तणी परि, तूं मेरे मन वसइ रे ॥३॥ सा० ॥
जन मन मोहति सोहति, रूप अनोपमइ रे।
सुरपति नरपति गृहपति, पाय कमल रमइ रे ॥४॥ सा० ॥
समयसुन्दर हूँ मांगत, थंभण पास जी रे।
साहिब पूरो मेरे मन की आस जी रे ॥५॥ सा० ॥

श्री स्तंभन पार्श्वनाथ स्तवनम्

बे कर जोड़ी वीनवुं रे, सुणिजो थंभण पास।
प्रभु परदेसइं चालतां रे, एक करूं अरदास ॥१॥
जीवन जी वेगी देज्यो भेट ॥ आंकणी ॥
ध्यान भलुं छइ ताहरुं रे, निरख्यां आणंद नेटि ॥२॥ जी०॥
पंखेरू परदेसियां रे, नवि सरज्यउ नित वास।
तनु छइ साथी माहरइ रे, मनु छइ तोरइ पास ॥३॥ जी०॥
वीछड़ियां मन माहरुं रे, दुख घरइ दिन दिन्न।
के तूं जाणइ केवली रे, के वलि मोरुं मन्न ॥४॥ जी०॥
दर्शन वहिलुं दाखिज्यो रे, सामी लील विलास।
समयसुन्दर इम वीनवइ रे, पूरउ मन नी आस ॥५॥ जी०॥

श्री स्तंभन पार्श्वनाथ गीतम्

ढाल—नारिंग पुरवर पास जी ए०

भलइ भेट्यउ रे, पास जिणेसर थंभणउ रे।

निरखीजइ पास निरंजण रे ॥१॥ भी०॥
हरसइं मन वंछित दाता रे,
प्रणमीजइ उठि परभाता रे।
कंसारी नाम कहाता रे,
खंभायत मांहि विख्याता रे ॥२॥ भी०॥
ईति चिंता आरति सवि चूरइ रे,
प्रभु सहुना परता पूरइ रे।
दुख दोहिला टालइ दूरइ रे,
समयसुन्दर पुण्य पहूरइ रे ॥३॥ भी०॥

इति श्री खंभात मंडण भीड़भंजन पार्श्वनाथ भास ॥२६॥

श्री नाकोड़ा पार्श्वनाथ स्तवनम्

आंपणे घर बेइठा लील करउ, निज पुत्र कलत्र सुं प्रेम धरउ।
तुम्हे देस देसंतर कां द्रउड़उ, नित नाम जपउ श्री नाकउड़उ ।१।
मन वंछित सगली आस फलइं, सिर ऊपर चामर छत्र ढलइ।
आगलि चालइ जुलमति घोड़उ, नित नाम जपउ श्री नाकउड़उ ।२।
भूत प्रेत पिशाच वेताल वली, शाकिणी डाकिणी जाइ टली।
छल छिद्र न लागइ को भउड़उ, नित नाम जपउ श्री नाकउड़उ ।३।
कण्ठमाला गड़ गुंबड़ सबला, व्रण कुरम रोग टलइं सगला।
पीड़ा न करइ कुण गलि फोड़उ, नित नाम जपउ श्री नाकउड़उ ।४।

(२) राग—सवाब

भीड़ भंजण तूं श्री अरिहंत,
अलिय विघन टालइ अरिहंत ॥ भी० ॥१॥
सुन्दर मूरति कलाए सोहइ,
मोहन रूप जगत मन मोहइ ॥ भी० ॥२॥
भविजन भक्ति सुं भावना भावइ,
परमाणंद लीला सुख पावइ ॥ भी० ॥३॥
पास कंसारी प्रगट प्रभावइ,
समयसुन्दर सञावति गावइ ॥ भी० ॥४॥

(३) राग—काफी

भीड़भंजन तुम पर वारि हो जिणंदा ।
सुन्दर रूप मनोहर मूरति, देखत परमाणंदा ॥१॥
तुम पर वारि हो जिणंदा ॥
मस्तक ऊपर मुकुट विराजइ, काने कुण्डल रवि चंदा ।
तेज प्रताप अधिक प्रभु तेरउ, मोहि रहे नर वृन्दा ॥२॥ तु०॥
पार्श्वनाथ प्रकट परमेसर, वामा राणी नंदा ।
समयसुन्दर कर जोड़ी तेरे, प्रणमत पाय अरविंदा ॥३॥ तु०॥

(४) राग—मारुणी

भीड़ भंजण रे दुखभंजण रे ।
[illegible] मूरति जन मन रंजण रे,

संखेश्वरउ जायउ छउ तुम्हे, शक्ति नहीं किम आवुं अमें ।
समयसुन्दर नी जयति करउ, साचउ देवत संखेश्वरउ ॥५॥

(२)

सकलाप पार्श्व संखेसरउ ।
भाग संयोग भले परि भेट्यउ, देख्यो सुन्दर देहरउ ।१।स०।
वरण अठारै यात्रा करण कुं, आवै सुंस ले आकरउ ।
तूं तिण की मन कामना पूरइ, अब कृपाल मोहे उद्धरउ ।२।स०।
जागतउ तीरथ तुं जगनायक, संकट विपति सवै हरउ ।
पाटण संघ सहित वच्छराज साह, समयसुंदर कहइ आणंद करउ ।

(३) राग—धन्यासिरी

संखेसरउ रे जागतउ तीरथ जाणियइ रे,
हां रे जी जात्रा करइ सहु कोय ।
आणंद अति घणउ रे, तुं तेहनउ रे,
संकट विकट सवे हरइ रे ॥१॥ सं०॥
सामी तूं तउ रे, परतिख परता पूरवइ रे,
हां रे मन वंछित दातार ।
सुरतरु सारिखउ रे, पृथ्वी मांहे रे,
लोके लीधउ पारखउ रे ॥२॥ सं०॥
स्वामी तूं तउ रे, त्रिभुवन केरउ राजियउ रे,
हां रे वामा कूखि मल्हार ।

एकंतर ताप सीयउ दाह, उखध विण जायइ थइ माह ।
दुखइ नहीं मायउ पग गोडउ, नित नाम जपउ श्री नाकउडउ ।५।
न पड़इ दुरभिक्ष दुकाल कदा, शुभ वृष्टि सुभिक्ष सुगाल सदा ।
ततखिन तुम्हें अशुभ करम तोड़उ, नितनाम जपउ श्री नाकउडउ ।६।
तूं जागतउ तीरथ पास पहू, जाणइ ए वात जगत्र सहू ।
मुझ नइ भव दुख थकी छोडउ, नितनाम जपउ श्री नाकउडउ ।७।
श्रीपास महेवापुर नगरे, मंइ भेट्यउ जिनवर हरख भरे ।
इम समयसुन्दर कहइ गुण जोड़उ, नितनाम जपउ श्री नाकउडउ ।८।

इति श्री महेवा मंडण श्री नाकउड़ा पार्श्वनाथ लघु स्तवनं सम्पूर्णम् ।

---:०:---

श्री संखेश्वर पार्श्वजिन स्तवन्

(१) राग—मल्हार मिश्र

परचा पूरइ पृथ्वी तणा, यात्रा भणी लोक आवइ घणा ।
अति सुन्दर सोहइ देहरउ, साचउ देवत संखेश्वरउ ॥१॥
आराधे जे नर इकमना, एह लोक नी कामना ।
तुरत फलैं वंछित वेहरउ, साचउ देवत संखेश्वरउ ॥२॥
सुन्दर मूरति सोहामणी, रूड़ी नइ वलि रलियामणी ।
काने कुंडल सिर सेहरउ, साचउ देवत संखेश्वरउ ॥३॥
केसर चंदन पूजा करउ, ध्यान एक भगवंत नउ धरउ ।
संकट कष्ट नहीं केहरउ, साचउ देवत संखेश्वरउ ॥४॥

नीलड़इ घोड़इ रे, चढि आवइ असवार।
संघ नी रक्षा रे, करै मारग मझार ॥४॥
विपमी ठामइ रे, जइ रह्या पारकर नइ पास।
हुँ किम आवुँ रे, नहीं म्हारे गोडा नो वेसास ॥५॥
दूर थकी पण रे, तुमे जाणेज्यो देवा।
मोरा स्वामी रे, मो मन सूधी सेवा ॥६॥
रंगे गायउ रे, रूड़उ गौड़ीचउ राया।
भाव भगति सुं रे, प्रणमै समयसुन्दर पाया ॥७॥

(२) राग—गौड़ी मिश्र

ठाम ठाम ना संघ आवै यात्रा,
सतर भेद करइ पूजा सनात्रा ॥१॥
गौड़ी जागतउ पारसनाथ प्रत्यक्ष ॥ गौ० ॥ आंकणी ॥
केसर चंदन भरिय कचोल,
प्रतिमा पूजइ मन रंग रोल ॥२॥ गौ० ॥
भावना भावइ वेकर जोड़,
स्वामी भव बंधन थी छोड़ ॥३॥ गौ० ॥
नटवा नाचइ शास्त्र संगीत,
गंधर्व गावइ सखरा गीत ॥४॥ गौ० ॥
निरखंतां धरइ नव नवा रूप,
स्वामी मूरति सकल स्वरूप ॥५॥ गौ० ॥

रतन शोभा धरू रे, इम बोलइ रे,
समयसुन्दर सानिध करु रे ॥३॥ सं०॥

(४) राग—भयरव

साचउ देव तउ संखेसरउ, ध्यान एक भगवंत नउ धरउ ।१।
कां तुम्हे आरत चिन्ता करउ, संखेसरउ मुखि उचरउ ।२।
वादि विवाद न थायव उरउ, उपरि बोल आवइ आपरउ ।३।
आणंद लील करउ मत डरउ, दूनीए दीठउ पतउ खरउ ।४।
पारसनाथ पाय अणुसरउ, समयसुन्दर कहइ जिम निस्तरउ ।५।

इति श्रीसंखेश्वर पार्श्वनाथ भास ॥ ३० ॥

—:o:—

श्री गौड़ी पार्श्वनाथ स्तवनम्

(१)

गौड़ी गाजइ रे, गिरुयउ पारसनाथ ।
भव दुख भांजइ रे, मेल्हइ सुगति नउ साथ ॥१॥
जागतउ तीरथ रे, लोक आवइ छइ जात्र ।
भावना भावइ रे, करइ पूजा नइ स्नात्र ॥२॥
परचा पूरइ रे, पारसनाथ प्रत्यक्ष ।
चिन्ता चूरइ रे, जेहनउ जागतउ यक्ष ॥३॥

इसो मंइ अचरज दीठ, जागतो जिणंद पीठ, प्रबल पडूर ।
समयसुन्दर कहै, स्वामी हाजरउ हजूर ॥ से० ॥३॥

(५) राग—आसावरी

गउड़ी पारसनाथ तु वारु,एकलमल्ल विराजइ ॥ ग०॥१॥
दसो दिसथी संघ आवइ दिवाजइ,
ए प्रभुता प्रभु ताहरइ छाजइ ॥ ग०॥२॥
पूजा स्नात्र करइ प्रभु काजइ,
समयसुन्दर कहइ सहु नइ निवाजइ ॥ ग०॥२॥

(६)

गउड़ी पारसनाथ तूं गाजइ, वारु एकलमल्ल विराजई ॥१॥
दिसो दिस थी संघ आवइ दयाल, भय संकट मारग भांजइ ॥२॥
वाजित्र ढोल दमामा वाजइ, ए प्रभुता प्रभु ताहरी छाजइ ॥३॥

इति श्री गउड़ी मंडण पार्श्वनाथ भास ।

—०—

श्री भाभा पार्श्वनाथ स्तवनम्

(१) राग आसाउरी

भाभउ पारसनाथ मंइ भेट्यउ, आसाउलि मांहि आज रे ।
दुख दोहग दूरि गयां सगलां, सीध्या वंछित काज रे । भा०।१।

नीलड़ै घोड़इ चढि असवार,
रक्षा करइ संघ नी यक्ष सार ॥६॥ गौ० ॥
गरुयड़ि गाजइ गौड़ी पास,
समयसुन्दर कहइ पूरउ आस ॥७॥ गौ० ॥

(३) राग—गउड़ी

परतिख पारसनाथ तुं गउड़ी । प० ।
लोक मिलइ यात्रा लख कउड़ी,
चरण कमल प्रणमे कर जोड़ी ॥ प० ॥१॥
हुये इण देव तणी किण होड़ी,
और देव इण आगइ कौड़ी ॥ प० ॥२॥
दरशन दउलति आवइ दउड़ी,
समयसुन्दर गुण गावइ गौड़ी ॥ प० ॥३॥

(४) राग—श्री

तीरथ भेटन गई, सखि हुं हरषित भई ।
परतिख गउड़ी पास पूठउ, पूरवइ मन आस ।
सेवक ल्यउ री सेवक ल्यउ ।
नीलडै घोड़े चढी आवइ, पूरवइ मन आस ॥ से० ॥१॥
अपुत्रियां पुत्र आपूं, दुखिया को दुख कापूं, अढ़चढ्यां आधार ।
निर्धनियां नइ धन आपूं, भरूँ धन भण्डार ॥ से० ॥२॥

प्रणमंतां पातिक टलइ रे, दरसण दउलति होय ।
गीत गान गरुयडि चढइ रे, सेवा करइ सहु कोय ।३। चिं०।
वामा राणी उरि धरयउ रे, अश्वसेन कुलचंद ।
पार्श्व चिंतामणि प्रणमतां रे, समयसुन्दर आणंद ।४। चिं०।

××××

श्री अजाहरा पार्श्वनाथ भास

(१) राग—केदारउ

आवउ देव जुहारउ अजाहरउ पास, पूरइ मन नी आस ।
तीरथ मांहि मोटउ रे त्रिभुवन मांहि, जागती महिमा जास । आ० १।
आदि न जाणइ रे एहनी कोई, अरिहंत अकल सरूप ।
सती सीता रे प्रतिमा पूजी एह, भक्ति करइ सुर भूप । आ०।२।
परता पूरइ परतिख एह, समरयां दै प्रभु साद ।
चिंता चूरइ रे चित्त नी, वेग हरइ विपवाद । आ०।३।
भगवंत भेट्यउ रे अजाहरउ पास, सफल थयउ अवतार ।
तीरथ जूनउ रे जागतउ एह, समयसुंदर सुखकार । आ०।४।

(२)

आवउ जुहारउ रे अजाहरउ पास, सहू नी पूरइ आस । आवउ०।
त्रिभुवन मोहउ रे तीरथ एह, जागति महिमा जेह ।।१।।
आदि न जाणइ रे एहनी कोय, भगवंत भेट्यउ सोय ।
सीता पूजी रे प्रतिमा रंगि, भगति करी बहु भंगि ।।२।।

श्रावक पूजा स्नात्र करे सहू, सपूरव ताल पखाज रे ।
भगवंत आगल भावन भावइ, भय संकट जावइ आज रे । भा०।२।
अश्वसेन राजा कउ अंगज, तेत्रीसम जिनराज रे ।
समयसुन्दर कहइ सेवक तोरउ, तूं मोरा सरताज रे । भा०।३।

(२) राग—भयरव

भाभा पारसनाथ भलु करे, भलूं करे भाभा भलूं करे । भा०।
अलिय विघन म्हारां अलगां हरे । भा०।१।
कुशल खेम करे सुभ घरे, ऋद्धि वृद्धि वाधे बहु परे । भा०।२।
समयसुंदर कहइ मत किहां डरे, ध्यान एक भगवंत नुँ धरे । भा०।३।

इति श्री तीरथ भास छत्तीसी समाप्ता ।
संवत् १७०० वर्षे आषाढ वदि १ दिने लिखितं ॥ छः ॥ ३६ ॥

श्री सेरीसा पार्श्वनाथ स्तवनम्

सकलाप मूरति सेरीसइ,
पोस दसमी पारसनाथ भेटयउ, देव नीमी देहरउ दीसइ । स०।१।
प्रतिमा लोडति जाइ पातालइ, धरणि आधीरइ सीसइ ।
भाव भगति भगवंत नी करतां, हरख घणइ हीयउ हींसइ । स०।२।
पटणी पारिख सरजी संघ सुँ, जात्र करी लाभ सुजगीसइ ।
समयसुंदर कहइ साचउ मंइ जाण्यउ, वीतराग देव विसवा वीसइ ।

इति श्री सेरीसा मंडन पार्श्वनाथ भास ॥ ३१ ॥

सांम चिंतामणि संपति आपइ,
अचिंत चिंतामणि आस पूरइ मेरे लाल।
विश्व चिंतामणि विघ्न मिटावइ,
चउगति ना दुख चूरइ मेरे लाल।२। चि०।
मोह तिमिर भर दूर निवारइ,
निरमल करइ प्रकाश मेरे लाल।
समयसुंदर कहइ सेवक जन नइ,
परतिख तूठा वाड़ी पास मेरे लाल।३। चि०।

इति श्री वाड़ी पार्श्वनाथ भास ॥ १७ ॥

श्री मंगलोर मंडण नवपल्लव पार्श्वनाथ भास

ढाल—राजमती राणी इण परि बोलइ, नेम बिना कुण घूंघट खोलइ

नवपल्लव प्रभु नयणे निरख्यउ,
प्रगट्यउ पुण्य नइ हियडउ हरख्यउ ॥१॥
वल्लभी भंगे मूरति आणी,
मागणि वे अंगुल विलेखाणी ॥२॥
वलीय नवी आवी ते जाणउ,
नवपल्लव ते नाम कहाणउ ॥३॥
मंगलोर गढ मूरति सोहइ,
भवियण लोक तणा मन मोहइ ॥४॥
जात्र करी श्रीसंघ संघाति,
समयसुन्दर प्रणमइ परभाति ॥५॥

इति श्री मंगलोर मंडण श्री नवपल्लव पार्श्वनाथ भास ॥१८॥

परता पूरइ रे पास जिणंद, दूरि करइ दुख दंद ।
चिंता चूरइ रे चित्त नी एह, वेलू मय छइ देह ॥३॥
तीरथ भेट्यउ रे अम्हे आज, सीधा वंछित काज ।
तीरथ जूनउ रे अजाहरउ जाणि, समयसुंदर सुख पाणि ॥४॥

——

श्री नारंगा पार्श्वनाथ स्तवनम्

पारसनाथ कृपो पर, पाप रहउ मुज दूरि ।
निरखंता तुझ मूरति, मूं रति थाइ भरपूरि ॥१॥
अति सुन्दर तुझ मूरति, सूर तिमिर हरइ जेम ।
अति सकलाप सुकोमल, को मल नहिं नहिं प्रेम ॥२॥
सुन्दर वदन विलोकन, लोकनइं तूं हितकार ।
वामा देवी नंदन, नंद नलिन पद चार ॥३॥
अलि कुल कजल नीलक, नील कमल सम देह ।
भव समुद्र तूं तारक, तार कला गुण गेह ॥४॥
भावइ सेवइ भुजंगम, जंगम पणि थिर थाय ।
न परइ भगत वैतरणी, तरणी लाधुं उपाय ॥५॥
जग बांधव जग वत्सल, वत्स लघु जिम पालि ।
श्री जगगुरु जगजीवन, जीव नउ तूं दुख टालि ॥६॥
वंश इखाग निशाकर, साकर सम तुझ वाणि ।
भव भव हूँ तुझ सेवक, सेव करूं ते माणि ॥७॥

श्री अंतरीक्ष पार्श्वनाथ गीतम्

राग—वसंत

पार्श्वनाथ परतिख अंतरीख,
सकलाप सामी कुण ए सरीख। पा० ।१।
श्रीपाल राजा कीधी परीख,
कोढ रोग गयो हुंतो बहु वरीक। पा० ।२।
निरधार मूरति नयणे निरीख,
समयसुन्दर गुण गावइ हरीख। पा० ।३।

श्री वीवीपुर मण्डन चिन्तामणि पार्श्वनाथ स्तवन

राग-काफी

चिन्तामणि चालउ देव जुहारण जावां । चि० ।
वीवीपुर मांहइ प्रभु वइठउ, दरसणि दउलति पावां । चि० ।१।
केसर चंदन भरिय कचोली, प्रतिमा पूज रचावां ।
स्यामल मूरति सुन्दर सोहइ, मस्तक मुकुट धरावां । चि० ।२।
शक्रस्तव आगइ करां साचउ, गुण वीतराग ना गावां ।
समयसुन्दर कहइ भाव भगति सुँ, भावना आपां भावां । चि० ।३।

श्री भड़कुल पार्श्वनाथ गीतम्

राग—वेलाउल

भड़कुल भेटियउ हो, पारसनाथ पडूर । भ० ।
परतिख रूप धरणिंद पद्मावती, परता पूरइ हाजरा हजूर । भ० ।१।

श्री देवका पाटण दादा पार्श्वनाथ भास

देवकइ पाटण दादउ पास, सखी मई जुहारउ म्हारी पूरी आस । दे.।१।
चंदन केसर चंपक कली, प्रतिमा पूजी मन नी रली । दे.।२।
जात्र करण संघ आवइ घणा, सनात्र करइ जिनवर तणा । दे.।३।
दउलित आपइ दादउ पास, समयसुन्दर प्रभु लील विलास । दे.।४।

इति श्री देवका पाटण मण्डण दादा पार्श्वनाथ भास ॥२७॥

—०—

श्री अमीझरा पार्श्वनाथ गीतम्

राग—सारंग

भले भेट्यउ पास अमीझरउ ।
नयर वड़ाली मांहि, देख्यउ प्रभु देहरउ जी ।१। पा० ।
नव नव अंग पूज रचो मन रंगे, निर्मल ध्यान धरउ ।
भगवंत नी भावना मन भावउ, जिम संसार तरउ जी ।२। पा० ।
ईडर संघ सहित यात्रा, हरख्यउ मो हियरउ ।
समयसुंदर कहइ पास पसायइ, वंछित काज सरयउ ।३। पा० ।

श्री शामला पार्श्वनाथ गीतम्

राग—भयरव

साचउ देव तउ ए सामलउ, अलगउ टालइ जपलउ । सा.।१।
पूजा स्नात्र करउ सब मिलउ, जन्म मरण ना दुख थी टलउ । सा.।२।
समयसुंदर कहइ गुण सांभलउ, जिम समकित थायइ निरमलउ ।३।

तूं गति तूं मति तूं त्रिभुवन पति,
तूं शरणागत त्राण।
समयसुन्दर कहइ इह भव पर भव,
पारसनाथ तूं देव प्रमाण। जा० ।३।

श्री नागौर मण्डन पार्श्वनाथ स्तवनम्

पुरिसादानी पास, एक करूं अरदास।
मुझ सेवक तणी ए, तूं त्रिभुवन धणी ए ॥१॥
दीठां अवरज देव, कीधी तेहनी सेव।
काज न को सरयउ ए, भवसागर फिरयउ ए ॥२॥
हिव मुझ फलियउ भाग, मिलीयो तूं वीतराग।
अशुभ करम गयउ ए, जन्म सफल थयउ ए ॥३॥
ज्ञाता भगवती सार, सूरीआभ अधिकार।
जिन प्रतिमा सही ए, जिन सारखी कही ए ॥४॥
अश्वसेन कुल चन्द, वामा राणी नन्द।
तूं त्रिभुवन तिलउ ए, भांजइ भव किलउ ए ॥५॥
अजरामर अरिहंत, भेटयउ तूं भगवंत।
दुख दोहग टल्या ए, मन वंछित फल्या ए ॥६॥
पास जिणेसर देव, भव भव तुम पय सेव।
पास जिणेसरू ए, वंछित सुरतरू ए ॥७॥

समरचां साद दियइ मेरउ साहिब, आरति चिंता करइ चकचूर ।
आसा सफल करत सेवक की, यात्रा आवइ सब लोक जरूर । भ०।२।
पोष दसमी दिन जन्म कल्याणक, यात्रा करी में ऊगमते सूर ।
समयसुन्दर कहइ तेरी कृपा ते, राग वेलाउल आणंद पूर । भ०।३।

श्री तिमरीपुर पार्श्वनाथ गीतम्

राग—काफी

तिमरीपुर भेट्या पास जिनेसर येई । ति० ।
देश प्रदेश थकी नर नारी, जात्रा आवइ धँस लेई । ति०।१।
सतर भेद पूजा करइ श्रावक, नृत्य करइ तता थेइ ।
समयसुंदर कहइ धरियामनी परि, मुक्ति तणा फल लेइ । ति०।२।

श्री वरकाणा पार्श्वनाथ स्तवनम्

राग—सारंग

जागतउ तीरथ तूं वरकाणा । जा० ।
जात्रा करण को जग सब आवत,
सेव करइ सुर नर राय राणा । जा० ।१।
सकल सुन्दर मूरति प्रभु तेरी,
पेखत चित्त लुभाणा ।
मन वंछित कमना सुख पूरति,
कामिक तीरथ जिनकुं कहाणा । जा० ।२।

गुण गाऊं अभिराम री माई ॥३॥ पा० ॥
भमती मांहि भमइ जे भवियण,
ते न भमस्यै संसार री माई ।
समय सुन्दर कहइ मनवंछित सुख,
ते पामइ भव पार री माई ॥४॥ पा० ॥

——

संस्कृतप्राकृतभाषामयं पार्श्वनाथलघुस्तवनम

लसरणाण–विन्नाण–सन्नाण–मेहं,
कलाभिः कलाभियुतात्मीय देहम् ।
मणुरणं कला–केलि–रुग्राणुगारं,
स्तुवे पार्श्वनाथं गुण–श्रेणि–सारं ॥ १ ॥
सुत्रा जेण तुम्हाण वाणी सहेवं,
गतं तस्य मिथ्यात्व–मात्मीय–मेवम् ।
कहं चंद मज्भिल्ल–पीऊस–पाणं,
विपापोह–कृत्ये भवेन्न प्रमाणम् ॥ २ ॥
तुहप्पाय–पंके–रुहे जेत्र भत्ता,
लभे ते सुखं नित्य–मेकाग्र–चित्ताः ।
कहं निप्फला कप्परुक्खस्स सेवा,
भवेत्प्राणिनां भक्तिभाजां सदेवा ॥ ३ ॥
तुहहं सणं जेत्र पिक्खंति लोगा,
लसत्तोप–पोप लभंते सभोगाः ।

॥ कलश ॥

इम नगर श्री नागौर मण्डण, पास जिणवर शुभ मनइ ।
मंइं थुण्यउ संवत सोल इकसट्ठ, चैत्र वदि पंचमि दिनइ ॥
जिन चन्द्र रवि नक्षत्र तारा, सकल चन्द्र सुरी सुरा ।
कर जोड़ि प्रभु नी करइ सेवा, समयसुन्दर सादरा ॥८॥

—:०:—

श्री पार्श्वनाथ लघु स्तवनम्

देव जुहारण देहरइ चाली,
सखिय सहेली[१] साथि री माई ।
केसर चन्दन भरिय कचोलडी,
कुसुम की माला हाथि री माई ॥१॥
पारसनाथ मेरउ मन लीणउ[२],
वामा कउ नन्दन लाल री माई ॥आंकणी॥
पग पूंजी चढूं पावड़ सालइ,
भगवंत धरम दुवार री माई ।
निस्सही तीन करूं तिहुं ठउड़े,
पंचाभिगमण सार री माई ॥२॥ पा० ॥
तीन प्रदिचणा भमती देसुं,
तीन करूं परणाम री माई ॥
चैत्यवंदण करूं देव जुहारूं,

१—सहित्र समाणी । २—मान्यउ

अथ चतुर्विंशति तीर्थङ्कर-गुरु नाम गर्भित

श्री पार्श्वनाथ स्तवनम्

वृषभ धुरन्धर उद्योतन वर, अजित विभो भुवि भुवन दिनेश्वर,
वर्द्धमान गुणसार ।
वामा सम्भव पार्श्व जिनेश्वर, सुजन दशा-मभिनन्दन शशिकर,
चन्द्र कमल पद चार ॥१॥

जय सुमति लता घन अभयदेव सूरीन्द्र ।
पद्म प्रभु कर नत वल्लभ भक्ति मुनीन्द्र ॥
वसु पार्श्व विगत मद दत्त भविक जन भन्द्र ।
चन्द्र प्रभु यशसा सुन्दर तर जिन चन्द्र ॥२॥
सुविधिनाथ जिनपति मुदार मति शीतल वचनं ।
नौमि जिनेश्वर सूरि साधु कृत संस्तव रचनम् ॥
श्रेयासं भविक प्रतिबोध निपुणं निस्तन्द्रं ।
श्री पार्श्व दे वासुपूज्य मानं जिनचन्द्रम् ॥३॥
विमलभं कुशलाम्बुज-भास्करं
प्रशमनं तत्पद्म दशावरम् ॥
नमत धर्म-सुलब्धि-विराजितं
जिनमशान्ति सुचंद्रविणोज्झितम् ॥४॥
कुंथु रत्नाकरं विहितवृजिनोदयं, अरतिचिंताहरं राजमांनासयम् ।
मल्लिका सहितभद्रासनस्थायिनं, स्मरत मुनिसुव्रतं चंद्रहृदयं
जिनम् ॥५॥

जहा मेह–रेहं पदट्ठूण मोरा,
यथा वा विधो दर्शनं सचकोराः ॥ ४ ॥
हवे जत्थ दिट्ठा जिणाणं पसन्ना,
गता तेभ्य आपन्नितान्तं निखिन्ना ।
पगासो सिया जत्थ सूरस्स सारं
कथं तत्र तिष्ठेत्कदाप्यन्धकारम् ॥ ५ ॥
तुमं नाम चिंतामणि जस्स चित्ते,
विभो कामितिस्तस्य संपत्ति-वित्ते ।
जओ पुप्फकालंमि पत्ते णणेया,
वणस्सेणि पुप्पाग्र–माला–प्रमेया ॥ ६ ॥
मए वंदिया अज्ज तुम्हाण पाया,
नितान्त गता मेऽद्य सर्वेप्यपाया ।
जहा सुट्ठु दट्ठूण दुट्ठं च मोरा,
भुजंङ्गा व्रजेयुर्भियात्यंत–घोरा ॥ ७ ॥
अहो अज्ज मे वंछिअत्थस्समाला,
फलत्पार्श्व नाथ–प्रसादा–द्विशाला ।
जहा मेह–धाराभि–सित्ताण वीणा,
समृद्धा भवेत्किं न वल्ली न रीणा ॥ ८ ॥
इय पागय-भासाए संस्कृत-वाणया च संस्तुतः पार्श्वः ।
भत्तस्स समयसुंदर–गणेर्मनो–वांछितं देयात् ॥ ६ ॥

॥ इति अर्धप्राकृत-अर्द्धसंस्कृतमयं श्रीपार्श्वनाथलघुस्तवनम् ॥

ते सव्वे संजाया, लक्खा अठार सहस चौवीसं ।
इग सय वीसा मिच्छा, दुक्कडया इरियपडिक्कमणे ।३।

इय परमत्थो एसो, परूवियं जेण भविय बोहत्थं ।
पणमामि समयसुंदर, पणयंतं पास जिणचंदं ।४।

इति इरियापथिकीमिथ्यादुःकृतविचारगर्भितश्रीपार्श्वनाथलघुस्तवनम्
श्री जेसलमेरु संघाभ्यर्थनयाकृतं सम्पूर्णम् ॥

xxxx

श्री पार्श्वनाथ लघु स्तवनम्

प्रकृत्यापि विना नाथ, विग्रहं दूरतस्त्यजन् ।
केवल प्रत्यये नैव, सिद्धिं साधितवान् भवान् ॥१॥
निर्जितो वारिवाहोऽर्हन्, गम्भीरध्वनिना त्वया ।
वहत्यद्यापि पानीयं, प्रतिसद्मा सितानन ॥२॥
तव मित्र वदादेश, तथा शत्रु-रिवागमः ।
समीहित-कृते रौति, संहते शब्द-वारिधे ॥२॥
नित्यं प्रकृति-मत्त्वेऽपि, नाना-विग्रह-वर्त्तिनि ।
अभव्ये व्यभिचारित्त्वात्सर्व-सिद्धि-करं कथम् ॥४॥
निर्दयं दलयामास, शक्त्या सत्त्वर-मङ्गजं ।
तद्भवं तं कथं नाथ, कृपालुं कथयाम्यहम् ॥५॥

जय नमित सुरासुर गुण समुद्र।
जय नेमि भवापह हंस मुद्र ॥
जय पार्श्व कला माणिक्य गेह।
जय वीर मनोहर चन्द्र देह ॥६॥

इत्थं नीरधिनेत्रतीर्थपगुरुस्पष्टाभिधागर्भितं।
सूर्याचाररसेन्दुसंवति नुतिं श्रीस्तम्भनस्य प्रभो!।
चक्रे श्रीजिनचन्द्रसूरिसुगुरुश्रीसिंहसूरिप्रभो!,
शिष्योऽयं समयादिसुन्दर गणिः सम्पूर्णचन्द्रद्युतेः ॥७॥

इति श्री चतुर्विंशति तीर्थङ्कर चतुर्विंशति गुरु नाम गर्भितं
श्री पार्श्वनाथ स्तवनं समाप्तम्।

इरियापथिकी मिथ्यादुःकृतविचारगर्भित
श्री पार्श्वनाथ लघु स्तवनम्

मणुयातिसय तिडुत्तर (३०३), नारय चउदसय (१४) तिरिय अडयाला (४८)।
देव अड़नवइसयं (१६८), पणसयतेसट्ठि (५६३) जियं भेया।१।
अभिहय-पमुह-पएहिं, दस गुणिया (५६३०) राग-दोस-कय-दुगुणा (११२६०)।
जोगे (३३७८०) त्रिगुणा करणे (१०१३४०), काले त्रिगुणा (३०४०२०) छः गुणायसक्खिछगो (१८२४१२०) ।२।

ज्ञानांबुधो सकलचंद्रसमः प्रसद्यः
सिद्धान्तसुंदररतिं वितनातु सद्यः ॥ ६ ॥

श्री संखेश्वर पार्श्वनाथ लघु स्तवनम्

श्रीसंखेश्वरमण्डनहीरं, नीलकमलकमनीयशरीरं,
गौरवगुणगंभीरम् ।
शिवसहकारमनोहरकीरं, दूरीकृतदुःकृतशारीरं,
इन्द्रियदमनकुलीरम् ॥१॥
मदनमहीपतिमर्दनहीरं, भीतिसमीरणभक्षणहीरं,
मरणजरावनजीरम् ।
संसृतितप्तिगुडाश्रितजीरं, वचननिरस्तसिता गोक्षीरं,
गुणमणिराशिकुटीरम् ॥२॥
समतारसवनसिंचननीरं, विशदयशोनिर्जित डिण्डीरं,
त्रिभुवनतारणधीरम् ।
धीरिमगुणधरणीधरधीरं, सेवकजनसरसीरुहसीरं,
रागरसातलसीरम् ॥३॥
दुरितरजोभरहरणसमीरं, गजमिव भग्नकषायकरीरं,
करुणानीरकरीरम् ।
सुरपतिअंसनिवेशितचीरं नखमयूपविधुरितकाश्मीरं,
प्राप्तभवोदधितीरम् ॥४॥

एवं श्रीजिनचन्द्रस्य, पार्श्वनाथस्य संस्तवम्।
चक्रे हर्ष-प्रकर्षेण, समयादिम सुन्दरः ॥६॥

इति श्री पार्श्वनाथ लघु स्तवनं श्लेषादिभावमयं सम्पूर्णम् ॥
सं० १६६० वर्षे चैत्र सुदि १ दिने श्री अहमदावाद नगरे लिखितम्।

[जेसलमेर-खरतराचार्यगच्छोपाश्रये यति चुन्नीलाल संग्रहे स्वयं लिखित पत्रात्]

—φ—

श्री पार्श्वनाथ यमक बद्ध लघु स्तवनम्

पार्श्वप्रभुं केवलभासमानं, भव्याम्बुजे हंसविभासमानम्।
कैवल्यकान्तैकविलासनाथं, भक्त्या भजेहं कमला सनाथम्।१।
विभावलीवञ्चितगंभीर, दिश प्रभो मेऽभिमतं गभीर।
जगन्मनः कैरवराजराज, नताङ्गिना शान्तिकराज राज।२।
ततान धर्मं जगताहितार, मदीदह दुःखतती हतार।
अचीकरत्कर्म सतां जनानां, जहार दीप्तारशितां जनानाम्।३।
वेगाद्दधनीपी दरिका ममादं, श्रियापि नो यो भविकाममादम्।
नुत प्रभुं ते च नता रराज, शिवे यशः कैरवताररराज।४।
यमलम्॥
उत्कृष्टयेपामिह सेवकानां, त्वं मानसे पुष्टरसेवकानाम्।
सद्यो लभते कमलां जिनेश, ते देव कान्ता कमला जिनेश।५।
यन्नाम मन्दोपि तदा मुदारं, वदन पदं याति विदा मुदारम्।

बालोऽपि यो न्यायनये प्रवेश-मल्पेन वांछत्यलसः श्रुतेन ।
संक्षिप्तयुक्त्यान्वितर्कभाषा, प्रकाश्यते तस्य कृते मयैषा ।४।

[तर्क भाषा]

—मित भाषिण्याम्

हेतवे जगतामेव, संसारार्णव सेतवे ।
प्रभवे सर्वविद्यानां, शंभवे गुरवे नमः ।५।

[सप्त पदार्थी]

सुखसन्तानसिद्ध्यर्थं, नत्वा ब्रह्माच्युतार्चितम् ।
गौरीविनायकोपेतं, शंकरं लोकशंकरम् ।६।

[वृत्तरत्नाकरे]

एवं पूर्वकविप्रणीतविलसत्काव्यैर्नवीनार्थतः ।
आनंदेन अमीझराभिधविभु श्रीपार्श्वनाथस्तुतिम् ॥
श्रीमच्छ्रीजिनचंद्रसूरिसुगुरोः शिष्याणुशिष्यो व्यधात् ।
सोल्लासं समयादिसुन्दरगणिश्चेतश्चमत्कारिणीम् ।७।

—×—

श्री पार्श्वनाथ यमकबन्ध स्तोत्रम्

प्रणत मानव मानव-मानवं, गतपराभव-राभव-राभवम् ।
दुरितवारण वारण-वारणं, सुजन-तारण तारण-तारणम् ।१।
अमर-सत्कल-सत्कल-सत्कलं, सुपदया मलया मलयामलम् ।
शम-दमाकर-माकर-माकरम् ।२।
प्रबल-सादर सादर-सादरं,

श्री पार्श्वनाथस्य शृंखलामय लघु स्तवनम्

प्रणमामि जिनं कमलासदनं, सदनंतगुणं कुलहारसमम् ।
रस मंदमदंमसुधानयनं, नयनंदित वैश्वजनं शमिनम् ॥१॥
भुवनोन्मुखकेशरिशावरवं, वरवंशपदा न तदा सहितम् ।
सहितं समया रमया मदना, मदनाभि तिरस्कृतनीररुहम् ॥२॥
वदनरवि बोधितानेकजनपंकजं, पंकजं बालपाथोदसमसंचरम् ।
संचरंतं सरोजेषु सुतमोहरं, मोहरंभा गजे पार्श्वनाथं मुदा ॥३॥
त्रिभिः कुलकम् ॥

विहितमंगल मंगल सद्रविं नुत जिनं सदयं सदयं जनाः ।
विगत देव न देवनरोचितं, गतरुजामरचामरराजितम् ॥४॥
जिन यस्य मनो भ्रमरो रमते, रमते पदपद्मयुगं सततम् ।
सततं नवधामकरंदमिना, दमिनाथनिपीयमुदं दमिनः ॥५॥
महोदये धाम जिनं वसंतं, जिनं वसंतं शुभवल्लिकंदे ।
सस्मार पार्श्व सुमनो विमानं, मनो विमानं स जगाम यस्य ॥६॥
कल्याणकंद कमलं हरंतं, जिने जनानेकमलं हरंतम् ।
सतां महानंदमहं स पद्म, पार्श्व ददौ यो दमहंस पद्मं ॥७॥
कल्पकल्पोपमं पूर्णसोमोदयं, मोदयंतं जनान् वंशहंसप्रभम् ।
सप्रभं पार्श्वनाथं वहे मानसे, मानसेत्रालवातूलमेनं जिनम् ॥८॥

एवं स्तुतो मम जिनोभिधपार्श्वनाथः,
कल्याणकंदजिनचंद्ररसा सनाथः ।

पटुलपं शम-मञ्जुल-मण्डनं, मघव-नंदन-वर्यरवं ध्रुवम् ।
वदन-नर्जितम-प्रभु-धर्मतं, मदन-लब्ध-जयं गुण-बन्धुरम् ॥५॥
कपट-संदिर-वञ्चण-दर्प्पहं, रवत-तद्रु म-दंति-करं नुवे ।
नयवरं च भवंत-महं मुदा, त्रिभुवनाधिप पार्श्व-जिनेश्वरम् ॥६॥
सुजन-संस्तुत-विष्टप-सोदरं, मुख-विनिर्जित-वैधव-सम्पदम् ।
विगत-विड्वर-धीरम-मंदिरं, कज विलोचनयामल सद्गुणम् ॥७॥
संसार-रत्नक-कजानन-भाल-लष्टं,
सोल्लास-संहनन-वीततमोककष्टम् ।
निःकोप-पंक ललनं'''विधारिरिक्त',
संताप-कृत्यभिदं ललवंश-शक्तम् ॥ ८ ॥
विश्वेश-शस्त-ममता-मथं विविधम्,
मंदार-रंग-ददयौघ-घनाव-वद्यम् ।
रोगावर्य गगनाय यशोविविक्तम्,
सन्नार-रंजन-कलंक-करंभ-भक्तम् ॥ ९ ॥
इति पार्श्व-जिनेश्वर-मीश्वर-नुतमचिरेण,
शृंगाटक-बंध-नवीन-कवित्व-भरेण ।
गणपति-जिनचंद्र-विनेय-सकल-विधु-शिष्य,
गणि-समयसुन्दर इममस्तावीत् सुविशिष्य ॥१०॥
॥ इति श्रीपार्श्वनाथशृंगाटकबन्धमय लघुस्तवनं समाप्तम् ॥

श्रीपार्श्वनाथ-हारबन्धचलच्छृंखला-गर्भितस्त्रोतम्

वन्दामहे वरमतं कृत-सात-जातं,
तं मान-कान्त-मनघं विपरौघ-कोपम् ।

अश्वसेननृपकुलकोटीरं, निर्मलकेवलकमलाधीरं,
श्रीजिनचंद्रतीरम् ।
सकलचंद्रमुखमनुपमहीरं, प्रणमत समयसुंदर गणि धीरं,
वन्देपार्श्वममीरम् ॥४॥

इति श्री संखेश्वर पार्श्व नाथ लघु स्तवनम् ॥ २२ ॥



श्रीअमीझरापार्श्वनाथस्य पूर्वकविप्रणीतकाव्य-द्व्यर्थ करणमयं लघुस्तवनम्

अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा, हिमालयो नाम नगाधिराजः ।
पूर्वापरौ तोय निधीवगाह्य, स्थितः पृथिव्या इव मानदण्डः ।१।
[कुमारसंभवे]

कश्चित् कान्ताविरहगुरुणा स्वाधिकारात्प्रमत्तः ।
शापेनास्तंगमितमहिमा वर्षभोग्येण भर्तुः ॥
यक्षश्चक्रे जनकतनयास्नानपुण्योदकेषु ।
स्निग्धच्छायातरुषु वसतिं रामगिर्याश्रमेषु ।२।
[मेघदूत काव्ये]

श्रियः पतिः श्रीमति शासितुं जगज्जगन्निवासो वसुदेवसद्मनि।
वसन् ददर्शावतरन्तमम्बरात्, हिरण्यगर्भाङ्गभुवं मुनिं हरिः ।३।
[माघ काव्ये]

रत्नाकरं रतिकरं नत सूर-जानम् ॥६॥
तुष्टः प्रभो गुण-गणान्तर-वृत्त वृत्त-
मुक्तावली-ग्रथित-माशु शिवैक-दानम् ।
देहीह मे त्वदभिधा स्फुट-नायकाग्रं,
दृष्ट्वा-भवत्स्तवन-हार-मुदार-मेनम् ॥७॥
इति हारबन्ध-काव्यैर्मनोमतं मेऽद्य संस्तुतः पार्श्वः ।
विदधातु पूर्णचन्द्रस्सकल-समयसुन्दराम्भोधौ ॥८॥

—(०)—

संस्कृत-प्राकृत-भाषामयं श्रीपार्श्वनाथाष्टकम्

भलूं आज भेटयुं प्रभोः पादपद्मम्,
फली आस मोरी नितान्तं विपद्मम् ।
गयूं दुःख नासी पुनः सौम्यदृष्ट्या,
थयुं सुख झाझुं यथा मेघवृष्ट्या ॥१॥
जिके पार्श्व केरी करिष्यन्ति भक्ति,
तिके धन्य वारु मनुष्या प्रशक्तिम् ।
भली आज वेला मया वीतरागाः,
खुशी मांहिं भेट्या नमद्देवनागाः ॥२॥
तुम्हे विश्व मांहे महा—कल्प—वृक्षा,
तुमे भव्य लोकां मनोभीष्ट—दक्षा ।
तुमे माय बाप प्रियाः स्वामि—रूपाः,
तुमे देव मोटा स्वयंभू स्वरूपाः ॥३॥

भुवननायक-नायक-नायकं, प्रणितु नावज-नावज-नावजम् ।
जिन भवंत-भवंत-भवंतमं, स शिव-मापरमा-परमा-परम् ।३।
[त्रिभिः कुलकम्]
रविसमोदय-मोदय मोदय, क्रमण-नीरज-नीरज-नीरज ।
लसदु[1] मामय-मामय-मामय, व्यय कृपालय पालय पालयः ।४।
इति मया प्रभुपार्श्वजिनेश्वरः, समयसुन्दरपद्मदिनेश्वरः ।
यमकबन्धकवित्त्वभरैः स्तुतः, सकलऋद्धिसमृद्धिकरोस्त्वतः ।५।

इति यमकबन्धं श्री पार्श्वनाथ स्तोत्रम् ।

—o—

श्रीपार्श्वनाथशृंगाटकबन्धस्तवनम्

कमन-कंद-निकंदन-कर्म्मदं, कठिन-कच-ममा नमति समम् ।
मदन-मंदर-मर्दन-नंदिरं, नयन-नंदन-नंदनि निर्द्धनम् ॥१॥
निखिल-निर्वृ त-निश्चन-नर्दितं, नत जनं सम-नर्म्मद-दंममम् ।
दम-पदं विमदं घन-नव्यमं, नम-वनं हससं शिवसंभवम् ॥२॥
सतत-सज्जन-नंदित-नव्यमं, नयधनं वरलब्धिधरं समम् ।
रदन-नकमन-श्वलन-श्रियं, नलिन-नव्यय-नष्ट-वनं कलम् ॥३॥
ललवलं सकलं शम-लक्षितं, ततमतं सततं निज जन्मतम् ।
जगदजं विरजं दम-मंदिरं, महित-मंगप पण्डित-पर्पदम् ॥४॥

---

१ स्फुर दुमामयमा मय मामय ।

अष्ट महाप्रातिहार्य गर्भित पार्श्वनाथ स्तवनम्

कनक सिंहासन सुर रचिय, प्रभु वइसण अतिसार ।
धरम प्रकासइ पास जिण, वइठी परपदा बार ॥१॥
सीस उपर अति सोहितउए, छत्र त्रय सुविशाल ।
तिण प्रभु त्रिभुवन राजियउए, न्याय धरम प्रतिपाल ॥२॥
त्रिहुँ पासे उज्वल विमल, गंग प्रवाह समान ।
चामर वींजत[1] देवता ए, वपु वपु पुण्य प्रमाण ॥३॥
अष्टोत्तर सउ कर रुचिर, ऊंचउ वृक्ष अशोक ।
नव पल्लव छाया बहुल, टालइ सुरनर शोक ॥४॥
मोह तिमिर भर संहरण, भामंडल प्रभु पूठि ।
झब झब तेजकइ झबकतउए, जिम रवि जलधर बूठि ॥५॥
जानु प्रमाणइ जिन तणइए, जल थल भासुर जाति ।
कुसुम वृष्टि विरचंति सुर, पंच वरण बहु भांति ॥६॥
वीणा वेणु मृदंग वर, सुर दुंदुभि संवाद ।
दिव्यनाद जिनवर तणउए, अमृत सम आस्वाद ॥७॥
गुहिर गंभीर मधुर गगने, वाजइ वाजित्र तूर ।
तीर्थंकर पदवी तणउए, प्रकट्यो पुण्य पडूर ॥८॥

॥ कलश ॥

इम पास जिनेसर परमेसर सुखकंद ।
आठ प्रतिहारज शोभित श्री जिनचंद ॥
सेवै सुरनर किन्नर सकलचंद मुनि वृंद ।
नित समयसुंदर सुख पूरउ परमाणंद ॥ ९ ॥

---

1 ढालइ

पद्मामलं परम-मंग-कराऽमदाऽकं,
कष्टावली-कलिवनद्विप-हीन-पापम् ॥१॥
पद्माननं पवन-भत्वरं भवाऽवं,
वन्दारु-देव-मरुजं जिनराज-मानम् ।
नव्याजमान-मजरं धर सार-धीरं,
रम्याम्बकं रणवधं सुमनो-धरोमम् ॥२॥
मन्दार-काम-मरमं समधाम-रोम–
मर्हन्तमाऽमयतमस्तति सोमकान्तिम् ।
तिग्मो सतान्ति तरु-पशु-समं परासम्,
संतीति हास-मऽति-मर्दननाम-मानम् ॥३॥
गर्वोऽऽर-राग-हरमङ्गज भीमराज,
जन्त्वाऽऽनतं जयिन-मंग सदाऽऽमदासम् ।
नष्टाऽशिवं नत शिवप्रद-मेव साद,
दंभाऽयुतं दम-युतं सुगताऽन्तरङ्गम् ॥४॥
संसार-वासधर-शम्ब-समं शवासं,
सद्देव-दास-शिव-शर्म-करं शमेकम् ।
कम्रं कलाऽऽकर-कलं गल-भाल-शालं;
लब्धोदयं लसदनन्तमति नमामः ॥५॥
मञ्जूदयं मत-दयं शुभ-गेय शोभं,
भव्यं विदंभ-कवि-वन्द्य-पदाऽब्जजापम् ।
पल्कंज-रूप-विजयं वर-काय-मारं,

श्री पार्श्वजिन (प्रतिमा स्थापन) स्तवन

श्री जिन प्रतिमा हो जिन सारखी कही, ए दीठां आणंद ।
समकित विगड़इ हो संका कीजतां, जिम अमृत विप विंद । श्री.१।
आज नहीं कोई तीर्थंकर इहां, नहीं कोई अतिशय वंत ।
जिन प्रतिमा हो एक आधार छइ, आपै मुगति एकांत । श्री.२।
सूत्र सिद्धान्त हो तर्क व्याकरण भएया, पण्डित कहइ पण लोक ।
जिन प्रतिमा नइ हो जे मानइ नहीं, तेहनउ सगलो ही फोक । श्री.३।
जिन प्रतिमा हो आगइ णमुत्थुणं कहइ, पूजा सतर प्रकार ।
फल पिण बोल्या हो हित सुख मोक्षना, द्रोपदी नइ अधिकार ।श्री.४।
रायपसेणी हो ज्ञाता भगवती, जीवाभिगम नइ मांझ ।
ए सूत्र मानइ हो प्रतिमा मानै नहीं, म्हारी मां नइ वांझ । श्री.५।
साधुनइ बोल्या हो भावस्तव भला, श्रावक नइ द्रव्य भाव ।
ए विहुं करणी हो करतां निस्तरइ, जिन प्रतिमा सुप्रभाव । श्री.६।
पार्श्वनाथ हो तुझ प्रसाद थी, सद्दहणा मुझ एह ।
भव भव होजो हो समयसुन्दर कहइ, जिन प्रतिमा सुं नेह । श्री.७।

श्री पार्श्वजिन दृष्टान्तमय लघु स्तवन

हरख धरि हियड़इ मांहि अति घणउ,
तुह पसाय लही तुह गुण भणुं ।
जलधि पारइ प्रवहण उतरइ,
तिहां समीरण सहि सानिध करइ ॥१॥

तुमारुं सदाई पदाम्भोज-देशं,
नमइ राय राणा यथा भानि भेशम् ।
रली रंग हूआ सतां पूरितेहं,
तुम्हा देव दीठा सुरोमाञ्च-देहम् ॥४॥
इसी थाहि मीठो तवातीव[1]-मिष्टा,
घणी ठाम जोई मयानैव दृष्टा ।
सही वात साचीं विना चंद्र-बिंबं,
कदे होइ नांही सुधायाः कदम्बम् ॥५॥
तुम्हारा गुणा री तुलां यो दधानः,
निको हूँ न देखूँ जगत्यां प्रधानः ।
डरै डूंगरे किं गुणैः सुन्दराणां,
धरी ओपमा एकदा मंदराणाम् ॥६॥
तुम्हारी बड़ाई नु को वक्तु-मीश,
कलिकाल माहे कवि-र्वागरीशः ।
कही एतली ए मया भूरि भक्त्या,
सदा पाय सेवूं तवातीव-शक्त्या ॥७॥
इति स्तुतिं सज्जन[2]-संस्कृताभ्यां,
तव प्रभो वार्तिक-संस्कृताभ्याम् ।
त्वत्पादपद्मः प्रणमत्पुरन्दरः,
श्री पार्श्व चक्रे समयादि सुन्दरः ॥८॥

---

१ तवात्यन्त । २ प्राकृत

प्रभु चतुर्गति भमि बहु दुह सही,
हुयउ निर्भय तुह सरणउ लही।
भमिय चिहु खूणइ बिचि मइं गयउ,
जिसउ सोगठ प्रभु निर्भय थयरउ ॥७॥

हिव अमीमय दृष्टि निहालियइ,
जिम चिरंगत पाप पखालियइ।
दुरिय दोहग दुख निवारियइ,
भव पयोनिधि पार उतारियइ ॥८॥

इम थुणयउ प्रभु पास जिणेसरू,
भविय लोय पयोय दिनेसरू।
सफल वीनतड़ी हिव कीजियइ,
समयसुन्दरि शिव सुह दीजियइ ॥९॥

इति श्रीपार्श्वनाथस्य-दृष्टान्तमयं लघुस्तवनं सम्पूर्णम्।

—:०:—

श्री जेसलमेर मण्डन महावीर-जिन विज्ञप्ति स्तवन

वीर सुणउ मोरी वीनती, कर जोड़ी हो कहुं मननी बात।
बालक नी परि वीनवुं, मोरा सामी हो तुं त्रिभुवन तात। वी.१।
तुम दरिसण विन हुं भम्यउ, भव मांहि हो सामी समुद्र मझार।
दुख अनंता मइं सह्या, ते कहितां हो किम आवइ पार। वी.२।

श्री पार्श्वजिन पंचकल्याणक लघु स्तवनम्

श्री पास जिणेसर सुख करणो, प्रणमीजइ सुरपति नत चरणो ।
नील कमल सामल वरणो, निज सेवक सवि संकट हरणो ।१।
चैत्र मास वदि चउथि दिनइ, प्राणत सुरलोक थकी चवि नइ ।
आससेण नरपति भवनइ, अवतरियउ जिन चउदस सुपनइ ।२।
पोष मास वदि दसमी तणइ, दिन जायउ जिण सुपुण्य दिनइ ।
जय जयकार सुखइ पभणइ, सेवइ दिशि कुमरी हरखि घणइ ।३।
इग्यारस वदि पोष तणइ, तिहुयण जण नइ उपकार भणइ ।
पामी शुभ संयम रमणी, सेवउ भवियण जण जगत धणी ।४।
वदि चउथि जिन मधुमासइ, निरमल केवल थानइ भासइ ।
पाप पडल टाली पासइ, जिम सूर करी तम भर नासइ ।५।
सावण सुदि अट्ठमी दिवसइ, निज जन्म थकी सउ मइं वरसइ ।
पामी शिव रमणी हरसइ, जसु जस विस्तरियउ दिश विदशइ ।६।
मुझ आंगणि सुरतरु वेलि फली, चिन्तामणि करियल आवि मिली ।
जसु समरणि सुर धेनु मिली, सो सेवउ जिनवर रंग रली ।७।

कलश

इय पण कल्याणक नाम भणि श्री पास ।
संथुणयउ जिनवर निरुपम महिम निवास ॥
जिणचंद पसायइ लाभइ लील विलास ।
मुनि[1] समयसुन्दर नी पूरउमन नी आस ॥८॥

---

[1] गणि

राय श्रेणिक राणी चेलणा, रूप देखि हो चित चूका जेह।
समवशरण साधु साधवी, तइं कीधा हो आराधक तेह। वी.१३।
व्रत नहीं नहीं आखड़ी, नहीं पोसौ हो नहीं आदरी दीख।
ते पिण श्रेणिक राय नइ, तइं कीधा हो स्वामी आप सरीख। वी.१४।
इम अनेक तइं उधरचा, कहुं तोरा हो केता अवदात।
सार करउ हिव माहरी, मन आणउ हो सामी माहरी वात। वी.१५।
सूधउ संजम नवि पलइ, नहिं तेहवउ हो मुज दरसण नाण।
पण आधार छइ एतलउ, एक तोरउ हो धरुं निश्चल ध्यान। वी.१६।
मेह महीतल वरसतउ, नवि जोवइ हो सम विसमी ठाम।
गिरुया सहिजे गुण करइ, सामी सारउ हो मोरा वंछित काम। वी.१७।
तुम नामइं सुख संपदा, तुम नामइं हो दुख जावइ दूर।
तुम नामइं वंछित फलइ, तुम नामइ हो मुझ आणंद पूर। वी.१८।

॥ कलश ॥

इम नगर जेसलमेर मंडण तीर्थंकर चउवीसमउ
शासनाधीश्वर सिंह लंछन सेवतां सुरतरु समउ
जिनचंद्र त्रिशला मात नंदन, सकलचंद कलानिलउ
वाचनाचारज समयसुंदर संथुण्यउ त्रिभुवन तिलउ ॥१९॥

अहपवत्ति करण करि हूँ चल्यउ,
कर्मग्रन्थि थकी पाछउ वल्यउ ।
मयण निम्मिय दंत करी घणा,
किम चवायइ लोह तणा चणा ॥२॥

प्रभु तुम्हारी सेव समाचारी,
सयल सज्जन नंइ शिव सुह करी ।
तिस्यउ स्वाति नक्षत्रे जलहरू,
वरसतउ सत्रि मुक्ताफल करउ ॥३॥

हरि हरादिक देव तणी घणी,
भगति कीधी मुक्ति गमन भणी ।
नवि फलइ जिम जल सिंचावियउ,
उखर खेत्रइ श्रोदन वावियउ ॥४॥

सुगुरु संगे समकित पामियउ,
पणि कुदेव भणी सिर नामियउ ।
जिस्यो दूध संघाति एलियउ,
अहव अमृत सुं विष मेलियउ ॥५॥

प्रभु तुम्हारउ धर्म लही करी,
वलि गमाड़घउ मद मच्छर करी ।
भुवन नायक सुह दायक सही,
रयण रांक तणइ छाजइ नहीं ॥६॥

नयन कृतारथ आज थया मुझ, मूरति देखतां आप जी।
जीभ पवित्र थई वली माहरी, थुणतां श्री जिनराय जी।ध.१०।
आज श्रवण सफल थया माहरा, सुणतां जिन गुण ग्राम जी।
मन निर्मल थयउ ध्यान धरंता, अरिहंत नउ अभिराम जी।ध.११।
श्री अरिहंत कृपा करउ सामी, मांगूं वेकर जोड़ि जी।
आवागमन निवार अतुल बल, भव संकट थी छोड़िजी।ध.१२।
शासनाधीश्वर तूं मुझ साहिब, चउवीसमउ जिणचंद जी।
इकवीस सहस वरस सीम वरते, तीरथ तुम आणंद जी।ध.१३।

॥ कलश ॥

इस नगर श्री साचोर मंडण, सिंह लंछण सुख करउ।
सकलाप सुरति सकल मूरति, मात त्रिशला उरधरउ।
संवत सोलह सही सत्योतरइ, मास माह मनोहरउ।
वीनव्यउ पाठक समय सुंदर, प्रकट तूं परमेसरउ॥१४॥

श्री भोडुया ग्राम मण्डन वीरजिन गीतम्

राग—नट्ट नारायण

महावीर मेरउ ठाकुर। म०।
भोडुयइ ग्राम भली परइ भेट्यउ, तेज प्रताप प्रभाकर।१। म०।
सुन्दर रूप मनोहर मूरति, निरखित हरखित नागर।
सिद्धारथ राय मात त्रिशला सुत, सिंह लांछन सुख सागर।२। म०।

पर उपगारी तूं प्रभु, दुख भंजइ हो जग दीन दयाल।
तिण तोरउ चरणे हुँ आवियउ,सामी मुझ नई हो निज नयण निहाल
अपराधी पिण ऊधरचा, तंइ कीधी हो करुणा मोरा साम।
हुँ तो परम भक्त ताहरउ, तिण तारउ हो नवि ढील नउ काम। वी.४।
सूलपाणि प्रति बूझव्यउ, जिण कीधा हो तुझ नई उपसर्ग।
डंक दियउ चंड कोसियइ,तंइ दीधउ हो तसु आठमउ स्वर्ग। वी.५।
गोसालो गुण हीन थयउ, जिण बोल्या हो तोरा अवरण वाद।
ते पलतउ तइं राखियउ, शीतल लेश्या हो मूकी सुप्रसाद। वी.६।
ए कुण छइ इंद्र जालियउ, इम कहितां हो आयउ तुम तीर।
ते गौतम नइं तंइ कियउ, पोतानो हो प्रभुता नउ वजीर। वी.५।
वचन उथाप्या ताहरा, जे झगड्यउ हो तुझ साथि जमाल।
तेहनइ पणि पनरह भवे, शिव गामी हो तइं कीधो कृपाल। वी.७।
अइमत्तउ रिसी जे रम्यउ, जल मांहे हो बांधी माटी नी पाल।
तिरती मूकी काछली, तंइ तारचा हो तेहनइ तत्काल। वी.८।
मेघकुमर रिषी दूहव्यउ, चित चूक्यउ हो चारित थी अपार।
एकावतारी तेहनइ, तें कीधउ हो करुणा भंडार। वी.१०।
बारे वरस वेश्या घरइ, रहउ मूकी हो संयम नउ भार।
नंदिषेण पण ऊधरचउ, सुर पदवी हो दीधी अति सार। वी.११।
पंच महाव्रत परिहरी, गृहवासे हो वसिया वरस चौवीस।
ते पिण आर्द्रकुमार नइ,तइं तारचउ हो तोरी एह जगीश। वी.१२।

मेघकुमार नन्दिषेण मुनीसर,
आद्रकुमार संजम आदरयउ री ॥२॥ कृ० ॥
ऋषभदत्त खंधक परिव्राजक,
अइमुत्तउ ऋषि सुगतिवर्यउ री ।
श्री शिवराज महाबल धन्नउ,
राय उदायन दुक्ख हर्यउ री ॥३॥ कृ० ॥
पद्मनाभ तीर्थंकर हउगे,
वीर कहइ तुम्ह काज सर्यउ री ।
समयसुन्दर प्रभु तुम्हारी भगति तइ,
इहु संसार समुद्र तर्यउ री ॥४॥ कृ० ॥

श्री सुरियाभसुर नाटक दर्शन महावीर गीतम्

राग—सारंग

रचति वेष करि विशेष, नयण अंजण नीकि रेख,
नाचति तत तत थेइ थेइ, थोंगिगिंग थोगिगिंग सुन्दरी । र० ।
कुमर कुमरी अति अनूप, इक शत अठ रचत रूप ।
वाजति वाजित्र सरूप, घृणाण घृणाण घूघरी । र० ।१।
थेइ थेइ थेइ ठवति पाय, वेणु वीणा करि वजाय ।
झें झें झंझरिय लाय, रणण रणण नेउरी ।
सुरियाभ सुर करि प्रणाम, मांगति अब मुक्तिधाम ।
समयसुन्दर सुजस नाम, जय जय जय सांभरी । र० ।२।

श्री साचोर तीर्थ महावीर जिन स्तवनम्

धन्य दिवस मइं आज जुहारयउ, साचोरउ महावीर जी।
मूलनायक अति सुंदर मूरति, सोवन वरण सरीर जी।ध.१।
जूनउ तीरथ जगि जाणीजइ, आगम ग्रंथइ साख जी
जिन प्रतिमा जिन सारखी जाणउ, भगवंत इण परि भाखजी।ध.२।
सत्रुँजइ जिम श्री आदीसर, गिरनारे नेमिनाथ जी।
मुनिसुव्रत स्वामी जिम भरु अच्छइ, मुक्तिनउ मेलइ साथ जी।ध.३।
मूलनायक जिम मथुरा नगरी, पार्श्वनाथ प्रसिद्ध जी।
तिम साचोर नगर मंइ सोहइ, श्री महावीर समृद्ध जी।ध.४।
तीर्थंकर नउ दर्शन देख्यउ, मइ उगमते सूर जी।
निज समकित निर्मल थावइ, मिथ्यात्व जावइ दूर जी।ध.५।
आर्द्रकुमारे समकित पाम्यउ, जिनवर प्रतिमा देख जी।
चउद पूरवधर भद्रबाहु स्वामी, तेहना वचन विशेष जी।ध.६।
सज्यंभव गणधर प्रतिबूझयउ, प्रतिमा कारण तेथ जी।
परभव मुक्ति ना सुख पामीजइ, हित सुख संपति एथ जी।ध.७।
चित्र लिखित नारी देखी नइ, उपजइ चित्त विकार जी।
तिम जिन प्रतिमा देखी जागइ, भक्ति राग अति सार जी।ध.८।
जिन प्रतिमा नइं जुहारवा जातां, पग थयउ मुझ सुपवित्र जी।
मस्तक पण प्रणमंतां माहरउ, सफल थयउ सुविचित जी।ध.९।

बांधव नी प्रभु अनुमति लेई, दान दयाल संवच्छर देई;
हेई सयल सनेह ।
मगसिर वदि दसमी दिन सामि, चरण रमणि मनि रंगइ पामि;
चांमीकर सम देह ॥१६॥

॥ ढाल ॥

तिहां थी करिय विहार, पड़िबोही अहिं;
चंड कोसिय जिणवरू ए ।
सामि सहइ उवसग्ग, निय सगति थकी;
धरणीधर धीरिम धरू ए ॥१७॥
शुभ जोगइ वयसाख, सुदि दशमी दिनइ;
मोह तिमिर भ नासतउ ए ।
पाम्यउ केवल नाण, भाग समोपम;
लोयालोय प्रकाशतउ ए ॥१८॥
समवशरण सुरकोड़ि, रचइ अनोपमा;
सामी वइसइ तसु परी ए ।
सुर नर तिरिय समक्खि, द्यइ जिण देसणा;
सयल लोय संसय हरी ए ॥१९॥
संचारइ सुरसार, सरसिज सुन्दर;
पाय कमल तलि प्रभु तणइ ए ।
सुरवर नी इग कोड़ि, जघन्य तणइ लेखइ;
सेव करइ हरखइ घणउ ए ॥२०॥

तारि तारि तीर्थंकर मोकूं, पर उपगारी कृपा कर।
समयसुंदर कहइ तू मेरउ साहिब, हूँ तेरइ चरण कउ चाकर।३। म०।

श्री महावीर देव गीतम्

ढाल—१ भलउ रे थयउ म्हारइ पूज्य जी पधार्या
२ भलु रे कीधु सामी नेम कुमार।

सामी सुंनइ तारउ भव पार उतारउ।
साहिब आवागमण निवारउ, महावीर जी सा० ॥१॥ आंकणी ॥
सामी तुम्हे त्रिभुवन जनना आधार।
सेवक नी करउ हिंव सार ॥ महा०॥२॥
सामी मोरइ एक तुम्हे अरिहंत देवा।
भवि भवि देज्यो पाय सेवा ॥ महा०॥३॥
श्रीः वर्धमान नमुं सिर नामो।
समयसुन्दर चा स्वामी ॥ महा०॥४॥

इति श्रीमहावीर देव गीतं सम्पूर्णम् ॥ १७ ॥

—×—

श्री महावीर गीतम्

राग—श्रीराग

नाचंति सुरिआम सुर वीर कइ आगइ
कुमरिय कुमर अट्ठोतर सउ रचि,
भगति जगति प्रभु चरण लागइ ॥१ ना०॥

श्रीभगवन्तं भक्त्या, सुरनिर्म्मितसमवशरणमध्यथम् ।
देवा देव्यो मनुजा, आर्या मुनयश्च सेवन्ते ॥ २ ॥

कथं नौम्यऽहं तं जिनस्तोतुमीशाः ।
सुभामा सोमराजीव युक्तानेसेन्द्राः (?) ॥ ३ ॥

प्रमुदित–हृदहं स्तुति–गुण–निकरे ।
मधुकर इव ते मधुमति कुसुमे ॥ ४ ॥

भ्रमति भ्राजमान सुतरां सर्व्व–लोके ।
तव कीर्त्ति–विशाला धवला हंस माला ॥ ५ ॥

दृष्टो मया–ऽर्त्तिहतो भाग्याद्भवं भ्रमता ।
श्रीवीतराग–जग–च्चूडामणि स्वमहो ॥ ६ ॥

शुक्लध्यान-श्रेणी वार्हन्, शुभ्रा दभ्रा प्रौढ़स्फूर्त्तौ ।
त्वन्मूर्त्तौ का वा पुण्याणां, रेजे रम्या विद्युत्माला ॥ ७ ॥
भव्यजीवकृतभावुकं, पापवृत्तवनपावकम् ।
साभजित जनत जिन, भद्रिका भवति या भृशम् ॥ ८ ॥
नाश्रयिति त्वां सद्गुणवन्तं, वञ्चित एवासौ गुणवृन्दा ।
या मधुकृत प्राणी भगवन्तं, चम्पकमालायामृतवन्तम् ॥ ९ ॥
क्षोभं नो प्रापयति कदाचित्सान्ते स्वास्तव गिरिधीर (?) ।
स्वर्गस्य स्त्री मदमदनेनोत्मत्ता क्रीड़ा करण विदग्धा ॥ १० ॥
लोकप्रदीपो किल (?) लोकः, पापावलीपंकपयोदनाथ ।
जीयाज्जगज्जन्तुहितप्रदाता, नमेन्द्रवंशाभरण प्रभो त्वं ॥ ११ ॥

श्री महावीर देव पट् कल्याणक गर्भित स्तवनम्

परम रमणीय गुण रयण गण सायरं,
 चरण चिंतामणी धरण जण सायरं ।
सयल संसयहरं सामियं सायरं,
 चरम तीर्थंकरं थुणिसु हूँ सायरं ॥ १ ॥
दसम सुरलोय थी चविय परमेसरी,
 मास आसाढ़ सिय छट्ठि गुण सुन्दरो ।
अवतरयउ उसभदत्तस्स रमणी तणइ,
 उयरि वरि सरुवरे हंस जिम सवि सुणइ ॥ २ ॥
तत्थ समयंमि सुरराय आसण चलइ,
 अवहि नाणेण तसु सव्व संसय टलइ ।
निरखए भरह खेत्तंमि तीर्थंकरो,
 अवतरयउ अज्ज माहण कुले जिणवरो ॥ ३ ॥
तयणु सुरराय आएस वसि लसी,
 संहरइ गब्भ हरिणेगमेसी वसी ।
मास आसू कसिण तेरसी निसभरे,
 अवतरयउ मात त्रिसला तणइ उरवरे ॥ ४ ॥
चैत्र सुदी तेरसी जिणवर जाइउ,
 राय सिद्धत्थ आणंद मनि पाइओ ।
छपन दिस कुंयरी मिलि आवि नृप मंदिरे,
 स्नान मज्जन करइ स्वामि ने बहुपरे ॥ ५ ॥

तव सुवचन पीयूषाभं करिष्यति नान्यथा ।
नरकगतितो नश्येत् प्राणी यथा हरिणी हरेः ॥ १६ ॥
दुःखोत्यादि परिथाति (?) सहने नोत्साहभाजो भृशं ।
सत्सांसारिक-सौख्य-लव-विषये व्यासक्तिमच्चेतसः ॥
संसाराम्बुधि-मज्जदंगिनिकरोत्तारे समर्थस्तवंतः (?) ।
साहाय्यं मम देहि संयमविधौ शार्दूलविक्रीडितम् ॥२०॥
ब्रह्माणं केपि देवं पुनरपि गिरिशं केपि नारायणं च ।
केचिच्छक्तिस्वरूपं पुनरपि सुगतं केचि दल्लाभिधानम् ॥
मुग्धाध्यायंत्यहं सद्गुणमणिजलधिं वीतरागं स्मरामि ।
को वांछेत्काचमालां यदि मिलति माहकांचिनी स्रग्धरायां।२१।
एवं छंदो जातिभिरभिष्टुतो वीतराग-गुण-लेश ।
इति वदति समयसुन्दरं, इह-पर-जन्मेस्तु जिनधर्म्मः ।२२।

—:(०):—

श्री शाश्वत तीर्थंकर स्तवनम्

शाश्वता तीर्थंकर च्यार, समरंतां संपति सुखकार ।१। शा०।
वांदू ऋषभानन वर्द्धमान, चन्द्रानन वारिषेण प्रधान ।२। शा०।
स्वर्ग मर्त्य अनइ पाताल, त्रिभुवन प्रतिमा नमुँ त्रिकाल।३। शा०।
पांचसउ धनुष छइ देह प्रमाण, कंचन वरणी कायाजाण।४। शा०।
अनादि अनंत सहिज नाम ठाम,समयसुन्दर करइ नित परणाम।५।

जिणवर काती मास, वदिहि अमावसी;
सिव रमणी रंगइ वरी ए।
गयणंगण सुरसार, वज्जिय दुन्दुभी;
महियलि महिमा विस्तरी ए ॥२१॥

ते नर नारी धन्न, नाम जपइ नित;
सामि तणा वलि गुण कहइ ए।
पामइ परमाणंद, नव निधि नइ सिधि;
मन वंछित फल ते लहइ ए ॥२२॥

॥ कलश ॥

इय पट् कल्याणक नाम आणी, वर्द्धमान जिणेसरो।
संथुणयउ सामी सिद्धि गामी, पवर गुण रयणायरो ॥
जिणचंद पय अरविंद सुन्दर, सार सेवा महुयरो।
गणि सकलचंद सुसीस जंपइ, समयसुन्दर सुहकरो ॥२३॥

इति श्री महावीरदेवपट् कल्याणक गर्भित बृहत्स्तवनम्।

—●):o:(●—

श्रीवीतरागस्तव–छन्दजातिमयम्

श्रीसर्वज्ञं जिनं स्तोष्ये, छंदसां जातिभिः स्फुटम्
यतो जिव्हा पवित्रा स्यात्, सुश्लोकोपि भवेद्भुवि ॥ १ ॥

HMIDT

हां हो एक तूं एक तूं दिल धरूँ, नाम पण जपूं मूंहि ।
समयसुन्दर कहइ माहरइ, एक अरिहंत तूंहि ॥ ए० ॥३॥

श्री जिन प्रतिमा पूजा गीतम्

राग—केदारा

प्रतिमा पूजा भगवंति भाखी रे,
मकरउ संका गणधर साखी रे ॥ प्र० १ ॥
द्रूपदि न ऊठि नारद देखी रे,
जिन प्रतिमा पूज्यां हरखीरे ॥ प्र० २ ॥
प्रतिमा पूजी सुर सुरियाभइरे,
रायपसेणीइ अक्षर लाभइरे ॥ प्र० ३ ॥
आणंद श्रावक पूजा कीधी रे,
गणधर देवे साख ते दीधी रे ॥ प्र० ४ ॥
सोहम सामी भगवती अंगइरे,
अक्षर लिपि नइ प्रथमइ रंगइरे ॥ प्र० ५ ॥
भद्रबाहु स्वामी कल्प सिद्धान्तइरे,
द्रव्य थिवर वंदइ खंतइ रे ॥ प्र० ६ ॥
चमरेन्द्र चित्त महं उपयोग आणयउरे,
अरिहंत चेइ शरणउ जाणयउ रे ॥ प्र० ७ ॥
प्रतिमा पूजा श्रावक करणी रे,
भवदुख हरणी पार उतरणी रे ॥ प्र० ८ ॥

रूप्य-सुवर्ण-सुरत्न मयोच्चैः, वप्र-सुमध्य-चतुर्मुख-मूर्त्तेः।
त्वं जन राजसि मानव-तिर्यग्, दिवस-दोधकर-प्रतिबोधैः॥ १२॥

मम चेतसि तीर्थकरोऽस्ति तमो, मद-दर्प्पति बिम्ब-रुचि-रुदये।
अघ-पातक दुतर दयाया (?) सहितोटकरः सुमतेः सुगतेः। १३।
अहिकुलं गरुडा-गमने यथा, तव जिनेश्वरसंस्तवने तथा।
अरिकरिज्वलनानल संभवं, द्रुत विलम्बित-मुग्र-भयं भवेत्। १४।
भव-भय-कानन-भेद-कुठारं, रतिपद सुन्दर-रूप-मुदारम्।
प्रणमत तीर्थकरं सुखकारं, चरण नमर (?) संतति-सारं॥१५॥
देवत्वदीय शरणं समुपागतं मां, संसार-सागर-भयादथ रक्ष रक्ष।
स्नात भवेषु बहुशः सुख-वृक्ष-लक्ष-वह्नी वसंततिलकात्मकुले कृपालो॥ १६॥

त्रिभुवनहितकर्त्ता दुःखदावाग्निहर्त्ता,
विषम-विषय-गर्त्ता संपतत्प्राणिधर्ता।
जिनवर जयताच्चां देहि मे मोक्षतत्त्वं,
कलि-गाढ ? न कृशानो मालिनीहारमानो॥ १७॥

अशरण-शरण-मरण-भय-हरण।
सुरपति-नरपति-शिवसुख-करण॥
जय जिनवर भव-जल-निधि-तरण।
गुणमणि-निकर-चरण-मय-धरण॥ १८॥

तिमिर-निकर-ध्वंश-सूर्य भवोदधि-तारणम्।
हित-सुखकर-भव्य-प्राणि-व्रजा-सुख-वारणम्॥

जिणिंद गुण गनि मन मोह्यु, जि०
समयसुन्दर प्रभु ध्याने मन मोह्यु ।२।म०।

सामान्य जिन विज्ञप्ति गीतम्

राग—केदारउ

जगगुरु तारि परम दयाल ।
जन्म मरण जरादि दुख जल, भव समुद्र भयाल ।१। ज० ।
हां हुँ दीन अत्राण अशरण, तूं हि त्रिभुवन भुवाल ।
स्वामि तेरइ शरणि आयउ, कृपा नयण निहालि ।२। ज० ।
कृपानाथ अनाथ पीहर, भव भ्रमण भय टालि ।
समयसुन्दर कहति सेवक, सरणागत प्रतिपालि ।३। ज० ।

श्री सामान्य जिन आंगी गीतम्

राग—मारुणी

नीकी प्रभु आंगी बणी जो, तांता हो हीयइ हरख न माय।
मणि मोतिण हीरे जड़ी, तेजइ हो आंगी झगमगि थाय ।१। नी.।
बांहि अमूलिक बहिरखा, काने काने दोय कुण्डल सार ।
मस्तकिं मुगट रयण जड़्यउ, हीयड़इ हो मोतिण को हार ।२। नी.।
ससि दल भाल तिलक मलउ, नयणे हो नीके कनक कचोल ।
प्रभु मुख पूनिम चंद्रमा दीपइ, दीपइ हो दरपण कपोल ।३। नी.।
मोहन मूरति निरखतां, भागे भागे हो दुख दोहग दूर ।
समयसुन्दर भगतिं भणइ, प्रगटे हो मेरे पुण्य पडूर ।४। नी.।

श्री सामान्य जिन स्तवनम्

प्रभु तेरो रूप बण्यो अति नीको । प्र० ।
पञ्च वरण के पाट पटम्बर, पेच बण्यो कसबी को । प्र०।१।
मस्तक मुकुट काने दोय कुंडल, हार हियइ सिर टीको ।
समकित निर्मल होत सकल जन, देख दरस जिनजीको । प्र०।२।
समवशरण बिच स्वामी विराजित, साहिब तीन दुनी को ।
समयसुन्दर कहइ ये प्रभु भेटे, जन्म सफल ताही को । प्र०।३।

श्री सामान्य जिन स्तवनम्

राग—पूरवी

सरण ग्रही प्रभु तारी, अब मंइ सरण० ।
मोह मिथ्यामत दूर करण कुँ, प्रभु देख्या उपगारी । अ. स. ।१।
मोह सङ्कट से बौत उवारथा, अब की बेर हमारी । अ. स. ।२।
समयसुन्दर की यही अरज है, चरण कमल बलिहारी । अ.स. ।३।

श्री अरिहंत पद स्तवनम्

राग—भूपाल

हां हो एक तिल दिल में आवि तुं, करइ करम नउ नाश ।
अनन्त शक्ति छइ ताहरी, जिम बनहिं दहइ घास ।। ए० ।।१।।
हां हो नाम जपइ हियइ तुं, नहीं तउ सिद्धि न होय ।
साद कीजइ ऊँचइ स्वरे, पण धरइ नहीं कोय ।। ए० ।।२।।

चत्तारि-अट्ठ-दस-दोयपदविचारगर्भितस्तवनम्

जिनवर भत्ति समुल्लसिय, रोमंचिय निय अंग ।
नाना विधि करि वरणवुं, आणी मनि उछरंग ॥ १ ॥
चार अट्ठ दस दोय जिन, वर्त्तमान चउवीस ।
अष्टापद प्रतिमा नमूं, पूरूँ मनह जगीस ॥ २ ॥
च्यार करीजइ अट्ठ गुण, दस वलि दुगुणा हुंति ।
नंदीसर बावन भुवन, सुरवर खयर नमंति ॥ ३ ॥
चत्त-अरि चत्तारि तिके, अट्ठ अनइ दस दोय ।
विहरमान जिन वीस इम, समरंतां सुख होय ॥ ४ ॥
अरि गंजण चचारि तिम, दस गुण कीजइ अट्ट ।
ते वलि दुगुणा सट्ठि सम, वन्दूं विजय विशिट्ट ॥ ५ ॥
चार अनइ अठ बार जिन, दस गुण दुगुणा सार ।
विसय चालीस नमूं सयल, भरहैरवय मझार ॥ ६ ॥
चार अनुत्तर गेविज, कप्पिय जोइस जाणि ।
अठ वलि व्यंतर प्रतिमा, दस भुवणेसर ठाणि ॥ ७ ॥
दो सासय पड़िमा, महियलि जिन चौवीस ।
त्रिभुवन मांहि प्रशंसिय, नाम जपूं निशदीस ॥ ८ ॥
अठ अनइ दस दोय मिलिय, हुन्ति अठारह तेह ।
चार गुणा बहुतरि सयल, त्रण चउवीसी एह ॥ ९ ॥

समयसुंदर कहइ जोज्यो विचारी रे,
प्रतिमा पूजा छइ सुखकारी रे ॥ प्र० ६ ॥

श्री पंच परमेष्ठि गीतम्

राग—परभाती

जपउ पंच परमेट्ठि परभाति जापं,
हरइ दूरि शोक संताप पापं ॥ १ जं० ॥
अठसट्ठि अक्खर गुरु सम्मानं,
सुख संपदा अष्ट नव पद निधानं ॥ २ जं० ॥
महामंत्र ए चउद पूरव निधारं,
भणपउ भगवती सूत्र धुरि तत्त्व सारं ॥ ३ जं० ॥
जपइ लाख नवकार जे एक चित्तं,
लहइ ते तीर्थंकर पद पवित्तं ॥ ४ जं० ॥
कहुँ ए नवकार केतुं वखाण,
गमइ पाप संताप पांच सार प्रमाणं (?) ॥ ५ जं० ॥
सदा समरतां संपजइ सर्व कामं,
भणइ समयसुंदर भगवंत नामं ॥ ६ जं० ॥

श्री सामान्य जिन गीतम्

राग—गुंड मल्हार

हरखिला सुरनर किन्नर सुन्दर,
माइ रूप पेखि जिनजी कउ ॥ १ ॥ चालि० ।

इति श्रीचत्तारिअट्ठदसदोयवंदिया— इति पदविचारगर्भित
सर्वतीर्थंकरवृहत्स्तवनम्
॥ श्रीजेसलमेरसंघसमभ्यर्थनया कृत संपूर्णम् ॥

---

१७ प्रकार जीव अल्प बहुत्व गर्भित स्तवनम्

अरिहंत केवल ज्ञान अनन्त, भव दुख भंजण श्री भगवंत ।
प्रणमु' बेकर जोड़ी पाय, जनम जनम ना पातक जाय ॥ १ ॥
मेरु मध्य आकाश प्रदेश, गोस्तनाकार रुचक समदेश ।
तिहां थी चारे दिशि नीसरी, शकट ऊधि सरिखी विसतरी ॥ २ ॥
सूक्ष्म जीव पांचा ना भेद, ते चिहुँ दिशि सरिखा ध्रु वेद ।
अल्प बहुत्व कहुँ बादर तणा, किण दिशि थोड़ा किण दिश घणा ।३।
जिहां बहु पाणी तिहां जीव बहु, वनस्पति विगलादिक सहु ।
कृष्ण पक्षि बहु दक्षिण दिशे, एहवु' तीर्थंकर उपदिशे ॥ ४ ॥

ढाल दूसरी— आव्यउ तिहां नरहर एहनी.

सामान्य पणे पश्चिम दिशि थोड़ा जीव, ।
पूर्व दिशि अधिका तिहां, नहीं गौतम दीव ॥
दक्षिण अधिका नहीं, शशि रवि गौतमकोइ ।
उत्तर दिशि अधिका, मान सरोवर होई ॥ ५ ॥
मान सरोवर तिहां छइ मोटउ, तिण तिहां अधिकउ पाणी ।
जिहां पाणी तिहां वनस्पति, बहु विगल सख्यादिक जाणी ॥

श्री तीर्थंकर समवशरण गीतम्

विहरंता जिनराय, आव्या त्रिभुवन ताय ।
मिलिया चतुर्विध देवा, प्रभु नी भगति करेवा ॥ १ ॥
विरचइ समवसरणा, भव भय दुख हरणा ।
त्रिगढउ विविध प्रकार, रूप सोवन वसुसार ॥ २ ॥
च्यार धरम चक्र दीपइ, गगन मंडलि रवि जीपइ
अद्भुत वृक्ष अशोक, निरखइ भवियण लोक ॥ ३ ॥
छत्र त्रय सिरि छाजइ, विहुँ दिसि चामर राजइ ।
देव दुंदुमी प्रभु वाजइ, नादइ अंबर गाजइ ॥ ४ ॥
जानु प्रमाण पुष्प वृष्टि, विरचइ समकित दृष्टि ।
ऊंची इन्द्रधज लहकइ, प्रभु जस परिमल महकइ ॥ ५ ॥
सिंहासनि प्रभु सोहइ, त्रिभुवन ना मन मोहइ ।
भामंडल । ठ भासइ, चिहुँ मुखि धर्म प्रकासइ ॥ ६ ॥
बइठी परषद बार, सांभलइ धरम विचार ।
निज भव सफल करंति, हियइ हरख धरंति ॥ ७ ॥
धन ते श्रावक जाण, तेहनुं जीव्युं प्रमाण ।
समवसरण जे मंडावइ, पुण्य भंडार भरावइ ॥ ८ ॥
एहवुं जिनवर रूप, सुंदर अतिहि सरूप ।
जोवंतां दुख जायइ, आणंद अंगि न माय ॥ ६ ॥
चिंता आरति चूरइ, श्री संघ वांछित पूरइ ।
जिनवर जगत्र आधार, समयसुन्दर सुखकार ॥१०॥

दक्षिण दिशि अधिका, असंख्यात गुण एह।
तिहां पुष्कावकीरण, नारकि ना बहु गेह ॥११॥
नारकी ना बहु गेह तिहां छइ, असंख्यात गुण पहुला।
दक्षिण दिशि भगवन्तइ भाख्या, कृष्ण पक्षी पिण बहुला ॥
कुण जाणे ए जीव घणा किहां, थोड़ा पणि किण ठामइ।
वीतराग ना वचन तहत्ति करि, मानीजइ हित कामइ ॥१२॥

ढाल ३ वेकर जोड़ी ताम—एहनी

पृथ्वीकाय ना जीव दक्षिण दिशि,
थोड़ा नरकावास भवन घणा ए।
भवन नइ नरकावास ते थोड़ा तिणइ,
अधिका उत्तर दिशि तणाए ॥१३॥
लवण मंइ शशि रवि द्वीप तिण पूरव दिशि,
पृथ्वी जीव अधिक कह्या ए।
अधिकउ गोतम द्वीप पश्चिम दिशि कह्यउ,
तिण अधिका जीव सद्दह्या ए ॥१४॥
पूरव पश्चिम जाण भुवन पति देव थोड़ा,
भवन थोड़ा तिहां ए।
उत्तर अधिक असंख दक्षिण ते थकी,
बहु बहु भवन अछइ इहांए ॥१५
पूरव नहीं पोलाड़ि थोड़ा व्यंतर अधिक,
अधोग्राम पश्चिमइ ए।

चउ चउगुणिये सोलहुय, अठ अठ गुणि चउसठि।
दस दस गुणिया एकसउ, अट्ठिसयं परमट्ठि ॥१०॥
दो उक्किट्ठ जहन्न पय, सत्तरि सय दस दिट्ठ।
पायकमल सवि प्रणमतां, दुख दोहग सवि नट्ठ ॥११॥
पूर्व विधि सहु एक सय, दुगुणा तिण सयसट्ठि।
पंच भरत जिन प्रणमियइ, त्रिण चउवीसि इगट्ठ ॥१२॥
चार गुणा दस अंक किय, अठ सय चालीस आणि।
पंच विदेहे खय दुग, तिण्हु काल जिन जाणि ॥१३॥
चार नाम जिन सासवाए, अठ चउ अरय दु वंदि।
दस ठवणारिय नरय सुर, गइ आगय दुय भेदि ॥१४॥
चउ अठ दस बावीस इम, वंश इक्खाग जिणंद।
जग गुरु जग उद्योत कर, दो हरि वंश दिणंद ॥१५॥
अष्टापद गिरनार गिरे, पावा चंप चत्तारि।
अठ दस दोय समेत शिखर सिद्ध नमूं सुखकार ॥१६॥

॥ कलश ॥

इम थुण्या अरिहंत शास्त्र सम्मत, करिय तेरइ प्रकार ए।
चत्तारि अठ दस दोय वंदिय, पद तणइ विस्तार ए।
जिनचंद वंदन सकलचंदन, परम आणंद पाम ए।
कर जोड़ि वाचक समयसुंदर, करइ नित परणाम ए ॥१७॥

उपजइ एथ मनुष्य तप संयम करी,
सुख भोग वैं भ्रम वेवता ए ॥२१॥

॥ कलश ॥

इम अल्प बहुत्व विचार चिहुँ दिशि,
सतर भेद जीवां तणउ।
श्री पन्नवणा सूत्र पदे तीजे,
तिहां विस्तार छइ घणउ ॥
मंइ तुम्ह वचने स्तवन कीधौ,
समयसुंदर इम भणइ।
मुझ कृपा करि वीतराग देव तुं,
जिम देखूं परतिख पणइ ॥२२॥

गति आगति २४ दण्डक विचार स्तवनम्

श्री महावीर नमूं कर जोड़ि, दण्डक मांहिं फेरा छोड़ि।
चउवीसी दण्डक ना ए नाम, गति आगति करवाना ए ठाम ॥१॥
नारिक साते दंडक एक, असुरादिक ना दस प्रत्येक।
पृथ्वी पाणी अग्नि नइ वायु, वनस्पति वलि पांचमी काय ॥२॥
ति चउरिन्द्री गर्भज वली, नर तिर्यंच कह्या केवली।
भवण जोतिष वैमानिक देव, चउवीस दंडक ए नित मेव ॥३॥

संख कलेवर कीटी बहुली, कमले भमर भमंत ।
जलचर जीव मच्छ पिण बहुला, अरिहंत इम कहंत ॥ ६ ॥
दक्षिण नैं उत्तर थोड़ा माणस सिद्ध ।
नेउं पिण थोड़ा, केवल निश्चय किद्ध ॥
पूरव दिशि अधिका, मोटो महाविदेह ।
पश्चिम दिशि अधिका, अधो ग्राम छे एह ॥ ७ ॥
अधोग्राम अधिका तिण त्रिणहे, अधिका जीव कहीजै
सिद्ध आकाश प्रदेशै सीझै, तिण प्रदेश रहीजै ॥
सिद्ध शिला उपरि जोयण नैं, चौवीसमइ ते भागे ।
सिद्ध रहइ तिण ठाम अनंता, अलोक छइ ते आगै ॥ ८ ॥
वाउ काय तिणी हिवइ, अल्प बहुत्व कहिवाय ।
जिहां घन तिहां थोड़ो सुखिर तिहां बहु वाय ॥
पूरव थोड़ा वाय नहीं पोलाड़ि प्रदेश ।
पश्चिम दिशि अधिकउ, अधो ग्राम सुविशेष ॥ ९ ॥
अधोग्राम सुविशेषइ, अधिकउ तेहथी उत्तर जाण ।
नारक भवन तणा आवास तिहां छइ बहु परिमाण ॥
तिहां थी दक्षिण दिशि ते अधिका तिण बहु वायु कहीजे ।
पूरव पश्चिम उत्तर दक्षिण, अनुक्रम अधिक लहीजै ॥१०॥
हिव अल्प बहुत्व कहुँ नारक जीव नउ एह ।
पूरव पश्चिम उत्तर दिशि सरिखउ तेह ॥

श्री घंघाणी तीर्थ स्तवनम्

ढाल १–प्रभु प्रणमुं रे पास जिणेसर थंभणो–

पाय प्रणमूं रे पद पंकज प्रभु पासना,
गुण गाइस रे मुझ मन सूधी आसना ।
घंघाणी रे प्रतिमा प्रगट थई घणी,
तसु उत्पत्ति रे सुणजो भविक सुहामणी ॥
सुहामणी ए वात सुणजो, कुमति शंका भांजस्यै ।
निर्मलो थास्यै शुद्ध समकित, श्री जिन शासन गाजस्यै ॥
धुम देश मण्डोवर महा, बल सूर राजा सोहए ।
तिहां गाम एक अनेक थानक, घंघाणी मन मोहए ॥१॥
दूधेला रे नाम तलाव छै जेहरउ,
तसु पूठइ रे खोखर नामइ देहरउ ।
तसु पाछै रे खिणंता प्रगट्यउ भुंहरौ,
परियागत रे जाणं निधान प्रगट्यो खरउ ॥
प्रगट्यउ खरउ भूंहरउ, तिण मांहि प्रतिमा अति भली ।
जेठ सुदी इग्यारस सोल बासठ, थिव प्रगट्यउ मन रली ॥
केतली प्रतिमा केहनी वलि, किण भराव्यउ भावसुँ ।
ए कउण नगरी किण प्रतिष्ठी, ते कहुँ प्रस्ताव सुँ ॥२॥
ते सगली रे पैंसठ प्रतिमा जाणियइ,
जिन शिवनी रे सगली विगत वखाणियइ ।

उत्तर दक्षिण एम अधिक अधिक कह्या,
नगर अधिक छइ अनुक्रमइ ए ॥१६॥

पूरव पश्चिम सम वेउ ज्योतिषी,
देवता थोड़ा ते दीपइ रहइ ए ।
दक्षिण अधिक विमान कृष्ण पक्षी बहु,
अधिक तिण अरिहंत कहइ ए ॥१७॥

उत्तर अधिक विशेष मान सरोवर,
क्रीड़ा करण आवइ इहां ए ।
देखी मच्छ विमान जाति स्मरण,
नियाणउ करि हुइ तिहां ए ॥१८॥

प्रथम चार देवलोक ते थोड़ा कह्या,
पूर्व पच्छिम सरखा मइ ए ।
उत्तर अधिक विमान पुष्पावकीरण,
दक्षिण कृष्ण पक्षी बहु ए ॥१६॥

पांचमा थी आठ सीम थोड़ा तिहुँ दिशे,
तिहां विमान सरिखा कह्या ए ।
दक्षिण अधिका देव कृष्ण पक्षी बहु,
समकित धारी सद्दह्या ए ॥२०॥

ऊपरलैं देवलोक सर्वार्थ सिद्ध सीम,
चिहुँ दिशि सरखा देवता ए ।

श्री ज्ञान पंचमी बृहत्स्तवनम्

ढाल १—गौड़ी मडण पास एहनी

प्रणमूं श्री गुरु पाय, निरमल न्यान उपाय।
पांचमि तप भणुं ए, जनम सफल गणुं ए ॥ १ ॥
चउवीसमउ जिण चंद, केवल न्यान दिणंद।
त्रिगढ़इ गह गहइ ए, भवियण नइ कहइ ए ॥ २ ॥
न्यान वड़उ संसार, न्यान मुगति दातार।
न्यान दीवउ कह्यउ ए, साचउ सरदह्यो ए ॥ ३ ॥
न्यान लोचन सुविलास, लोकालोक प्रकास।
न्यान विना पशु ए, नर जाणइ किसुं ए ॥ ४ ॥
अधिक आराधक जाणि, भगवती सूत्र प्रमाण।
ज्ञानी सर्व तइ ए, किरिया देस तइ ए ॥ ५ ॥
न्यानी सासो सास, करम करइ जे नास।
नारकि नइ सही ए, कोड़ि वरस कही ए ॥ ६ ॥
न्यान तणउ अधिकार, बोल्यउ सूत्र मझार।
किरिया छइ सही ए, पणि पछइ कही ए ॥ ७ ॥
किरिया सहित जउ न्यान, हुयइ तउ अति प्रधान।
सोनउ नइ सुहत ए, सांख दूधइ भरचउ ए ॥ ८ ॥
महानिशीथ मझार, पांचमि अक्षर सार।
भगवंत भाखिया ए, गणधर साखिया ए ॥ ९ ॥

नारक मरि नइ तिर्यंच थाइ, नरक गति नर तिर्यंच जाइ ।
असुरादिक दसनी गति एह, भू पाणी प्रत्येक वनस्पति जेह ॥४॥
तिर्यंच मनुष्य मंइ उत्पत्ति जोइ, आगति मनुष्य तिर्यंच नी होई ।
भूजल अग्नि पवन वण पंच, बिति चउरिन्द्री नर तिरजंच ॥५॥
ए दश पृथ्वी ना गति ना दीश, आगति नारकि विण ते बीस ।
जिम पृथ्वी तिम पाणी तणी, गति आगति बोले जग धणी ॥६॥
नर विण अग्नि नी गति नवपदे, आगति दस विघटै नवि कदे ।
जिम अग्नि तिम जाणउ वायु, गति आगति बेहुँ कहिवाय ॥७॥
पृथ्वी प्रमुख दसे दंड के, वनस्पति नी गति छइ विके ।
आगति नारक विण तेवीस, दंडक बोल्या श्री जगदीश ॥८॥
बे ते चउरिन्द्री दंडक त्रिहुं, गति आगति दस बोलनी कहुँ ।
गति आगति गर्भज तिर्यंच, चउवीस दंडक सगले संच ॥९॥
गर्भज मनुष्य चउवीस नइ सिद्धि, अगनि वाय आगति प्रतिषिद्धि ।
वण ज्योतिष वैमानिक तणी, गति गर्भज नर तिर्यंच भणी ।१०।
वली भूदग वण प्रत्येक सही, आवै नर नइ तिर्यंच वही ।
जीव तणी गति आगति कही, भगवंत भाखै संदेह नहीं ।११।
चौवीस दंडक नगर मझार, हूँ भम्यउ देव अनंती वार ।
दुख सहिया त्यां अनेक प्रकार, ते कहितां किम आवै पार ।१२।
वीनति करूं ए वारंवार, स्वामी आवागमण निवार ।
भगवती सूत्र तणइ अनुसार, समयसुन्दर कहै एह विचार ।१३।

नंदी सूत्र मइं ज्ञान वखाण्यउ, ज्ञान ना पांच प्रकार रे।
मति श्रुति अवधि अनइ मन पर्यव, केवल ज्ञान श्रीकार रे।पां० २।
मति अठावीस श्रुति चउदे वीस, अवधि छइ असंख्य प्रकार रे।
दोय भेद मन पर्यव दाख्यउं, केवल एक प्रकार रे।पां० ३।
चंद सूरज ग्रह नक्षत्र तारा, तेहं तेज आकास रे।
केवल ज्ञान समउ नहीं कोई, लोकालोक प्रकास रे।पां० ४।
पारसनाथ प्रसाद करी नइ, माहरी पूरउ उमेद रे।
समयसुंदर कहइ हूँ पण पामूं, ज्ञान नो पांचमउ भेद रे।पां० ५।

मौन एकादशी स्तवनम्

समवसरण बइठा भगवंत, धरम प्रकासइ श्री अरिहंत।
बारे परषदा बइठी जुड़ी, मगसिर सुदि इग्यारस बड़ी ॥ १ ॥
मल्लिनाथ ना तीन कल्याण, जनम दीक्षा नइ केवल ज्ञान।
अर दीक्षा लीधी रूवड़ी, मिगसर सुदि इग्यारस बड़ी ॥ २ ॥
नमि नइ उपनूं केवल ज्ञान, पांच कल्याणक अति परधान।
ए तिथिनी महिमा एवड़ी, मिगसर सुदी ग्यारस बड़ी ॥ ३ ॥
पांच भरत ऐरवत इम हीज, पांच कल्याजक हुवे तिम हीज।
पंचास नी संख्या परगड़ी, मिगसर सुदी ग्यारस बड़ी ॥ ४ ॥
अतीत अनागत गिणतां एम, दोढ सै कल्याणक थाये तेम।
कुण तिथि छइ ए तिथि जेवड़ी, मिगसर सुदी ग्यारस बड़ी ॥ ५ ॥

मूलनायक रे श्री पद्म प्रभू पासजी,
इक चौमुख रे चौवीसटउ सुविलास जी ॥
सुविलास प्रतिमा पास केरी, बीजी पणी ते वीस ए।
ते मांहि काउसग्गिया विहुं दिशि, बेउ सुन्दर दीसए ॥
वीतरागनी चउवीस प्रतिमा, वली बीजी सुन्दरु ।
सगली मिली नै जैन प्रतिमा, सैंतालीस मनोहरु ॥३॥
इन्द्र ब्रह्मा रे ईसर रूप चक्रेश्वरी,
इक अंबिका रे कालिका अर्द्ध नाटेश्वरी।
विन्यायक रे जोगणी शासनदेवता,
पासे रहइ रे श्री जिनवर पाय सेवता ॥
सेविता प्रतिमा जिण भरावी, पांच पृथ्वी पाल ए।
चन्द्रगुप्त संप्रति बिन्दुसार, अशोकचन्द्र कुणाल ए ॥
कंसाल जोड़ी धूप धाणी, दीप संख भृंगार ए।
त्रिसठिया मोटा तदा काल ना, एह परिकर सार ए ॥४॥

ढाल—दूसरी

मूलनायक प्रतिमा भली, परिकर अभिराम ।
सुन्दर रूप सुहामणउ, श्री पद्म प्रभु स्वाम ॥१॥
श्री पदम प्रभु सेवियइ, पातक दूरी पुलावइ ।
नयणे मूरति निरखतां, समकित निर्मल थावइ ॥२॥
आर्य सुहस्ती सूरीश्वरू, आगम सुत विहार ।
भोजन रंक भणी दियउ, लीधउ संयम भार ॥३॥

सामायक पोसह पडिकमणा, धर्म विशेष कराए।
साहमी भोजन भगति महोच्छव, दिन दिन होत सवाए। प०।२।
गीतारथ गुरु गुहिर गंभीर सरि, कल्प सिद्धांत सुणाए।
नर भव सफल किए नर-नारी, समयसुन्दर गुण गाए। प०।३।

श्री रोहिणी-तप स्तवनम्

रोहिणी तप भवि आदरो रे लाल,
भव भमतां विश्राम हितकारी रे।
तप विण किम निज आतमा रे लाल,
शुद्ध न थाय मन काम हितकारी रे। रो०।१।
दुरगंधा भव आदर्यो रे लाल,
जपियो वलि नवकार हितकारी रे।
तिहां थी रोहिणी ऊपनी रे लाल,
मघवा कुल जयकार हितकारी रे। रो०।२।
चित्रसेन मन भावती रे लाल,
सुख गमता निसदीस हितकारी रे।
वासपूज्य जिन बारमउ रे लाल,
समवसर्या जगदीस हितकारी रे। रो०।३।
चित्रसेन वलि रोहिणी रे लाल,
आठ पुत्र सुखकार हितकारी रे।
दीक्षा जिन हाथ सुं लइ रे लाल,
संयम सूं चितधार हितकारी रे। रो०।४।

ढाल २—फाग्रहरा नी, वे बांधव वंदण चल्या, एहनी

पांचमि तप विधि सांभलउ, पामउ जिम भव पारो रे ।
श्री अरिहंत इम उपदिसइ, भवियण नइ हित कारो रे । पां.।१०
मगशिर माह फागुण भला, जेठ आसाढ वइसाखा रे ।
इण पट मासे लीजियइ, सुभ दिन सद गुरु साखो रे । पां.।११।
देव जुहारी देहरइ, गीतारथ गुरु वांदी रे ।
पोथी पूजइ न्यान नी, सकति हुवइ तउ नांदी रे । पां.।१२।
वे कर जोड़ी भाव सु, गुरु मुखि करइ उपवासो रे ।
पांचमि पड़िकमणु करइ, पढइ पंडित गुरु पासो रे । पां.।१३।
जिणि दिन पांचमि तप करइ, तिण दिन आरंभ टालइ रे ।
पांचमि तवन थुइ कहइ, ब्रह्मचरिज पणि पालइ रे । पां.।१४।
पांच मास लघु पंचमी, जाव जीव उत्कृष्टी रे ।
पांच वरस पांच मास नी, पांचमी करइ सुभ दृष्टी रे । पां.।१५।

ढाल ३—पाय पणमी रे जिणवर नइ सुपसाउलइ, एहनी

हिव भवियण रे पांचमि उजमणउ सुणउ,
घर सारू रे वारु धन खरचउ घणउ ।
ए अवसर रे आवंता वली दोहिलउ,
पुण्य सोगइ रे धन पामंता सोहिलउ ।।
सोहिलउ धन वलि पामतां, पणि धरम काज किहां वली ।
पंचमी दिन गुरु पासि आवि, कीजियइ काउसग रली ।।

माल पहिरयां मुझ किरिया सूझइ,
चतुर हुयइ ते प्रतिबूझइ ।म्हारा।८।
समयसुन्दर कहइ उपधान वहियइ,
सुगति तणा सुख लहियइ ।म्हारा।९।

उपधान तप स्तवनम्

ढाल—एक पुरुष सामल सुकलीणउ, एहनी.

श्री महावीर धरम परकासइ, बइठी परखद बारजी ।
अमृत वचन सुनइ अति मीठा, पामइ हरख अपार जी ॥१॥
सुणो सुणो रे श्रावक उपधान वूहां, विन किम सूझइ नवकारजी ।
उत्तराध्ययन बहुश्रुत अध्ययन, एह भणयउ अधिकार जी ।२। सु.।
महानिशीथ सिद्धांत मांहे पणि, उपधान तप विस्तार जी ।
अनुक्रमि सुद्ध परंपरा दीसइ, सुविहित गच्छ आचार जी ।३। सु.।
तप उपधान वूहां विण किरिया, तुच्छ अल्प फल जाण जी ।
जे उपधान वहइ नर नारी, तेहनउ जनम प्रमाण जी ।४। सु.।
सूत्र सिद्धांत तणा तप उपधान, जोग न मानइ जेह जी ।
अरिहंत देव नी आण विराधइ, भमस्यइ बहु भव तेह जी ।५। सु.।
अघड़्या घाट समा नर नारी, विण उपधानइ होइ जी ।
किरिया करतां आदेस निरदेस, काम सरइ नहीं कोइ जी ।६। सु.।
एक घेवर वलि खांड सुं भरियउ, अति घणउ मीठउ थाय जी ।७। सु.।
एक श्रावक नइ उपधान वहइ तउ, धन धन ते कहिवाय जी ।८। सु.।

अनंत चौवीसी इण परि गिणो,लाभ अनंत उपवासां तणउ ।
ए तिथि सहु तिथि सिर राखड़ी,मिगसर सुदी ग्यारस वड़ी ॥ ६ ॥
मौन पणइ रह्या श्री मल्लिनाथ,एक दिवस संजम व्रत साथ ।
मौन तणी परिव्रत इम पड़ी, मिगसर सुदी इग्यारस वड़ी ॥ ७ ॥
अठ पुहरी पोसउ लीजियइ, चउविहार विधि सुँ कीजियइ ।
पण परमाद न कीजइ घड़ी, मिगसर सुदी इग्यारस वड़ी ॥ ८ ॥
वरस इग्यार कीजइ उपवास,जाव जीव पणि अधिक उलास ।
ए तिथि मोक्ष तणी पावड़ी, मिगसर सुदी इग्यारस वड़ी ॥ ९ ॥
उजमणउं कीजइ श्रीकार, ज्ञान ना उपगरण इग्यार इग्यार ।
करो काउसग्ग गुरु पाये पड़ी,मिगसर सुदी इग्यारस वड़ी ॥१०॥
देहरे स्नात्र करीजे वली, पोथी पूजीजइ मन रली ।
मुगति पुरी कीजइ ढूकड़ी, मिगसर सुदी इग्यारस वड़ी ॥११॥
मौन इग्यारस म्होटो पर्व, आराध्यां सुख लहियइ सर्व ।
व्रत पचखाण करो आखड़ी, मिगसर सुदी इग्यारस वड़ी ॥१२॥
जेसल सोल इक्यासी समइ, कीधूं स्तवन सहू मन गमइ ।
समयसुन्दर कहइ करउ घ्यांहड़ी,मिगसर सुदि इग्यारस वड़ी ॥१३॥

श्री पर्यूषण पर्व गीतम्

राग—सारंग

भलइ आये, पर्यूषण पर्व री भलइ आये ।
जिन मंदिर मादल धौंकार, पूजा स्नात्र मंडाए । प०।१।

ढाल ३—चउवीसमउ जिणराय रंगे पणमिय—

एक साते उपधान विधिसु जे वहइ,ते सूधी किरिया करइ ए।
खिण न करइ परमाद जीव जतन करइ,पूँजी पूँजी पगला भरइ ए।१३।
न करइ क्रोध कषाय हडसइ नहीं,मरम केहनउ नवि कहइ ए।
नाणइ घर नउ मोह, उत्कृष्टी करइ,साधु तणी रहणी रहइ ए।१४।
पहुर सीम सझाय करिय पोरसी भणी,ऊंघइ सरि बोलइ नहीं।
मन माहे भावइं एम,धन २ ए दिन,नर भव मांहि सफल सहीए।१५।
जे साते उपधान, विधी सेती वहइ,पहिरइ माल सोहामणी ए।
तेहनी किरिया सुद्ध,बहु फल दायक,करम निर्जरा अति घणीए।१६।
परभवि पामइ रिद्धि,देवतणा सुख,छत्रीस बुद्ध नाटक पडइ ए।
लाभइ लील विलास अनुक्रमि सिव सुख,चढती पदवी ते चडइए।१७

इम वीर जिनवर भुवन दिणयर, मात तिसला नंदणो,
उपधान ना फल कहइ उत्तम, भविय जण आणंदणो।
जिणचंद जुगपरधान सदगुरु, सकलचंद मुणीसरो,
तसु सीस पाचक समयसुंदर, भणइ वंछित सुख करो ॥१८॥

इति सप्तोपधानविचारगर्भितश्रीमहावीरदेवस्यबृहत्स्तवनं संपूर्णम्
कृतं श्री माहिम नगरे शुभं भवतु ॥

—:०:—

करम खपाये सुगते गया रे लाल,
घन धन रोहिणी नार हितकारी रे।
समयसुन्दर प्रभु वीनवे रे लाल,
तप थी शिव सुखसार हितकारी रे। रो०।५।

उपधान (गुरु वाणी) गीतम्

वाणि करावउ गुरु जी वाणि करावउ,
पूज जी अम्हे आया तुम्ह पासि। म्हारा।१।
कपूर कस्तूरी परिमल जास,
सखर सुगंध आए घउ वास। म्हारा।२।
आपणई मुखि मुझ वाचना देयउ,
ग्यान तणउ लाभ लेयउ। म्हारा।३।
गुरु पग पूजूं ज्ञान लिखावुं,
गीत मधुर सरि गाऊं। म्हारा।४।
विहुं वीसई नी बे बे वाणि,
छकंड् चउकड् नी एक आणि। म्हारा।५।
पांत्रीसड़े अठावीसड् विहुं तप केरी,
त्रिणे नवाणि करउ मेरी। म्हारा।६।
श्रीपूज्य जी नइ वांदू कर जोड़ि,
माल पहिरावानउं मुंनइ कोड़ि। म्हारा।७।

श्री अनाथी मुनि गीतम्

ढाल—१ माछीयड़ा नी
२ चांदलिया नी

श्रेणिक रयवाड़ी चढ्यउ, पेखियउ मुनि एकांत ।
वर रूप कांति मोहियउ, राय पूछइ कहउ रे विरतंत ॥ १ ॥
श्रेणिक राय हूँ रे अनाथि निग्रंथ ।
तिणं मइं लीधउ रे साध नउ पंथ ॥ श्रे० ॥ आंकणी ॥
इणि कोसंबी नगरी वसइ, मुझ पिता परिघल धन्न ।
परिवार पूरइ परवरचउ, हुँ छूं तेहनउ रे पुत्र रतन्न । श्रे.२ ।
एक दिवस मुझ वेदना, ऊपनी मंइ न समाय ।
मात पिता सहु झूरी रह्या, पणि केणइ रे ते न लेवाय । श्रे.३ ।
गोरड़ी गुण मणि ओरड़ी, मोरड़ी अबला नारि ।
कोरड़ी पीड़ा मइं सही, न किणइ कीधी रे मोरड़ी सार । श्रे.४ ।
बहु राजवैद्य बोलाविया, कीधला कोड़ि उपाय ।
बावना चंदन लावीया, पणि तउ ई रे समाधि न थाय । श्रे.५ ।
जग मांहि को केहनुं नहीं, ते भणी हुँ रे अनाथ ।
वीतराग ना ध्रम वाहिरउ, कोई नहीं रे मुगति नउ साथ । श्रे.६ ।
वेदना जउ मुझ उपसमइ, तउ हूं लेऊँ संजम भार ।
इम चींतवंतां वेदन गई, व्रत लीधउ रे हरष अपार । श्रे.७ ।
कर जोड़ि राजा गुण स्तवइ, धन धन ए अणगार ।
श्रेणिक समकित तिहां लहइ, वांदी पहुँचइ रे नयर मंझारि । श्रे.८ ।

ढाल २—आदे पोस पढम पखि दसमी निसि जिण जायउ, एहनी.

नउकार तणउ तप पहिलउ वीसइ आणि,
इरियावही नउ तप बीजउ वीसइ आणि।
इय विहुं उपधाने निछय नांदि मंडाण,
बारे उपवासे गुरु मुखी बे बे वाणि ॥८॥
पांत्रीसइ त्रीजउ णमुत्थुणं उपधान,
त्रि एह वायण उगणीस तप उपधान।
प्रधान अरिहंत चेइत चउथउ कइ एह,
उपवास अढाई वाणि एक गुण गेह ॥९॥
पांचमउ लोगस तप अट्ठावीसइ नाम,
साढा पनरह उपवास वायण त्रिण ठाम।
पुक्खर वरदी तप छट्ठउ छकइ सार,
साढा त्रिण उपवास वाणि एक सुविचार ॥१०॥
सिद्धाणं बुद्धाणं सातमउ उपधान माल,
उपवास करइ एक चउविहार ततकाल।
एक वाणी करइ वलि गुरु मुखि सरस रसाल,
गच्छ नायक पासइ पहिरइ माल विसाल ॥११॥
माल पहिरण अवसरि आणी मन उछरंग,
घर सारू खरचइ धन बहु भंगि।
राती जगइ आपइ ताजा तुरत तंबोल,
गीत गान गवावइ पावइ अति रंग रोल ॥१२॥

थाकौ थानि इन्द्रौ पतुं रे हां, माता मांहि इंद्र मेरे अरहन्ना ।
गउखि नट्टौ किण दिशि रे हां, नाग नवलै फंद मेरे अरहन्ना ।२।
बोलायौ ऊंनउ लीयउ रे हां, आणन्द लिह आवास मेरे अरहन्ना ।
हाव भाव विभ्रम करी रे हां, तरुणी पाड्यउ पासि मेरे अरहन्ना ।३।
मूक्यउ योवउ मंदरनी रे हां, भोगवइ भोग भरीर मेरे अरहन्ना ।
करम थी को छूटइ नहीं रे हां, करम नचावइ जीव मेरे अरहन्ना ।४।
गउख ऊपरि बइठउ थकउ रे हां, दीठी जननी आय मेरे अरहन्ना ।
गलियां मांहि भमती भमइ रे हां, पूछइ अरहन्न कहां मेरे अरहन्ना ।५।
विहरण वेला दाझि गयौ रे हां, त्यारउ म्हारउ अरहन्न पूत मेरे अरहन्ना ।
चारित्र थी चित चूकियउ रे हां, मोहनी मांहि मगन मेरे अरहन्ना ।६।
मइं माता दुखिणी करी रे हां, धिग धिग मुझ अवतार मेरे अरहन्ना ।
नारि तजी गिरि ऊतर्यउ रे हां, आयउ गुरु पासि सवार मेरे अर. ।७।
माता पणि आवी मिली रे हां, आणंद अंगि न माय मेरे अरहन्ना ।
पाप आलोया आपणा रे हां, पणि नाणि न पलाय मेरे अरहन्ना ।८।
तातीशिला अणसण लियउ रे हां, चढते मन परिणाम मेरे अरहन्ना ।
समयसुंदर कहइ माहरउ रे हां, त्रिकरण सुद्ध प्रणाम मेरे अरहन्ना ।९।

इति अरहन्नक गीतम् ॥ ५५ ॥

श्री अरहन्ना साधु गीतम्

विहरण वेला रिषि पांगुर्यो, तड़ तड़तड़ तावड़ि मांचर्यउ ।
सेरी मांहि भमतउ पांतर्यउ, भूख तरस लागी तान सांभर्यउ ।१।

साधु-गीतानि

श्री अइमत्ता ऋषि गीतम्

राग—कानरउ

वेडुली मेरी री, तरइ नीर विचाल अइमत्तउ रमइ बाल। वे०।
मुनि बांधी माटी पाल। जल थंभ्यउ तत्काल,
काचली मूकी विचाल, रिषी रामति याल।१। वे०।
साधु करइ निंदा हीला, अइमत्ता पड्या हइ ढीला।
प्रभु तुम सीख देयउ व्रत नीकइ पाल। महावीर कहइ सामी;
अइमत्तउ मुगति गामी, समयसुन्दर करइ वंदना त्रिकाल।२। वे०।

श्री अइमत्ता मुनि गीतम्

श्री पोलास पुराधिप सिजई, विजय नरिंद प्रचण्ड रे।
श्री इण नामइ तसु पटराणी, निरमल नीर अखण्डी रे।१।
धन धंन मुनिवर लघु वइ तप लीणउ, अइमत्तउ सुकुमाल रे।
तेहना गुण ना पार न लहियइ, वंदउ चरण विसाल रे।२। ध०।
तासु उयरि सर सीह समोपम, अइमत्तउ सुकलीणउ रे।
....
....

यह गीत श्री मो० द० देसाई संग्रहस्थित प्रति (पत्र ४ ६) से अपूर्ण मिला है।

वयण रंगीली रे नयणे वेधियउ, रिषि थंभ्यउ तिण ठारो जी ।
दासी नइ कहइ जाय उतावली,
ओ मुनि तेड़ी आणो जी ॥ अर० ॥३॥

पावन कीजइ रिषि घर आंगणउ, वहिरउ मोदक सारो जी ।
नव यौवन रस काया कंइ दहउ,
सफल करउ अवतारो जी ॥ अर० ॥४॥

चंद्रा वदनी रे चारित चूकव्यउ, सुख विलसइ दिन रातो जी ।
इक दिन गोखइ रमतउ सोगठइ,
तव दीठउ निज मातो जी ॥ अर० ॥५॥

अरहनक अरहनक करती मां फिरइ, गलियइ गलियइ मझारोजी ।
कहो किण दीठउ रे म्हारउ अरणलो,
पूछइ लोक हजारो जी ॥ अर० ॥६॥

उतर तिहांथी रे जननी पाय नमइ, मन मइं लाज्यो तिवारो जी ।
धिक धिक पापी म्हारा रे जीवनइ,
एह मंइ अकारज धार्यो जी ॥ अर० ॥७॥

अगन तपंती रे सिला ऊपरइ, अरणक अणसण लीधो जी ।
समयसुंदर कहइ धन्य ते मुनिवरु,
मन वंछित फल सीधो जी ॥ अर० ॥८॥

इति अरहनक मुनि गीतम्

मुनिवर अनाथी गावतां, करम नो त्रूटइ कोड़ि।
गणि समयसुंदर तेहना पाय,वांदइ रे बे कर जोड़ि। श्रे.६।

श्री अयवंती सुकुमाल गीतम्

नयरि उज्जयिनी मांहि वसइ, परिघल जेहनउ आयो जी।
भद्रा सुत सुख भोगवइ, बतीस अंतेउर सायो जी।१।
धन धन अयवंती सुकुमाल नइ, न चाल्युं जेहनुं ध्यानो जी।
एकण रात्रे पामियउ, नलिनि गुल्म विमानो जी।२। ध.।
सद्गुरु आवी समोसर्या, सांभलि नलणि अभ्रयणो जी।
जाति समरण पामियउ, संजम परम रयणो जी।३। ध.।
गुरु पूछी रे वन मांहि गयउ, काउसग्ग रह्यउ समसानोरे जी।
स्यालणी सरीर विलूरियउ, वेदना सही असमानो जी।४। ध.।
ततखिण सुर पद पामियउ, एहवा अयवंती सुकुमालो जी।
समयसुन्दर कहइ वंदना, ते मुनिवर नइ त्रिकालो जी।५। ध.।

श्री अरहन्नक मुनि गीतम्

ढाल—काची कली अनार की रे हां सूयड़ा रह्या रे लोभाय मेरे ढोलणा। ए गीतनी.

विहरण वेला पांगुरयउ हां, धूप तपइ असराल, मेरे अरहना।
भूख त्रिखा पीड़यउ घणुं हां, मुनिवर अति सुकुमाल मेरे अरहना।१।
माता करइ रे विलाप, भद्रो करइ रे विलाप। मे.॥ आंकणी॥

संबुज्झह किं बुज्झह, नहिं छइ राज नउ लागोजी।
वयर विरोध वारु नहीं, आलउ मन वयरागो जी ॥२॥ सं.॥

ए अवसर वलि दोहिलउ, माणस नइ अवतारो जी।
आरिज देस उत्तम कुल, पडवडी इंद्री अपारो जी ॥३॥ सं.॥

धरम सांभलिवुं दोहिलुं, सरदहणा वलि तेमो जी।
कां वांछउ राज कारिमउ, प्रतिबूझउ नहिं केमो जी ॥४॥ सं.॥

पुण्य कियां विण प्राणिया, परभवि पहुँचस्यइ जेहोजी।
बोधि बीज लहिस्यइं नहीं, भमस्यइ भव मांहि तेहोजी ॥५॥ सं.॥

राति दिवस जे जायइं छइं, पाछा नावइ तेहो जी।
खिण खिण त्रूटइं आउखुं, खीण पडइ वलि देहो जी ॥६॥ सं.॥

राज ना काज रूड़ा नहीं, तुच्छ छइ जेहना सुक्खो जी।
भेदन छेदन ताड़ना, नर तणां बहु दुखो जी ॥७॥ सं.॥

गरभ रह्यां माणस गलइ, बालक वृद्ध जुआणो जी।
सींचाणउ झड़पइ चिड़ी, पणि चालइ नहीं प्राणोजी। ८ ।सं०।

अथिर जाणी इम आउखूं, किम कीजइ परमादो जी।
नरकां न राज्य न वांछियइ, ते मांहि नहिं को सवादो जी। ९ ।सं०।

कुटुंब सहु को कारिमुं, पुत्र कलत्र परिवारो जी।
स्वारथ विण विहड़इ सहु, कुण केहनउ आधारो जी ।१०।सं०।

भवनपती व्यंतर वली, जोतषी वैमानिक देवो जी।
चक्रवर्ती राणा राजवी, बलदेव नइ वासुदेवो जी ।११।सं०।

म्हारउ अरहनउ, किहां दीठउ रे म्हारउ अरहनउ ।।आंकणी।।
गउखइ चढि दीठउ गोरड़ी, आवउ आ मंदिर ओरड़ी ।
काया कां सोखउ कोरड़ी, मन आशा पूरउ मोरड़ी ।।२ म्हां०।।
अपि चूकउ चारित थी पड़यउ, ऊंचो आवास जइ चड्यउ ।
भोगवइ काम भोग नारि नड़्यउ, विघटइ किम घाट दैवइ घड्यउ
।।म्हां० ३।।
भद्रा माता इम सांभलि, गहिली थई जोयइ गलिय गली ।
आवउ विहरण वेला टली, हा हा मोहनी करम महावली ।।म्हां०४।।
गउखइ बइठइ मां ओलखी, धिग धिग सरस्यइ सुख पखी ।
मइं मूढइ मात कीधी दुखी, नव मास वस्यउ जेहनी कूखी ।।म्हां. ५।।
नारी तजि नीचउ उतरयउ, संवेग मारग सूधउ धरयउ ।
सिला ऊपरि संथारउ करयउ, वेगइ सुरसुँदरि नइ वरयउ ।।म्हां०६।।
धन धन ए मुनिवर अरहन्नउ, अणसण ऊपरि थयउ इक मन्नउ ।
अधिकार भएयउ मइं एहनउ, समयसुंदर नइ ध्यान तेहनउ।।म्हां.७।।

श्री अरहनक मुनि गीतम्

अरणिक मुनिवर चाल्या गोचरी, तड़कइ दाझइ सीसो जी ।
पाय उवराणइ रे वेलु परि जलइ,
तन सुकुमाल मुनीसो जी ।। अर० ।।१।।
मुख कमलाणउ रे मालती फूल ज्युं, ऊभउ गोख नइ हेठो जी ।
खरइ दुपहरइ दीठउ एकलउ,
मोही मानिनी - मीठो जी ।। अर० ।।२।।

क्षण क्षण करम नो क्षय करी,संवेग शुद्ध धरंतो जी।
भव सायर बोहामणउ, ते नर तुरत तरंतो जी।२२।सं०।
लेपी भींति घसी जती, अनुक्रमि निर्लेप थायो जी।
आकरा तप करतां थकां, निरमल थायइ कायो जी।२३। सं०।
आवि तुं पुत्र उतावलउ, अम्ह नइ तूं आधारो जी।
तुझ विण कुण वूढापणइ,करिस्यइ अम्हारी सारो जी।२४।सं०।
विरह विलाप घणा करी, कुटंब चुकावइ साधो जी।
पणि चूकइ नहीं साधु जी, जिण परमारथ लाधो जी।२५।सं०।
मोहनी करम लीधां थकां, जे चूकइ अविकारो जी।
ते संसार मांहे भमइं, देखइं दुक्ख अपारो जी।२६।सं०।
ए संसार असार छइ, छोड़उ राज नइ रिद्धो जी।
तप संजम तुम्हें आदरउ, शीघ्र लहउ जिम सिद्धो जी।२७।सं०।
तात नी देसणा सांभली, वारू कीधउ विचारो जी।
राज नइ रिद्धि छोड़ी करी, लीधउ संजम भारो जी।२८।सं०।
कीधा तप जप आकरा, उपसर्ग परीसा अपारो जी।
अष्टापद ऊपरि चड्या, अठाणु अणगारो जी।२९।सं०।
श्री आदीसर सूँ सहु, सीधा करम खपावो जी।
पाम्याँ शिव सुख सासता, सुध संजम परभावो जी।३०।सं०।
सूगडांग सूत्र उपरि कीयउ, ए संबंध प्रधानो जी।
वयराग आणी वांचज्यो, धरिज्यो साध नुं ध्यानो जी।३१।सं०।

श्री आदीश्वर ९८ पुत्र प्रतिबोध गीतम्

शांतिनाथ जिन सोलमउ, प्रणमुं तेहना पाय ।
दरसन जेहनुं देखतां, पातक दूरि पुलाय ॥१॥
सूगडांग सूत्रइ कह्या, ए बीजइ अभयण ।
वैताली नामइ वली, वीतराग ना वयण ॥२॥
एहु तणि उतपति कहुं, निर्युक्ति नइं अणुसार ।
भद्रबाहु सामी भणइ, चउद पूरवधर सार ॥३॥
श्री अष्टापद आविया, आदीसर अरिहन्त ।
साध संघाति परिवरया, केवल ज्ञान अनन्त ॥४॥
इण अवसरि आव्या तिहां, अट्ठाणू सउ पुत्र ।
वांदी नइ करइ वीनति, तात सुणउ घर सूत्र ॥५॥
भरत थयउ अति लोभियउ, न गिणयउ बांधव प्रेम ।
राज उदाल्या अम्ह तणा, हिव कहउ कीजइ केम ॥६॥
राज काज महिलां घणुं, घइ दुर्गति ना दुख ।
ते भणी ते उपदेस द्यउ, जिम ए पामइ सुख ॥७॥
पुत्र भणी प्रतिबोधिवा, ए अध्ययन कहंति ।
अट्ठाणुं सुत सांभलइ, उरगारी अरिहन्त ॥८॥

ढाल—धन धन अयवंती सुकुमल नाइ, एहनी ढाल ।

आदीसर इम उपदिसइ, ए संसार असारो जी ।
अंगार दाहक नी परि, तृपति न पामइ लगारो जी ॥१॥ सं.॥

तेहनउ पुत्र हो इलापुत्र प्रधान कि,
माल घणउ मन ऊलसइ ।१।
वंस उपरि हो चड्यां केवल न्यान कि,
इला पुत्र नइ ऊपनउ ।
संसार नउ हो नाटक निरखंत कि,
संवेग सहु नइ संपनउ ।२।वं०।
वंस ऊपरि हो चड़ी खेलइ जेह कि,
ते नडुया तिहां आविया ।
भली रामति हो रमइ नगरी मांहि कि,
नर नारि मनि भाविया ।३।वं०।
नाडुया नइ हो महा रूप निधान कि,
सोल वरस नी सुन्दरी ।
गीत गायइ हो वायइ डमरू हाथि कि,
जाण प्रवीण जोवन भरि ।४।वं०।
इला पुत्र नउ हो मन लागउ तेथि कि,
कहइ कन्या द्यउ मुज्झ नइ ।
कन्या समउ हो सोनउ द्यु तोलि कि,
तुरत नायक हुं तुज्झ नइ ।५।वं०।
नायक कहइ हो आपूं नहीं एह कि,
कुटुम्ब आधार छइ कुंयरी ।
अम्हा मांहे हो आवि कला सीखि कि,
पछइ परणाविस सुंदरी ।६।वं०।

ते पणि प्रभुना आंपणी, छोडइ पामता दुक्खो जी।
भय मोटउ मरिवा तणउ, संसार मांहि नहि सुक्खो जी ।१२।सं०।
काम भोग घणा भोगवां, त्रिपति पूरी जिम थायो जी।
ते मूरिख निज छांहड़ी, आपड़िवा नइ उजायो जी ।१३।सं०।
बंधण थी ताल फल पड़यउ, तेहनइ को नहीं त्रायो जी।
तिम जीवित त्रूटइ थकइ, केहनइ न चालइ प्रायो जी ।१४।सं०।
परिगृह आरंभ पाडुया, पाडुया पाप ना कर्मो जी।
पाडीजइ परभवि गयां, ते किम कीजइ अधर्मो जी ।१५।सं०।
ज्ञान दरसण चारित विना, मुगति न पामइ कोयो जी।
कष्ट करइ अन्य तीरथी, मुगति न पामइ सोयो जी ।१६।सं०।
विरमउ पाप थकी तुम्हे, जउ पूरब कोडि आयो जी।
धरम विना धंध ते सहु, सफल संजम सुधायो जी ।१७।सं०।
जे खूता काम भोगवइ, राग बंधण पास बंधो जी।
ते भमिस्यइ संसार मइ, दुख भोगवता अबुद्धो जी ।१८।सं०।
पृथिवी जीव समाकुली, तेहनइ न दीजइ दुक्खो जी।
समिति गुपति व्रत पालियइ, जिम पामीजइ सुखो जी ।१९।सं०।
जे हिंसादिक पाप थी, विरम्यां श्री महावीरो जी।
तिण ए धरम प्रकासियउ, पहुँचाडइ भव तीरो जी ।२०।सं०।
गृहस्थावास मूकी करी, जे ल्यइ संजम भारो जी।
बावीस परिसा जे सहइ, चालइ सुद्ध आचारो जी ।२१।सं०।

तउ नट्टइ हो हूँ लेउं एह कि,
ध्यान भुंडुं मन मइं धरइ ।१२। वं० ।
इण अवसरि हो ऊंचइ चडचइ कोइ कि,
साध नइ नयणे निरखियउ ।
ए धन धन हो ए कृत पुण्य साध कि,
हियडउ दरसण हरखियउ ।१३। वं० ।
मंइ कीधूं हो ए अधम नुं काम कि,
इम आतमा समझावतां ।
इलापुत्र हो लह्युं केवल न्यान कि,
अनित भावना मनि भावतां ।१४। वं० ।
इम राजा हो राणीं पणि जाणि कि,
नट्टइ पणि केवल लह्युं ।
पोतानउ हो अवगुण मनि आणि कि,
समकित सुधुं सरदह्युं ।१५। वं० ।
सोना नउ हो थयउ कमल ते वंस कि,
देवता आवि सानिधि करी ।
सोध दीधउ हो ध्रम नउउपदेस कि,
परपदा ते पणि निस्तरी ।१६। वं० ।
इलापुत्र तउ हो गयउ मुगति मझारि कि,
सासती पामी संपदा ।

हाथी साइ उद्यम हूयउ, तिण ए करावी ढालो जी।
समयसुन्दर करइ वंदणा, ते साधजी नइ त्रिकालो जी।२२।सं०।
इति श्रीआदीश्वरप्रतिबोधितनिज १८ पुत्रसाधुगीतम्॥ ३६॥

श्री आदित्ययशादि ८ साधु गीतम्

राग—भूपाल, प्रहरात् कालहरा गेया।

भावना मनि सुद्ध भावउ, धरम मांहि प्रधान रे।
भरत आरीसा भवन मइं, लह्यु, केवल ज्ञान रे।१।भा०
आदित्य नइ महाजसा अतिबल बलभद्र नइ बलवीर्य।
दंडवीरिज जलवीरिज राज कीरतिवीरिज धीर्य रे।२।भा०।
आठ राजा एण अनुक्रमि, इन्द्र थाप्या जाणि रे।
रिषभदेव ना मुकुटधारी, अरध भरत मइं आणि रे।३।भा०।
भरत नी परि भवन मांहि, पाम्युं केवल ज्ञान रे।
समयसुन्दर तेह साधु नुं, धरइ निर्मल ध्यान रे।४।भा०।
इति श्री आदित्ययशादि ८ साधु गीतम्॥ ३७॥

श्री इला पुत्र गीतम्

राग—मल्हार
ढाल-मोरा साहिब हो श्री शीतलनाथ कि
वीनति सुणउ एक मोरड़ी। एह गीतनी.

इलावरध हो नगरी नुं नाम कि,
सारथवाहि तिहां वसइ।

तिहां राय चिंतइ रे राजियउ, लुब्धो नटवी रे साथ।
जो पड़इ नटवो रे नाचतउ, तो नटवी मुझ होथ।क०। ६।
दान न आपइ रे भूपति, नट जाणइ नृप वात।
हूँ धन वंछूं रे राय नउ, राय वंछइ मुझ घात।क०। ७।
तिहां थी मुनिवर पेखियउ, धन धन साधु नीराग।
धिक् धिक् विषया रे जीवडा,मनि आणयउ वइराग।क०। ८।
संवर भावइ रे केवली, तत्खिण करम खपाय।
केवलि महिमा रे सुर करइ समयसुंदर गुण गाय।क०। ९।

श्री उद्यन राजर्षि गीतम्

सिंधु सोवीरइ वीतभउ रे,पाटण रिद्धि समृद्धो रे।
राज करइ तिहां राजियउ रे, उदायन सुप्रसिद्धो रे ॥ १ ॥
मोरे कोडडे महावीर पधारइ वीतभइ रे, तउ हूँ सेवुँ पाय ॥आं०॥
मुगट बद्ध राजा दसे रे, सेवइ वेकर जोड़ो रे।
कुमर अभीचि कला निलउ रे, पूरइ वंछित कोड़ो रे। २ ।मो.।
एक दिन पोसउ ऊचरयउ रे,वीर जिणंद वखाणयउ रे।
धरम जागरिया जागतां रे, एह मनोरथ आणयउ रे। ३ ।मो.।
धन धन गाम नगर जिहां रे,विहरइ वीर जिणंदो रे।
धन धन नर नारी तिके रे, वाणि सुणइं आणंदो रे। ४ ।मो.।
भाग संजोगइ आवइ इहां रे,जिणवर जग आधारो रे।

वात मानी हो इलापुत्रइ एह कि,
ऐ ऐ काम विटम्बणा।
अध्री डोलइ हो अन्तर नइ भोलइ कि,
आगइ पणि चूका घणा।७।वं०।
मूँकी नइ हो कुटुम्ब परिवार कि,
विहारियउ नटुए भिल्यउ।
वित्त लेवा हो वीवाह निमित्त कि,
राजा रंजवा नीकल्यउ।८।वं०।
वंस मांड्यउ हो ऊंचउ आकाश कि,
ते ऊपरि खेलइ कला।
राय राणी हो सगला मिल्या लोक कि,
देखइ ते रहइ वेगला।६।वं०।
ते नटुइ हो करि सोल शृंगार कि,
गीत गायइ रलियामणा।
पलि वायइ हो डमरू ले हाथि कि,
विरुद बोलइ नटुया तणा।१०।वं०।
जिण वेला हो नटुयउ रमइ घात कि,
राजा ते जोयइ नहीं।
जोयइ नटुइ हो साम्ही दे दृष्टि कि,
नटुइ पणि जोयई रही।११।वं०।
इम जाणई हो कामातुर राय कि.
नटुयउ पडि नई जउ मरई।

ढाल—मधुकरनी

आडंबर मोटइ करी, राजा लीधी दीख, मुनिवर ।
श्री वीर सइं हथि दीखियउ, सूधी पालइ सीख मुनिवर ॥१४॥
चरम राज ऋषि चिर जयउ, नाम उदायन राय, मुनिवर ।
गिरुयां ना गुण गावतां, पातक दूरि पुलाय, मुनिवर ॥१५॥
तप करि काया सोखवी, लीधा अरस आहार, मुनिवर ।
रोग सरीरइ ऊपनउ, साधजी न करइ सार, मुनिवर ॥१६॥
औषध वैद्य बतावियउ, दधि लेज्यउ रिषि राय, मुनिवर ।
वीतभय पाटणि आविया, गोचरि गोयलि जाय, मुनिवर ॥१७॥
राज लेवा रिषि आवियउ, पिशुन उपाड़ी वात, मुनिवर ।
केसी विष दिवरावियउ, कीधउ साध नउ घात, मुनिवर ॥१८॥
साधु परीसउ ते सह्यउ, आण्यउ उत्तम ध्यान, मुनिवर ।
कीधी मास संलेखना, पाम्यउ केवल न्यान, मुनिवर ॥१९॥
मुगति पहुँता मुनिवरु, भगवती अंग विचार, मुनिवर ।
समयसुंदर कहइ प्रणमता, पामीजइ भवपार, मुनिवर ॥२०॥

॥ इति श्री उदयन राजर्षि गीतम् ॥२८॥

श्री खंदक शिष्य गीतम्

ढाल—अरध मंडित नारी नागिला, एहनी.

खंदक सूरि समोसरया रे,
पांच सइ मुनि परिवार रे ।

कर जोड़ी हो करूं चरण प्रणाम कि,
साध नुं ध्यान धरूं सदा ।१७।वं०।
कडुयामती हो भलउ रायसंघ साह कि,
थिरादरइ आग्रह[१] कियउ ।
अमदाबाद हो ईदलपुर मांहि कि,
समयसुन्दर गीत करि दीयउ ।१८।वं०।

इति इलापुत्र गीतम् ॥११॥

(२) श्री इलापुत्र सज्झाय

नाम इलापुत्र जाणियइ, धनदत्त सेठ नउ पूत ।
नटवी देखी रे मोहियउ, ते राखइ घर सूत ॥ १ ॥
करम न छूटइ रे प्राणिया, पूरब नेह विकार ।
निज कुल छोड़ी रे नट थयउ, नाणी सरम लगार ।क०। २ ।
इक पुर आयउ रे नाचवा, उंचउ वंस विवेक ।
तिहां राय जोवा रे आवियउ, मिलिया लोक अनेक ।क०। ३ ।
दोय पग पहिरी रे पावड़ी, वंश चड्यो गज गेलि ।
निरधारा ऊपरि नाचतउ, खेलइ नव नवा खेलि ।क०। ४ ।
ढोल बजावइ रे नाटकी, गावइ किन्नर साद ।
पाय तलि घूघरा घम घमइ, गाजइ अंबर नाद ।क०। ५ ।

---

१ आदर

श्री गजसुकुमाल मुनि गीतम्

ढाल—गजरा नी—

नयरि द्वारामती जाणियइ जी, कृष्ण नरेसर राय।
नेमीसर तिहां विहरता जी, आव्या त्रिभुवन ताय ॥१॥
कुँयर जी तुम्ह विन घड़िय न जाय।
बोलइ माता देवकी जी, तुम्ह दीठां सुख थाय ॥कुँ०॥आंकणी॥
प्रतिबूधउ प्रभु देसणा जी, जाण्यउ अथिर संसार।
गयसुकुमाल मुनिसरू जी, लीधउ संजम भार ॥कुँ०॥२॥
राति देवकी चींतवइ जी, जउ किम ऊगइ रे सूर।
तउ हूँ वांदूँ वालहउ जी, गयसुकुमाल सनूर ॥कुं०॥३॥
प्रभु वांदी नइ पूछियूँ जी, किहां म्हारउ गयसुकुमाल।
आतमारथ निज साधियउ जी, तिण मुनिवर ततकाल ॥कुं०॥४॥
समसाणइ उपसर्ग सही जी, पाम्युं केवल ज्ञान।
मुगति पहुँता मुनिवरू जी, समयसुन्दर तसु ध्यान ॥कुं०॥५॥

इति श्री गजसुकुमाल गीतम् ॥३॥

श्री थावच्चा ऋषि गीतम्

ढाल—जननी मन आशा घणी, एहनी.

नगरी द्वारिकां निरखियइ, देवलोक समानो।
थावच्चा सुत तिहां वसइ, पुण्यवंत प्रधानो ॥१॥

जउ इहां आवि समोसरइ रे*,सफल करूं अवतारो रे ।५।मो.।
एह मनोरथ जाणिनइ रे, जगगुरु करइ विहारो रे ।
चंपा नयरी थी चल्या रे, उदायन उपगारो रे । ६ ।मो.।
वीतभय नगरि समोसर्या रे, मृगवन नाम उद्यानो रे।
समवसरण देवइ रच्युं रे, बइठा श्री व्रधमानो रे । ७ ।मो.।
राजा वांदण आवियउ रे, हय गय रथ परिवारो रे ।
पंचाभिगम साचवी रे, धरम सुणइ सुविचारो रे । ८ ।मो.।
प्रतिबुधउ प्रभु देसणा रे,जाणयउ अथिर संसारो रे ।
बे कर जोडी वीनवइ रे, भवसायर थी तारउ रे । ६ ।मो०।
देई राज अभीचि नइ रे, संजम सुद्ध धरेसो रे ।
प्रभु कहइ देवाणुप्पिया रे, मा पडिबंध करेसो रे ।१०।मो०।

दूहा:—

वीर वांदि घर आवियउ, वलि करइ एह विचार ।
इह कंत पिय माहरइ, अंगज अभीचि कुमार ॥११॥
राज काज महलां घणुं, मत ए नरकइ जाय ।
पाटि भाणेजउ थापियउ, केसी नाम कहाय ॥१२॥
कुमर अभीचि रीसाइ करि, पहुतउ कोणिक पास ।
सुरनर पदवी भोगवी, लहिस्यइ शिवपुर वास ॥१३॥

* पाय कमल सेवा करु रे (पाठान्तर लींबडी प्रति)

रिण माहे रिखि मातरइ रे, भूख तृषा पीडाणा रे ।
काल करी सुगति गया रे, विवहार मारग जाणो रे ॥ ७ ॥
[लींबडी वाली प्रति में अधिक]

लाधी वांस नी लाकड़ी हुं वारी,
थयउ कंचणपुर राय रे हुं वारी लाल।
बाप सुं संग्राम मांडियउ हुं वारी,
साधवी लियउ समझाय रे हुं वारी लाल ।।क०।।३।।
वृषभ सरूप देखी करी हुं वारी,
प्रतिबोध पाम्यउ नरेस रे हुं वारी लाल।
उत्तम संजम आदर्यउ हुं वारी,
देवता दीधउ वेस रे हुं वारी लाल ।।क०।।४।।
करम खपावी मुगति गयउ हुं वारी,
करकंडू रिषि राय रे हुं वारी लाल ।
समयसुंदर कहइ ए साधनइ हुं वारी,
प्रणम्यां पाप पुलाय रे हुं वारी लाल ।।क०।।५।।

इति श्री करकंडू प्रत्येक बुद्ध गीतम् ।।८०।।

श्री दुमुह प्रत्येक बुद्ध गीतम्

ढाल—फिट जीव्युं थाहरुं रानजा रे ।

नगरी कंपिला नउ धणी रे, जय राजा गुण जाण ।
न्याय नीति पालइ प्रजा रे, गुणमाला पटराणि रे ।।१।।
दुमुह राय बीजउ प्रत्येक बुद्ध ।
वयरागइ मन वालियउ रे, संयम पलइ सुद्ध रे ।।दु०।।आंकणी।।
धरती खणतां नीसर्यउ रे, मुगट एक अभिराम ।

पालक पापी घांणी पीलिया रे,
पूरब वइर संभार रे ॥१॥ खं०॥
खंदग सीस नमुं सदा रे,
जिण सारचा आतम काज रे ।
सबल परिसहउ जिण सह्यउ रे,
पामियउ मुगति नउ राज रे ॥२॥ खं०॥
अनित्य भावना मनि भावतां रे,
साधु खमा भण्डार रे ।
मुनिवर अंतगड़ केवली रे,
पहुंता मुगति मझारि रे ॥३॥ खं०॥
रुधिर भरचउ ओघउ लियउ रे,
समली जाणयउ हाथ रे ।
बहिनी आंगण पड्यउ अलोल्यउ रे,
आदरचो अरिहंत साथ रे ॥४॥ खं०॥
श्री मुनिसुव्रत सामिना रे,
जीव दया प्रतिपाल रे ।
समयसुन्दर कहइ एहवा रे,
वांदूँ वांदूँ साधु त्रिकाल रे ॥५॥ खं०॥

इति श्री खंदग शिष्य गीतम्–

—:o:—

पढ़ीय विद्याधर पासि हो जी
पणि सील राखयउ सावतउ लाल ॥प०॥२॥

पद्मरथ भूपाल हो जी,
घोड़इ अपहरयउ आवियउ ।
तिण ते लीधउ बाल हो जी,
पुत्र पाली पोढउ कियउ लाल ॥पु०॥३॥

शत्रु नम्यां सहु आय हो जी,
नमि एहवउ नाम आपियउ ।
थयउ मिथिला नउ राय हो जी,
सहस अंतेउरि सुं रमइ लाल ॥स०॥४॥

दाह ज्वर चव्यउ देह हो जी,
करम थी को छूटइ नहीं ।
अथिर सहु रिधि एह हो जी,
नमि राजा संजम लीयउ लाल ॥न०॥५॥

इंद्र परीख्यउ आय हो जी,
चडते परिणामे चव्यउ ।
प्रणम्यां जायइ पाप हो जी,
समयसुंदर कहइ साधनइ ॥न०॥६॥

इति श्री तृतीय प्रत्येक बुद्ध नमि गीत ॥४८॥

—:०:—

रिषि थावचउ रूयडउ, उत्तम अणगारो।
गिरुया ना गुण गावतां, हियडइ हरष अपारो ॥२॥रि०॥
बत्तीस अंतेउर परिवरयउ, भोगवइ सुख सारो।
नेमि समीपइ संजम लियउ, जाण्यउ अथिर संसारो॥३ रि०॥
बत्तीस अंतेउर परिहरी, लीधउ संजम भारो।
तप जप कठिण क्रिया करइ, साथइ साधु हजारो ॥४॥ रि०॥
सेत्रुंजा[1] ऊपरि चढी, संथारा कीधा।
समयसुन्दर कहइ साधु जी, वांदूँ सहु सीधा ॥५॥ रि०॥

चार प्रत्येक बुद्ध—

श्री करकण्डू प्रत्येक बुध गीतम्

ढाल—गलियारे साजण मिल्या हुं वारी।

चंपा नगरी अति भलि हुं वारी,
दधिवाहन भूपाल रे हुं वारी लाल।
पद्मावती कूखि ऊपनउ हुँ वारी,
करमइ कीधउ चंडाल रे हुँ वारी लाल ॥१॥
करकंडू नइ करूं वंदना हुं वारी,
पहिलउ प्रत्येक बुद्ध रे हुं वारी लाल। आंकणी।
गिरुया नां गुण गावतां हुं वारी,
समकित थायइ सुद्ध रे हुं वारी लाल॥क०॥२॥

१ सेत्रुंजइ

जी हो जाति समरण पामियउ,
जी हो लीधउ संजम भार ।
जी हो राज रमणी सवि परिहरी,
जी हो मणि माणिक भंडार ॥नमि०॥ ५ ॥
जी हो रूप करी ब्राह्मण तणउ,
जी हो इन्द्र परीख्यउ सोय ।
जी हो चढते परिणामे चढ्यउ,
जी हो सोनउ श्याम न होय ॥नमि०॥ ६ ॥
जी हो उत्तराध्ययनइ एह छइ,
जी हो नमि राजा अधिकार ।
जी हो समय सुंदर कहइ वांदतां,
जी हो पामीजइ भव पार ॥नमि०॥ ७ ॥

श्री नग्गइ चतुर्थ प्रत्येक बुद्ध गीतम्

ढाल—लाल्हरे नी

पुंडवधन पुर राजियउ म्हांकी सहियर,
सिंहरथ नाम नरिंद हे ।
एक दिन घोड़इ अपहरचउ म्हांकी सहियर,
पड्यउ अटवी दुख दंद हे ॥ १ ॥
परवत उपरिं पेखियउ म्हांकी सहियर,
सात भूमियउ आवास हे ।

बीजउ मुख प्रति बिंबियउ रे, दुमुह थयउ तिम नाम रे ।।२। दु०।।
मुगट लेवा भणी मांडियउ रे, चण्डप्रद्योत संग्राम ।
पणि अन्याय कुशीलियउ रे, किम सरइ तेहनउ काम रे ।।३। दु०।।
इंद्रधज अति सिणगारीयउ रे, जोतां तृप्ति न थाय ।
खलक लोक खेलइ रमइ रे, महुछव मांडचउ राय रे ।।४। दु०।।
तेहीज इंद्रधज देखीयउ रे, पड्यउ मल मूत्र मझार ।
हा ! हा ! शोभा कारिमी रे, ए सहु अथिर संसार रे ।।५। दु०।।
वयरागइ मन वालियुं रे, लीधउ संयम भार ।
तप जप कीधा आकरा रे, पाम्यउ भव नउ पार रे ।।६। दु०।।
बीजउ प्रत्येक बुद्ध ए रे, दुमुह नाम रिषिराय ।
समयसुंदर कहइ साधना रे, नित नित प्रणमुं पाय रे ।।७। दु०।।

इति दुमुह नाम द्वितीय प्रत्येक बुद्ध गीतम् ।।४१।।

श्री नमि प्रत्येक बुद्ध गीतम्

ढाल—नल राजा रइ देसि हो जी पूगल हुंती पधारिया

नयर सुदरसण राय हो जी,
मणिरथ राज करइ तिहां ।
कीधउ सबल अन्याय हो जी,
जुगबाहु बंधव मारियउ लाल ।।जु०।।१।।
मयणरेहा गई नासि होजी,
जायउ पुत्र उजाड़िमइ ।

चार प्रत्येक बुद्ध संलग्न गीतम्

ढाल—साहेली हे आंबलउ मउरीयउ, एह गीतनी ।

चिहुं दिशि थी चारे आवीया,
समकालइ हे यक्ष देहरा मांहि ।
सहेली हे वांदउ रूड़ा साधजी,
जिण वांद्या हे जायइ जनमना पाप ॥ सहे०॥
यक्ष चउमुख थयउ जाणि नइ,
मत आवइ हे मुझ पूठि के वांहि ।
करकंडु तिरणउ काढीयउ,
काना थी हे खाजि खणवा काजि । स० ।
दुमुख कहइ माया अजी,
राखी कां हो छोडयउ सगलउ राज ॥स०।२॥
नमि कहइ निंदा कां करइ,
निंदा ना हो बोल्या मोटा दोष ।
नग्गई कहइ निंदा नहीं,
हित कहितां हो हुवइ परम संतोष ॥स०।३॥
समकाले च्यारे चव्या,
समकाले हे थया कुल सिणगार ॥ स० ॥
समकालइ संयम लीयउ,
समकाले हे गया मुगति मझार ॥स०।४॥

श्री नमि राजर्षि गीतम्

जी हो मिथिला नगरी नउ राजियउ,
जी हो हय गय रथ परिवार।
जी हो राज लीला सुख भोगवइ,
जी हो सहस रमणी भरतार.॥ १ ॥

नमि राय धन धन तुम अणगार।
इन्द्र प्रशंसा इम करी जी हो,
पाय प्रणमइ वार वार ॥ नमि०॥ आंकणी

जी हो एक दिवस तिहां ऊपनउ,
जी हो पूरव करम संयोग ।
जी हो अगनि तणी परि आकरो,
जी हो सबल दाह ज्वर रोग ॥नमि०॥ २ ॥

जी हो चंदन भरिय कचोलड़ी,
जी हो कामिनी लगावइ काय ।
जी हो खलकइ चूड़ी सोना तणी,
जी हो शब्द काने न सुहाइ ॥नमि०॥ ३ ॥

जी हो एक वलय मंगल भणी,
जी हो राख्या रमणी बांहि।
जी हो इम एकाकी पणउ भलउ,
जी हो दुख मिल्यां जग मांहि ॥नमि०॥ ४ ॥

श्री जम्बू स्वामी गीतम्

नगरी राजगृह मांहि वसइ रे, सेठ ऋषभदत्त सार।
धारणी माता जनमियउ रे, जंबू नाम कुमार ॥ १ ॥
जीवन जी अमनइ तूं आधार।
बेकर जोड़ी वीनवइ रे, अबला आठे वार ॥ जी. ॥ आंकणी ॥
यौवन भर मांहि आवियु रे, मेल्यु वेवीसाल।
आठ कन्या अति रूयड़ी रे, पूरवो प्रेम रसाल ॥ जी.॥ २ ॥
तिण अवसर तिहां आविया रे, गणधर सोहम साम।
चतुर चौथुं व्रत आदरयउ रे, कीधउ उत्तम* काम ॥ जी.॥ ३ ॥
गुरु वांदी घर आवियउ रे, मांगइ व्रत आदेश।
मात पिता परणावियउ रे, जोरे करिय किलेस ॥ जी.॥ ४ ॥
आठ कन्या ले आपणी रे, आव्यउ निशि आवास।
हाव भाव विभ्रम करइ रे, बोलइ वचन विलास ॥ जी.॥ ५ ॥
आ जोवन आ संपदा रे, आ अंग अद्भुत देह।
भोग पनोता भोगवउ रे, निपट न दीजइ छेह ॥ जी.॥ ६ ॥
तन धन यौवन कारमु रे, खण मा खेरू थाय† ।
काम भोग फल पाड़ुया रे, दुर्गति ना दुख दाय ॥ जी.॥ ७ ॥
प्रश्नोत्तर करि परगड़उ रे, प्रतिबोधी निज नार।
प्रभवो चोर प्रतिबूझव्यउ रे, पांच सयां परिवार ॥ जी.॥ ८ ॥

---

* दुक्कर। † खिण मांहि विणसी जाय।

कनकमाला विद्याधरी म्हांकी सहियर,
परणी प्रेम उल्लास हे ॥ २ ॥
नगर भणि राजा नीसरचउ म्हांकी सहियर,
नग्गई नामि कहाय हे ।
मारग मंइ आंबउ मिल्यउ म्हांकी सहियर,
मांजरि रही महकाय हे ॥ ३ ॥
कोइल करइ टहूकड़ा म्हांकी सहियर,
सुंदर फल फूल पान हे ।
राजा एक मांजरी ग्रही म्हांकी सहियर,
तिम मंत्री परधान हे ॥ ४ ॥
वलतइ राजा ते वली म्हांकी सहियर,
वृक्ष दीठउ ते वीछाय हे ।
सोभा सगली कारिमी म्हांकी सहियर,
खिण मांहे खेरु थाय हे ॥ ५ ॥
जाती समरण पामियउ म्हांकी सहियर,
संजम पालइ सुद्ध हे ।
समयसुंदर कहइ साध जी म्हांकी सहियर,
चउथउ परतेक बुद्ध हे ॥ ६ ॥

इति नग्गई चतुर्थ प्रत्येक बुद्ध गीतम् ॥ ४३ ॥

—:o:—

श्री ढंढण ऋषि गीतम्

ढाल—धन धन अयवंती सुकुमाल नइ—ए गीतनी.

नगरी अनोपम द्वारिका, लांबी जोयण बारो जी।
देव नीमी अति दीपति, सरगपुरी अवतारो जी।१।
धन धन श्री ढंढण रिषि, नेमि प्रशंस्यउ जेहो जी।
अलाभ परिसउ जिण सह्यउ, दुरबल कीधी देहो जी।२।ध.।
राज करइ तिहां राजियउ, नवमउ श्री वासुदेवो जी।
बत्तीस सहस अंतेउरी, सुख भोगवइ नित मेवो जी।३।ध.।
ढंढणा राणी जनमियउ, नामइ ढंढण कुमारो जी।
राजलीला सुख भोगवइ, देवकुंयर अवतारो जी।४।ध.।
नेमि जिणिंद समोसरया, वांदिवा गयउ वासुदेवो जी।
ढंढण कुमर साथि गयउ, सहु वांदी करइ सेवो जी।५।ध.।
धइ नेमीसर देसणा, ए संसार असारो जी।
जनम मरण वेदन जरा, दुख तणउ भंडारो जी[१]।६।ध.।
ढंढण कुमर हलूकमउ, प्रतिबूधउ ततकालो जी।
नेमि समीपि संजम लीयउ, जिन आज्ञा प्रतिपालो जी।७।ध.।
नगरी मांहि विहरण गयउ, पणि न मिल्यउ आहारो जी।
बेकर जोड़ी वीनवइ, कहउ सामी कुण प्रकारो जी।८।ध.।

[१]कुटुम्ब सहु को कारिमुं, एक छइ धरम आधारो जी (पाठां०).

उत्तराध्ययने ए कह्यउ,
सूत्र मांहे हे च्यारे प्रत्येक बुद्ध । स० ।
समयसुन्दर कहइ मइ साधना,
गुण गाया हे पाटण पर सिद्ध ।।स०।५।।

श्री चिलातीपुत्र गीतम्

पुत्री सेठ धन्ना तणी, सुसुमा सुन्दर रूपो रे ।
चिलातीपुत्र करइ कामना, जाणयउ सेठ सरूपो रे ।।१।।
चिलातीपुत्र चित मांहि वस्यउ, उपसम रस भंडारो रे ।आं०।
निश्चल मेरु तणी परइ, सूर धीर सुविचारो रे ।।२।चि०।।
सेठ नगर थी काढियउ, पल्लीपति थयउ चोरो रे ।
पांचसइ चोरां सुँ परिवरयउ,करम करइ कठोरो रे ।।३।चि०।।
एक दिवस मारी सुसुमा, मस्तक हाथ मां लीधउ रे ।
साधु समीपे धर्म सुणी, मस्तक नांखी दीधउ रे ।।४।चि०।।
उपसम विवेक संवर धरयउ,काउसग मांहे कीड़ी परोल्यउ रे ।
काया कीधी चालणी, तो पण मन नवि डोल्यउ रे ।।५।चि०।।
दिवस अढी वेदना सही, आठमउ देवलोक पावइ रे ।
चिलातिपुत्र जगि चिर जीवउ, समयसुँदर गुण गावइ रे ।।६।चि०।।

—:o:—

हरि वांघउ हाथी थी उतरी,
त्रिरह प्रदिक्खण दीधो जी ।
कृष्ण महाराज परसंसा करी,
जन्म सफल तइ कीधो जी ॥४॥ अढा० ॥

त्रैलोक्यनाथ तीर्थंकर ताहरूं,
श्री मुख करइ वखाणो जी ।
तूं धन्य तूं कृतपुण्य मोटो जती,
जीवित जन्म प्रमाणो जी ॥५॥ अढा० ॥

कृष्ण नी मनियावट देखि करी,
भद्रक नइ थयो भावो जी ।
सिंह केसरिया मोदक सूझता,
पड़िलाभ्या प्रस्तानो जी ॥६॥ अढा० ॥

ढंढण रिषि पूछ्युं भगवंत नइ,
अभिग्रह पूरउ मुज्झो जी ।
कृष्ण तणी ए लब्धि कहीजियइ,
लब्धि नहीं ए तुज्झो जी ॥७॥ अढा० ॥

पारकी लब्धि न लेऊं लाडुया,
परिठवतां घरचउ ध्यानो जी ।
चूरंतां च्यारे क्रम चूरियां,
पाम्युं केवल न्यानो जी ॥८॥ अढा० ॥

आठ अंतेउर परिहरि रे, कनक निवाणु कोड़ ।
संयम मारग आदरयउ रे, माया बंधन छोड़ ॥ जी.॥ ९ ॥
मात पिता कन्या मिली रे, प्रभवो आप जगीस ।
दीक्षा लीधी सामठी रे, पांच सउ अठावीस ॥ जी.॥१०॥
जंबू सामि नी जोड़ली रे, को नइ इण संसार ।
ब्रह्मचारी चूड़ामणि रे, नाम तणइ बलिहार ॥ जी.॥११॥
जंबू केवल पामियउ रे, पाम्यउ अविचल ठाम ।
समयसुन्दर कहइ हूँ सदा रे, नित नित करुं य प्रणाम ॥जी.॥१२॥

श्री जम्बू स्वामी गीतम्

जाऊं बलिहारी जंबू स्वामि नी रे, जिण तजी कनक नी कोड़ि रे।
आठ अंतेउरी परिहरी रे, चरण नमुं कर जोड़ि रे । जा. ।१।
यौवन भर जिण जाणियउ रे, एह संसार असार रे ।
संयम रमणी आदरी रे, मुनिवर बाल ब्रह्मचारि रे । जा. ।२।
जिण प्रभवो प्रतिबूझियउ रे, पांचसइं चोर परिवार रे ।
केवल ज्ञान पामी करी रे, पहुंतइ भव तणउ पार रे । जा. ।३।
जंबू सौभागी जोयउ तुम्हे रे, मुगति नारी वरयउ जोय रे।
मन गमतउ वर पामियउ रे, अवर न वांछइ बीजउ कोय रे। जा. ।४।
धारिणी माता कुंयरू रे, सुधरम स्वामि नो सीस रे ।
समयसुन्दर कहइ साधुना रे, हुं नाम जपूं निशदीस रे । जा. ।५।

इति श्री जंबू स्वामी गीतम् ॥ ३५ ॥

लोच करि आप सूर वीर संजम लीयउ,
इंद्र नइ आणि पाये लगाड्यउ ॥२॥ध०॥
नगर सिणगार चतुरंग सेना सजी,
पांच सइ महुल परिवार सेती ।
आप आगइ बतीस बद्ध नाटक पड़इ,
तूर वाजइ कहूं वात केती ॥३॥ध०॥
आवियउ इंद्र अभिमान उतारिवा,
अनंत गुण श्री अरिहंत एहइ ।
इन्द्र चउसठ्ठि एकठा मिली संस्तवइ,
पार न लहइं तउ गान केहइ ॥४॥ध०॥
एक हाथी तणइ आठ दंतूसला,
दंत दंत आठ आठ वावि सोहइ ।
वावि-वावि आठ आठ कमल तिहां,
आठ आठ पांखड़ी पेखतां मन्न मोहइ ॥५॥ध०॥
पत्र पत्रइ बतीस बद्ध नाटक पड़इ,
कमल विचि इंद्र बइठउ आणन्दइ ।
आठ वलि आगलि अग्र महिषी खड़ी,
वीर नइं एण विधि इंद्र वांदइ ॥६॥ध०॥
इन्द्र नी रिद्धि देखी करी एहनी,
हूँ किसइ गानि राजा विचारचउ ।
राज नइ रिद्धि सहु छोडि संजम लीयउ,
इन्द्र महाराज आगइ न हारचउ ॥७॥ध०॥

सुभनइ आहार मिलइ नहीं,द्वारिका रिद्धि समृद्धो जी ।
साधना भगत जादव सहू, सुभ गुरु बाप प्रसिद्धो जी । ६ । ध.।
सुणि ढंढण रिपि साध तुं, भाखइ श्री भगवंतो जी ।
कीधा करम न छूटियइ, विण भोगव्यां नहीं अंतो जी ।१०। ध.।
पाछिलइ भवि तुं बांभण हुतउ, अधिकारी दुख दायो जी ।
पांचसइ हाली नइ तइं कीयउ,अन्न पाणी अंतरायो जी ।११। ध.।
ढंढण रिपि भणइ हुँ हिव, पारकी लबधि आहारो जी ।
लेसुं नहीं भमस्युं सदा, करमनउ करिस्युं संहारो जी ।१२। ध.।

(२) ढाल बीजी—नेमि समीपइ रे संजम आदरयउ, एहनी.

इण अवसरि श्री कृष्ण नरेसरू,
  प्रसन करइ कर जोड़ो जी ।
अढारह सहस मईं कुण अधिक जती,
  जेहनी नहिं कोई जोड़ो जी ॥१॥
अढारह सहस मांहि अधिक ढंढण जती,
  भाखइ श्री भगवंतो जी ।
सबल अलाभ परीसउ जिण सहउ,
  करिव करम नो अंतो जी ॥२॥ अढा० ॥
वासुदेव प्रभु वांदि नइ वल्यउ,
  द्वारिका नगरी मझारो जी ।
मारग मइं ढंढण मुनिवर मिल्यउ,
  गोचरी गयउ अणगारो जी ॥३॥ अढा० ॥

शरीर सुश्रुषा नवि करइ, वाध्या नख नइ केस ।
मुनिवर आठे मद गालिया, विषय नहीं लवलेस ॥ गु०॥ ६ ॥
हाड हींडतां खड़ खड़इ, काया काग नी जंघ ।
सरीर संतोषे सूकयूं, न कीधउ व्रत भंग ॥ गु०॥ ७ ॥
नसा जाल सवि जूजुई, सूक्यउ लोही नइ मांस ।
बावीस परिसह जीपवा, रहवुं वन वास ॥ गु०॥ ८ ॥
आंखि ऊंडी तारा जगमगइ, सुरतरु सुरुआं कान ।
सूकी आंगली मग नी फली, पग जिम सूकू पान ॥ गु०॥ ६ ॥
श्रेणिक श्री जिन वांद नइ, प्रश्न पूछइ जे एह ।
कुण तपसी तप आगला, मुझ नइ कहउ तेह ॥ गु०॥१०॥
साधु शिरोमणि जाणस्यउ, धन धन्नउ अणगार ।
आठ खाण करमे भरी, काढी नांखइ छइ वाहर ॥ गु०॥११॥
श्रेणिक हींडइ वन सोझतो, देखूं भूलौ रूप ।
सूकुं खोखुं जेहवुं सर्प नुं, तेहवुं दीठ सरूप ॥ गु०॥१२॥
ऊठ कोड़ी रोम ऊलस्या, हुई सफल ते यात्र ।
त्रिण प्रदित्तणा देइ करी, भावे वंदू हो पात्र ॥ गु०॥१३॥
मास एक अणसण करी, ध्यवउ शुक्ल ते ध्यान ।
नव मासे कर्म खपेवी, पाम्युं अनुत्तर विमान ॥ गु०॥१४॥
करि काउसग्ग कर्म खपेवी, यति तारण हो तरण ।
समयसुंदर कहइ एतलुं, मुझ नइ साधु जी नउ शरण ॥ गु०॥१५॥

मुगति पहुँता अनुक्रमि मुनिवरु,
श्री ढंढण रिषि रायो जी।
समयसुन्दर कहइ हूँ ए साधना,
प्रतिदिन* प्रणमुं पायो जी ॥६॥ अढा० ॥

इति श्री ढंढण ऋषि गीतम् ॥ ६ ॥ सर्वगाथा २१

श्री अमदावाद पार्श्ववर्त्तिनि हंदलपुरे नगरेमध्ये चतुर्मासी कृत्वा मासकल्पस्थितैः श्रीसमयसुंदरोपाध्यायैः कृतं लिखितं च सं० १६६२ वर्षे मार्गशीर्ष सुदि १ दिने ॥४४॥ †

—:o:—

श्री दशारण भद्र गीतम्

राग—रामगिरी; जाति—फइसानी ।

मुगध जन वचन सुणि राय चित चमकियउ,
अहो अहो देव नउ राग देखउ।
हूँ महावीर नइ तेम वांदीसि जिम,
किण न वांद्या तिका परठि पेखउ ॥१॥
धन्य हो धन्य हो राजा दसणभद्र तूँ,
आरणउ बोल परमाण चाढ्यउ।

---

* नित नित। †(सीवड़ी भंडार प्रति)

एहवा मुनिवर वांदियइ जी, चरण कमल चित्त लाय ।
समयसुंदर गरुड़[1] भणइ जी, निरुपम शिव सुख थाय ॥६॥ ज०॥

इति धन्ना अणगार गीतं संपूर्णं ।

श्री प्रसन्न चंद्र राजर्षि गीतम्

ढाल—तपोधन रूड़ा रे, भमरा ना गीतनी ।

मारग मइं मुझनइ मिल्यउ रिषि रूड़उ रे,
सूधउ साधु निग्रंथ रिषीसर रूड़उ रे ।
उत्कृष्टी रहणी रहइ रिषि रूड़उ रे,
साधतउ मुगति नउ पंथ रिषीसर रूड़उ रे ॥ १ ॥
एकइ पग ऊभउ रह्यउ रिषि रूड़उ रे,
सूरिज सामी दृष्टि रिषीसर रूड़उ रे ।
बोलायउ बोलइ नहीं रिषि रूड़उ रे,
ध्यान धरइ परमेष्टि रिषीसर रूड़उ रे ॥ २ ॥
कहइ श्रेणिक सामी कहउ रिषि रूड़उ रे,
जउ मरइ तउ जाइ केथि रिषीसर रूड़उ रे ।
सामी कहइ जाइ सातमी रिषि रूड़उ रे,
तीव्र वेदना छइ तेथि रिषीसर रूड़उ रे ॥ ३ ॥
देव की वाणी दुंदुभि रिषि रूड़उ रे,
उपनूं केवल ज्ञान रिषीसर रूड़उ रे ।

---

१ भगति

इन्द्र वादी प्रसंसा करी एहवी,
धन्य कृतपुण्य तूं साध मोटउ ।
आंपणउ जन्म जीवितव्य सफलउ कीयउ,
आंगम्यउ बोल कीधउ न कोटउ ॥८॥ध०॥

दसणभद करम चय करिय सुगति गयउ,
एह अभिमान साचउ कहीजइ !
समयसुन्दर कहइ उत्तराध्ययन मइं,
साधना नाम थी निस्तरीजइ ॥९॥ध०॥

श्री धन्ना (काकंदी) अणगार गीतम्

सरसति सामण वीनवुं, मागूं एकज सार ।
एक जीभे हुं किम कहूँ, एहना तप नो नहीं पार ॥ १ ॥
गुणवंत ना हुँ गुण स्तवुं, धन धन्नउ अणगार ॥ आंकणी ॥
निरदोप नांखीजतो लीइं, पट काया आधार ॥गु०॥ २ ॥
सुख संयम बीजो नहीं, जग मांहि तत्त्व सार ।
जन्म मरण दुख टालवा, लीधउ संजम भार ॥गु०॥ ३ ॥
बत्तीसइ रंभा तजी, जीत्यउ यौवन वेस ।
विकट पइरी दोय वश कर्या, श्री जिनवर उपदेश ॥गु०॥ ४ ॥
मयण दंत लोह ना चणा, किम चावस्य कंत ।
मेरु मायर करी चालवूं, खड़गधार हो पंथ ॥गु०॥ ५ ॥

तण इक अंतर पूछियउ सर्वार्थ सिद्ध विमान।
वागी देव की दुंदुभी ए पाम्यउ केवल ज्ञान ॥प्र.॥५॥
प्रसन्न चंद्र मुगते गयो श्री महावीर नउ शिष्य।
समयसुंदर कहइ धन्य ते जिण दीठा प्रत्यक्ष ॥प्र.॥६॥

श्री बाहूबलि गीतम्

तखिसिला नगरी रिषभ समोसरचा रे,
सांझ समइ वन मांहि।
वनपालक दीधी वद्धामणी रे,
बाहूबलि अधिक उच्छाहि ॥ १ ॥
वांदूँ वादूँ रिषभजी रिद्धि विस्तार सु रे,
प्रह उगमतइ सूर।
बाहूबलि रयणी इम चिंतवइ रे,
अति वणउ आणंद पूर ॥ २ ॥ वां० ॥
पवन तणी परि प्रतिबंध को नहीं रे,
आदि जिन विचरचा अनेथि।
बाहूबलि आव्यउ आडंबर करी रे,
नयण न देखइ केथि ॥ ३ ॥ वां० ॥
मणिमय पीठ मनोहर कयु रे,
तात भगति अभिराम।
समयसुन्दर कहइ तीरथ तिहां थयु रे,
बीवा अदिम नाम ॥ ४ ॥ वां० ॥

इति श्री बाहूबलि गीतं ॥ २६ ॥

धन्ना (काकंदी) अणगार गीतम्

वीर जिणंद समोसरया जी, राजगृही उद्यान।
समवशरण सुरवर रच्यउ जी, बइठा श्री बधमान ॥१॥
जग जीवन वीरजी, कउण तुमारउ सीस।
आप तरइ अउर तारवइ जी, उग्र तप धरइ निशदीस। आं.। ज.।
प्रभु आगमन सुणी करी जी, श्रेणिक हरष अपार।
प्रभु पय वंदन आवियउ जी, हय गय रथ परिवार ॥२॥ ज०॥
श्रेणिक प्रभु देसना सुणी जी, प्रसन करइ सुविचार।
चउद सहस अणगार मंइ जी, कउण अधिक अणगार ॥३। ज०॥
काकंदी नगरी वसइ जी, भद्रा मात मल्हार।
संयम रमणी आदरी जी, जाणी अथिर संसार ॥४॥ ज०॥
छठ तप आंबिल पारणइ जी, उज्झित लियइ आहार।
माया ममता परिहरि जी, देह दीघइ आधार ॥५॥ ज०॥
सीख दुविध पालइ भली जी, शम दम संयम सार।
तप जप प्रमुख गुणे करी जी, अधिक धन्नउ अणगार ॥६॥ ज०॥
धन्नउ नाम सुणी करी जी, हरख्यउ श्रेणिक राय।
त्रिण प्रदिखणा देई करी जी, वांदइ मुनिवर पाय ॥७॥ ज०॥
नवमंइ अंगइ ए अछइ जी, धन्ना नउ अधिकार।
सोहम सामी उपदिस्यउ जी, जंबू नइ हितकार ॥८॥ ज०॥

श्री भवदत्त-नागिला गीत

ढाल—साधु नइ वहिराव्युं कडतुं तुंबड़ा रे।

भवदत्त भाई घरि आवियउ रे,
प्रतिबोधिवा मुनिराय रे।
नव परणी मूंकी नागिला रे,
भवदेव वांदइ मुनि पाय रे ॥१॥

अरध मंडित नारी नागिला रे,
खटकइ म्हारा हियड़ला बारि रे।
भवदत्त भाइयइ मुंनइ भोलव्यउ,
लाजइ लीधउ संजम भार रे ॥२॥ अ० ॥

हाथे दीधुं घी नुं पातरुं,
मुझनइ आघेरउ वउलावि रे।
इम करि गुरु पासि लेई गयउ,
गुरुजी पूछ्युं संजम नउ छइ भाव रे ॥३॥ अ०॥

लाजइ नाकारउ नवि कर्यउ,
दीक्षा लीधी भाई बहु मानि रे।
बार वरस व्रत मांहि रह्यउ,
हीयड़इ धरतउ नागिला नउ ध्यान रे ॥४॥ अ०॥

हा! हा! मूरिख मइं स्युं कर्युं,
कांय पड़्यउ कष्ट मझारि रे।

श्रेणिक नइ समझावियउ रिषी रूड़उ रे,
अशुम मनइ शुभ ध्यान रिषीसर रूड़उ रे ॥ ४ ॥
प्रसन्नचंद्र सरिखउ मिलइ रिषी रूड़उ रे,
तउ हूँ तरू ततकाल रिषीसर रूड़उ रे ।
दूसम कालइ दोहिलउ रिषी रूड़उ रे,
समय सुंदर मन वालि रिषीसर रूड़उ रे ॥ ५ ॥

इति श्री प्रसन्न चद्र रिषीसर गीतम् ॥ ४६ ॥

श्री प्रसन्न चंद्र राजर्षि गीतम्

ढाल—वेगि विहरण आव्यो घरे ।

प्रसन्न चंद प्रणमुं तुम्हारा पाय, तुम्हे अति मोटा रिषीराय ।
॥प्र०॥ आंकणी ॥

राज छोड्यउ रलियामणो तुम जाणयउ अथिर संसार ।
वयरागे मन वालियुँ तुमे लीधउ संयम भार ॥प्र.॥१॥

वन मांहे काउसग्ग रह्या पग ऊपर पग चाड़इ ।
बांह बेऊं ऊंची करी सूरिज सामी दृष्टि देइ ॥प्र.॥२॥

दुरमुख दूत वचन सुणी तुम कोप चढ्या तत्काल ।
मन सुं संग्राम मांडियउ तुम जीव पड़चउ जंजाल ॥प्र.॥३॥

श्रेणिक प्रश्न करयुं तिसे स्वामी एहनइ कुण गति थाइ ।
भगवंत कहइ हिवणां मरइ तउ सातमी नरके जाइ ॥प्र.॥४॥

सोवनकार घर आंगणइ जी, मुनिवर पहुंतउ जाम ।
आहार भणी ते मांहि गयउ जी, क्रौंच गल्या जब ताम ।।मे. ।।२।।
सोवनकार कोपइ चढ्यउ जी, घइ मुनिवर नइ दोप ।
नाना विध उपसर्ग करइ जी, ऋषि मनि नाणइ रोप ।।मे. ।।३।।
वाध्र सुँ मस्तक वींटीयउ जी, निविड़ बंधने भड़ भीड़ ।
त्रटकि आंख त्रूटी पड़ी जी, प्रबल प्रकट थई पीड़ ।।मे. ।।४।।
क्रौंच जीव करुणा भणी जी, उपशम धरचउ शुभ ध्यान ।
अनित्य भावना भावतां जी, पाम्यउ केवल ज्ञान ।।मे. ।।५।।
अंतगड़ पाली आउखउ जी, पाम्यउ भव नउ पार ।
अजरामर पदवी लही जी, सासता सुक्ख अपार ।। मे. ।।६।।
श्री मेतारज मुनिवरू जी, साध गुणे अभिराम ।
समयसुन्दर कहइ माहरो जी, त्रिकरण सुद्ध प्रणाम ।। मे. ।।७।।

इति मेतार्य्य ऋषि गीतम्, पं० जयसुन्दर लि० श्राविका माता पठ.

श्री मृगापुत्र गीतम्

सुग्रीव नगर सोहामणुं रे, बलभद्र राजा बाप ।
मिरगां माता जनमियउ रे, मृगापुत्र सुप्रताप ।। १ ।।
कुंयर कहइ कर जोड़ि नइ रे, हूँ हिव दीक्षा लेस ।।मा. ।।आं.।।
गउख उपरि वइठइ थकइ रे, एक दीठउ अणगार ।
जाती समरण जाणियु रे, ए संसार असार ।। मा. ।।२।।

(२) श्री बाहूबलि गीतम्

राग—कालहरउ

राज तणा अति लोभिया, भरत बाहूबलि जूझइ रे।
मूँठि उपाड़ी मारिवा, बाहूबलि प्रतिबूझइ रे ॥१॥
बांधव गज थी ऊतरउ, ब्राह्मी सुन्दरी भासइ रे।
रिषभदेव ते मोकली, बाहूबलि नइ पासइ रे ॥२॥बां.॥आंकणी॥
[वीरा म्हारा गज थकी ऊतरउ, गज चढ्यां केवल न होइ रे वी.]
लोच करी संजम लीयउ, आयउ वलि अभिमानो रे।
लघु बांधव वांदूँ नहीं, काउसग्ग रह्यउ शुभ ध्यानो रे ॥३॥बां.॥
वरस सीम काउसग रह्यउ, वेलड़िए वींटाणउ रे।
पंखी माला मांडिया, सीत तावड़ सोखाणउ रे ॥४॥बां.॥
साधवी वचन सुणीकरी, चमक्यउ चित्त विचारइ रे।
हय गय रथ सवि परिहर्या, पणि चड्यउ हूँ अहंकारो रे ॥५॥बां.॥
वय रागइ मन वालियउ, मूँक्यउ निज अभिमानो रे।
पग उपाड्यइ वांदिवा, पाम्यउ केवल न्यानो रे ॥६॥बां.॥
पहुता केवलि परपदा, बाहूबलि रिषिराया रे।
अजरामर पदवी लही, समयसुन्दर वांदइ पाया रे ॥७॥बां.॥

इति भरत बाहूबलि गीतम् ॥ २७ ॥

———

धरमे चलायउ नवि चलइ,
मासुर देवता आय रूड़ा राजा ॥ २ ॥ध०॥
पारेवउ सींचाणा मुखे अवतरी,
पड़ियुं पारेवउ खोला मांय रूड़ा राजा ।
राख राख मुझ राजवी,
मुझनइ सींचाणउ खाय रूड़ा राजा ॥ ३ ॥ध०॥
सींचाणउ कहइ सुणि राजिया,
ए छइ माहरउ आहार रूड़ा राजा ।
मेघरथ कहइ सुण पंखिया,
हिंसा थी नरक अवतार रूड़ा पंखी ॥ ४ ॥ध०॥
सरणइ आव्युं रे पारेवड़उ,
नहीं आपूँ निरधार रूड़ा पंखी ।
माटी मंगावी तुज्झ नइ देवुं,
तेहनउ तूं कर आहार रूड़ा पंखी ॥ ५ ॥ध०॥
माटी खपइ मुझ एहनी,
कां वली ताहरी देह रूड़ा राजा ।
जीव दया मेघरथ वसी,
सत्य न मेले धरमी तेह रूड़ा राजा ॥ ६ ॥ध०॥
काती लेई पिण्ड कापी नइ,
ले मांस तू सींचाण रूड़ा पंखी ।
त्राजुए तोलावी मुझ नइं दियउ,
एह पारिवा प्रमाण रूड़ा राजा ॥ ७ ॥ध०॥

चंद वदनी मृग लोयणी रे,
विल विलती मुंकी नारि रे ॥५॥ अ० ॥
भवदेव भागइ चित आवियउ,
विण ओलख्यां पूछइ वात रे।
कहउ कोई जाणइ नारि नागिला रे,
किहां वसइ केही छइ धात रे ॥६॥ अ० ॥
नारि कहइ सुणि साध जी,
वम्यउ न लेयइ कोई आहार रे।
गज चढी खर कोई नवि चडइ,
तिम व्रत छोड़ी नइ नारि रे ॥७॥ अ० ॥
नागिला नारि प्रति बूझव्यउ,
वयराग धरयउ मुनिराय रे।
भवदेव देवलोक पामियउ,
समयसुंदर वांदइ पाय रे ॥८॥ अ० ॥

इति भवदेव गीतम् संपूर्णम् ॥ २८ ॥

श्री मेतार्य ऋषि गीतम्

नगर राजगृह मांहि वसउ जी, मुनिवर उग्र विहार।
ऊंच नीच कुल गोचरी जी, सुमति गुपति पय सार ॥१॥
मेतारज मुनिवर बलिहारी हूँ तोरइ नामि।
उत्तम करणी तइं करी जी, त्रिकरण करू रे प्रणाम ॥मे.॥आंकणी॥

मेघरथ काया साखी करी,
सुर पहुंतो निज ठाय रूड़ा राजा ॥१३॥ध०॥
संयम लियउ मेघरथ राय जी,
लाख पूरव नउ आयु रूड़ा राजा।
बीस स्थानक वीसे सेविया,
तीर्थंकर गोत्र बंधाय रूड़ा राजा ॥१४॥ध०॥
ग्यारमइं भव मंइ श्री शांति जी,
पहुँता सरवारथ सिद्ध रूड़ा राजा।
तेतीस सागर नउ आउखउ,
सुख विलसइ सुर रिद्धि रूड़ा राजा ॥१५॥ध०॥
एक पारेवा दया थकी,
बे पदवी पाम्या नरिंद रूड़ा राजा।
पंचम चक्रवर्त्ती जाणियइ,
सोलमां शांति जिणंद रूड़ा राजा ॥१६॥ध०॥
बारमइ भवे श्री शांति जी,
अचिरा कूखइ अवतार रूड़ा राजा।
दीक्षा लई नइ केवल वरया,
पहुँता मुगति मझार रूड़ा राजा ॥१७॥ध०॥
तीजइ भव शिव सुख लह्यउ,
पाम्या अनंतो नाग रूड़ा राजा।
तीर्थंकर पदवी लही,
लाख वरस आयु जाण रूड़ा राजा ॥१८॥ध०॥

तन धन जोवन कारिमुं रे, खिण मांहि खेरू थाइ ।
कुटुंब सहु को कारिमुं रे, जीवित हाथ मंइ जाइ ॥ मा. ॥३॥
दीक्षा छइ पुत्र दोहिली रे, तूँ तउ अति सुकुमाल ।
किम करिस्यइ ए कामिनी रे, वापड़ी अबला बाल ॥ मा. ॥४॥
कारिमि ए छइ कामिनी रे, हुं शिव रमणी वरीसि ।
सूर वीर नइ सोहिलुं रे, हुं मृग चरिजा वरीसि ॥ मा. ॥५॥
माता नउ आदेस ले रे, लीधउ संजम भार ।
तप जप कीधा आकरा रे, पाम्यउ भव नउ पार ॥ मा. ॥६॥
मृगापुत्र सुगति गयउ रे, उत्तराध्ययन मझार ।
समयसुन्दर कहइ हूँ नमुं रे, ए मोटउ अणगार ॥ मा. ॥७॥

इति मृगापुत्र गीतम् ॥ ४६ ॥

मेघरथ (शांतिनाथ दसम भव) राजा गीतम्

दसमइ भव श्री शांति जी,
मेघरथ जिवड़ा राय, रूड़ा राजा ।
पोसहशाला मंइ एकला,
पोसह लियउ मन भाय, रूड़ा राजा ॥१॥
धन धन मेघरथ राय जी,
जीय दया सुख खाण, धर्मी राजा ॥आंकणी॥
ईशानाधिप इन्द्र जी,
वखाण्यउ मेघरथ राय, रूड़ा राजा ।

जइ नइ संदेसउ कहिज्यो माहरउ रे,
तुम्हे हियड़इ हुइज्यो साहस धीर रे ॥१॥ सी०॥
मत तुम्हे जाणउ अम्हनइ वीसरचा रे,
तुम्हे छउ माहरा हीयड़ला मांहि रे ।
तुम्ह नइ संभारूं सास तणी परिं रे,
तुम्ह नइ मिलवा तणउ मन उच्छाहि रे ॥२॥ सी०॥
जे जेहनइ मन मांहि वस्या रे,
ते तउ दूरि थकां पणि पास रे ।
किहां कुमुदिनी किहां चंद्रमा रे,
पणि दूरि थी करइ परकास रे ॥३॥ सी०॥
सीता नइ संदेसउ हनुमंत जइ कह्यउ रे,
वलतुं सीता पणि मोकल्युं सहिनाण रे ।
समयसुन्दर कहइ राम जी रे,
जयत पाम्युं सीता शील प्रमाणि रे ॥४॥ सी० ।

इति श्री राम सीता गीतम् ॥ २५ ॥

—: :—

॥ धन्ना शालिभद्र सज्झाय ॥

प्रथम गोवाल तणइ भवे जी, मुनिवर दीधुं रे दान ।
नगर राजगृह अवतरचा जी, रूपे मयण समान ॥ १ ॥

त्राजू मंगावी मेघरथ राय जी,
कापी कापी मइ मूकइ मांस रूड़ा राजा ।
देव माया धारण समी,
नावइ एकण अंस रूड़ा राजा ॥ ८ ॥घ०॥
भाई सुत राणी विल-विलइ,
हाथ झाली कहइ तेह गहिला राजा ।
एक पारेवइ नइ कारणइ,
स्यूं कापउ छउ देह गहिला राजा ॥ ९ ॥घ०॥
महाजन लोक वारइ सहु,
मकरउ एवड़ी बात रूड़ा राजा ।
मेघरथ कहइ धरम फल भला,
जीव दया शुभ घात रूड़ा राजा ॥१०॥घ०॥
त्राजुए बइठउ राजवी,
जे भावइ ते खाय रूड़ा पंखी ।
जीव थी पारेवउ अधिकउ गिणयउ,
धन्य पिता तुझ माय रूड़ा राजा ॥११॥घ०॥
चढते परिणामे राजवी,
सुर प्रगट्यउ तिहां आय रूड़ा राजा ।
खमावइ बहु विधे करी,
ललि ललि लागइ छइ पाय रूड़ा राजा ॥१२॥घ.॥
इन्द्रे प्रशंसा ताहरी करी,
जेहवउ तूं छइ राय रूड़ा राजा ।

धन्नो कहइ सुण गहेलड़ी जी, शालिभद्र पूरउ गमार।
जो मन आशा छांडिवा जी, तो विलंब न कीजइ लगार॥ सो. ॥१२॥
कर जोड़ी कहइ कामिनी जी, बंधव सम नहीं कोइ।
कहिता वात सोहिली जी, करतां दोहिली होय॥ सो. ॥१३॥
जारे तो तइं इम कह्युं जी, तो मइं छोड़ि रे आठ।
पिउड़ा मइं हंसतां कह्युं जी, कुणसुं करस्युं वात॥ सो. ॥१४॥
इण वचने धन्नउ नीसर्यो जी, जाणे पंचानन सींह।
साला नइ जइ साद कर्‌यउ जी, गहेला उठ अबीह॥ सो. ॥१५॥
काल आहेड़ी नित भमइ जी, पूठ म जोइस जाय।
नारी बंधन दोरड़ो जी, धव धव छंडइ निरास॥ सो. ॥१६॥
जिम धीवर तिम माछलो जी, धीवरे नांख्यो जाल।
पुरुष पड़ी जिम माछलो जी, तिम अचिंत्यो काल॥ सो. ॥१७॥
जोवन भर बिहुं नीसर्‌या जी, पहुंता वीर जी पास।
दीक्षा लीधी रूबड़ी जी, पालइ मन उल्हास॥ सो. ॥१८॥
मासखमण नइ पारणइ जी, पूछइ श्री जिनराज।
अमनइ शुद्ध गोचरी जी, लाभ देस्यइ कुण आज॥ सो. ॥१९॥
माता हाथइ पारणउ जी, थास्यइ तुम्ह नइ आहार।
वीर वचन निश्चय करी जी, आव्या नगरी मझार॥ सो. ॥२०॥
घर आव्या नहीं ओलख्या जी, फिर आव्या ऋषि राय।
मारग मिलतां महियारड़ी जी, सामी मिली तिण ठाय॥ सो. ॥२१॥
मुनि देखी मन उल्लसइ जी, विकशित थइ तनु देह।
मस्तक गोरस सूझतउ जी, पड़िलाभ्यउ धरि नेह॥ सो. ॥२२॥

दया थकी नव निधि हुवइ,
दया ए सुखनी खाण रूड़ा राजा ।
भव अनंत नो ए सगी,
दया ते माता जाण रूड़ा राजा ॥१६॥ध०॥
गज भव ससलउ राखियउ,
मेघकुमार गुण जाण रूड़ा राजा ।
श्रेणिक राय सुत सुख लह्यउ,
पहुँता अनुत्तर विमान रूड़ा राजा ॥२०॥ध०॥
इम जाणी दया पालजो,
मन मइं करुणा आण रूड़ा राजा ।
समयसुंदर इम वीनवइ,
दया थी सुख निर्वाण रूड़ा राजा ॥२१॥ध०॥

श्री मेघकुमार गीतम्

धारणी मनावइ रे, मेघकुमार नइ रे;
तु तउ मुझ एक ज पूत ।
तुझ विन जाया रे, दिनड़ा किम गमूँ रे;
राखउ राखउ घर तणा सूत ॥धा० ।१।
तुझ नइ परणावि रे, आठ कुमारिका रे;
ते बहू अति सुकुमाल ।
मलपती आवइ रे, जिम वन हाथणी रे;
मयणा वयण सुविसाल ॥धा० ।२।

वीरा नयण निहाल जो जी, ज्यूँ मन थाय प्रमोद ।
नयण उघाड़ि जोवउ सही जी, माता पामइ मोद ॥ सो. ॥३४॥
शालिभद्र माता मोहिनी जी, पहुंता अमर विमान ।
महाविदेहे सीझस्यइ जी, पामी केवल ज्ञान ॥ सो. ॥३५॥
धन्नउ धरमी मुक्ति गयउ जी, पामी शुक्ल ध्यान ।
जे नर नारी गावस्यइ जी, समयसुन्दर नी वाण ॥ सो. ॥३६॥

श्री शालिभद्र गीत

ढाल—जाला फूलाणी नी.

धन्नउ सालिभद्र बेहं, भगवंत नउ आदेस ले जी हो । हो मुनिवर ध.।
संवेग सुद्ध धरेइ, वैभार गिरि उपरि चढ्या जी हो । हो मुनि.। सं.।१।
अणसण करि अणगार, सूना सिलातल उपरइ जी हो । हो मुनि. अ.।
ए संसार असार, ध्यान भलउ हियड़इ धरयउ जी हो । हो मुनि. ए.।२।
आणी मनि उछरंग, आवी सुभद्रा वांदिवा जी हो । हो मुनिवर आ.।
पेखी पुत्र निसंग, रोवा लागी ढूसके जी हो । हो मुनिवर पेखी.।३।
सालिभद्र तुं सुकुमाल, एह परीसा पुत्र आकरा जी हो । हो मुनि. सा.।
बतीस अंतेउरी बाल, निरधारी तजि नीसरयउ जी हो । हो मुनि. ब.।४।
मंदिर महुल मझार, सेज तलाई मइं पउढतउ जी हो । हो मुनि. मं.।
कठिन सिला संथारि, सबल परीसा पुत्र तूँ सहइ जी हो । हो मुनि. क.।५।
साम्हउ जो इकवार, मन वालइ थारी मावड़ी जी हो । हो मुनि. सा.।
नाण्यउ नेह लगार, सालिभद्र साम्हउ जोयउ नहीं जी हो । हो मु. ना.।

सोभागी शालिभद्र भोगी रह्यो ॥ आंकणी ॥
बत्तीस लक्षण गुण भरचो जी, परणयउ बत्तीस नार।
मानव नइ भव देवना जी, सुख विलसइ संसार ॥ सो. ॥२॥
गोभद्र सेठ तिहां पूरवइ जी, नित नित नवला रे भोग।
करइ सुभद्रा उवारणां जी, सेव करइ बहु लोग ॥ सो. ॥३॥
इक दिन श्रेणिक राजियउ जी, जोवा आव्यउ रूप।
देखी अंग सुकोमला जी, हर्ष थयउ बहु भूप ॥ सो. ॥४॥
वच्छ वैरागी चिन्तवइ जी, मुझ सिर श्रेणिक राय।
पूरव पुण्य मइं नवि करचा जी, तप आदरसुं माय ॥ सो. ॥५॥
इण अवसर श्री जिनवरू जी, आव्या नगर उद्यान।
शालिभद्र मन ऊजम्यउ जी, वांदचा वीर जी ने ताम ॥ सो. ॥६॥
वीर तणी वाणी सुणी जी, वूठो मेह अकाल।
एकाकी दिन परिहरइ जी, जिम जल छंडइ पाल ॥ सो. ॥७॥
माता देखी टलवलइ जी, माछलड़ी विनुं नीर।
नारी सगली पाय पड़ी जी, मत छंडो साहस धीर ॥ सो. ॥८॥
बहुअर सगली वीनवइ जी, सांभलि जिणसुं विचार।
सर छंडी पालइ चढ्यउ जी, हंसलउ उडण हार ॥ सो. ॥९॥
इण अवसर तिहां न्हावतां जी, धन्ना सिर आंसु पड़ंत।
कउण दुख तुझ सांभरचउ जी, ऊंचउ जोइ नइ कहंत ॥ सो. ॥१०
चंद्रमुखी मृग लोचनी जी, वोलावी भरतार।
बंधव वात कही तिसइ जी, नारी नउ परिहार ॥ सो. ॥११॥

मारग मांहि मिला महिआरा
　　तिण गोरस विहरायउ रे ॥ सा. ॥३॥
बेकर जोड़ी सालिभद्र बोलइ,
　　प्रश्न करूं स्वामी तुम्ह नइ रे ।
विरहण वात तो दूरी रही पणि,
　　मां ओलख्यउ नहीं मुझनइ रे ॥ सा. ॥४॥
पूरव भव माता पड़िलाभ्यउ,
　　भगवंत संदेह भाजउ रे ।
समयसुंदर कहइ धन धन सालिभद्र,
　　वीर चरणे जाइ लागउ रे ॥ सा. ॥५॥

इति श्री सालिभद्र गीतम् ॥ ४७ ॥

श्री शालिभद्र गीतम्

ढाल— कपूर हुयइ अति ऊजलु रे, वली अनोपम गंध । ए गीतनी

राजगृही नउ विवहारियउ रे, गोभद्र तणउ रे मल्हार ।
भद्रा माता कूँयरु रे, सालिभद्र गुण भण्डार ॥१॥
मुनीसर धन सालिभद्र अवतार, जिण लीधउ संजम भार ।
मुनीसर धन० जिण पाम्यउ भव नउ पार ॥मु० ध०॥आंकणी॥
बत्रीस अंतेउरि परिवरचउ रे, भोगवइ लील विलास ।
मन वंछित सुख पूरवइ रे, गोभद्र सगली आस । मु०॥ २ ॥

मुनिवर विहरी चालिया जी, आव्या श्री जिन पास।
मुनि संसय जइ पूछयउ जी, माय न दीधुं दान ॥ सो. ॥२३॥
वीर कहइ ऋषि सांभलउ जी, गोरस वहेरयउ रे जेह।
मारग मिली महियारड़ी जी, पूर्व जनम नी माय तेह ॥ सो. ॥२४॥
पूरव भव जिन मुख लही जी, एकत्त्व भावइ रे दोय।
आहार करी मन धारियउ जी, अणसण योग ते होय ॥ सो. ॥२५॥
जिन आदेश लेंइ करी जी, चढिया मुनि गिरि वैभार।
शिल उपरी जइ करी जी, दोय मुनि अणसण लीधउ सार ॥सो.॥२६।
माता भद्रा संचरया जी, साथइ बहु परिवार।
अंतेउर पुत्र ज तणउ जी, लीधउ सगलउ साथ ॥ सो. ॥२७॥
समोसरण आवी करी जी, वांदया वीर जग तात।
सकल साधु वांदी करी जी, पुत्र नइ जोवइ निज मात ॥ सो. ॥२८॥
जोइ सगली परषदा जी, नवि दीठा दोय अणगार।
कर जोडी नइ वीनवइ जी, तव भाखइ श्री जिनराज ॥ सो. ॥२९॥
वैभार गिरि जइ चडया जी, मुनिवर दर्शन उमंग।
सहु परिवारइ परिवरी जी, पहुँती गिरिवर शृंग ॥ सो. ॥३०॥
दोय मुनि अणसण उचरइ जी, झीलइ ध्यान मझार।
मुनि देखी विलखी जी, नयणे नीर अपार ॥ सो. ॥३१॥
गद्गद शब्द जो बोलतां जी, मिली छइ बत्तीसे नार।
पिउड़ा बोलउ बोलड़ा जी, जिम सुख पामुं अपार ॥ सो. ॥३२॥
अमे तो अवगुण भरया जी, तुम छउ गुण ना भंडार।
मुनिवर ध्यान चूकया नहीं जी, तेह नइ विलंब न लगार॥ सो. ॥३३॥

कालकसूरियउ महिष न मारइ, कपिला दान दिराय रे।
वीर कहइ सुणं श्रेणिक राया, तउ तूं नरक न जाय रे।श्र.।२।
कालकसूरियउ किम ही न रहइ,कपिला भगति न आइ रे।
कीधउ हो करम न छूटइ कोइ, हिंसा दुरगति जाइ रे।श्र.।३।
दुख न करि महावीर कहइ तोरी, प्रकट हुसी पुण्याई रे।
पद्मनाभ तीर्थंकर होस्यइ, समयसुंदर गुण गाई रे।श्र.।४।



श्री स्थूलिभद्र गीतम्

मनडउ ते मोह्यउ मुनिवर माहरुं रे,
कहइ इम कोश्या ते नारि रे।
आठे ते पहुर उपांपलउ रे,
चट पट चित्त मझार रे।मन०।१। आं०।
पांजरड़उं ते भूलउ भमइ रे,
जीव तुम्हारे पासि रे।
तमस्युं बोल्यइ विण माहरइ रे,
पनरह दिन छमासि रे।मन०।२।
पर दुक्ख जाणइ नहीं पापिया रे,
दुसमण घालइ विचइ घात रे।
जीव लागउ जेहनउ जेहस्युं रे,
किम सरइ कीधां विण वात रे।म०।३।

चडते मन परिणाम, कीधी मास संलेखणा जी हो। हो मुनि. च.।
सारचा आतम काज, सर्वारथ सिद्धि गया जी हो। हो मुनि. सा.।७।
महाविदेह मझारि[१], मुगति जास्यइ मुनिवरु जी हो। हो मुनि. महा.।
वंदना करूं वार वार, समयसुंदर कहइ हुँ सदा जी हो। हो मुनि.वं.।८।

इति श्री धन्ना शालिभद्र गीतम् ॥४६॥
सं. १६६५ वर्षे मगसिरस्यामावास्यां जोडवाड़ा ग्रामे पं. हरिराम लिखितम्।

श्री शालिभद्र गीतम्

राग—भूपाल

शालिभद्र आज तुम्हानइ अपणी माता,
पड़िलामस्यइ . सु सनेहा रे ।
श्री महावीर कहइ सुणि शालिभद्र,
मत मनि धरइ संदेहा रे ॥ सा. ॥१॥
वीर वचन सुणि विहरण चाल्यउ,
सालिभद्र मन संतोषी रे ।
आयउ घरि ओलख्यउ नहीं माता,
तप करि काया सोषी रे ॥ सा. ॥२॥
विन विहरयइ पाछउ वल्यउ मुनिवर,
मन मांहि संदेह आयउ रे ।

---

१ उत्तम लहि अवतार

साजण सरसी[१] प्रीतड़ी,
कीजइ धुरि थकी जोय रे।
कीजोयइ तउ नवि छोड़ियइ,
कंठइ प्राण जां होय रे। ३। प्रि०।
चउमासु चित्रसालीयइ,
रह्या मुनिवर राय रे।
नयण अणीयाले निरखती,
गोरी गीत गुण गाय रे। ५। प्रि०।
कोसा वचन सुणी करी,
मुनिवर नवि डोलइ रे।
समयसुन्दर कहइ कलियुगइ,
थूलिभद्र न को तोलइ रे। ५। प्रि०।

इति श्री स्थूलिभद्र गीतम्

श्री स्थूलिभद्र गीतम्

प्रीतड़ी प्रीतड़ी न कीजइ हे नारि परदेसियां रे,
खिण खिण दाझइ देह।
वीछड़ियां वीछड़ियां वाल्हेसर मेलउ दोहिलउ रे,
सालइ अधिक सनेह ।।प्री.।१।
आजनइ आजनइ आव्या रे काल्हि चालस्यइ रे,

१ सेती

रतन कंबल आव्यां घणां रे, पणि श्रेणिक न लेवाय ।
सालिभद्र नी अंतेउरी रे, लूही नाख्यां पाय ॥मु०॥ ३ ॥
श्रेणिक आव्यउ आंगणइ रे, पुत्र सुणउ सुविचार ।
श्रेणिक कियाणुं मेलवो रे, माव जी मेल्हउ वखारि ॥मु०॥ ४ ॥
श्रेणिक ठाकुर आपणउ रे, जेहनी वसियइ छत्र छांय ।
चमकचउ सालिभद्र चिंतवइ रे,मुझ माथइ पणि राय ॥ मु०॥ ५ ॥
तृण जिम रमणी परिहरी रे, जाण्यउ अथिर संसार ।
महावीर पासि मुनीसरू रे, लीधउ संजम भार ॥मु०॥ ६ ॥
तुम नइं मां पड़िलाभयइ रे, इम बोलइ महावीर ।
घरि आव्यउ नवि ओलख्यो रे,तप करी सोख्युँ सरीर ॥मु०॥ ७ ॥
पड़िलाम्यउ गोवालणी रे, पूरब भवनी माय ।
वीर वचन साचां थयां रे, धन धन श्री जिनराय ॥मु०॥ ८ ॥
वैभार परवत ऊपरी रे, ले अणसण शुभ ध्यान ।
मास संलेखण पामियुं रे, सरवारथ सिद्धि विमान ॥मु०॥ ६ ॥
सालिभद्र ना गुण गावतां रे, सीझइ वंछित काम ।
समयसुंदर कहइ माहरउ रे, त्रिकरण शुद्ध प्रणाम । मु०॥१०॥

इति श्री शालिभद्र गीतम् ॥ १० ॥

श्री श्रेणिक राय गीतम्

प्रभु नरक पडंतउ राखियइं, तउ तूँ पर उपगारी रे ।
श्रेणिक राय वदति वीर तेरउ, हूं तउ खिजमति कारी रे ।प्र.।१।

भमर भमंतां जोई ।
साजनिया बोलावि पाछा वलतां थकां रे,
धरती भारणि होइ ।प्री.।२।
राति नइ तउ नावइ वाल्हा नींदड़ो रे,
दिवस न लागइ भूख ।
अन्न नइ पाणी मुझ नइ नवि रुचइ रे,
दिन दिन सबलो दुख ।प्री.।३।
मन ना मनोरथ सवि मन मां रह्या रे,
कहियइ केहनइ रे साथि ।
कागलिया तो लिखतां भीजइ आंसुआं रे,
आवइ दोखी हाथि ।प्री.।४।
नदियां तणा व्हाला रेला वालहा रे,
ओछा तणा सनेह ।
वहता वहइ वालह उंतावला रे,
झटकि दिखावइ छेह ।प्री.।५।
सारसड़ी चिड़िया मोती चुगइ रे,
चुगे तो निगले कांइ ।
साचा सद्गुरु जो आवी मिलइ रे,
मिले तो विछुड़इ कांइ ।प्री.।६।
इण परि स्थूलिभद्र कोशा प्रतिबूझवी रे,
पाली पाली पूरव प्रीति सनेह ।

ओड़ी नवि प्रीति त्रूटइ नहीं रे,
ओटतां ते त्रूटइ माहरा प्राण रे।
कहउ केही परि कीजीयइ रे,
तुम्हे लउ चतुर सुजाण रे। म०।४।
संवत सोल नव्यासीयइ रे,
मीर मोजां नुं राज रे।
अकबरपुर मांहि रही रे,
भाद्रवह जोड़ी छइ भास रे। म०।५।
स्थूलिभद्र कोरया प्रति बूझवइ रे,
धरम ऊपरि धरउ राग रे।
प्रेम बंधन नेटि पाडुयो रे,
समयसुंदर सुखकार रे। म०।६।

श्री स्थूलिभद्र गीतम्

प्रियुड़उ आव्यउ रे आसा फली,
बोलइ कोसा नारी।
प्रीति पनउता पालियइ,
हुं छुं दासि तुम्हारी।१। प्रि०।
हुं प्रियुड़ा तुझ रागिणी,
तूं कां हृदय कठोर रे।
चंद चकोर तणी परि,
मान्यउ तूं मन मोर रे।२। प्रि०।

स्थूलिभद्र गीतम्

थूलभद्र आव्यउ रे आसा फली, बोलइ कोश्या नारि ।
प्रीति पनउता पालियइ, हूँ छुं दासि तुमारि ॥१॥ थू. ।
हूं प्रीयुड़ा तुझ रागिणी, तूं का हृदय कठोर ।
चंद चकोर तणी परि मान्यउ तूं मन मोर ॥२॥ थू. ।
साजण सेती प्रीतड़ी, कीजइ धुरि थकी जोइ ।
कीजियइ तउ नवि छोड़ियइ, कंठइ प्राण जां होइ ॥३॥ थू. ।
चउमासुं चित्र सालियइ, रह्या मुनिवर राय ।
नयण अणियाले निरखती, कोश्या गीत गुण गाय ॥४॥ थू. ।
कोश्या वचन सुणी करी, मुनिवर नवि डोलइ ।
समयसुंदर कहइ कलिजुगइ, थूलिभद्र न को तोलइ ॥५॥ थू. ।

—:o:—

स्थूलिभद्र गीतम्

राग—केदारउ गउड़ी

तुम्हे वाट जोवंतां आव्या, हूँ जाऊं बलिहारी रे ।
कहउ मुझनइ कांइ तुम लाव्यां, हूँ जाऊं बलिहारी रे ॥ १ ॥
इम बोलइ कोश्या नारि, हुँ जाऊं बलिहारी ।
एतला दिन क्युं वीसारी, हूं जाऊं बलिहारी ॥ आं० ॥
वडुं वखत म्हा , हूँ जाऊं बलिहारी ।
रहउ हुं जाऊं बलिहारी रे ॥ २ ॥

भमर भमंता जोइ ।
साजणिया साजणिया वउलात्री वलतां चालतां रे,
धरती भारणि होय ॥प्री.।२।
कागलियउ कागलियउ लिखतां भीजइ आंसुए रे,
आवइ दोपी हाथि ।
मनका मनका मनोरथ मन मांहे रहइ रे,
कहियइ केहनइ साथि ।।प्री.।३।
इण परि इण परि कोसा थूलभद्र बूझवी रे,
पाली पूरव प्रीति ।
सीयल सीयल सुरंगी ओढाड़ी चूनड़ी रे,
समयसुंदर प्रभु रीति ।।प्री.।।४।।

इति श्री स्थूलिभद्र गीतम् ॥ ४३ ॥

श्री स्थूलिभद्र गीतम

राग—सारंग

प्रीतड़िया न कीजइ हो नारि परदेसियां रे,
खिण खिण दाझइ देह ।
वीछड़िया वाल्हेसर मलवो दोहिलउ रे ।
सालइ सालइ अधिक सनेह ।प्री.।१।
आज नइ तउ आव्या काल उठि चालवुं रे,

कंता विण नारि किसी एकली,
थोड़इ पाणी छीजइ मछली।
कहउ वात कहुँ प्रियुड़ा केतली,
प्रीतड़ी संभारउ प्रियु पिछली ॥३॥ र०॥
विलसी धन कोड़ी ते वात टली,
तजी नारी तणी संगति सगली।
परभव दुरगति वेदन दुहिली,
बोलइ मत कोसा ते वात वलि ॥४॥ र०॥
प्रतिबोधी कोश्या प्रीति पली,
मनमथ तइं जीतउ अतुल बली।
थूलभद्र मुनिवर तेरी जाऊं वली,
समयसुन्दर कहइ मेरी आस फली ॥५॥ र०॥

—:०:—

स्थूलिभद्र गीतम्

व्हाला स्थूलिभद्र हो स्थूलिभद्र व्हाला,
एक करूं अरदास हो हां०
प्रीति संभालउ पाछली।
तुम्ह विण खिण न रहाय हो,हां०
क्यूँ जीवइ जल विण माछली ॥१॥वा.थू.॥
मिलतां सुं मिलियइ सही हो,हां०
चित अंतर जेम चकोरड़ा। वा०।

शील सुरंगी दोधी चूनड़ी रे,
समयसुंदर कहइ एह ।श्री.।७।

इति स्थूलिभद्र गीतं ॥२७॥

श्री स्थूलिभद्र गीतम

राग-जयतश्री-धन्या श्री मिश्र

आवत मुनि के भेखि देखि दासी सासीनी ।
कोशि वेशि कुं आइ इसी जु बधाई दीनी ॥
पियु आये सखि आपुने सुनि हर्षित भई नारि ।
तबहि उतारी अंग हो दीनउ मोतिय हार ॥ १ ॥
स्थूलिभद्र आये मलइ ए माइ जोवत जोवत माग के ॥ आंकणी ॥
चित्रशालि चउमास रहे लहे गुरु आदेसा ।
कोशि कामिनी नृत्य करइ सुरसुंदरी जैसा ॥
हाव भाव विभ्रम करइ कुं भये निठुर निटोल ।
पूरब प्रेम संभाल पियु तूं मान हमारो बोल के ॥ २ ॥
काम भोग संयोग सबइ किंपाक समाने ।
पेखत कूपइ कुण पड़इ सुणि कोश सयाने ॥
मेरु अडिग मुनिवर रहे ध्यान धरम चित लाय ।
समयसुंदर कहइ साध जी हो धन धन स्थूलिभद्र रिपिराय ॥३॥

—:*:—

पाल तूँ निर्मल शील सुरंगा रे,
पामसी परभव शिवसुख अभंगा रे ॥ ५ ॥
धन धन थूलभद्र तुं रिषिराया रे,
समयसुन्दर कहै प्रणमुं पाया रे ॥ ६ ॥

—x—

श्री सनत्कुमार चक्रवर्ती गीतम्

सांभलि सनतकुमार हो राजेश्वर जी,
अबला किम मेल्ही हो राजेन्द्र एकली जी ।
अम्हनइ कवण आधार हो राजेश्वर जी,
राखइ किम धीरज राजन राणियाँ जी ॥१॥
ए संसार असार हो राजेश्वर जी,
काया ते दीठी हो राजन कारमी जी ।
लीधो संजम भार हो राजेश्वर जी,
छांडी राजरिद्धि तृण जिम ते छती जी ॥२॥
मन वसियो वइराग हो राजेश्वर जी,
मूकी हो माया ममता मोहनी जी ।
तिं कीधउ पट खंड त्याग हो राजेश्वर जी,
इम किम निठुर हुआ नाहला जी ॥३॥
एकरस्यउ पियु पेखि हो राजेश्वर जी,
अम्हनइ मन वाल्हो राजन आपणुं जी ।

तुम्हे पूरउ आस अम्हारी, हुं जाऊं बलिहारी ।
अम्हे साध निग्रंथ कहावुं, तूं सुंदरि सांभलि रे ॥ ३ ॥
अम्हे धरम मारग संभलावुं, तूं सुंदरि सांभलि रे ।
तूं मोलुं बोलि मां भांभलि, तूं सुंदरि सांभलि रे ॥ ४ ॥
अम्हे मुगति रमणि सुं राचूं, तूं सुंदरि सांभलि रे ।
जिहां सासतुं सुख छइ साचूँ, तुं सुंदरि सांभलि रे ॥ ५ ॥
रिषि ना वचन सुणि प्रतिबूधो, तूँ सुंदरि सांभलि रे ।
एतो श्राविका थई अति सूधी, तूँ सुंदरि सांभलि रे ॥ ६ ॥
साबाश कोशा शील पाल्युं, तूँ सुंदरि सांभलि रे ।
समयसुंदर कहइ दुख टाल्युं, तूँ सुँदरि सांभलि रे ॥ ७ ॥

इति श्री स्थूलिभद्र गीतम् ॥ ४४ ॥

श्री स्थूलिभद्र गीतम्

सुभ दंत जिसा मचकुंद कली,
केसरी कटी लंक जिसी पतली ।
काया केलि गरभ जिसी कुंयली,
सुसनेही हूँ कोसा आई मिली ॥ १ ॥
रमउ रमउ रे स्थूलिभद्र रंग रली ॥ रम० ॥आंकणी ॥
नीकी कस बंधी कसी कंचुली,
चंचल लोचन भवकइ बीजली ।
कंचन तनु गोरी हूँ नहीं सांमली,
भामिनी सुभ थी नहिं काइ भलि ॥२॥ र०॥

अम्हे अपराध न को कियउ, सांभलि तूं भरतार ।
निपट न दीजइ रे छेहलउ, अबला कुण आधार ॥४॥न०॥
सनतकुमार मुनिसरू, नाण्यउ नेह लगार ।
काज समारयउ रे आपणउ, समयसुन्दर कहइ सार ॥५॥न०॥

इति श्री सनतकुमार चक्रवर्ती गीतम् ॥ २४ ॥

श्री सुकोशल साधु गीतम्

साकेत नगर सुखकंद रे, सहदेवी माता नंद रे ।
गढ़ मांहे कीधउ फंद रे, सुकोसलउ बाल नरिंद रे ॥ १ ॥
साधु सुकोसलउ रे, उपसम रस नउ भंडार ।
जिण लीधउ संजम भार, जिण पाम्यो भव नउ पार ॥ आं० ॥
कीर्त्तिधर नउ कियउ घात रे, सहदेवी पापिणी मात रे ।
सुकोसलइ जाणी बात रे, मुझ नइ भलउ तात संघात रे ॥२॥सा.॥
व्रत लीधउ तात नइ पास रे, चितउड़ रह्यउ चउमासि रे ।
तप संजम लील विलास रे, तोड़इ क्रम बंधण पास रे ॥३॥सा.॥
वागणि आवी विकराल रे, सवि लूरचुं तनु सुकुमाल रे ।
मुनि वेदन सही असराल रे, केवल पाम्यउ ततकाल रे ॥४॥सा.॥
सोना ना दीठा दांत रे, जाण्यउ पूरब विरतांत रे ।
अणसण लीधउ एकांत रे, वाघण पण थइ उपसांत रे ॥५॥सा.॥
सुकोशलउ कर्म खपाय रे, मुगति पहुँतउ मुनिराय रे ।
नाम लेतां नवनिधि थाय रे, समयसुंदर वांदइ पाय रे ॥६॥सा.॥

म करिस खांचा ताणि हो, हां०
तूं पूरि मनोरथ मोरड़ा ॥२॥वा.धू.॥
लाख टका नी प्रीति हो, हां०
मन मान्या सूँ किम तोड़ियइ । वा० ।
कीजइ प्रीत न होइ हो, हां०
त्रूटी पिण सांधी जोड़ियइ ॥३॥वा.धू.॥
जोरइ प्रीत न होइ हो, हां०
दे शील सुरंगी चूनड़ी । वा० ।
साचउ धर्म सनेह हो, हां०
आपे करस्यां सुंदर वातड़ी ॥४॥वा.धू.॥

श्री स्थूलिभद्र गीतम्

ढाल— सुण मेरी सजनी रजनी जानइ, एहनी ।

पिउड़ा मानउ बोल हमारउ रे,
आपणी पूरब प्रीति संभारउ रे ॥ १ ॥
आ चित्रशाला आ सुख सेज्यां रे,
मान मानइ तउ केही लज्या रे ॥ २ ॥
वरसइ मेहा भींजइ देहा रे,
मत दउ छेहा नवल सनेहा रे ॥ ३ ॥
कहइ मुनि म करि वेश्या आदेशा[1] रे,
सुण उपदेसा अमृत जैसा रे ॥ ४ ॥

१ अंदेशा

सेऊ कासी नउ राजवी, विजय महाबल रायो रे ।
ए ···· ······ मुनीसरे, राज छोड्या कहिवायो रे ॥१०॥
ए सहु साध संबन्ध छइ, उत्तराध्ययन मझारो रे ।
समयसुंदर कहइ साधनइ, नाम थी हुयइ निस्तारो रे ॥११॥

इति संयती साधु गीतं ॥ ५० ॥
[पत्र १४ फूलचंद जी झाबक सं०]

श्री अंजना सुन्दरी सती गीतम्

ढाल—राजिमती राणी इण परि बोलइ एहनी ।

अंजना सुन्दरी शील वखाणी,
पवनंजय राजा नी राणी ।
पाछिलइ भव जिन प्रतिमा सांति,
करम उदय आव्या बहु भांति ॥अं०॥१॥
बार बरस भरतार न बोल्यउ,
तो पणि तेहनउ मन नवि डोल्यउ ॥अं०॥२॥
रावण सुं कटकी प्रियु चाल्यउ,
चकवी शब्द सुणी दुख साल्यउ ॥ अं० ॥४॥
राति छानउ पाछउ आयउ,
अंजना सुंदरी सुं सुख पायउ ॥ अं० ॥५॥
गर्भ नो भ्रांति पड़ी अति गाढी,
सासू कलंक दे बाहिर काढी ॥ अं० ॥६॥

राखी ऋषि नी रेखा हो राजेश्वर जी,
योगीन्द्र फिरि पाछउ जोयउ नहीं जी ॥४॥
वरस सातसह सीम हो राजेश्वर जी,
वहुली हो वेदन सही साध जी।
निरवाह्या व्रत ताम हो राजेश्वर जी,
देवलोक तीजइ हुवउ देवता जी ॥४॥
साधु जी सनतकुमार हो राजेश्वर जी,
चक्रवर्ती चौथउ तिहां थी चवी जी।
उत्तम लहि अवतार हो राजेश्वर जी,
शिव सुख लेस्यइ मुनिवर सास्वता जी ॥६॥
इंद्र परीच्यो आय हो राजेश्वर जी,
हुँ बलिहारी जाऊं एहनी जी।
प्रणम्यां जायइ पाप हो राजेश्वर जी,
समयसुन्दर कहइ सुख सदा जी ॥७॥

श्री सनतकुमार चक्रवर्ती गीतम्

जोवा आव्या रे देवता, रूप अनोपम सार।
गरव थकी विणसी गयउ, चक्रवर्ति सनतकुमार ॥१॥
नयण निहालउ रे नाहला, अवला करइ अरदास।
एकरस्यउ अवलोइयइ, नारी न मूंकउ नीरास ॥२॥न०॥
काया दीठी रे कारिमी, जाण्यउ अथिर संसार।
राज रमणि सवि परिहरी, लीधउ संजम भार[1] ॥३॥न०॥

१ मणि माणिक भंडार

वेश्या नइ राजा नइ वसि पड़ी,
मुहकम दीधी मारि।
गहिली काली थइ गलिए भमइ,
पणि राख्यउ सील नारी ॥३॥न०॥
भरुयच्छ वासी जिणदास श्रावकइ,
पीहर मूँकी आणि।
धरम सुणी नइ संजम आदरयउ,
कठिन क्रिया गुण खाणि ॥४॥न०॥
अवधी न्यान साधवी नइ ऊपनुँ,
पहुँती सासू पासि।
रिपिदत्ता दीधउ उपासरउ,
द्यइ उपदेस उलासी ॥५॥न०॥
स्वर लक्षण नउ भेद सुणावियउ,
ग्रियउ करइ पश्चाताप।
निरपराध मूँकी मइं नरमदा,
मइ कीधउ महापाप ॥६॥न०॥
दुक्ख म करि तु देवाणुप्पिया,
तुझ दूषण नहीं तेह।
तेहनइ करमे ते दुखिणी थई,
तेहू नरमद एह ॥७॥न०॥

श्री संयती साधु गीतम्

ढाल—वे बांधव वांदण चल्या, एहनी

कंपिल्ला नगरी धणी, संजती राजा नामो रे।
चतुरंग सेना परिवरयउ, गयउ मृगचरिजा कामो रे॥ १॥
संजती नइ खत्री मिल्यउ, दृष्टान्त कही दृढ़ कीधउ रे।
राज रिधि छोड़ी करी, इए राजा व्रत लीधउ रे॥ २॥
मृग देखि सर मूंकियउ, ते पड़यउ साध नइ पासो रे।
हा मन साध हएयउ हुवइ, तिण उपनउ मुनि त्रासउ रे॥ ३॥
साध कहइ मत बीहजे, मुझ थी अभया दानों रे।
अभय दान हिव आपि तुं, सुख दुख सहु नइ समानो रे॥ ४॥
प्रतिबूधउ रिधि परिहरी, आएयउ मनि उल्लासो रे।
संजम मारग आदरयउ, गद्‌भिलि गुरु पासो रे॥ ५॥
मारग मइं खत्री मिल्यउ, सुणि संजत सुविचारो रे।
हुं मोटउ रिधि मइं तजी, मत करइ तुं अहंकारो रे॥ ६॥
बीजे पण बहु राजवी, छोड़ी रिधि अपारो रे।
तप संजम करी आकरा पाम्यउ भव नउ पारो रे॥ ७॥
भरत सगर मघवा भला, चक्रवर्ती सनत कुमारो रे।
शांति कुंथु अरनाथ ए, तीर्थंकर अवतारो रे॥ ८॥
महा पदम हरिषेण जय, दसारणभद्र करकंडू रे।
दुमुह नमी नइ नगई, उदायन राय अखण्ड रे॥ ६॥

माणस मारि मांस ले मूँकइ,
रिषिदत्ता नइ पासि रे ।
लोही सुं मूँहडउ वलि लेपइ,
आवी निज आवासि रे ॥ ४ ॥ रि० ॥

राक्षसणी जाणी राय कोप्यउ,
गद्दह ऊपरि चाडि रे ।
कलंक दई नइ वाहिर काढी,
सारउ नगर भमाड़ि रे ॥ ५ ॥ रि० ॥

मारण खड़ग देखि नइ महिला,
धरती पड़ी अचेत रे ।
मुँइ जाणी चंडालइ मूँकी,
चरम सरीरी हेत रे ॥ ६ ॥ रि० ॥

सीतल वाय सचेतन कीधी,
पहुँती वाप नइ ठाम रे ।
पुरुष थई औषधि परभावइ,
रिषिदत्त तापस नाम रे ॥ ७ ॥ रि० ॥

वलि रुक्मणी परणेवा चाल्यउ,
कुमर कनकरथ तेइ रे ।
तिण ठामइ तापस मिल्यउ तेइजि,
प्रगट्यउ परम ससनेह रे ॥ ८ ॥ रि० ॥

वन मांहे हनुमंत बेटउ जायउ,
मामउ मिल्यउ घर तेडि सिधायउ ॥ अं० ॥७॥
पवनंजय आयउ अपणइ घरि,
दुख करि अंजना नउ बहु परि ॥ अं० ॥८॥
काष्ट भक्षण करिवा ते लागउ,
मित्र मेली अंजणा दुख भागउ ॥ अं० ॥६॥
सुख भोगवि संजम पणि लीधउ,
अंजणा सुंदरि वंछित सीधउ ॥ अं०।१०॥
अंजणा सुंदरि सती रे शिरोमणि,
गुण गायउ श्री समयसुन्दर गणि ॥ अं०।११॥

श्री नरमदा सुंदरी सती गीतम्

ढाल—साधजी न जाए रे पर घर एकलड ।

नरमदा सुंदरी सतिय सिरोमणि,
चाली समुद्र मझारि ।
गीत गायन ना अंग लक्षण कह्या,
भरम पड्यउ भरतारि ॥१॥न०॥
राक्षस दीपइ मूंकी एकली,
कीधा विरह विलाप ।
बब्बर कूलइ काढउ ले गयउ,
प्रगट्या तिहां वलि पाप ॥२॥न०॥

रिपिदत्ता कहइ ते मित्र आ हूं,
भेद कह्यउ थयउ सुक्खु रे ॥१४॥ रि० ॥
रिपिदत्ता मांगइ थांपणि वर,
रुकमणि सुं करउ रंग रे।
रिपिदत्ता नीं देखउ रूड़ाई,
देखउ सील सुचंग रे ॥१५॥ रि० ॥
रिपिदत्ता प्रिय सुं सुख भोगवी,
लीधउ संजम भार रे।
केवल न्यान लह्युं तप जप करी,
पाम्यउ भव नउ पार रे ॥१६॥ रि० ॥
रिपिदत्ता राणी रूड़ी परि,
पाल्युं निरमल सील रे।
समयसुंदर कहइ मुगति पहूँती,
लाधां अविचल लील रे ॥१७॥ रि० ॥

॥ इति रिपिदत्ता गीतम् ॥

श्रीदवदंती सती भास

हो सायर सुत सुहामणा, सुहामणा रे,
हो सांभलि सुगुण संदेस।
हो गगन मंडल गति ताहरी, ताहरी रे,
हो देखइ सगला तूँ देस ॥१॥

प्रियु प्रतिबोधउ नरमदासुंदरी,
पहुँती सरग मझारि ।
समयसुंदर कहइ सील वखाणतां,
पामीजइ भव पारि ॥८॥न०॥

इति नरमदा सुन्दरी सती गीतं ॥६॥

श्री ऋषिदत्ता गीतम्

ढाल—जिणवर सुं मेरउ मन लीणउ. ए गीतनी

रुक्मणी नइ परणवा चाल्यउ,
कुमर कनकरथ नाम रे ।
रिसिदत्ता तापस नी पुत्री,
दीठी अति अभिराम रे ॥ १ ॥
रिसिदत्ता रूपइ अति रूयड़ी,
सील सुरंगी नारि रे ।
नित उठी नइ नाम जपंता,
पामीजइ भव पारि रे ॥ २ ॥ रि० ॥
रिषिदत्ता परणी घरि आव्यउ,
सुख भोगवइ सुविवेक रे ।
रुक्मणी पापिणी रीस करीनइ,
मूंकी जोगणी एक रे ॥ ३ ॥ रि०

हो रोई रोई मुंह हूं रान० मइं, रान० रे,
हो महियलि पड़ी हूं मूरछि ॥६॥म.॥चां.॥
हो कीधुं ते न को करइ, न को करइ रे,
पुरुषां गमाड़ि परतीति ।
हो वेसास भागउ हिव वालहा रे, हो० रे,
हो पुरुषां सुं केही प्रीति ।७॥पु.।चां.॥
हो दृष्टान्त थारउ नल दाखिस्यइ रे, दा० रे,
हो कवियण केरी रे कोड़ी ।
हो पुरुष कूड़ा घणुँ कपटिया रे, हो क० रे,
हो खरो लगड़ी तइं खोड़ि ॥८॥ख.।चां.॥
हो वस्त्र अत्तर वांच्या वालहा रे, हो वा० रे,
हूं पीहरि चाली परभाति ।
हो कंत विहूणी कामणी रे, हो कामणी रे,
हो पीहरि भली पंच राति ॥६। पी.।चा.॥
हो वलण वेगी करे वालहा रे, हो वा० रे,
हूँ राखीसि सील रतन्न ।
हो लेख मिटइ नहीं विहि लिख्या, हो० रे,
हो भूठा कीजइ ते जतन्न ॥१०॥भू.।चां.॥
हो बारै वरसे वे मिल्या हो, वे मिल्या रे,
नल दवदंती नर नारि ।
हो भावना समयसुंदर भणइ, सुंदर भणइ रे,
हो सीयल वड़उ संसार ॥११॥सी.।चां॥

तापस साथि लीयउ वीनति करि,
परणी रुकमणी नारि रे ।
एक दिन कहइ रिपिदत्ता सुं प्रियु,
केहवउ हूंतउ प्यार रे ॥ ९ ॥ रि० ॥
जीवन प्राण हुंती ते माहरइ,
तब रुकमणी कहइ एम रे ।
पणि राक्षसणी दोस देहनइ,
मइ दुख दीधउ केम रे ॥१०॥ रि० ॥
रुकमणि नइ निभ्रंछि नांखी,
काष्ट भक्षण करइ राय रे ।
मुई पणि मेलुं रिपिदत्ता,
कहइ मुनि करउ जउ पसाय रे ॥११॥ रि० ॥
कहइ राजा मांगइ ते आपुं,
राखउ थांपणि सुभ रे ।
आप मरी नइ रिपिदत्ता नइ,
देई मूँकिसि तुज्भ रे ॥१२॥ रि० ॥
इम कहिनइ परियछि मांहि पइठउ,
ऊपधि कीधी दूर रे ।
रिपिदत्ता रमझमती आवी,
प्रगट्यउ पुण्य पडूर रे ॥१३॥ रि० ॥
रिपिदत्ता लेई घरि आव्यउ,
पणि मित्र नुं करइ दुखु रे ।

तूँ थयउ सुख तणउ लोभियउ,
न करइ म्हारा रिषभ नी सार रे ॥ म. ॥ १ ॥
सुरनर कोड़ि सुं परिवरचउ,
हींडतउ वनिता मझार रे।
आज भमइ वन एकलउ,
ऋषभजी जगत आधार रे ॥ म. ॥ २ ।
राज लीला सुख भोगियउ,
म्हारउ रिषभ सुकुमाल रे।
आज सहइ ते परिसहा,
भूख तृषा नित काल रे ॥ म. ॥ ३ ।
हस्ति ऊपर चढ्यउ हींडतउ,
आगलि जय जय कार रे।
आज हींडइ रे अल वाहणउ,
चिहुं दिसि भमर गुंजार रे ॥ म. ॥ ४
सेज तलाइ में पउढतउ,
वर पट कूल बिछाइ रे।
आज तउ भूमि संथारड़उ,
बइठड़ां रयणी विहाइ रे ॥ म. ॥ ५
मस्तकि छत्र धरावतउ,
चामर वींजता सार रे।
आज तउ मस्तकइ रवि तपइ,
डांस मसक भणकार रे ॥ म. ॥ ६

चांदलिया संदेसउ रे, कहे म्हारा कंतइ रे,
थारी अबला करइ रे अंदेश। च०
नाहलिया विहूणी रे नारि हूं क्युं रहुं रे। आंकणी॥
हो वालिम मइं तुनइ वारियउ, वा० रे,
हो जूपटइ रमिवा तूँ म जाइ।
हो राज हारी तूँ निसरयउ, नी० रे,
वन मांहि गयउ विलखाइ ॥२॥च०॥चा०॥
हो नल तुझ सुं हूं नीसरी सुं, नी० रे,
हो आंगमि लीयउ दुख आप।
हो तूं मुझ नइ मूँकी गयउ, मुं रे,
हो इवडउ किसउ अपराध ॥३॥इव.॥चा.॥
हो सूती मूँकी कांइ सती, कांइ सती रे,
प्रमदा न जाणी तइं पीर।
हो हाथे जिण परणी हुँती, परणी हुँती रे,
हो चतुर कपाण्ड किम चीर ॥४॥च.॥चां.॥
हो भवकि जागी लगी झूरिवा, झूरि वा० रे,
हो प्रिउ तूँ न दीठउ रे पासि।
हो वनि वनि जोयउ तूँ नइ वालहा, वा० रे,
हो साद दिया सउ पंचास ॥५॥सा.॥चां.॥
हो निरति न पामी थारी नाहला, ना० रे,
हो पग पग मृगली रे पूठि।

धिग धिग एह संसार नइ,
आवियउ परम वइराग रे।
किम प्रतिबंध जिनवर करइ,
ए अरिहंत नीराग रे ॥ म. ॥ १२॥
गज चढ्यां केवल ऊपनुं,
पाम्यउ मुगति नउ राज रे।
सुरनर कोड़ि सेवा करइ,
भरत वंद्या जिनराज रे ॥ म. ॥ १३॥
नाभिरायां कुल चंदलउ,
मरुदेवी मात मल्हार रे।
समयसुंदर सेवक भणइ,
आपजो शिव सुख सार रे ॥ म. ॥ १४॥

श्री मृगावती सती गीतम्

चंद सूरज वीर वांदण आव्या,
निरति नहीं निसदीस ।
मृगावती तिण मउड़ी आवी,
गुरुणी कीधी रीस ॥ १ ॥
मृगावती खामइ वे कर जोड़ि।
चंदना गुरुणी हुँ चरणे लागुं,
ए अपराध थी छोड़ि ॥मृ० ॥२॥आंकणी॥

श्री दमयन्ती सती गीतम्

ढाल—धन सारथवाह साधु नइ, एहनी

नल दवदंती नीसर्‌या,
    जूयढइ हारचउ देस नल राजा।
वन मांहि राति वासउ वस्या,
    सूता भूमि प्रदेस नल राजा॥१॥
मुझ नइ मुंकी तूँ किहां गयउ,
    अबला कुण आधार नल राजा।
साद करइ सगलो दिसइ,
    दवदंती निज नारि नल राजा॥२॥मु०॥
दवदंती सूती थकी,
    मूकी गयउ नल राय नल राजा।
वस्त्र ऊपरि अक्षर लिख्या,
    सासरइ पीहरि जाय नल राजा॥३॥मु०॥
दवदंती देखइ नहीं,
    नयण सलूणउ नाह नल राजा।
घइ ओलंभा दैव नइ,
    दुख करइ मन मांहि नल राजा॥४॥मु०॥
हे हे पुरुष कठिन हिया,
    पुरुष नउ केहउ वेसास नल राजा।

चारित्रियउ चित मां वस्यउ जी,
सोवड़ि बाहिर रह्यउ हाथि ॥३॥वी०॥
झबकि जागी कहइ चेलणा जी,
किम करतउ हुस्यइ तेह ।
कुसती नइ मन कुण वस्यउ जी,
श्रेणिक पड्यउ रे संदेह ॥४॥वी०॥
अंतेउर परिजालज्यो जी,
श्रेणिक दियउ रे आदेस ।
भगवंत सांसउ भांगियउ जी,
चमक्यउ चित्त नरेस ॥५॥वी०॥
वीर वांदी वलतां थकां जी,
पइसतां नगर मझार ।
धूंआ नउ धोर देखी करी जी,
जा जा रे अभयकुमार ॥६॥वी०॥
तात नउ वचन पाली[1] करी जी,
व्रत लीयउ हरष[2] अपार ।
समयसुन्दर कहइ चेलणा जी,
पाम्या भव तणउ पार ॥वी० ॥ ७॥

---

१ पाल्यउ तिहां जी. २ अभयकुमार

इम मुझ दुख करंतड़ा,
रोवंता रात नइ दीसरे।
नयणे अंध पडल वल्या,
मोहनी विषम गति दीस रे ॥ म. ॥ ७ ॥

तिण समइ आवि. वधावणी,
ऋषभ नइ केवल नाण रे।
सांभलि भरत नरेसरू,
वांदिया जायइ जगभाण रे ॥ म. ॥ ८ ॥

मरुदेवी गज चढ्या मारगइ,
सांभल्या वाजित्र तूर रे।
देव दुंदुभि प्रभु देसना,
फटकि पडल गया दूर रे ॥ म. ॥ ९ ॥

प्रभु तणी रिधि देखी करी,
चिंतवइ मरुदेवी मात रे।
हूंतउ आवड़उ दुख करूं,
रिषभ नइ मनि नहीं वात रे ॥ म. ॥ १०॥

एतला दिवस मइं मुझ भणी,
नवि दियउ एक संदेश रे।
कागल मात्र नवि मोकल्यउ,
नवि करचउ राग नउ लेश रे ॥ म. ॥ ११॥

श्री राजुल रहनेमि गीतम्

राग—रामगिरी

रूड़ा रहनेमि म करिस्यउ म्हारी आलि ।
मुहड़इ बोलि संभालि रे,
हुं नहीं छुं भे (? ने) वाली रे । र० । म० ।
सुणि एहवी वात जउ सांभलस्यइ,
गुरु देस्यइ तुझ नइ गालि रे । र० ॥ १ ॥
जोरइ प्रीति न होयइ जादव,
एक हथि न पड़इ तालि रे ।
समयसुन्दर कहइ राजुल वचने,
रहनेमि लीधुं मन वालि रे । र० ॥ २ ॥

इति राजुल रहनेमि गीतम् ॥

पं० रंगविमल लिखितम् ॥ शुभंभवतु ॥ छः ॥

श्री राजुल रहनेमि गीतम्

ढाल—किहां गयउ नल किहां गयउ; एह दमयंती ना गीत नी ।

यदुपति वांदण जावतां रे, मारगि वूठा मेहो रे ।
गुफा मांहि राजुल गई रे, वस्त्र ऊगाविवा देहो रे ।१।
दूरि रहउ रहनेमि जी रे, वचन संभाली बोलउ रे ।
राजमती कहइ साधजी रे, मारग थी मत डोलउ रे ।२। दू०।

मिच्छामि दुक्कड़ दइ मन सुद्धे,
मूकी निज अभिमान ।
पोतानउ दूषण परकास्यउ,
पाम्यउ केवल ज्ञान ॥ मृ०॥३॥
चंदन बाला केवल पाम्यउ,
करती परचाताप ।
समयसुंदर कहइ बे मुगति पहुँती,
नाम लियां जायइ पाप ॥ मृ० ॥४॥

श्री चेलणा सती गीतम्

वीर वांदी वलतां थकां जी,
चेलणा दीठउ रे निग्रंथ ।
वन मांहि काउसग रह्यउ जी,
साधतउ मुगति नो पंथ ॥१॥
वीर वखाणी राणी चेलणा जी,
सतिय सिरोमणि जाण ।
चेडा नी साते सुता जी,
श्रेणिक सील प्रमाण ॥२॥ वी०॥
सीत ठंठार सबलउ पडइ जी,
चेलणा प्रीतम साथि ।

श्री सुभद्रा सती गीतम्

मुनिवर आव्या विहरता जी, भरती दीठी आंखि ।
जीभ संघाति काढियउ जी, तरणुं ततखिण नाँखि ॥१॥

जग मांहे सुभद्रा सती रे, सती रे सिरोमणि जाण ।
विनयवंत श्रावक सुणउ जी, सील रयण गुण खाण ॥ज.।आं.॥

तिलक रंग लागउ तिहां जी, मुनिवर भाल विसाल ।
दुसमण लोक कलंक दियउ जी, काउसग्गि रही ततकाल ।ज.।२।

सासण देवत इम कहइ जी, म करे चिंत लगार ।
ताहरउ कलंक उतारिस्युं जी, जिन सासन जयकार ॥ज. ॥३॥

काचे तांतण सूत्र नइ जी, चालणी काढयुं नीर ।
चंपा बार उघाड़ियउ जी, सीले साहस धीर ॥ज. ॥४॥

मन वचने काया करउ जी, सील अखंड संसार ।
समयसुंदर वाचक कहइ जी, सती रे सुभद्रा नार ।ज. ॥५॥

श्री द्रौपदी सती भास

ढाल—मांगी तूंगी रे बलभद्र जइ रह्या रे, एहनी.

पांच भरतारी नारी द्रूपदी रे, तउ पणि सतीय कहाय रे ।
नारी नियांणुं कीधुं भोगवइ रे, करम तणी गति काइ रे ।१। पं.।
जुधिष्टिर नइं पासइ हुंती रे, देवता आणी दीध रे ।
पदमनाभइ घणुं प्रारथी रे, पणि सत साहस कीध रे ।२। पं.।

श्री राजुल रहनेमि गीतम्

राजमती मन रंग, चाली जिण वंदन हे राजुल चाह सूँ।
साधवी सील सुचंग, गिरनारि पहुंता हे राजुल गहकती ॥ १ ॥
मारगि वूठा मेह, चीवर भीना हो राजुल चिहुँ गमा[1]।
गईय गुफा मांहि गेह, [2]साड़लउ उतारयउ हे राजुल सुंदरी ॥२॥
देखि उघाड़ी देह, प्रारथना कीधा हो रहनेमि पाइई।
अद्‌भुत जोवन एह, सफल करीजइ हे राजुल सुन्दरी ॥ ३ ॥
साधवी कहइ सुण साध, विषय तणा फल हो रहनेमि विषसमा।
आपइ दुख अगाध, दुर्गति वेदन हो रहनेमि दोहिली ॥ ४ ॥
चतुर तुं चित्त विचार, आपे केहवइ कुलि हो रहनेमि ऊपना।
इण मातइ अणगार, लौकिक न लहियइ हो रहनेमि लोकमइ ॥ ५॥
साधवी वचन सुणि एम, पाछउ मन वाल्यउ हो रहनेमि पापथी।
कुवचन कह्या मइं केम, अति पछताणउ हो रहनेमि आप थी।६।
अरिहंत चरणे आवि, पाप आलोया हो रहनेमि आपणा[3]।
खिण मांहि करम खपावि, मुगति पहुंतउ हो रहनेमि मुनिवरु ।७।
राजमती रहनेमि, सील सुरंगा हो सहु को सांभलउ।
आपइ पातक जेम, भाव भगति हो समयसुन्दर भणइ ।८।

॥ इति रहनेमि गीतम् ॥

१ दिसा. २ साधवी उतारयउ हे राजुल साड़लउ. ३ पाछिम्या.

लाभ घणो विणजे व्यापारइ, आवे प्रवहण कुशले खेम।
ए [1]सदगुरु नो ध्यान धरंता, पामइ पुत्र कलत्र बहु प्रेम।प्र.७।
गौतम स्वामि तणा गुण गातां, अष्ट महासिद्धि नवे निधान।
समयसुन्दर कहइ सुगुरु प्रसादे, पुण्य उदय प्रगट्यो परधान।प्र.८।

(२) श्री गौतम स्वामी गीतम्

ढाल—भीली नी

मुगति समय जाणी करी जी रे जी,
वीरजी मुझ नइ मूंक्यउ दूरि रे।
मइ अपराध न को कियउ जी रे जी,
वीरजी रहतउ तुम्ह हजूरि रे॥ वी०॥१॥
वीर जी वीर जी किहां गयउ जी रे जी,
वीर जी नयणे न देखूं केम रे।
तुम पाखे किम हूं रहूं जी रे जी,
वीरजी साचउ तुम्ह सुं प्रेम रे॥ वी०॥२॥
जाण्युं आडउ मांडस्यइ जी रे जी,
वीरजी गौतम लेस्यइ केवल भाग रे।
विलवलतां मूंकी गयउ जी रे जी,
वीरजी एक पखउ म्हारउ राग रे॥ वी०॥३॥

१ श्री गौतम गुरु.

अंग उघाड़ा देखिनइ रे, जाग्यउ मदन विकारो रे ।
मुनिवर प्रारथना करइ रे, ल्यउ जोवन फल सारो रे ।३। दू.।
राजमती कहइ आंपणउ रे, उत्तम कुल संभारउ रे ।
विषय तणां फल पाडुया रे, साधजी चित्त विचारउ रे ।४। दू.।
सतिय वचन इम सांभलि रे, वइरागइ मन वाल्यउ रे ।
समयसुन्दर रहनेमि जी रे, सील अखंडित पाल्यउ रे ।५। दू.।

इति श्री रथनेमि गीतम् सं० ॥ ४ ॥

श्री राजुल रहनेमि गीतम्

राजुल चाली रंगसुं रे लाल, यदुपति वंदण जाइ सुकुलीणी रे ।
मेह सुं भीनी मारगे रे लाल,ऊभी गुफा मांहे आइ सुकुलीणी रे।१।
राजुल कहइ रहनेमि जी रे लाल, मत कर म्हारी आलि सुकुलीणी रे।
आपां कया कुले उपन्या रे लाल,चतुर तुं चारित पाल सुकुलीणी रे २।
अंग उघाड़ा देखि नइ रे लाल, चूक्यउ रहनेमि चित्त सुकुलीणी रे ।
आव आपे सुख भोगवां रे लाल, पालस्यां पूरब प्रीत सुकुलीणी रे।३।
लौकिक न रहइ लोकमां रे लाल, विषय थकी मन वाल सुकुलीणी रे।
काम भोग भुंड्या कह्या रे लाल, नरक ना दुख निहाल सुकु० रे ।४।
दूध उफाणे दूर कियउ रे लाल, राख्यउ नइ रहनेमि शील सुकु० ।
समयसुंदर सामास घइ रे लाल, ... सुकुलीणी रे।५।

भोजन मिष्ट मिलइ बहु भांते, शिष्य मिलइ सुविनीत सुजाते ॥२॥
वाधइ कीरति जग विख्याते, समयसुन्दर गौतम गुण गाते ॥३॥

एकादश गणधर गीतम्

राग—वेलाउल

प्रात समइ उठि प्रणमियइ, गिरुया गणधार ।
वीर जिणंद वखाणिया, अनुपम इग्यार ॥ प्रा०।१।
इन्द्रभूति श्री अग्नि भूति, वायुभूति कहाय ।
व्यक्त सुधरमा स्वामि स्युं, रहियइ चित लाय ॥ प्रा०।२।
मंडित मौरिपुत्र ए, अकंपित उल्हास ।
अचलभ्राता आखियइ, मेतार्य प्रभास ॥ प्रा०।३।
ए गणधर श्री वीर ना, सुखकर सुविशाल ।
थाज्यो माहरी वंदना, समयसुन्दर तिहुँ काल ॥ प्रा०।४।

गहूँली गीतम्

प्रभु समरथ साहिब देवा रे, माता सरसति नी करुं सेवा रे ।
सुध समकित ना फल लेवा रे, हुं तो गाइस गुरु गुण मेवा रे ।१।
मुनिराया रे ॥
गुण सतावीस जेहनइ पूरा रे, शुद्ध किरिया मांहि धूरा रे ।
तप बारे भेदे सूरा रे, शियल व्रत सनूरा रे । मु.।२।
गुरु जीवदया प्रतिपालइ रे, पंच महाव्रत सुधा पालइ रे ।
बेंतालीस दोष निवारइ रे, गुरु आतम तत्त्व विचारइ रे । मु.।३।

छम्मास सीम आंबिल किया रे, राख्युं सील रतन्न रे।
पाछी आणी वलि पांडवे रे, पणि श्रीकृष्ण जतन्न रे।३।पं.।
सील पाली संजम लियउ रे, पांचमइ गई देवलोकि रे।
माहविदेह मइ सीझस्यइ रे, सील थकी सहु थोक रे।४।पं.।
द्रूपद रायतणी तणया रे, पांच पांडव नी नारि रे।
समयसुन्दर कहइ द्रूपदी रे, पहुँती भव तणइ पारि रे।५।पं.।

(१) श्री गौतम स्वामी अष्टक

प्रह ऊठी गौतम प्रणमीजइ, मन वंछित फल नउ दातार।
लबधि निधान सकल गुण सागर,श्रीवर्द्धमान प्रथम गणधार।प्र.१।
गौतम गोत्र चउद विद्यानिधि, पृथिवी मात पिता वसुभूति।
जिनवर वाणी सुणया मन हरखे, बोलाव्यो नामे इन्द्रभूति।प्र.२।
पंच महाव्रत ल्याइ प्रभु पासे, थे त्रिपदी जिनवर मनरंग।
श्री गौतम गणधर तिहां गूंथ्या, पूरव चउद दुवालस अंग।प्र.३।
लब्धे अष्टापद गिरि चडियउ, चैत्यवंदन जिनवर चउवीस।
पनरेसै तीडोत्तर तापस, प्रतिबोधि कीधा निज सीस।प्र.४।
अद्भुत एह गुगुरु नो अतिसय, जसु दीखइ तसु केवल नाण।
जाब जीव छठ छठ तप पारणइ,आपण पइ गोचरीय मध्यान्ह।प्र.५।
कामधेनु सुरतरु चिन्तामणि, नाम मांहि जस करे रे निवास।
ते सदगुरु नो ध्यान धरंता, लाभइ लच्मी लील विलास।प्र.६।

श्रीजिनपति सूरीसर राय, सूरि जिणेसर प्रणमुं पाय ।
जिन प्रबोध गुरु समरूं सदा, श्रीजिनचंद्र मुनीसर मुदा ॥४॥
कुशल करण श्री कुशल मुणिंद, श्रीजिनपदमसूरि सुखकंद ।
लब्धिवंत श्री लब्धि सूरीश, श्री जिनचंद नमूं निशदीस ॥५॥
सूरि जिनोदय उदयउ भाण, श्री जिनराज नमूं सुविहाण ।
श्री जिनभद्रसूरीसर भलउ, श्री जिनचंद्र सकल गुण निलउ ।६।
श्री जिनसमुद्रसूरि गच्छपती, श्री जिनहंससूरिसर यती ।
जिनमाणकसूरि पाटे थयउ, श्रीजिनचंद सूरीसर जयउ ॥७॥
ए चौवीसे खरतर पाट, जे समरइ नर नारी थाट ।
ते पामइ मन वंछित कोड़, समयसुंदर पभणइ कर जोड़ि ॥८॥

इति श्रीखरतर २४ गुरु पट्टावली समाप्ता लिखिता च पं० समयसुन्दरेण ।
(जयचंदजी भंडार गु० नं० २५)

गुर्वावली गीतम्

राग—नट्टनारायण जाति कड़खा

उद्योतन वर्द्धमान जिनेसर, जिनचंदसूरि अभयदेवसूरि ।
जिनवल्लभसूरि जिनदत्त जिनचंद, श्री जिनपतिसूरि गुण भरपूरि ॥१॥
ए जु श्रीजिनपतिसूरि गुण भरपूर नइ,
श्रीगुरु हो खरतर नायक अविचल पाट ॥
जिनेसरसूरि प्रबोधसूरि जिनचंदसूरि, कुशलसूरि पदमसूरिंद ।
लब्धिसूरि जिनचंद जिनोदय, श्री जिनराजसूरि सुखकंद ॥

वीर वीर केहनइ कहूं जी रे जी,
वीरजी हिव हूं प्रश्न करूँ किण पासि रे।
कुण कहस्यइ मुझ गोयमा जी रे जी,
वीरजी कुण उत्तर देस्यइ उल्हासि रे ॥ वी०॥४॥

हा हा वीर तइं स्युं कर्युं जी रे जी,
गौतम करत अनेक विलाप रे।
जेतलउ कीजइ नेहलउ जी रे जी,
जिवड़ा तेतलउ हुयइ पछताप रे ॥ वी०॥५॥

जगि मांहे को केहनुं नहीं जी रे जी,
गौतम वाल्युं मन वइराग रे।
मोह पडल दूरे कर्या जी रे जी,
गौतम जाण्युं जिन नीराग रे ॥ वी०॥६॥

गौतम केवल पामियुं जी रे जी,
त्रिभुवन हरख्या सुरनर कोडि रे।
पाय कमल गौतम तणा जी रे जी,
प्रणमइ समयसुन्दर कर जोडि रे ॥ वी०॥७॥

(३) श्री गौतम स्वामी गीतम्

राग—परभाती

श्री गौतम नाम जपउ परभाते, रलिय रंग करउ दिन राते ॥१॥

समयसुंदर कहइ भावसुं रे,
नित प्रणमुं सिर नामी रे जात्रीड़ा ॥ ४ ॥

दादा श्री जिन कुशल सूरि गीत

राग—वसंत

आज आणंदा हो आज आणंदा ।
भाव भगति परभाते भेट्या,
श्री जिन कुशल सूरीन्दा ॥ आ० ॥ १ ॥
आरति चिन्ता टालइ अलगी,
गुरु मेरो दूर करे दुख दंदा ।
जागतो पीठ आवे लोग जातर,
नर नारी ना वृंदा ॥ आ० ॥ २ ॥
साहिब हूँ तोरी करुं सेवा,
आठ पहर अरज बंदा ।
समयसुंदर कहइ सानिध करजो,
चंद कुलंबर चंदा ॥ आ० ॥ ३ ॥

अमरसर मंडण श्री जिनकुशलसूरि गीतम्

राग—मारुणी

दाखि हो मुझ दरिसण दादा, श्रीजिनकुशल करि सुप्रसादा ।
सेवक नइ समरथउ द्यइ सादा, जग सिगलउ जंपइ जसवादा । दा.। १ ।

गीतारथ गुण ना दरिया रे, गुरु समता रस ना भरिया रे।
पंच सुमति गुपति सु परिवरिया रे, भवसागर सहजे तरिया रे। मु.।४।

गुरु नु पाटियो मोहन गारो रे, सहु संघ नइ लागे छे प्यारो रे।
गुरु उपदेश द्यइ सुख वारु रे, भवि जीव नइ भव निधि तारु रे। मु.।५।

गुरु नी आंखड़ली अणियाली रे, जाणइ ज्ञान नी सेरी निहाली रे।
चार विषधर ना विष टाली रे, वस कीधा शिव लटकाली रे। मु.।६।

गुरु नु वंदन ते शारद चंद रे, जाणे मोहन वेलि नो कंद रे।
गुरु आगे तेजें आनंद रे, हूं तो प्रणमुं अति आनंद रे। मु.।७।

इम गहूंली मांहे गाई रे, रयण अमुक थी सवाई रे।
इम समकित थी चित लाइ रे, सहु संघ मिली नइ वधाई रे। मु.।८।

गुरु नी वाणी ते अमिय समाणी रे, जाणी मोक्ष तणी नीसाणी रे।
इम विनय सुँ नमो अति भवि प्राणी रे, इम समयसुंदर वदे वाणी रे। मु.।

खरतर गुरु पट्टावली

प्रणमी वीर जिणेसर देव, सारइ सुरनर किन्नर सेव।
श्री खरतर गुरु पट्टावली, नाम मात्र पमणु मन रली ॥१॥

उदयउ श्री उद्योतनसूरि, वर्द्धमान विद्या भर पूरि।
सूरि जिणेसर सुरतरु समो, श्री जिनचंद्र सूरीसर नमउ ॥२॥

अभयदेव [illegible] श्री जिनवल्लभ किरिया सार।
युगप्रधान [illegible] रमणि मंडित श्रीजिनचंद ॥३॥

इण रे जगत्र मइं, नागोर नगीनइ दादो जागतउ।
भाव भगति सुं भेटंतां, भव दुख भागतउ ॥ इण रे०॥
को केहनइ को केहनइ, दादा भगत आराधइ देव।
मइं इक तारी आदरी दादा, एक करूँ तोरी सेव ॥ इण. ॥२॥
सेवक दुखिया देखतां दादा, साहिब सोम न होय।
सेवक नइ सुखिया करइ दादा, साचो साहिब सोय ॥ इण. ॥३॥
श्री जिनकुशल सूरीसरु दादा, चिंता आरति चूरि।
समयसुन्दर कहइ माहरा दादा, मन वंछित फल पूरि ॥ इण. ॥४॥

श्री जिनकुशलसूरि गीतम्

राग—भैरव

पाणी पाणी नदी रे नदी, सानिध करो दादा सदी रे सदी। पा.।१।
ध्यान एक दादइ जी रो धरतां, कष्ट न आवइ कदी रे कदी। पा.।२।
समयसुंदर कहइ कुशल कुशल गुरु, समरयां साद द्यै सदी रे सदी।३।

पाटण मंडन श्री जिनकुशलसूरि गीतम्

राग—मल्हार

उदउ करौ संघ उदउ करो, विनती करइ श्री संघ दादाजी।उ.।
ऋद्धि समृद्धि सुख संपदा, द्रव्य भरो भंडार दादाजी।
मणि माणक मोती बहु, पुत्र कलत्र परिवार दादाजी।उ.।१।

भद्रसूरि जिणचंद समुद्रसूरि, हंससूरि चोपड़ा कुलचंद ।
जिन माणिकसूरि श्रीजिनचंदसूरि, श्रीजिनसिंघसूरि चिर नंद ॥२॥
एजु श्रीजिनसिंहसूरि चिर नंदइ,
श्री गुरु हो खरतर नायक अविचल पाट ॥
सुधरम सामि परंपरा चंद कुल, वयर सामि नी साखा जाण ।
खरतर गच्छ भट्टारक गिरुया, परगच्छि ए पण क्रिया प्रमाणि ।
पाखी आठमि नी चउमासइ, गुरावलि गीत सुणो वखाणि ।
श्रीसंघ नइ मंगलीक सदाइ, समयसुन्दर बोलति सुख वाणि ॥३॥

दादा श्री जिनदत्तसूरि गीतम्

दादाजी वीनती अवधारो । दा० ।
वडली नगर श्री शांति प्रासादे, जागतउ पीठ तुम्हारो ॥ दा. ।१॥
तूँ साहिब हूं सेवक तोरो, वंछित पूर हमारो ।
प्रारथियां पहिड़इ नहीं उत्तम, ए तुमे वात विचारो ॥ दा. ।२॥
सेवक सुखियां साहिब सोभा, ते भणी भक्त संभारो ।
समयसुंदर कहइ भगति जुगति करि, जिनदत्तसूरि जुहारो ॥ दा. ।३॥

दादा-श्रीजिनकुशलसूरिगुरोरष्टकम्

नतनरेश्वरमौलिमणिप्रभा-प्रवरकेशरचर्चितपत्कजम् ।
मरुधुमुख्यगडालयमण्डनं, कुशलसूरिगुरुं प्रयत स्तवे ।१।

दादा श्री जिनकुशलसूरि गीतम्

दादाजी दीजइ दोय चेला ।
एक भणइ एक करइ वेयावच्च, सेवक होत सोहेला । दा० ।१।
श्रीजिनकुशलसूरीसर सानिध, आज के काल वहेला ।
समयसुन्दर कहइ सीरणी वांटूँ, गुन्दवड़ा गुल भेला । दा० ।२।

भट्टारक त्रय गीतम्

राग—आसावरी

भट्टारक तीन हुए वड़ भागी ।
जिण दीपायउ श्री जिन शासन, सबल पड्डूर सोभागी । भ०।१।
खरतर श्री जिनचंद सूरीसर, तपा हीरविजय वैरागी ।
विधि पक्ष धरममूरति सूरीसर, मोटो गुण महात्यागी । भ०।२।
मत कोउ गर्व करउ गच्छनायक, पुण्य दशा हम जागी ।
समयसुँदर कहइ तत्त्व विचारउ, भरम जायइ जिम भागी । भ०।३।

—:०:—

जिनचंद्रसूरि कपाटलोहशृंखलाष्टकम्

श्रीजिनचन्द्रसूरीणां, जयकुञ्जरशृङ्खला ।
शृङ्खला धर्मशालायां चतुरे किमसौ स्थिता ॥ १ ॥
शृङ्खला धर्म शालायां,वासितां पापनाशिनाम् ।
शिवसद्मसमारोहे, किमु सोपानसन्तति ॥ २ ॥

असपति गजपति नृपति उदारा, इंद्र तणा दीसइ अवतारा।
पुत्र कलत्र अनइ परिवारा, ते सब तेज प्रताप तुम्हारा।दा.।२।
नर नारी आपद निस्तारा, अड़वड़ियां नइ तूं आधारा।
परतिख परता पूरणहारा, मनवंछित फल पूरि हमारा।दा.।३।
नयर अमरसर शुभ निवेशा, प्रसिद्धि घणी प्रगटी परमेसा।
सेव करइ सद्गुरु सुविशेषा, एह समयसुन्दर उपदेसा।दा.।४।

उग्रसेनपुर मंडण श्री जिनकुशलसूरि गीतम्

पंथी नइ पूछूं वातड़ी रे, तुमे आया उग्रसेनपुर थी आज रे।
तिहां दीठा अम्ह गुरु राजीया, श्रीजिनकुशल सूरिराज रे ॥१॥
सुणो नइ गोरी तुम गुर राजीया, अमे दीठा मारवाड़ मेवाड़ देस रे।
धर्म मारग परकास रे, आणंद लील विलास रे ॥२॥
संघ सहु सेवा करइ, राय राणा सहु घइ मान रे।
आइ नमइ सहु नर नार रे, महिमा मेरु समान रे ॥३॥
मेरो मन घणो ऊमह्यो रे, वांदूं मेरे गुरु ना पाय रे।
समयसुन्दर सेवता रे, श्री जिनकुशलसूरि गुरु राय रे ॥४॥

नागोर मंडण श्री जिनकुशलसूरि गीतम

उलट धरि अमे आविया दादा, भेटण तोरा पाय।
बे कर जोड़ी वीनवूं दादा, आरति दूरि गमाय ॥१॥

सा धन्ना कयपुन्ना, जणणी जीवम्मि सयललोयम्मि ।
जं कुच्छीए पवरो, उप्पन्नो एरिसो पुत्तो ॥२॥
जह चंदस्स चकोरा, मोरा मेहस्स दंसणं पवरं ।
इच्छंति जस्स गुरुणो, सो सुगुरु आगउ इत्थ ॥३॥

छन्द गीता

सिरिवंत साहि सुतन्न, माता सिरिया देवी नंदणो ।
वइरागि लहुवय लिद्ध संजम, भविय जण आणंदणो ॥
शुभ भाव समकित ध्यान समरण, पंच श्री परमिट्ठओ ।
सो गुरु श्री जिणचंद सूरि, धन्न नयणे दिट्ठओ ॥ ४ ॥
श्री जैनमाणिकसूरि सद्गुरु, पाटि प्रगट्यउ दिनकरो ।
सुविहित खरतर गच्छनायक, धर्म भार धुरंधरो ॥
तप जप सुजयणा जुगति पालइ, मात प्रवचन अट्ठओ ।
सो गुरु श्री जिणचंद सूरि, धन्न नयणे दिट्ठओ ॥ ५ ॥
जसु नयरि जेसलमेरि राउल, मालदे महुच्छव कियं ।
उद्धरी किरिया नयरि निकमि, वंश सोह चड़ावियं ॥
निरखंत दरसण सुगुरु केरउ, दूरि दोहग नट्ठओ ।
सो गुरु श्री जिणचंद सूरि, धन्न नयणे दिट्ठओ ॥ ६ ॥
चारित्र पात्र कठोर किरिया, नाण दंसण सोहए ।
मुनिराय महियलि मनहि नाणइ, माण माया लोह ए ॥

आधि व्याधि आरति चिंता, संकट विकट विकार दादाजी ।
दुख दोहग दूरइ हरउ, तुम्हे अडवडियां आधार दादाजी ।उ.।२।
सदगुरु समरयां साद द्यउ, सेवक नी करउ सार दादाजी ।
परतिख परता पूरवउ, तुम्हे जागती ज्योत उदार दादाजी ।उ.।३।
पूजउ गुरु पगला भला, पूनिम दिन बुधवार दादाजी ।
केसर चंदन मृगमदा, अगर कुसुम अधिकार दादाजी ।उ.।४।
गीत गावे तान मान सुं, मादल ना धौंकार दादाजी ।
दान मान आपउ घणा, भावना भावउ उदार दादाजी । उ. ५।
श्रीजिनकुशलसूरीसरु, मन वंछित दातार दादाजी ।
पाटण संघ पूरउ रली, भणइ समयसुन्दर सुविचार दादाजी ।उ.।६।

अहमदाबाद मंडण श्री जिनकुशलसूरि गीतम्

दादो तो दरसण दाखइ, दादो सोहिला सुखिया राखइ हो ।
दादाजी दौलत दौ ॥
दादो तो चिंता चूरइ, दादो परतिख परता पूरइ हो । दा.।१।
दादो तो विछडियां मेलइ, दादो ठींभर दुसमण ठेलइ हो । दा.।२।
दादो तो समरयां आवइ, दादो परघल लच्मी लावइ हो । दा.।३।
दादो तो दुसमण दाटइ, दादो विघन हरइ वाट घाटइ हो। दा.।४।
दादो तो साचो जाणइ, दादो बोल ऊपर पिण आणइ हो । दा.।५।
दादो तो हाजरा हजूरइ, दादो अहमदावाद पडूरइ हो । दा.।६।
दादो तो कुशल कहावइ, इम समयसुन्दर गुण गावइ हो । दा.।७।

सुणि जिणचंद सूरि सुवखाणं,
जिम हम जैन धरम पहिछाणं ॥ १२ ॥

तब मंत्रीसर वेगि बुलाए,
आडंबर मोटइ गुरु आए।
नर नारी मन रंगि वधाए,
पातिसाहि अकबर मनि भाए ॥ १३ ॥

छंद गीता

आवतां आदर अधिक दिद्धउ, पातिसाहि पर सिद्धओ।
लाहोर नयरि महा महोच्छव, सुजस श्री संघ लिद्धओ ॥
श्री पूज्य आया हुया आणंद, जाणि जलधर वुट्ठओ।
सो गुरु श्री जिणचंद सूरि, धन्न नयणे दिट्ठओ ॥ १४ ॥

प्रति दिवस अकबर साहि पुच्छइ, जैन धरम विचारओ।
प्रति बूझवइ गुरु मधुर वाणी, दया धरमह सारओ ॥
प्राणातिपातादिक महाव्रत, रात्रि भोजन छट्ठओ।
सो गुरु श्री जिणचंद सूरि, धन्न नयणे दिट्ठओ ॥ १५ ॥

रंजियउ अकबर साहि वगसइ, दिवस सात अमारि के।
वलि मच्छ छोरे नगर खंभाइत्त दरिया वारि के ॥
जो कियउ जुगह प्रधान पद दे, सवहि महं उकिट्ठओ।
सो गुरु श्री जिणचंद सूरि, धन्न नयणे दिट्ठओ ॥ १६ ॥

या पठ्यमानं मुनिभिः प्रकामं
श्रीपार्श्वनाम-प्रगुण-प्रकामम्।
श्रुत्वा स्वनाथोऽत्र ततः समागात्
सेवाकृतेहिः किल शृङ्खलाच्छलात् ॥ ३ ॥

वयसंयमसुन्दर्याः, केशपाशः किमङ्गतः।
वराङ्गस्थितिराभाति, शृङ्खला स्यात्सलद्युतिः ॥ ४ ॥

कपाटे कृष्णवल्लीव, शृङ्खला शुशुभेतराम्।
स्थापितेयं महामोह-नागनाशाय नित्यशः ॥ ५ ॥

पापपाश चरातङ्क-रक्षार्थं साधुमन्दिरे।
ध्रुवं धर्म मरुद्धेनोरियं बन्धनशृङ्खला ॥ ६ ॥

महामोहमृगादीनां, पाशपाताय मण्डिता।
शृङ्खलापाश लेखेव, धर्म शब्दातिघोषणात् ॥ ७ ॥

सर्वतः छेद्यभेद्यादि-भीत्यैषा लोहशृङ्खला।
धर्मस्थानस्थ साधूनां, शरणं समुपागता ॥ ८ ॥

इति कपाट लोह शृंखलाष्टकं सम्पूर्णम् ॥

युं० जिनचन्द सूरि गीतम्

आर्या ३

पणमिय पासजिणंदं, साणंदं सयललोयणाणंदं।
श्रीजिणचंदमुणिंदं थुणामि भो भविय भावेण ॥१॥

तप जप करइ गुरु गुज्जर में,
प्रतिबोधत है भविकुं सुमति ॥
तब ही चित चाहन चूंप भई,
समयसुन्दर के प्रभु[1] गच्छपति ।
पठइ[2] पतिसाहि अजब्ब[3] की छाप,
बोलाए गुरु गजराज गति ॥१॥
एजी गुज्जर तें गुरुराज चले,
विच में[4] चौमास जालोर रहे ।
मेदिनीतट मंत्रि मंडाण कियो,
गुरु नागोर आदर मान लहे ॥
मारवाड़ रिणी गुरु वंदन को,
तरसै सरसै विच वेग वहै ।
हरख्यो संघ लाहोर आये गुरु,
पतिसाह अकब्बर पांव गहै ॥२॥
एजी साहि अकब्बर बब्बर के,
गुरु सूरत देखत ही हरखे ।
हम योगी यति सिद्ध साधु व्रती,
सब ही षट दर्शन को[5] निरखे ॥
तप जप्प दया धर्म धारण को,
जग कोई नहीं इनके सरखे ।

१ गुरु, २ भेजे, ३ अकब्बरी, ४ अधविच, ५ में,

आरति चिंता सयल चूरइं, पूरइं मन इट्ठओ ।
सो गुरु श्री जिणचंदसूरि, धन्न नयणे दिट्ठओ ॥ ७ ॥
जो चउद विद्या पारगामी, सयल जण मण मोह ए ।
अति मधुर देसण अमृत धारा, अबुह जिय पडिबोह ए ॥
कलिकाल गोयम सामि समवडि,वयण अमृत मिट्ठओ ।
सो गुरु श्री जिणचंदसूरि, धन्न नयणे दिट्ठओ ॥ ८ ॥
पुर नयर गामइं ठाम ठामइं, गुरु महोच्छव अति घणा ।
कामिनी मंगल गीत गावइ, रलिय रंगि वधामणा ॥
गुरुराज चरणे रंग लागउ, जाणि चोल मजिट्ठओ ।
सो गुरु श्रीजिणचंदसूरि, धन्न नयणे दिट्ठओ ॥ ६ ॥
इक दियइ पाठक पद प्रधानं, वलिय वाचक गणि पदं ।
इक दियइ दीक्षा सुगुरु शिक्षा, एक कुं सुख संपदं ॥
इक माल रोहण भविय बोहण,जाणि सुरतरु तुट्ठओ ।
सो गुरु श्री जिणचंद सूरि, धन्न नयणे दिट्ठओ ॥१०॥

दोहा

इक दिन अकबर भूपति इम भाखइं,
मंत्रीसर कर्मचंद [illegible] दाखइ ।
तुम्ह गुरु सुणियइ गुज्जर खंडइ,
सिद्ध पुरुष सुप्रताप अखंडइ ॥ ११ ॥
वेगि बोलायउ लिखि फुरमाणं,
आदर अधिक देइ बहु माणं ।

सोरठगिरि की जात्रा करण कुं,
आपण री गुरु पाय धरयो,
भाग्य फल्यो आच्छत्र लोकपरयो ॥ ३ ॥
तूँ कृपा पर दउलति दे मोहि सुं तेरउ भगत हुं री।
गुरु जी तूँ ऊपर जीउ राखी रहुँ री।
इहु सयनी गुरु मेरा ब्रह्मचारी,
हूँ चरण लागुं डर डमर वारी ॥ ४ ॥
अहो निकेत नट नराइण के आगइ,
अइसइ नृत्य करत गुरु के रागइ।
अइसे शुद्ध नाटक होता गावत सुंदरी,
वेणु वीणा मुरज वाजत घुमर घुघरी ॥ ५ ॥
रास मधु माधवइ देति रंभा,
सुगुरु गायंति वायंति भंभा।
तेज पुँज जिम सोभइ रवि,
जुगप्रधान गुरु पेखउ भवि ॥ ६ ॥
सवहि ठउर वरी नयत सिरी,
गुरु के गुण गावत गुजरी।
मारुणी नारी मिली सव गावत,
सुंदर रूप सोभागी रे,
आज सखी पुण्य दिसा मेरो जागी रे ॥७॥

जिण जाणि जुगतउ शिष्य जिणसिंघ,सूरि पाटइ थप्पिओ।
सइं हत्थि आचारिज पद दे, सूरि मंत समप्पिओ ॥
अवलिया अकबर साहि हुकमइ हुयउ सुजस गरिट्ठओ।
सो गुरु श्री जिनचंद सूरि, धन्न नयणे दिट्ठओ ॥ १७ ॥
संग्राम संभ्रम मंत्रि कर्मचन्द, कुल दिवाकर दीप्पिओ।
गुरु राज पद ठयणउ करायउ, सवा कोड़ि समप्पिओ ॥
आणंद वरत्या हुआ उच्छव, वसुह मांहि वरिट्ठओ।
सो गुरु श्री जिणचंद सूरि, धन्न नयणे दिट्ठओ ॥ १८ ॥

॥ कलश ॥

आज हुआ आणंद, आज मन वंछित फलिया,
आज अधिक उछरंग, आज दुख दोहग टलिया।
श्री जिणचंद मुणिंद, सूरि खरतर गच्छ नायक,
रीहड़ कुलि सिणगार, सार मन वंछित दायक ॥
लाहोर नयर उच्छव हुआ, चिहुँ खंडि जस विस्थारिया।
कर जोड़ि समयसुंदर भणइ,श्री पूज्य भलइं पधारिया ॥१९॥

—:o:—

युगप्रधान–श्रीजिनचन्द्रसूर्यष्टकम्

ए जी संतन के मुख वाणि सुणी,
जिणचंद मुणींद महंत जती।

जुगप्रधान जिनचन्द मुणीसरा,
तूँ साहिब मेरा ॥१२॥
दुरित मे वारउ गुरु जी सुख करउ रे,
श्री संघ पूरउ आशा ।
नाम तुमारइ नवनिधि संपजइ रे,
लाभइ लील विलासा ॥१३॥
धन्या सरी रागमाला रची उदार,
छः रग छतीसे भाषा भेद विचार । ध०।
सोलसइ बावन विजय दसमी दिने सुरगुरु वार,
थंभण पास पसायइ त्रंबावती मझार ॥१४॥ध०॥
जुगप्रधान जिनचंद सूरिंद सार,
चिरजयउ जिनसिंहसूरि सपरिवार । ध० ।
सकलचंद मुणीसर सीस उन्नतिकार,
समयसुंदर सदा सुख अपार ॥ध०॥१५॥

इति श्री युगप्रधान श्री जिनचंद्र सूरीणा रागमाला सम्पूर्णा कृता च समयसुन्दर गणिना लिखिता सं० १६५२ वर्षे कार्तिक सुदि ४ दिने श्रीस्तंभतीर्थनगरे ।

श्रीजिनचन्द्रसूरि चन्द्राउला गीतम्

ढाल—चन्द्राउला नी

श्री खरतर गच्छ राजियउ रे, माणिक सूरि पटधारो
सुन्दर साधु सिरोमणि रे, विनयवंत परिवारो

समयसुन्दर के प्रभु धन्य गुरु,
पतिसाहि अकब्बर जो परखे[६] ॥३॥
एजी अमृत वाणि सुणी सुलतान,
ऐसा पतिसाहि हुकम्म किया।
सब आलम मांहि अमारि पलाइ,
बोलाय गुरु फुरमाण दिया ॥
जग जीव दया धम दाखण तें,
जिन शासन मइं जु सोभाग लिया।
समयसुन्दर कहे गुणवंत गुरु,
दग देखी हरखित होत हिया ॥४॥
एजी[८] श्री जी गुरु धम गोठ[१०] मिले,
सुलतान सलेम अरज करी।
गुरु जीवदया नित चाहत[११] है,
चित अन्तर प्रीति प्रतीति धरी ॥
कर्मचन्द बुलाय दियो फुरमाण,
छोडाइ खंभाइत की मच्छरी।
समयसुन्दर कहइ सब लोगन मइं,
जु खरतर गच्छ की ख्यात खरी ॥५॥

---

६ टोपी मस ऽमायस चन्द उदय अज तीन बताय कला परखे (मुद्रित में पाठांतर एवं पंक्ति ऊपर नीचे) ७ गुरु, ८ मन्त्र ९ इम, १० ध्यान, ११ प्रेम धरे,

श्रीजिनचन्द्रसूरिस्वप्नगीतम्

सुपन लह्यु साहेलड़ी रे, निसि भरि सूती रे आज।
सुंदर रूप सुहामणा रे, दीठा श्री गच्छराज ॥१॥
सुगुरु जी मूरति मोहनवेलि,
श्रीपूज्य जी चालइ गजगति गेलि ॥आंकणी ॥
गाम नगर पुर विहरता रे, आव्या जिण चंद सूरि।
श्री संघ साम्हउ संचरइ रे, वाजइ मंगल तूरि ॥सु०॥२॥
आव्या पूज्य उपासरइ रे, सुललित करइ रे वखाणि।
संग सहु ध्रम सांभलइ रे, धन जीव्युं परमाण ॥सु०॥३॥
संख सबद सखि मइं सुणयउ रे, ऊभी जोऊँ रे वाट।
आंगणि मोरी आविया रे, परिवर्या मुनिवर थाट ॥सु०॥४॥
धवल मंगल गायइ गोरडी रे, हीड़इ हरख न माय।
नारि करइ गुरु न्युंछणा रे, पडिलाभइ मुनिराय ॥सु०॥५॥
सुपन एह साचउ हुज्यो रे, सीझइ वंछित काज।
श्रीजिन चंद्र सूरि वांदियइ रे, समयसुंदर सिरताज ॥सु०॥६॥

—:o:—

(गौड़ी जी का भंडार उदयपुर)

श्री जिनचंद्रसूरि छंद

अवलियउ अकबर तास अंगज, सबल साहि सलेम।
सेख अबुल आज़म खान खाना, मानसिंह सुँ प्रेम॥

तोरी भक्ति शुभ मन मां वसी रे,
साहि अकब्बर मानइ जस बाबर वंसी।
गुरु के वंदखि तरसइ सिंधुया,
इया सारी गुरु की मूरतिया ॥ ८ ॥
गुरु जी तूँहिज कृपाल भूपाल,
कलानिधि तुँहिज सबहि सिरताज,
आवइ ए रीतइ गच्छराज।
संकराभरण लंछन जिन सुप्रसन्न,
जिनचन्दसूरि गुरु कुं नति करुं ॥ ६ ॥
तेरी सूरत की वलिहारी तू पूरब,
आस हमारी तूँ जगि सुरतरु ए।
गुरु प्रणमइ री सुरनर किन्नर धोरणी रे,
मन वंछित पूरण सुरमणी रे ॥१०॥
मालवी गउड़ मिश्री अमृत थई,
वचन मीठे गुरु तेरे हइ ताथइ।
करउ वंदणा गुरु कुं त्रिकालइ हरउ पंच प्रमाद रे।
सबइ कुं कल्याण सुख सुगुरु प्रसाद रे ॥११॥
बहु पर भांति वउ उच्छव सार,
पंच महाव्रत धर गुरु उदार।
हूं आदेस कार प्रभु तेरा,

सद्गुरु वाणि सुणी साहि अकबर, परमानंद मनी पाए।
हफतह रोज अमारि पालन कुं, लिखि फुरमाण पठाए ॥भ.॥२॥
श्री खरतर गच्छ उन्नति कीनी, दुरजन दूरि पुलाए।
समयसुंदर कहइ श्रीजिनचंद सूरि, सब जन के मन भाए ॥भ.॥३॥

श्री जिनचन्द्रसूरि गीतम्

राग—आसावरी.

सुगुरु चिर प्रतपे तूँ कोड़ि वरीस।
खंभायत बंदर माछलड़ी, सब मिलि देत आसीस ॥सु.॥१॥
धन धन श्री खरतर गच्छ नायक, अमृत वाणि वरीस।
साहि अकबर हमकुं राखण कुं, जासु करी बकसीस ॥सु.॥१॥
लिखि फुरमाण पठावत सबही, धन कर्मचंद्र मंत्रीश।
समयसुंदर प्रभु परम कृपा करि, पूरउ मनहि जगीश ॥सु.॥३॥

श्री जिनचंद सूरि गीतम्

राग—आसावरी

पूज्य जी तुम चरणे मेरउ मन लीणउ,
ज्यूं मधुकर अरविंद।
मोहन वेलि सबइ मन मोहिउ,
पेखत परमाणंद रे ॥ पू० ॥ १ ॥

विनयवंत परिवार तुम्हारउ, भाग फल्यउ सखि आज हमारउ ।
ए चन्द्राउलउ छद अति सारउ,
श्री पूज्य जी तुम्हे वेगि पधारउ ॥१॥
जिन चन्द सूरि जी रे, तुम्हे जगि मोहन वेलि
सुणिज्यो वीनति रे, तुम्हे आवउ अम्हारइ देसि,
गिरुया गच्छपति रे ॥ आंकणी ॥
वाट जोवतां आविया रे, हरख्या सहु नर नारी रे ।
संघ सहु उच्छव करइ रे, घरि घरि मंगलाचारो ॥
घरि घरि मंगलाचारो रे गोरी, सुगुरु वधावउ वहिनी मोरीं ।
ए चंद्राउलउ सांभलज्यो री, हुँ वलिहारी पूज जी तोरी ॥२॥
अमृत सरिखा वोलड़ा रे, सांभलतां सुख थायो ।
श्रीपूज्य दरसण देखतां रे, अलिय विघन सवि जायो ॥
अलिय विघन सवि जाय रे दूरइ, श्रीपूज्य वांदूं उगमते सूरइ ।
ए चंद्राउलउ गाउं हजूरइ, तउ मुझ आस फलइ सवि नूरइ ॥३॥
जिण दीठां मन ऊलसइ रे, नयणे अमिय झरंति ।
ते गुरु ना गुण गावतां रे, वंछित काज सरंति ॥
वंछित काज सरंति सदाई, श्री जिण चंद सूरि वांदउ माई ।
ए चंद्राउला भास मइं गाई, प्रीति समयसुन्दर मनि पाई ॥४॥
इति श्री युगप्रधान जिनचंद्रसूरीणां चंद्राउला गीतं संपूर्णम् ॥१६॥

देस दंदोल सबलउ पड़्यउ तिहां किणे,
तुरत ना पंथिया तुंब वाहइ ॥ ३ ॥
दरसनी केइ पर दीप महं चढि गया,
केइ नासी गया कच्छ देसे ।
केइ लाहोर केइ रह्या भूंहि मां,
दरसनी केइ पाताल पैसे ॥ ४ ॥
तिण समइ युग प्रधान जगि राजियो,
श्री जिनचंद तेजे सवायो ।
पूज अणगार पाटण थकी पांगुर्या,
आगरइ पातिसाह पासि आयो ॥ ५ ॥
तुरत गुरु राय नइ पातिसाह तेड़िया,
देखि दीदार अति मान दीधा ।
अजब की छाप फुरमाण करि अखिया,
केडला गुनह सहु माफ कीधा ॥ ६ ॥
जैन शासन तणी टेक राखी करी,
ताहरइ आज कोई न तोलइ ।
खरतर गच्छ नइं सोभ चाढी खरी,
समयसुंदर विरुद साच बोलइ ॥ ७ ॥

श्री जिनचंद्र सूरि आलिजा गीतम्

आसू मास वलि आवियउ पूजजी,
आयो दीपाली पर्व ।

रायसिंघ राजा भीम राउल, सूर जये सुरतान।
बड़ा बड़ा महीपति वयण मानइ, देय आदर मान ॥
गच्छपति गाइये जी, जिनचंदसूरि मुनि महिराण।
अकबर थापियो जी, युगप्रधान गुण जाण ॥ग०॥१॥
काश्मीर काबुल सिंघ सोरठ, मारवाड़ मेवाड़।
गुजरात पूरब गौड़ दखिण, समुद्रतट पयलाड़ ॥
पुर नगर देश प्रदेश सगले, भमइ जेति भमाण।
आषाढ मास अमीय वरसे, सुगुरु पुण्य प्रमाण ॥ग०॥२॥
पंच नदी पांचे पीर साध्या, खोडियउ खेत्रपाल।
जल वहइ जेथ अगाध प्रवहण, थांभिया ततकाल ॥
.... कित किता कहुं वखाण।
परसिद्ध अतिशय कला पूरण, रीझवण रायाण ॥ग०॥३॥
गच्छराज गिरुयो गुणे गाढो, गोयमा अवतार।
बड़ बखतवंत बृहत्खरतर, गच्छ को सिणगार ॥
चिरजीवउ चतुर विध संघ सानिध, करइ कोडि कल्याण।
गणि समयसुंदर सुगुरु भेट्या, सफल आज विहाण ॥ ४ ॥

श्री जिनचन्द्रसूरि गीतम्

राग—आसावरी.

भले री माई श्री जिन चंद्र सूरि आए।
श्रीजिनधर्म मरम बूझण कुं, अकबर साहि बुलाये ॥भ०॥१॥

श्राविका उपधान सहु वहइं पू०,
मांडचउ नंदि मंडाण ॥पू०॥
माला पहिरावो आवि ने पू०,
जिम हुवे जनम प्रमाण ॥पू०॥ ६ ॥ तु० ॥
अभिग्रह वांदण ऊपरइ पू०,
कीधा हुँता नर नारि ॥पू०॥
ते पहुँचाओ तेहना पू०,
वंदावो एक वार ॥पू०॥ ७ ॥ तु० ॥
पर्व पजूसण वहि गयउ पू०,
लेख वांछे सहु कोय ॥ पू० ॥
मन मान्या आदेश द्यउ,
शिष्य सुखी जिम होय ॥पू०॥ ८ ॥ तु० ॥
तुम सरिखउ संसार मइं पू०,
देखु नहीं को दीदार ॥पू०॥
नयण तृप्ति पामइ नहीं पू०,
संभारुं सौ वार ॥पू०॥ ९ ॥ तु० ।
मुझ मिलवा अलजउ घणो पू०,
तुम तो अकल अलक्ख ॥पू०॥
सुपनि में आवि वंदावजो पू०,
हुँ जाणिस परतक्ख ॥पू० ॥ १० ॥ तु० ॥

सुललित वाणि वखाण सुणावति,
श्रवति सुधा मकरंद रे।
भविक भवोदधि तारण वेरि,
जन मन कुमुदनी चंद रे॥ पू०॥ २॥
रीहड़ वंश सरोज दिवाकर,
साह श्रीवंत कउ नंद रे।
समयसुंदर कहइ तूँ चिर प्रतपे,
श्री जिणचंद मुणिंद रे॥ पू०॥ ३॥

श्री जिनचंद्र सूरि छंद

सुगुरु जिणचंद सौभाग सखरो लियो,
चिहुं दिसे चंद नामो सवायो।
जैन शासन जिके डोलतउ राखियो,
साखियो जगत सगलइ कहायो॥ १॥
एक दिन पातिसाह आगरइ कोपियो,
दर्शनी एक आचार चूकउ।
शहर थी दूरि काढो सवइ सेवड़ा,
मेवड़ां हाथ फुरमाण मूक्यउ॥ २॥
आगरइ सहरि नागोर अरु मेड़तइ,
महिम लाहोर गुजरात मांहइ।

मूयइ कहइ ते मूढ़ नर, जीवइ जिण चन्द सूरि ।
जग जंपइ जस जेहनउ जेह० हो पुहवि कीरत पहूरी ।८। ऊ.।
चतुरविध संघ चीतारस्यइ, ज्यां जीविस्यइ तां सीम ।
वीसारया किम वीसरइ वीस० हो निरमल तप जप नीम ।६। ऊ.।
पाटि तुम्हारइ प्रगटियउ, श्री जिन सिंह सूरीश ।
शिष्य निवाज्या तइं सहु तइं० रे, जतीयां पूरी जगीश ।१०। ऊ.।

(अपूर्ण)

श्री जिनसिंहसूरि गीतानि

(१) राग—मेवाड़उ

श्री गौतम गुरु पाय नमी, गाऊं श्री गच्छराज[१] ।
श्री जिन सिंघ सूरीसरू, पूरवइ वंछित काज ॥
पूरवइ वंछित काज सहगुरु, सोभागी गुण सोह ए ।
मुनिराय मोहन वेलि नी परि, भविक जन मन मोह ए ॥
चारित्र पात्र कठोर किरिया, धरम कारिज उद्यमी ।
गच्छराज[२] ना गुण गाइस्युं जी,श्री गौतम गुरु पय नमी ॥ १ ॥
गुरु लाहोर पधारिया, तेड़ाव्या कर्मचन्द ।
श्री अकबर ने सहगुरु मिल्या, पाम्यउ परमाणंद ॥
पामीयउ परमाणंद ततक्षण,हुकम दिउढी नउ कियउ ।
अत्यंत आदर मान गुरु ने, पादसाह[३] अकबर दियउ ॥
ध्रम गोष्ठि[४] करतां दया धरता, हिंसा दोष निवारिया ।
आणंद वरत्या हुआ ओच्छव, गुरु लाहोर पधारिया ॥ २ ॥

काती चौमासो आवियउ पूज जी,
आया अवसर सर्व ॥पू०॥ १ ॥
तुमे आवो रे सिरियादे का नंदन पू०,
तुम बिन घड़िय न जाय।
तुम बिन अलजउ जाय पू० तु० ॥आंकणी॥
साहि सलेम अने वलि उमरा पू०,
संभारइ सहु कोय ॥पू०॥
धर्म सुणावो आवि नइ पू०,
जीव दया लाभ होय ॥पू०॥ २ ॥ तु० ॥
श्रावक आया वांदिवा पू०,
ओसवाल नइ श्रीमाल ॥पू०॥
दरसण घउ एक वार तउ पू०,
वाणी सुणावो रसाल ॥पू०॥ ३ ॥ तु० ॥
बाजोट मांड-घउ धरसणे पू०,
कमली मांडी सुघाट ॥पू०॥
वखाण नी वेला थई पू०,
श्री संघ जोवइ वाट ॥पू०॥ ४ ॥ तु० ॥
श्राविका मिली आवी सहु पू०,
वांदण नै कर जोड़ि ॥पू०॥
संदारी धमलाभ घउ पू०,
जिम पहुँचे मन कोड़ि ॥पू०॥ ५ ॥ तु० ॥

(२) श्री जिनसिंहसूरि हींडोलणा गीतम्

हींडोलना नी ढाल

सरसति सामिणी वीनवूं, आपज्यो एक पसाय।
श्री आचारिज गुण गाइस्युं हींडोलना रे, आणंद अंगि नमाय। हीं. २।
वांदउ जिणसिंघसूरि हींडोलणा रे, प्रह ऊगमतइ सूरि। हीं.।
मुझ मन आणंद पूरि हींडोलणा रे, दरसण पातिक दूरि। आ.।
मुनिराय मोहन वेलड़ी, महियलि महिमा जास।
चंद जिम चड़ती कला हींडोलणा रे, श्रीसंघ पूरवइ आस। हीं. २।
सोभागी महिमा निलो, निलवट दीपइ नूर।
नरनारी पाय कमल नमइ हींडोलणा रे, प्रगट्यो पुण्य पडूर। हीं. ३।
चोपड़ा वंशइ परगड़उ, चांपसी साह मल्हार।
मात चांपलदे उरि धर्‌या हींडोलणा रे, खरतरगच्छ सिणगार[१]। हीं. ४।
चउरासी गच्छ सिरतिलउ, जिनसिंहसूरिं सूरीस।
चिरजयउ चतुर्विध संघ सुं हींडोलणा रे, समयसुन्दर द्यइ आसीस[२]।

(३)

चालउ सहेली सहगुरु वांदिवा जी,
सखि मुझ वांदिवा नी कोड़ रे।
श्री जिनसिंह सू[illegible] जी,
सखि क[illegible] जोड़ रे॥ चा.॥१॥

---

१ प्रग[illegible] ... जगीस

युग प्रधान जगि जागतउ पू०,
श्री जिणचंद मुणिंद ॥पू०॥
सानिध करजो संघ नइ पू०,
समयसुंदर आणंद ॥पू०॥ ११ ॥ तु० ॥

श्री जिनचन्द्रसूरि आलिजा गीतम्

राग—आस्या सिंधुड़ो

थिर अकबर तूँ थापियउ, युगप्रधान जग जोइ ।
श्री जिनचंद सूरि सारिखउ सारि०, कलि मइं न दीसइ कोइ ।१।
ऊमाह धरी नइ तात जी हूं आवियउ रे, हो एकरसउ तूँ आवि ।
मन का मनोरथ सहु फलइ माहरा रे, हो दरसणि मोहिं दिखाउ ।२।ऊ.
जिन शासन राख्यउ जिणइ, डोलतउ डमडोल ।
समझायउ श्री पातिसाह सदगुरु खाट्यउ तइं सुबोल ।३। ऊ.।
आलेजो मिलवा अति घणउ, आयउ सिंध थी एथ ।
नगर गाम सहु निरखिया, कहो क्यूं न दीसइ पूज केथ ।४। ऊ.।
साहि सलेम सहु अम्बरा, भीम सूर भूपाल ।
चीतारइ तुंनइ चाह सुं हो, पूज्य जी पधारउ किरपाल ।५। ऊ.।
बाबा आदिम बाहूबलि, वीर गौतम ज्यूं विलाप ।
मेलउ न सरज्यउ माहरो मा०, ते तउ रह्यउ पछताप ।६। ऊ.।
साह चड़उ हो सोम जी, राख्यउ कर्मचंद राज ।
अकबर इंद्रपुरि आणियउ, आस्तिक वादी गुरु आज ।७। ऊ.।

गुरु जी मान्या रे मोटे ऊंबरे जी,
सखि जसु² जस त्रिभुवन मांहि रे। चा.॥७॥
मुझ मन मोह्यो गुरु जी तुम्ह गुणे जी,
सखि जिम मधुकर सहकार रे।
गुरु जी तुम्ह दरसण नयणे निरखताँ जी,
सखि मुझ मनि हरख अपार रे॥ चा.॥८॥
चिर प्रतपउ गुरु राजियउ जी,
सखि श्री जिनसिंघ सूरीश रे।
समयसुन्दर इम वीनवइ जी,
सखि पूरउ माहरइ मनहि जगीस रे॥ चा.॥९॥

(४)

आज मेरे मन की आस फली।
श्री जिनसिंह सूरि मुख देखत, आरति दूर टली।
श्री जिनचंद्र सूरि सइं हत्थइ, चतुरविध संघ मिली।
साहि हुकम आचारिज पदवी, दीधी अधिक भली॥ २॥
कोड़ि वरीस मंत्री श्री करमचंद, उत्सव करत रली।
समयसुंदर गुरु के पद पंकज, लीनो जेम अली॥ ३॥

— — —

श्री अकबर आग्रह करी, कारमीर कियो रे विहार ।
श्रीपुर नगर सोहामणुं, तिहां वरतावी अमार ॥
अमारि वरती सर्व धरती, हुओ जय जय कार ए ।
गुरु सीत तावड ना परिसह, सह्या विविध प्रकार ए ।
[1]महालाभ जाणी हरख आणी, धीर पणुं हियडे धरी ।
कारमीर देश विहार कीधो, श्री अकबर आग्रह करी ॥ ३ ॥
श्री अकबर चित रंजियो, [६] पूज्य नइ करइ अरदास ।
आचारिज मानसिंह करउ, अम मनि परम[७] उल्लास ॥
अम्ह मनि आज उलास अधिकउ, फागुण सुदि बीजइ मुदा।
सइंहत्थि जिणचंदसूरि दीधी, आचारिज पद संपदा ॥
करमचंद मंत्रीसर महोच्छव, आडंबर मोटउ कियो ।
गुरुराज ना गुण देखि गिरुया, श्री अकबर चित रंजियउ ॥ ४ ॥
संघ सहू हरखित थयउ, गुरु नइ द्यइ आसीस ।
श्री जिनसिंह सूरीसरु, प्रतपे तूं कोडि बरीस ॥
प्रतपे तूँ कोड़ि वरीस, सहगुरु चोपड़ा चड़ती कला ।
चांपसी साह मल्हार, चांपल देवि माता धन इला ॥
पादसाह अकबर साहि परख्यो, श्री जिनसिंघसूरि चिर जयउ ।
आसीस पभणइ समयसुंदर, संघ सहु हरखित थयउ ॥ ५॥

इति श्रीजिनसिंहसूरीणां जकड़ी-गीत समाप्तम् ॥

१-२ गुरुराज, ३ पातिसाहि, ४ गोठि, ५ गुरु, ६ गुरु, ७ अधिक, ८ वेलि

श्री खरतरगच्छ राजियउ, जिन सासन मांहि दीवउ रे।
समयसुन्दर कहइ गुरु मेरउ, श्रीजिनसिंघसूरि चिरजीवउ रे।६।

इति श्री श्री श्री आचार्य जिनसिंहसूरि गीतम्।
श्री हर्षनन्दन मुनिना लिपि कृतम्॥

(७)

राग—पूरवी गउड़ी

अरी मोकूं देहु बधाई।
देहु बधाई देहु बधाई री॥ अरी मोकुं० ॥
युग प्रधान जिनसिंघ यतीसर, नगर निजीक पधारे।
देखि गुरु·········खबर करण कुं हुँ आई॥ अरी०॥ १॥
मन सुध साहि सिलेम मानतु है, मन मोहन गुरु माई।
समयसुंदर कहइ श्री गुरु आये, प्रीति परम मनि पाई॥अरी०।२॥

(८) चौमासा गीतम्

श्रावण मास सोहामणो, महियलि वरसे मेहो जी।
चापियड़ा रे पिउ पिउ करइ, अम्ह मनि सुगुरु सनेहो जी॥
अम मन सुगुरु सनेह प्रगटयउ, मेदिनी हरियालियां।
गुरु जीव जयणा जुगति पालइ, वहइ नीर परणालियां॥
सुध खेत्र समकित बीज वावइ, संघ आनंद अति घणउ।
जिनसिंघसूरि करउ चउमासउ, श्रावण मास सोहामणउ॥ १॥

माता चांपलदे उरि धर्यो जी,
सखि चांपसी साह मल्हार रे।
मन मोहन महिमा निलउ जी,
सखि चोपड़ा साख श्रृङ्गार रे॥चा.॥२॥
वइरागइ व्रत आदर्यो जी,
सखि पंच महाव्रत धार रे।
सकल कलागम सोहता जी,
सखि लब्धि विद्या भण्डार रे॥चा.॥३॥
श्री अकबर आग्रह करी जी,
सखि कास्मीर कियउ विहार रे।
साधु आचारइ साहि रंजियउ जी,
सखि तिहां वरताति अमारि रे॥चा.॥४॥
श्रीजिनचंद्र सूरि थापिया जी,
सखि आचारिज निज पटधार रे।
संघ सयल आस्या फली जी,
सखि खरतरगच्छ जयकार रे॥चा.॥५॥
नंदि महोच्छव मांडियउ जी,
सखि श्री कर्मचंद मंत्रीस रे।
नयर लाहोर वित्त वावरइ जी,
सखि कवियण कोड़ि वरीस रे॥चा.॥६॥
गुरु जी मान्या रे मोटे ठाकुरइ जी,
सखि गुरु जी मान्या अकबर साहि रे।

राय राणा सब मोहिया, मोह्यो अकबर साहि रे ।
नर नारी रा मन मोहिया, महिमा महियल मांहि रे । आ०।२।
कामण मोहन नवि करउ, सुधा दीसउ छो साधु रे ।
मोहनगारा गुण तुम्ह तणा, ए परमारथ लाध रे । आ०।३।
गुण देखी राचइ स को, अवगुण राचइ न कोई रे ।
हार स को हियडइ धरइ, नेउर पायतलि होय रे । आ०।४।
गुणवंत रे गुरु अम्ह तणा, जिनसिंहसूरि गुरराज रे ।
ज्ञान क्रिया गुण निरमला, समयसुन्दर सरताज रे । आ०।५।

(१०)

ढाल—नणदल री.

चिहुँ खंडि चावा चोपड़ा, तिण कुलि तुम्ह अवतार हो । पूज्य जी ।
वइरागइ व्रत आदरचउ, उत्तम तुम आचार हो पूज जी ॥१॥
तुम्हे करतार वड़ा किया, कुण करइ तुम होड़ हो पूज जी ।
सोभागी महिमा निलउ, लोक नमइ लख कोड़ि हो पूज जी ॥२॥
सबल क्षमा गुण ताहरउ, साधु धरम नउ सार हो पूज जी ।
जाण पणुं पणं अति घणुं, आगम अरथ भंडार हो पूज जी ॥३॥
आचारिज पद थापियउ, सइं हथि जिणचंद सूर हो पूज जी ।
पद ठवणउ क्रमचंद [illegible] साहि हजूर हो पूज जी ॥४॥
मानइ मो[illegible] राय हो पूज जी ।
तेज घण[illegible]ड़िया पाय हो पूज जी ॥५॥

(५)

राग—सारङ्ग

आज कुं धन दिन मेरउ ।
पुण्य दशा प्रगटी अब मेरी, पेखतु गुरु मुख तेरउ ॥आ.॥१॥
श्री जिनसिंघसूरि तुंहि तुंहि मेरे जिउ में, सुपन में नहिंय अनेरउ ।
कुमुदिनी चंद जिसउ तुम लीनउ, दूर तुहि तुम्ह नेरउ ॥आ.॥२॥
तुम्हारे दरसन आनंद मोपइ उपजति, नयन को प्रेम नवेरउ ।
समयसुन्दर कहइ सब कुं वल्लभ जिउ, तूँ तिन थइ अधि केरउ।आ.३।

(६) वधावा गीतम्

आज रंग वधामणा, मोतियडे चउक पूरावउ रे ।
श्री आचारिज आविया, श्रीजिनसिंहसूरि वधावउ रे । आ०।१।
युगप्रधान जगि जाणियइ, श्रीजिनचंदसूरि मुणिंद रे ।
सइं हत्थि पाटइ थापिया, गुरु प्रतपइ तेजि दिणंद रे । आ०।२।
सुर नर किन्नर हरखिया, गुरु सुललित वाणि वखाणइ रे ।
पातिसाहि प्रतिबोधियउ[१], श्री अकबर साहि सुजाण रे। आ०।३।
बलिहारी गुरु वयणडे, बलिहारी गुरु मुख चंद रे ।
बलिहारी गुरु नयणडे, पेखहतां परमाणंद रे । आ०।४।
धन चांपलदे कूखडी, धन चांपसी साह उदार रे ।
पुरुष रत्न जिहां ऊपना, श्री चोपड़ा साख भृङ्गार रे । आ०।५।

१ प्रतिबूजव्यउ

मानसरोवर मोह्यो हंसलउ, कोयल जिम सहकारो जी।
मयगल मोह्यो रे जिम रेवा नदी,सतिय मोही भरतारो जी। मु.।२।
गुरु चरणे रंग लागउ माहरउ, जेहवउ चोल मजीठो जी।
दूर थकी पिण खिण नवि वीसरइ,वचन अमीरस मीठो जी। मु.।३।
सकल सोभागी सहगुरु राजियउ,श्रीजिनसिंघसूरीसो जी।
समयसुंदर कहइ गुरु गुण गावतां, पूजइ मनह जगीसो जी। मु.।४।

(१३)

राग—मारुणी धन्याश्री

अमरसर अब कहउ केती दूर।
पगि पगि पगि पंथियन कूँ पूछत, आये आणंद पूर।अ.।१।
पातसाह अकब्बर के माने, जिहां श्री जिनसिंहसूरि।
मास कल्प राखे आग्रह करि, थानसिंह साहि सनूरि।अ.।२।
गुरु के पद पंकज प्रणमत ही भाजि गये दुख भूरि।
समयसुन्दर कहइ आज हमारे, प्रगट्यइ पुण्य पडूरि।अ.।३।

(१४)

सुंदर रूप सुहामणउ रे,
जोतां तृपति न थाय म्हारा पूज जी।
मुख पूनम कउ चांदलउ रे लाल,
कंचन वरणी काय म्हारा पूज जी॥ १॥

मलइ आयउ भाद्रवउ, नीर भरया नीवाणो जी।
गुहिर गंभीर ध्वनि गाजता, सहगुरु करिहि वखाणो जी॥
वखाण कल्प सिद्धांत वांचे, भविय राचइ मोरड़ा।
अति सरस देसण सुणी हरखइ, जेम चंद चकोरड़ा॥
गोरड़ी मंगल गीत गावइ, कंठ कोकिल अभिनवउ।
जिनसिंघसूरि मुणींद गातां, मलइ रे आयो भाद्रवउ॥ २॥
आसू आसा सहू फली, निरमल सरवर नीरो जी।
सहगुरु उपसम रस भरया, सायर जेम गंभीरो जी॥
गंभीर सायर जेम सहगुरु, सकल गुणमणि सोह ए।
अति रूप सुन्दर मुनि पुरंदर, भविय जण मण मोह ए॥
गुरु चंद्र नी परि झरइ अमृत, पूजतां पूरइ रली।
सेवतां जिनसिंघ सूरि सहगुरु, आस मास आसा फली॥ ३॥
काती गुरु चढती कला, प्रतपइ तेज दिणंदो जी।
घरतियइ रे धान नीपना, जन मनि परमाणंदो जी॥
जन मनि परमाणंद प्रगट्यो, धरम ध्यान थया घणा।
वलि परव दीवाली महोच्छव, रलिय रंग वधामणा॥
चउमास चारे मास जिनसिंह सूरि संपद आगला।
वीनवइ वाचक 'समयसुन्दर' काती गुरु चढती कला॥ ४॥

(९)

आचारिज तुमे मन मोहियो, तुमे जगि मोहन वेली रे।
सुन्दर रूप सुहामणो, वचन सुधारस केलि रे। आ०।१।

अमृत मीठे अत्यन्त, सरस वांचे सिद्धांत ।
भंजत मन की भ्रंति, चित्त होत चयणा ॥सु०॥१॥
गावत वयराड़ी रागइ, आलापइ श्री संघ आगइ ।
वांसुरी मधुरी वागइ, सुख पावइ सयणा ॥सु०॥२॥
श्री जिन सिंघसूरि, देख्यां दुख गये दूरि ।
समयसुन्दर सनूरि, हरखे नयणा ॥सु०॥३॥

(१६)

सदगुरु सेवउ हो शुभ मतियां ।
श्री जिनसिंघसूरि सुखदायक, गच्छनायक गज गतियां ॥स.।१।
सूत्र सिद्धान्त वखाण सुणावत, वलि वयराग की वतियां ।
समयसुंदर कहइ सुगुरु प्रसादइ, दिन दिन वहु दउलतियां ।स.।२।

श्रीजिनसिंहसूरि सपादाष्टक

एजु लाहोर नगर वर, पातिसाहि अकबर;
　　दया ध्रम चितधर, बूझइ ध्रम वतियां ।
कर्मचंद्र मंत्री अ(इ)सी, गुरु चित वात वसी;
　　अभयकुमार जसी, मानु जाकी मतियां ॥
वाचक महिमराज, करत उत्तम काज;
　　बोलाए ज्ञु मंत्रिराज, लिखि करी पतियां ।

गिरुयउ गच्छ खरतर अछइ, तेह तणउ तूँ राय हो पूज जी।
श्रीजिनसिंह सूरीसरू, समयसुन्दर गुण गाय हो पूज जी ॥६॥

(११)

प्रह उठी प्रणमुं सदा रे, चरण कमल चित्त लाइ।
देऊँ तीन प्रदक्षिणा रे, पातक दूरि पुलाइ ।१।
म्हारा पूज जी, तुम सुं धरम सनेह।
मुख दीठां सुख ऊपजे रे, जिम बापियउ मेह । आंकणी।
सुह राई सुह देवसी रे, पूछूं बे कर जोड़ि।
विनय करी गुरु वांदियइ रे, तूटइ करम नी कोड़ि। म्हा.।२।
सुणतां सुललित देसणा रे, आणंद अंग न माइ।
देव धरम गुरु जाणियइ रे, समकित निर्मल थाइ। म्हा.।३।
भात पाणी अति सूझता रे, पड़िलाभूं वार वार।
ज्यूं लाहउ लखमी तणउ रे, सफल करूं अवतार। म्हा.।४।
गुरु दीवउ गुरु चंद्रमा रे, गुरु देखाडइ वाट।
गुरु उपगारी गुरु वड़ा रे, गुरु उतारइ घाट। म्हा.।५।
श्रीजिनसिंघ सूरीसरू रे, चोपड़ा कुल सिणगार।
समयसुन्दर कहइ सेवतां रे, श्री संघ नइ सुखकार। म्हा.।६।

(१२)

मुझ मन मोह्यो रे गुरु जी, तुम्ह गुणे जिम बाबीहड़उ[१] मेहो जी।
मधुकर मोह्यो रे सुन्दर मालती, चंद चकोर सनेहो जी। मु.।१।

१ बापीयडउ

जीवदया धरमसार, बूझत सदा विचार;
भरत चक्री उदार, कइसें लीनउ जोग री।
मानसिंह मान्यउ साहि, जश भयउ जग मांहि;
समयसुन्दर ताहि, सुख को प्रयोग री ॥४॥
एजु अकबर जहांगीर, साथइ चले कासमीर;
सुगुरु साहस धीर, दृढ करि हइया री।
परत बरफ पूर, मारग विषम दूर;
चरत डरत सूर, कहा कीजइ दइया री॥
श्रीपुरनगर आई, अमारि गुरु पलाई;
मछरी सबइ छोराइ, नीकउ भयउ भइया री।
समयसुन्दर तस, गावत सुगुरु जस;
अकबर कीनउ वस, अइसे गुरु अइया री ॥५॥
एजु जिनचंदसूरि ज्ञानी, गच्छ की उन्नति जानी;
साहि कउ हुकम मानी, साहि के हजूरि री।
लाभपुर आए जाम, सिंह सम जान्यउ ताम;
पातिसाहि दीनउ नाम, जिनसिंघसूरि जी॥
पाठक वाचक दोय, सब मिल पंच होय;
जुगह प्रधान जोय थापे गुण पूर री।
आचारिज वड़ भागी, सुन्दर कहइ सोभागी;
पुण्य दिसा जसु जागी, प्रबल पडूर री ॥६॥
एजु मसंजर मुखमल, कसबी की भ(ल)मल;
सूप रूप निरमल, कथीपे की भंतियां।

तइं मोरो मन मोहियउ रे लाल,
श्री जिनसिंह सूरीश म्हारा पूज जी।
मूरति मोहन वेलड़ी रे,
मीठी अमृत वाणि म्हारा पूज जी।
नर नारी मोही रह्या रे लाल,
सुणतां सरस वखाणि ॥म्हा०॥२॥
गुण अवगुण जाणइ नहीं रे,
ते तउ मूरख होय म्हा०।
मइं गुण जाण्या ताहरा रे लाल,
तुझ सम अवर न कोय ॥म्हा०॥३॥
मन रंग लागउ माहरो रे,
जेहवउ चोल मजीठ म्हा०।
ऊतार्यो नवि ऊतरइ रे लाल,
दिन दिन दस गुण दीठ ॥म्हा०॥४।
श्री जिन सिंघ सूरीसरू रे,
खरतर गच्छ कउ राय म्हा०।
सूरिज जिम प्रतपउ सदा रे लाल,
समयसुन्दर गुण गाय ।म्हा०। ५॥

(१५)

राग—वयराड़ी

सुणउ री सुणउ मेरे, सद्गुरु वयणा । सु०।

वे साहूकार काहे खुनकार, अरे हमकुं बतावइ नइ कहां जिनसिंघसूरि
का दरबार ।वे.।

वीकानेर के वीचि चैत्य चउवीसटा कहियइ,
उस तइ उत्तर कूणि वाम दिसि वेगा लहियइ ।
पावइ साले पांच वार दोऊं वइठण त्रक्रिया,
........जाओ मानसिंघ का त्रक्रिया ।२। वे साहूकार ।

वे महाजन काहे दीवाण, अरे वोलायउ नइ काजी के मुला वचायउ
फुरमाण ।वे.।

हाजरि काजी एइ खूब भली परि वांचइ,
सुणइ लोक सहु कोउ मेघ धुनि मोर ज्युं माचइ ।
पातसाह जहांगीर बहुत करी लिखी बड़ाई;
करउ तपास तुम आई तपां कइ होत लड़ाई ।३। वे महाजन ।

पूँजि जी सलामत काहे मीयां जी, अजुं क्यूँ नहीं चलते बणइ नहीं
ढीलि कियां । वे.।

ढिल्ली का पातसाह गढ मंडप मइं गाजइ,
कबजि किये सब देस फतह की नोबति वाजइ ।
ओ तुम कुं करे याद जइसइं चंद कुं चकोरा,
रेवा कुं गजराज मेघ आगम कुं मोरा ।४। पूजि जी सिलामत.।

जीवइ गुरु जी इहु भी ल्यउ कतावत, मियां जी किस की इहु जी
अणीराय के दसखत । वे.।

समयसुन्दर तब, हरखित होत सब;
अधिक आणंद अब, उलसति छतियां ॥१॥
एजु प्रणम्यां श्री शांतिनाथ, गुरु सिर धरचउ हाथ;
समयसुंदर साथ, चाले नीकी वरियां।
अनुक्रमि चलि आए, सीरोही मइं सुख पाये;
सुलताण मनि भाए, पेखत अंखरियां ॥
जालोर मेदनीतट, पइसारउ कियउ प्रगट,
डिडवाणइ जीते भट, जयसिरि वरियां।
रिणी तें सरसपुर, आवत पीरोजपुर;
लंघत नदी कपूर, मानु जइसी दरियां ॥२॥
एजु आवत जु शोभ लीनी, लाहोर वधाई दीनी;
मंत्री कुं मालुम कीनी, कहइ ऐसो पंथिया।
मानसिंघ गुरु आए, पातिसाहि कुं सुणाए;
वाजित्र गृधुं वजाए, दान दियइ दुथियां॥
समयसुन्दर भायउ, पइसारउ नीकउ वणायउ;
श्रीसंघ साम्हउ आयो, सज करि हथियां।
गावत मधुर सर, रूपइ मानु अपछर;
सुन्दर सहव करइ, गुरु आगइ सथियां ।३॥
एजु तबही श्री जी कु मिले, पूछ्या री गुरु हउभले;
दूरि देसि आए चले, वखत संजोग री।
हरखित होत हीया, अत्यंत आदर दीया;
दउढी का हुकम कीया, जानइ सब लोग री॥

जउ तूँ रे वधामणि आणइ सुगुरु केरी ।
तउ हूं सोवन चांच मंढावूं सुयटा तेरी री ॥ वीर सू०॥२॥
सुणि सखि मारग मांहि मलपंता आवइ ।
श्रीय जिनसिंघसूरि महा प्रभावइ रे ॥ वीर सू०॥३॥
सुगुरु आगम सुणि आणंद पाया ।
सुरनर किन्नर नामीरी वधाया रे ॥ वीर सू०॥४॥
आचारिज आव्या मन कामना फली ।
समयसुन्दर गुण गावइ मन नी रली रे ॥ वीर सू०॥५॥

(२०)

मारग जोवंतां गुरु जी तुम्हे भलइ आए रे । गु० ।
मोहन मूरति पेखी आणंद पाए ॥
हियरा हीं सतगुरु नी देखी मुख तोरा रे ।
मेघ के आगमि जइसइ माचत मोरा ॥१॥ मा०॥
नयण तुम्हारे गुरु जी मोहण गारे । गु० ।
छोरण न जाते हम कुं बहुत प्यारे ॥
तुम्हारे चरण गुरु जी मेरा मन लीणा । गु० ।
वचन सुणंता चित अंतर भीणा ॥१॥ मा०॥
किहा कुमुदिनी किहाँ गगनि चंदा रे । गु० ।
दूर थी करत तउ भी परम आणंदा ॥
जे नर जाके चित मइ ते दूर थइ नेरे जी । गु० ।
अहनिसि लेउं गुरु जी भामणा तेरे ॥३॥ मा०॥

विचित्र तंबू वणायउ, उपाश्रउ नीकउ वणायउ;
इंद्र भी देखण आयउ, सुन्दर सोभतियां।
नांदि कउ उच्छव कीनउ, कर्मचंद जस लीनउ;
सवा कोड़ि दान दीनउ, सुगुरु गावतियां॥
समयसुन्दर कहइ, श्रीसंघ गहगहइ;
दान मान सव लहइ, वाजत नोवतियां॥७॥
एजु चोपड़ा वंश दिणिंद, चांपसीह साह नंद;
अदभुद रूप इंद, मुख जइसो चंद री।
सुविहित खरतर, गच्छ भार धुरंधर;
सेवतां ही सुरतरु, सुख केरउ कंद री॥
जिणचंद सूरि सीस, छाजत गुण छत्तीस;
पूरवइ मन जगीस, भवियण वृन्द री।
समयसुन्दर पाय, प्रणमी सुजस गाय;
जिनसिंह सूरिराय, जगि चिर नंद री॥८॥

इति श्रीजिनसिंहसूरीणां सपादाष्टकं सम्पूर्णम्।

(१७)

चे मेवरे काहे री सेवरे, थरे कहां जात हो उतावरे, टुक रहो नइ खरे। चे.।
हम जाते बीकानेर माहि जहांगीर के भेजे,
हुकम हुया फुरमाण लाह मानसिंघ कुं देजे।
सिद्ध साधक हउ तुम्ह चाह मिलणे की हम कुं,
वेगि आयउ हम पास लाभ देउंगा तुम कुं।१। चे मेवरे।

प्रणमत होत सफल सहगुरु कुं,
ध्यान धरत मेरउ चितु हरसइ ।
सुगुरु वंदण कुं चलत हीं चरण युग,
पतियां लिखत हीं कर फरसइ ।२। अं.।
श्री जिनसिंहसूरि आचारिज,
वचन सुधारस मुखि वरसइ ।
समयसुंदर कहइ अबहु कृपा करि,
नयण सफल करउ निज दरसइ ।३। अं.।

(२३)

राग—नट्ट नरायण

तुम चलहु सखि गुरु वंदण ।
श्रीजिनसिंघसूरि गुरु दरसण, सब जण कुं आणंदण ।१। तु.।
पातिसाहि अकबर मण रंजण, वचन सुधारस वंदण ।
चोपड़ां वंस सुशोभ चडावत, चांपसी साह के नंदण ।२। तु.।
तेज प्रताप अधिक गुरु तेरउ, दुरमति दुख निकंदण ।
समयसुन्दर प्रभु के पद पंकज, प्रणमति इंद नरिंदण ।३। तु.।

(२४)

राग—मालवी गउड़च

आज सखी मोहि धन्य जीया री ।
श्रीजिनसिंघसूरीसर दरसण,

अणीराय उंवराउ पातिसाह का निजी की,
तुम सुं हइ इकलास प्रीति ओ पालइ नीकी।
पातिसाह कइ पासि अयां तुम कुं फायदा,
खुदा करइ तउ खून किसा बधारूं काइदा।५। ये पूज जी.।

—०:※:०—

(१८)

श्री आचारिज कइयइ आवस्यइ, जोसी जोय विचारो रे।
सुंदर वात कहइ सोहामणी, लगन लगइ अनुसारो रे।१। श्री.।
अहनिसि जोऊं रे सहगुरु वाटडी, मो मनि वांदिवा खांति रे।
धर्म राग भेयउ चिर भीतरइ, पडीय पटोलइ भांति रे।२। श्री.।
सोभागी गुरु सहु नइ वालहा, मुनिवर मोहण वेलि रे।
विनयवंत श्रावक सहु सांभलइ, वचन अमीरस रेलि रे।३। श्री.।
गुरु उपरि जे राचइ नहिं, ते माणस तिरजंचो रे।
परवाली मोती नुं पारखुं, चतुर लहइ परपंचो रे।४। श्री.।
श्रीखरतर गच्छ केरउ राजियउ, जुगप्रधान पटधारो रे।
श्रीजिनसिंघसूरीसर वांदतां, समयसुन्दर जयकारो रे।५। श्री.।

(१९)

राग—रामगिरि

ध्यटा सोभागी, कहि किहां सगुरु दीठा।
साकर दूध सेती, मुख कराबुं मीठा रे ॥ वीर ध्य०॥१॥

सूरि गुण छत्रीस शोभित, वचन अमृत धार।
श्री जिन शासन मांहि दिनकर, खरतर गच्छ सिणगार।२। जि०।
जुगप्रधान सुसीस जगि मइं, प्रगटियउ पटधार।
समयसुन्दर सुगुरु प्रतपउ, श्री संघ कुं सुखकार।३। जि०।

(२७)

राग—गउड़ी

पंथियरा कहिजो एक संदेश।
जिनसिंघसूरि तुम्हे वेगि पधारउ, इण री हमारइ देश।१। पं.।
भगत लोग इतु भाव बहुत हइ, मानत सब आदेस।
चंद चकोर तणी परि चाहत, नाम जपत सुविशेस।२। पं.।
पातिसाहि अकबर तुम माने, जानत लोक असेस।
समयसुन्दर कहइ धन्य जीया मेरउ, जब नयणे निरखेस।३। पं.।

(२८)

राग—ललित

ललित वयण गुरु ललित नयण गुरु,
ललित रयण गुरु ललित मती री॥ ल०॥
ललित करण गुरु ललित वरण गुरु,
ललित चरण गुरु ललित गती री॥ ल०॥१॥
ललित मूरति गुरु ललित सूरति गुरु,
ललित मूरति गुरु ललित जती री।

मन सुधि अकबर तुम कुं मानइ रे। गु०।
तुम्ह चिर जीवउ गुरु जी वयतइ वानइ॥
जिनसंघसूरि अइसा मेरइ मनि भाया रे। गु०।
समयसुन्दर प्रभु प्रणमइ पाया ॥४॥ मा०॥

(२१)

राग—भयरव

भोर भयउ भविक जीव, जागि जागि जागि री;
जिनसिंघसूरि उदय भाण, तेजपुञ्ज राज माण।
ऊठि अइसे धरम मारगि, लागि लागि लागि री।१। भो०।
भविक कमल वन विकासन, दुरित तिमिर भर विनासन;
कुमति उलूक दूरि गए, भागि भागि भागिरी।
श्रीजिनसिंघसूरि सीस, पूरवइ सब मन जगीस;
समयसुन्दर गावत भयरव, रागि रागि रागि री।२। भो०।

इति श्रीजिनसिंघसूरीणां चर्चरी गीतम्।

(२२)

राग—सारंग

गुरु के दरस अंखियां मोहि तरसइ।
नाम जपत रसना सुख पावत,
सुजस सुणत ही श्रवण सरसइ।१। अं०।

श्री जिनसिंह सूरि पाटोधर,
कहउ सामल सम को हइ रे ॥ जि० ॥२॥
वयरागी संवेगी सदगुरु,
वयर विरोध विपोहइ रे ।
समयसुन्दर कहइ देस विदेसे,
सहु श्रावक पडिबोहइ रे ॥ जि० ॥३॥

(५) राग—गुन्ड

अइओ नंद नंदना, नंद नंदना; साह वच्छराज के नंदना ।
अइओ चंद चंदना, चंद चंदना; वचन अमीरस चंदना ॥१॥
अइओ फंद फंदना, फंद फंदना; नहिं माया मोह फंदना ।
अइओ कंद कंदना, कंद कंदना; दुख दारिद्र निकंदना ॥२॥
अइओ इंद इंदना, इंद इंदना; जिनसागरसूरि इंदना ।
अइओ वंद वंदना, वंद वंदना; समयसुन्दर कहइ वंदना ॥३॥

(६) राग—तोड़ी

गुरु कुण जिनसागर सूरि सरिखउ री[1] । गु० ।
शीलवंत अनइ सोभागी[2], पांच माणस पंडित परखउ री । गु.।१।
किहां काच[3] किहां पांच अमूलिक, किहां अरहट कातण चरखउ री ।
किहां करीर किहां सुरतरु सुंदर, किहां मेर कंचन करखउ री । गु.।२।

---

१ कुण सुगुरु जिनसागर सरिखउ री, २ संवेगी, ३ कचकि,

देखत हरखित होत हीया री ॥१॥ आ०॥
कठिन विहार कीयउ कासमीरइ,
साहि अकबर बहु मान दीया री।
श्रीपुर नगर अमारि पालण तइ,
सब जग मइं सोभाग लीया री ॥२॥ आ०॥
गुहिर गंभीर सर मधुर आलापति,
देसणा सुणत मानुं अमृत पीया री।
समयसुन्दर प्रभु सुगुरु वांदण तइं,
इहु मइ मानव भव सफल कीया री ॥३॥

(२५)

राग—कल्याण

श्रीजिनसिंघसूरिंद जयउ री । श्री०।
जुगप्रधान जिणचंद मुणीसर, पाटि प्रभाकर ज्युं उदयउ री ।१।श्री.।
अकबर साहि हजूरि हरख भरि, आचारिज पद जासु दयउ री।
मोहन वेलि भविक मन मोहन, दरसण तइ दुख दूरि गयउ री।२।श्री.।
चोपडां वंश चांपसी नंदण, वंदण कुं मेरउ मन उमयउ री।
समयसुंदर कहइ श्रीगुरु आए, श्रीसंघ कुं आणंद भयउ री।३।श्री.।

(२६)

राग—केदारउ

जिनसिंघसूरि की बलिहारि।
बूझव्यउ पातिसाहि अकबर, दया धरम दिखारि ।१। जि०।

(६) ढाल—भरत यात्रा भणी ए, अथवा—वाहण सिलामती ए

जिनसागर सूरि गुरु भला ए, मोटा साधु महंत ॥ जि०॥
रहणी अति रूड़ी रहइ ए, सौम्य मूरति शांत दांत ॥ जि०॥१॥
लघु वय जिण संजम लियउ, सूत्र सिद्धांत ना जाण ॥ जि०॥
वचन कला भली केलवी ए, सुललित करइ रे वखाण ॥ जि०॥२॥
शीलवंत शोभा घणी ए, सहु को आपइ साख ॥ जि०॥
नींबोली सुं मन नहीं ए, मिली मुझ मीठी द्राख ॥ जि०॥३॥
अम्हारइ सखि गुरु एहवा ए, अम्हे राचुं नहीं काच ॥ जि०॥
जिनसागरसूरि चिरजयउ जी, समयसुन्दर सुखकार ॥ जि०॥४॥

(१०) ढाल—भलुं रे थयुं म्हारा पूज जी पधार्या

पुण्य संजोगइ अम्हे सदगुरु पाया, नहीं ममता नहीं माया ।१।
जिनसागर सूरि मिरगादे जाया, संघसूरि पाट सवाया ।
खरतर गच्छ केरा राया, जिनसागरसूरि मिरगादे जाया । आं. । पु.।
वयरागी गुरु सुललित वाणी, अम्ह मनि अमिय समाणी । जि.।२।
चालइ ए गुरु पंचाचारइ, आप तरइ बीजां तारइ । जि.।३।
वाई रे अम्हारा गुरु थोड़ा मुख बोलइ, रतन चिंतामणि तोलइ । जि.४।
वाई रे अम्हे लह्या ए गुरु साचा, समयसुन्दर नो वाचा । जि.।५।

(११) ढाल—नयण निहालो रे नाहला, अथवा
पोपट चाल्यो रे परणवा एहनी.

मनडुं मोह्युं रे माहरूं, गुरु ऊपरि गुणराग ।
जिनसागर सूरि गुरु भला, साचउ जेहनउ सोभाग । म.।१।

ललित वयराग गुरु ललित सोभाग गुरु,
ललित पराग गुरु ललित व्रती री ॥ल०॥२॥
ललित खरतर गुरु ललित सुरतरु गुरु,
ललित गणधर गुरु ललित रती री ।
समयसुन्दर प्रभु जिनसिंहसूरि कुं
साहि अकबर मानइ छत्रपती री ॥ल०॥३॥

(२९)

राग—धन्यासिरी

बलिहारी गुरु वदन चंद बलिहारी ।
वचन पीयूष पान कुं आए, नयन चकोर अनुसारी री।१। गु.।
भविक लोक लोचन आणंदण, दुरित तिमिर भरवारी।
अकलंक सकल कला संपूरण, सौम्य कांति मनुहारी री।२। गु.।
पातिसाहि अकबर प्रतिबोधक, युगप्रधान पटधारी।
समयसुंदर कहइ श्रीजिनसिंघसूरि, सब जन कुं सुखकारी री।३।गु.।

(३०)

राग—पंचम

आवउ सुगुण साहेलड़ी, मिलि वेलड़ी रे;
गायउ जिनसिंघसूरि मोहन वेलड़ी ।१। आ०।
श्रवण सुधारस रेलड़ी, गुड़ भेलड़ी रे;
मीठी सहगुरु वाणि जाणे सेलड़ी ।२। आ०।

(१३) श्री जिनसागरसूरि सवैया*

सोल शृङ्गार करइ सुन्दरी, सिर ऊपर पूरण कुम्भ धरइ ।
पिहिउं पिहिउं पहकइ नफेरी, धृधुंधु दमामा की धूँस परइ ॥
गायइ गीत गान गुणी जन दान, पटंबर चीर पगे पधरइ ।
समयसुन्दर कहइ जिनसागरसूरि कउ, श्रावक ऐसो पैसारउ करइ ॥१॥

(१४) ढाल—साहेली हे आंबलउ मोरीयउ, ए गीतनी.

साहेली हे सागर सूरि वांदियइ,
जिण वांद्या हे हुवइ हरख अपार ।
साहेली हे सोम मूरति सोभा घणी,
साहेली हे उत्तम आचार ॥सा.॥१॥

साहेली हे वयरागी गुरु वालहा,
साहेली हे वांचइ सूत्र सिद्धांत ।
साहेली हे तप जप किरिया आकरी,
साहेली हे दरसण शांत दांत ॥सा.॥२॥

साहेली हे जिणचंदसूरि कह्यु जेहु तुं,
साहेली हे सामल सिरदार ।
साहेली हे तेह वचन तिमहिज थयुं,

*[जेसलमेरु नगरे आचार्य खरतरोपाश्रये यति चुन्नीलाल सग्रहे स्वयं लिखित पत्रात्]

गुहिर गंभीर मेघ जिम गाजति गयणा। ए ए आ।
नवतत भेद नीर पावइ चातक सयणा॥ घ०॥२॥
धच्छराज साह वंश विभूषण गुण मणि रयणा। ए ए आ।
समयसुन्दर गुरु के दरशि चित्त होत चयणा॥ घ०॥३॥

(३) राग—हमीर कल्याण

जिन सागर सूरि गच्छपति गिरुयउ। जि०।
कुण कहूं ए सदगुरु सरिखउ,
किहां कंचणि किहां पीतल तरुयउ॥ जि०॥१॥
श्री जिन शासन सोह चढावइ,
जिम सुगंध वाड़ि मांहि मरुयउ।
समयसुन्दर कहि ए गुरु उत्तम,
किणहि ऊपरि चितइ नहीं वरुयउ॥ जि०॥२॥

(४) राग—भूपाल

ढाल—शालिभद्र आज तुम्हानइ आपणी माता

जिनसागर सूरि गच्छपति गरुयउ,
खरतर गच्छ मांहि सोहइ रे।
तप जप संयम कठिन क्रिया करि,
भवियण ना मन मोहइ रे॥ जि०॥१॥
युगप्रधान जिनचंद सूरीसरि,
पाट जोग कह्यउ ओ हइ रे।

मूयउ कहइ तिके नर मूरिख,
जीवइ जगि जोगी सुत जाण ॥ सं० ॥ १ ॥
दीपक वंश मंडायउ देहरउ,
अद्भुत करण धरचउ अधिकार ।
नलिनि गुल्म विमान निरखवा,
सोम सिधायउ सरग मझार ॥ सं० ॥ २ ॥
मोटा सबल प्रासाद मंडायउ,
करिवा मांड्यउ सोम सुकाज ।
पृथिवी मांहि तिसउ नही परिकर,
इन्द्र पास लेगां गयउ आज ॥ सं० ॥ ३ ॥
आख्यउ जुगप्रधान साहि अकबर,
जिनचन्द सूरि गुरु वड़उ जतीश ।
सोम गयउ पूछण सुर लोके,
वासव कहस्यइ विसवा वीस ॥ सं० ॥ ४ ॥
भामउ अनइ करमचंद भाखइ,
राज काज तणी सवि रीति ।
हरि तेड़्यउ सोम तुं हिवणां,
पूछण धरम तणी परतीति ॥ सं० ॥ ५ ॥
नास्तिक मत थापइ गुरु नित नित,
सभा मांहि पोषइ सिणगार ।
इन्द्र धरम धुरंधर आएयउ,
सत्यवादी साहां सिरदार ॥ सं० ॥ ६ ॥

सुगुरु कुगुरु नउ एह पटंतर, निर्विरोध[४] नयणे निरखउ री।
समयसुंदर कहइ एह धर्म पत्र, साचउ जाणी सहु[५] हरखउ री। गु.।३।

(७) राग—धन्याश्री

वंदउ वंदउ रे श्री जिनसागर सूरि वंदउ री।
शांत दांत दर्शन गुरु देखी, अधिक अधिक आनंदउ री। श्री.।१।
श्रीजिनसिंघ सूरि पटोधर, साह वच्छराज कुलचंद।
सूत्र सिद्धांत वखाण सुणावत, जाणी अमृत रस बिंदो जी। श्री.।२।
मन वंछित पूरवइ ए मुनिवर, जिम सुरतरु नो कंदो री।
समयसुँदर कहइ सुगुरु प्रसादइ, चतुर्विध संघ चिर नंदउ री। श्री.।३।

(८) ढाल—आवउ रे सहियर सविं मिली जी.

बहिनी आवउ मिलि वेलड़ी जी, सजि करि सोल शृङ्गार।
पहिरी पटोली ओढउ चूनड़ी जी, तिलक करो तुमे सार।१।
सुगुरू पधावउ सखि मोतिये जी, श्री जिनसागर सूरि।
आणंद हुयइ घरि आपणइ जी, अलिय विघन जायइ दूरि। सु.।२।
सखर करउ तुमे साथियउ जी, कूँकू भरिय कचोल।
चौक पूरउ तुम्हे चाउलइ जी, गीत गायउ रमभोल। सु.।३।
नारि करउ तुम्हे लूँछणा जी, लटकितइ हाथि उलास।
विधि सुं करउ गुरू वंदणा जी, वास ल्यउ सद्गुरु पास। सु.।४।
खरतर गच्छ केरउ राजियउ जी, जिनसिंहसूरि पटधार।
जिनसागर सूरि चिरजयउ जी, समयसुन्दर सुखकार। सु.।५।

४ गुण समुद्र, ५ हियइ। [अनूप संस्कृत लाइब्रेरी से पाठान्तर]

वंचयित्वा निजात्मानं, पोपिता मृष्टभुक्तितः ।
यदि ते न गुरोर्भक्ताः, शिष्यैं किं तैर्निरर्थकैः ॥ २ ॥
लालिताः पालिताः पश्चान्मातृपित्रादिवद् भृशं ।
यदि ते न गुरोर्भक्ता, शिष्यैः किं तैर्निरर्थकैः ॥ ३ ॥
पाठिता दुःख पापेन, कर्मबन्धं विधाय च ।
यदि ते न गुरोर्भक्ताः, शिष्यैः किं तैर्निरर्थकैः ॥ ४ ॥
गृहस्थानामुपालम्भाः, सोढा बाढं स्वमोहतः ।
यदि ते न गुरोर्भक्ताः, शिष्यैः किं तैर्निरर्थकैः ॥ ५ ॥
तपोपि वाहितं कष्टात्कालिकोत्का लिकादिकम् ।
यदि ते न गुरोर्भक्ताः, शिष्यैः किं तैर्निरर्थकैः ॥ ६ ॥
वाचकादि पदं प्रेम्णा, दापितं गच्छनायकात् ।
यदि ते न गुरोर्भक्ताः, शिष्यैः किं तैर्निरर्थकैः ॥ ७ ॥
गीतार्थ नाम धृत्वा च, बृहत्क्षेत्रे यशोर्जितम् ।
यदि ते न गुरोर्भक्ताः, शिष्यैः किं तैर्निरर्थकैः ॥ ८ ॥
तर्क-व्याकृति-काव्यादि, विद्यायां पारगामिनः ।
यदि ते न गुरोर्भक्ताः, शिष्यैः किं तैर्निरर्थकैः ॥ ९ ॥
सूत्र-सिद्धान्त-चर्चायां, याथातथ्यप्ररूपकाः ।
यदि ते न गुरोर्भक्ताः, शिष्यैः किं तैर्निरर्थकैः ॥१०॥
वादिनो भुवि विख्याता, यत्र तत्र यशस्विनः ।
यदि ते न गुरोर्भक्ताः, शिष्यैः किं तैर्निरर्थकैः ॥११॥

मधुकर मोह्यउ रे मालती, कोइल जिम सहकार।
महिगल मोह्यउ रेवा नदी, सतीय मोही भरतार। म.।२।
मानस मोह्यउ रे हंसलउ, चंद सुं मोह्यउ चकोर।
मृगलउ मोह्यउ रे नाद सुं, मेह सुं मोह्यउ रे मोर। म.।३।
जिनसागर सूरि सारखा, उत्तम ए गुरु दीठ।
मन रंग लागो माहरउ, जेहो चोल मजीठ। म.।४।
तारइ ते गुरु आपणा, जे हवा दरियइ जिहाज।
समयसुन्दर कहइ सांभलउ, सहु ना जिम सरइ काज। म.।५।

(१२) ढाल—दुमुह नाम राजा घरइ रे गुणमाला पटराणि
(बीजा प्रत्येक बुद्ध ना खंड नी)
अथवा, फिट जीव्युं थारुं रामला रे जसूड़ी लूखउ खाय, एहनी.

न्याति चउरासी निरखतां रे, ओसवाल उत्तम न्याति।
बुद्धिवंत कुल बोथरा रे, बीकानेर विख्यात रे ॥ १ ॥
अम्हारा गुरु जिनसागर सूरि एह।
शांत दांत शोभा घणी रे, कठिन क्रिया करइ तेह रे। अ.।२।
मात मृगादे उरि धरयउ रे, वच्छराज साह मल्हार।
जिनसिंह सूरि पटोधरु रे, खरतरगच्छ सिणगार। अ.।३।
बोलइ थोडूं बइठा रहइ रे, वाचइ सूत्र सिद्धान्त।
राति ऊभां काउसग्ग करइ रे, ध्यान धरइ एकान्त। अ.।४।
फरस भला अति फूटरा रे, आउलि चांपा फूल।
समयसुन्दर कहइ सांभलउ रे, तिहुं माहें कुण बहु मूल। अ.।५।

केई मुया गया परिण केई,
केई जूया रहइ परदेस ।
पासि रहइ ते पीड़ न जाणइं,
कहियइ वयण तउ थायइ किलेस ॥ २ ॥
जोड़ घणी विस्तरी जगत मइं,
प्रसिद्धि थइ पातसाह पर्यंत ।
पणि एकणि वात रही अणूरति,
न कियउ किण चेलइ निश्चिन्त ॥ ३ ॥
समयसुन्दर कहइ सांभलिज्यो,
देतउ नही छुं चेलां दोस ।
जिन आज्ञा न पाली जमंतरिं,
तउ शिष्यां दिसि किसउ करूं सोस ॥ ४ ॥
समयसुन्दर कहइ कर जोड़ि,
ऊपरला सुणिजे अरदास ।
मनोरथ एक धरूं छुं ध्रम रउ,
ए तूँ पूरि अम्हारी आस ॥ ५ ॥

जीव प्रतिबोध गीतम्

राग—मारुणी.

जागि जागि जंतुया तुँ, कांइ निचिंतउ सोवइ री ।जा.।
तनु छाया मिस मरण तोकुँ, आपणी घात जोवइ री ।जा.।१।

साहेली हे पूज्य थया पटधार ॥ सा.॥३॥
साहेली हे उठि प्रभाते एहनइ,
साहेली हे प्रणम्यां जायइ पाप ।
साहेली हे समयसुन्दर कहइ अति घणउ,
साहेली ए हुज्यो तेज प्रताप ॥ सा.॥४॥

(१५) राग—प्रभाती

सिणगार करउ रे साहेलड़ी रे,
वहिनी आवउ मिली वेलड़ी रे ॥ सि०॥१॥
वांदउ गुरु मोहन वेलड़ी रे,
सांभलतां जाणे मीठी सेलड़ी रे ॥ सि०॥२॥
पाट्ट नी पूजि ओढउ पछेवड़ी रे,
पाटण नी नीपनी सखरी दोपड़ी रे ॥ सि०॥३॥
कठिन तुम्हारी क्रिया केवड़ी रे,
तुम्हे तो पदवी पामी तेवड़ी रे ॥ सि०॥४॥
जिनसागर सूरि नी महिमा जेवड़ी रे,
समयसुन्दर कहइ एवड़ी रे ॥ सि०॥५॥

इति श्रीजिनसागरसूरि गीतानि ।

संघपति सोमजी वेलि

संघपति सोम तणउ जस सगलइ,
वरण अठारह करइ वखाण ।

कीधा पाप न छूटियइ रे, पाप थकी मन वाल ।
काने बिहुं खीला ठव्या रे, तउ वीर तणइ गोवाल ।जि.।४।
मरण सहु नइ सारखउ रे, कुण राजा कुण रांक ।
पणि जायइ जीव निसंबलउ रे, एहिज मोटउ वांक ।जि.।५।
जे पाखइ सरतुं नहीं रे, जे साथइ प्रतिबंध ।
ते माणस उठि गया रे, तउ धरम पखइ सहु धंध ।जि.।६।
जन्म मरण थी छूटियइ रे, न पड़ीजइ गर्भावास ।
समयसुन्दर कहइ ध्रम थकी रे, लहियइ लील विलास ।जि.।७।

जीव प्रति बोध गीतम्

राग—आसाउरी-सिंधुड़उ

जीवड़ा रे जिन ध्रम कीजियइ, ए छइ परम आधारो रे ।
अवर सहु को अथिर छइ, सकल कुटुंब परिवारो रे ।जी.।१।
दस दृष्टांते दोहिलउ, वलि मनुष्य भव सार ।
ते पुण्य जोगे पामियउ, जीव जन्म आलि म हारो रे ।जी.।२।
अति अथिर चंचल आउखउ, रमणीक यौवन रूप ।
चक्रवर्त्ती सनतकुमार ज्युं, जीव जोई देह सरूपो रे ।जी.।३।
चक्रवर्त्ती तीर्थंकर किहां, किहां गणधर गुण पात्र ।
ते पण विधाता अपहर्या, तो अवर केही मात्रो रे ।जी.।४।
जीव रात्रि दिवस जे जाइ छै, वलि नवि आवै तेह ।
तप जप संजम आदरी, करी सफल आतम देहो रे ।जी.।५।

पुण्य क्रतूत किया अति परिघल,
सुरपति सबल पड़ी मन सांक।
पहुँतउ सोम इन्द्र परिचात्रा,
वरस्यु मुगति नहीं तुझ वांक ॥ सं० ॥ ७ ॥
वड़ दातार दान गुण विक्रम,
संघपति जोगी साह सुतन्न।
सोम गयउ धनद समभावा,
घरमइ कायन खरचइ धन्न ॥ सं० ॥ ८ ॥
बिंब प्रतीठ संघ करि बहुला,
साहमि साहमी सगले लाहि।
ख्याति घणी खरतर गच्छि कीधी,
वड़ हथ लीयउ वारउ वांहि ॥ सं० ॥ ६ ॥
प्राग वंश विहुँ पखि पूरउ,
रूड़उ गुरु गच्छ उपरि राग।
सानिध करे सोम सदगुरु नइ,
सुंदर जस दीपइं सोभाग ॥ सं० ॥१०॥

इति सोमजी निर्वाण वेलि गीतं संपूर्णम्।
कृतं विक्रमनगरे समयसुन्दर गणिना ॥ शुभं भवतु ॥

गुरुदुःखितवचनम्

क्लेशोपार्जितवित्तेन, गृहीता अपवादतः।
यदि वै न गुरोर्भक्ताः, शिष्यैः किं तैर्निरर्थकैः ॥ १ ॥

सांभलि सीख सोहामणी, ममता थी मन वाल ।
समयसुन्दर कहइ जीव नइ, सूधउ संजम पाल ।ग०। ४ ।

जीव प्रतिबोध गीतम्

ऐसारा जाण असार संसार,करि धर्म आलि म हारि जमारा ।१।ए.।
मात पिता सिंयु कुटुंब सनेहा, स्वार्थ बिनु दिखरावइ छेहा ।२।ए.।
धन यौवन सब चंचल होइ, राख्या न रहइ कबहीं सोई ।३।ए.।
जीर्ण पात परे ज्युं समीरा, तइसा री जीवत अथिर सरीरा ।४।ए.।
जिण शिर चामर छत्र धराते, वो भी रे छोरि गये चिल्लाते ।५।ए.।
बहुत उपाय किये क्या होई है है, मरण न छूटइ कोई ।६।ए.।
पाप करी पिछताणा भारी,हारचा रे हाथ घसै ज्युं जुआरी ।७।ए.।
किणही को जिणु बात न करणी, अपनी करणी पार उतरणी ।८।ए.।
मृगनयणी नयणे म लुभाये, ध्यान धर्म सुं जीव चित लाये ।९।ए.।
समयसुंदर कहइ जीव सुं विचारी,या हित सीख करे सुखकारी ।१०ए.।

धर्म महिमा गीतम्

रे जीया जिन धर्म कीजियइ, धरम ना चार प्रकार ।
दान शील तप भावना, जग महं एतलउ सार ।रे.।१।
वरस दिवस नइ पारणइ, आदीसर सुखकार ।
इक्षुरस दान वहिरावियउ, श्री श्रेयांस कुमार ।रे.।२।
चंपा बार उघाड़ियउ, चालणी काढ्यउ नीर ।
सती सुभद्रा यश थयउ, शीले सुर गिरि धीर ।रे.।३।

ज्योतिर्विद्या—चमत्कारं, दर्शितो भूभृतां पुरः ।
यदि ते न गुरोर्भक्ताः, शिष्यैः किं तैर्निरर्थकैः ॥१२॥
हिन्दू-मुसलमानानां, मान्याश्च महिमा महान् ।
यदि ते न गुरोर्भक्ताः, शिष्यैः किं तैर्निरर्थकैः ॥१३॥
परोपकारिणः सर्वगच्छस्य स्वच्छहृच्चितः ।
यदि ते न गुरोर्भक्ताः, शिष्यैः किं तैर्निरर्थकैः ॥१४॥
गच्छस्य कार्यकर्त्तारो, हर्त्तारो तेऽश्वऽभूस्पृशाम् ।
यदि ते न गुरोर्भक्ताः, शिष्यैः किं तैर्निरर्थकैः ॥१५॥
गुरुर्जानाति वृद्धत्वे, शिष्याः सेवाविधयिनः ।
यदि ते न गुरोर्भक्ताः, शिष्यैः किं तैर्निरर्थकैः ॥१६॥
गुरुणा पालिता नाऽऽज्ञा-ऽर्हतोऽतोऽतिदुःखभागऽभूत् ।
एयामहो गुरुर्दुःखी, लोकलज्जापि चेन्नहि ॥१७॥
न शिष्य-दोषो दातव्यो, मम कर्मैव तादृशम् ।
परं भद्रकभावेन, लीला लीलायते मम ॥१८॥
संवत्यष्टनवत्यग्रे, राजधान्यां स्वभावतः ।
स्वरूपं प्रकटीचक्रे, गणिः समयसुन्दरः ॥१६॥*

(२)

चेला नहीं तउ म करउ चिंता,
दीसइ घणे चेले पण दुक्ख ।
संतान करंमि हुया शिष्य बहुला,
पणि समयसुन्दर न पायउ सुक्ख ॥ १ ॥

*[स्वयं लिखित पत्र १ मर्. मा भक्ति भंडार]

कारिमा एह कुटुंब काजइ, म कर करम कठोर रे ।
एकलउ जीव सहीस परभव, नरक ना दुख घोर रे ॥३॥बू.॥
काम भोग संयोग सगला, जाण फल किंपाक रे ।
दीसतां रमणीक दीसइ, अति कटुक विपाक रे ॥४॥बू०॥
गर्व गरथ तणउ न कीजइ, थिर न रहस्यै कोय रे ।
राय फीटी रंक थावइ, राय हरिचंद जोय रे ॥५॥बू०॥
ए असार संसार मांहे, जाणि जिण ध्रम सार रे ।
नरक पड़तां थकां राखइ, परम हित सुखकार रे ॥६॥बू०॥
इम जाणी जीव जिन धर्म कीजइ, लीजियै कछु सार रे ।
समयसुन्दर कहत जीव कुं, पामियै भव पार रे ॥७॥बू०॥

वैराग्य शिक्षा गीतम्

म कर रे जीउड़ा मूढ, म माया सब मेरा मेरा ।
आप स्वारथ सब मिले, नहीं को जग तेरा ॥म०॥१॥
एक आवै चलै एकला, कुछ साथ न आवइ ।
भली बुरी करणी करी रे, पीछे सुख दुख पावइ ॥म०॥२॥
धर्म विलंबन कीजियइ रे, एहु अथिर संसारा ।
देखत देखत वाजता रे, घड़ी में घड़ियारा ॥म०॥३॥
एक के उदर भी दोहिला, एक के छत्र धरीजइ ।
आपणे कीने कर्मड़े रे, किस कुं दोष न दीजइ ॥म०॥४॥

माया मोह मांहि लपटाणउ, काइं जमारउ खोवइ री ।जा.।
समयसुन्दर कहति एक धम, तेही सुख होवइ री ।जा.।२।

जीव प्रतिबोध गीतम्

राग—आसारी

रे जीव घखत लिख्या सुख लहियइ ।
झूरि झूरि काहे होत पांजर, दैव दीना दुख सहियइ ।रे.।१।
अइसउ नहीं कोऊ अंतरजामी, जिण आगलि दुख कहियइ ।
जोर नहीं परमेसर सेती, ज्यूँ राखइ त्यूँ रहियइ ।रे.।२।
कुल की लाज अजाद मेटत कुण, जिम तिम करि निरवहियइ ।
समयसुंदर कहइ सुख कउ कारण, एक धरम सरदहियइ ।रे.।३।

जीव प्रतिबोध गीतम्

ढाल—कपूर हुयइ अति ऊजलो रहनी.

जिवड़ा जाणे जिन धर्म सार, अवर सहु रे असार ।जि.।
कुटुंब सहु को कारमुं रे, को केहनउ नवि होय ।
नरक पड़ंतां प्राणिया तूँ नइ राखणहार कोय ।जि.।१।
कूड़ कपट नवि कीजियइ रे, पापे पिण्ड भराय ।
पहिले पुण्य न कीजियइ रे, वउ पछइ पछतावो थाय ।जि.।२।
काया रोग समाकुली रे, खिण खिण तूटइ आयु ।
सनतकुमार वखी परइ रे, खिण मांहे खेरू थाय ।जि.।३।

मन धोबी गीतम्

धोबीड़ा तूँ धोजे रे मन केरा धोतिया, मत राखे मैल लगार।
इण मइले जग मैलो कर्यउ रे, विण धोयां तूँ मत राखे लगार। धो.।१।
जिन शासन सरोवर सोहामणो रे, समकित तणी रूड़ी पाल।
दानादिक चारुं ही बारणा, मांहे नवतत्त्व कमल विशाल।धो.।२।
त्यां झीलइ रे मुनिवर हँसला, पीवै छइ तप जप नीर।
शम दम आदि जे शीला रे, तिहां पखाले आतम चीर।धो.।३।
तपवजे तप नइ तड़के करी रे, जालवजे नव ब्रह्मवाड़।
छांटा उडाड़े रे पाप अढार ना रे, जिम उजलो हुवे ततकाल।धो.।४।
आलोयण साबुड़ो सुद्धि करी रे, रखे आवे नी माया सेवाल।
निश्चय पवित्र पणो राखजे, पछइ आपणो नेम संभाल।धो.।५।
रखे तूं मूके तो मन मोकलो रे, चाल मेली नइ संकेल।
समयसुन्दर नी आ छइ सोखड़ी, सीखड़ली मोहन वेल।धो.।६।

माया निवारण सज्झाय

माया कारमी रे माया म करो चतुर सुजाण।
काया माया जन विलुद्धि, दुखिया थाइं जाण॥ १॥
माया कारण देश देसांतर, अटवी वन मां जावै रे।
प्रवहण बइसी धीर द्विपांतर, सायर मां झपावै रे॥ २॥
माया मेली करी बहु भेली, लोभे लक्षण जाय रे।
भीतें धन धरती में घालै, ऊपर विषहर थाय रे॥ ३॥

अति तुच्छ सुख संसार नो, मधु लिप्त खड्गनी धार।
किंपाक ना फल सारिखा रे, द्यै दुख अनेक प्रकारो रे।जी.।६।
विश्वास म कर स्त्री तणउ ए, मुगधजन मृग पास।
अति कूड़ कपट तणी कूँडी वलि, दियइ २ दुर्गति वासो रे।जी.।७।
जीव अत्यंत प्रमादियउ, दूषम काल दुरंत।
तिण शुद्ध क्रिया नहीं पलइ, आधार एक भगवंतो रे।जी.।८।
मन मेरु नी परइ दृढ करी, स्थिर पाली निरतिचार।
भव भ्रमण थी जिम छूटियइ, पामियइ भवनो पारो रे।जी.।९।
जग मांहि ते सुखिया थया, वलि हुयइ हुइस्यइ जेह।
ते वीतराग ना धरम थी रे, इहां नहीं कोई संदेहो रे।जी.।१०
जिन धर्म सुधो आदरे ए, सीख अमृत धार।
गणि समयसुन्दर इम कहइ, जिम लहै भवनो पारो रे।जी.।११।

जीव प्रतिबोध गीतम्

राग—गउड़ी

ए संसार असार छइ, जीव विमासी जोय।
कुटुंब सहु को कारमउ, स्वारथ नउ सहु कोय।ए०।१।
खिण खिण इन्द्रिय बल घटइ, खिण खिण त्रूटै आय।
वृद्ध पणइ परवश पड्या, कहि किम धर्म कराय।ए०। २।
जाल जंजाल मांहि पड्यउ, आलि जमारउ म खोय।
कर तप जप एकै साधना, साचउ संबल जोय।ए०। ३।

पुण्य विना कहि क्युँ धन पाइयइ,
पूछि न मानइ तउ पंच जनं, भाई रा.।१।
घर धंधइ सब धरम गमायउ,
वीसरि गयउ देव गुरु भजनं।
पोटि उपाड़ि गये कुण परभवि,
म करि म करि जीव लोभ घनं, भाई रा.।२।
पग मांहे मरण वहइ रे मूरिख,
माया जाल म पड़ि गहनं।
समयसुंदर कहइ मान वचन मेरउ,
ध्रम करि ध्रम करि एक मनं, भाई रा.।३।

पारकी होड निवारण गीतम्

राग—गुण्ड मिश्र

पारकी होड तूँ म करि रे प्राणिया,
पुण्य पाखइ म करि हूंसि खोटी।
बापड़ा जीव बावी तइं जउ बाजरी,
कहि किम लुणिसि तुं सालि मोटी।।पा०।।१।।
जउ तइं सोनार नइं जसद घड़िवा दियउ,
तउ तूँ मांगइ किम कनक त्रोटी।
देखि हनुमंत की हूंसि मांहे रली,
राम वगसीस कीनी कछोटी।।पा०।।२।।

तप करि काया सोखवी, सरस निरस आहार ।
वीर जिणंद वखाणियउ, ते धनउ अणगार ।रे.।४।
अनित्य भावना भावतां, धरतां निर्मल ध्यान ।
भरत आरीसा भवन मइं, पाम्यउ केवल ज्ञान ।रे.।५।
श्री जिन धर्म सुरतरु समो, जेहनी शीतल छांहि ।
समयसुन्दर कहइ सेवता, मुक्ति तणां फल पाहि ।रे.।६।

जीव नटावा गीतम्

राग—नट नारायण

देखि देखि जीव नटावइ, अइसउ नाटक मंड्यउ री ।
कर्म नायक नृत्य करायउ, खेलत ताल न खंड्यउ री ॥दे.।१।
कबहि राजा कबहि रंक, कबहि भेख त्रिदण्ड्यउ ।
कबहि मूरिख कबहि पंडित, कबहि पुस्तक पंड्यउ री ॥दे.।२।
चउरासी लख भेख बनाए, कोउ भेख न छंड्यउ ।
समयसुंदर कहइ धर्म बिना सब, आप वृथा कर भंड्यउ री ॥दे.।४।

आतम प्रमोद गीतम्

राग—कालहरव

बूझि रे तूँ बूझि प्राणी, वालि मन वइराग रे ।
अथिर नर आउखुं दीसइ, जाणि संध्या राग रे ॥१॥बू०॥
मानुषो भव लही दुर्लभ, पापे पिंड म भार रे ।
आल काग उडावणी कुं, मूढ रत्न म हार रे ॥२॥बू.॥

मन शुद्धि गीतम्

एक मन सुद्धि विन कोउ मुगति न जाइ ।
भावइं तूँ केस जटा धरि मस्तकि, भावइ तुं मुंड मुंडाइ ।ए.।१।।
भावइ तूँ भूख तृपा सहि वन रहि, भावइ तूँ तीरथ न्हाइ ।
भावइ तूँ साधु भेख धरि वहु परि, भावइ तूँ भसम लगाइ ।ए.।२।।
भावइ तूँ पढि गुणि वेद पुराणा, भावइ तूँ भगत कहाइ ।
समयसुंदर कहि साच कहुं सुण, ध्यान निरंजन ध्याइ ।ए.।३।।

कामिनी-विश्वास-निराकरण-गीतम्

राग—सारङ्ग

कामिनी का कहि कुण विसासा । का० ।
खिण राचइ विरचइ खिण मांहे,
खिण विनोद खिण मेलें निसासा ।। का० ।।१।।
वचनि अउर अउर चित अंतर,
अउर सु करइ हांसा ।
चंचल चित्त कूड अति कपटिनि,
मुग्ध लोग मृग बंधनि पासा ।। का० ।।२।।
धन जे साध तास संगति तजी,
जाइ रहे वन वासा ।
समयसुन्दर कहइ सील अखंडित,
पालइ ताके चरण कउ हुं दासा ।। का० ।।३।।

आप समउ और लेखियइ, तुझे बहुत क्या कहणा ।
समयसुन्दर कहइ जीव कुं रे, ऐसी सीख में रहणा ।।म०।।५।।

घड़ी लाखीणी गीतम्

राग—आसावरी

घड़ी लाखीणी जाइ वे, कछु धरम करउ चित लाइ वे ।घ.।१।
इहु मानव भव दोहिला लाधा,रमत खेलत मान्हन गया आधा ।घ.।२।
कुण जाणइ आगइ क्या होई, मरण जरा मिलि आवत दोई ।घ.।३।
वरसां सौ जीवण की आसा, पण एक घड़िय नहीं वेसासा ।घ.।४।
समयसुंदर कहइ अथिर संसारा, जनमिं २ जिन ध्रम आधारा ।घ.।५।

सूता जगावण गीतम

राग—भैरव

जागि जागि जागि भाई जागि रे तुं जागि ।
भोर भयो ध्रम मारगि लागी ।।जा०।१।
सूता रे तेह विगूता सही ।
जागंतां कोउ डर भय नहीं ।.जा०।२।
देव जुहारी गुरु वांदण जाइ ।
सुणि रे वखाण तोरा पाप पुलाई ।।जा०।३।
देहु दान कछु कर उपगार ।
समयसुन्दर कहइ ज्युं पामइ भव पार ।।जा०।४।

कहइ काया जीव कंत नइ, जागता रहउ मोरा स्वाम रे ।
ध्यान धरम सुख भोगवउ, ल्यउ भगवंत रउ नाम रे । नी.।३।
धन आपणउ रहइ सावतउ[1], हुसियारी भली होइ रे ।
समयसुन्दर कहइ जागता, छेतरी न सकइ कोई रे । नी.।४।

निद्रा गीतम्

सोइ सोइ सारी रयणि गुमाई,
वैरण निद्रा तुं कहां से आई । सो० ।
निद्रा कहइ मइं तउ बाली रे भोली,
वड़े वड़े मुनिजन कुं नाखुं रे ढोली ॥ सो०॥१॥
निद्रा कहइ मइं तउ जमकी रे दासी,
एक हाथ मूकी एक हाथ फांसी ॥ सो०॥२॥
समयसुन्दर कहइ सुनो भाई बनिया,
आप डूबे सारी डूब गई दुनिया ॥ सो०॥३॥

पठन प्रेरणा गीतम्

राग—भयरव

भणउ रे चेला भाई भणउ रे भणउ,
भण्या रे माणस नइ आदर घणउ ॥ भ.॥१॥

१ धरम करम सगली परइ

जोगी जंगम तपसी सन्यासी, नगन थइ परवरीया रे।
ऊंधे मस्तक अगन धखंती, माया थी न ओसरिया रे॥ ४॥
नाहना मोटा नर ने माया, नारी नै अधिकेरी रे।
वली विशेषे अधिकी व्यापइ, गरढा नइं भाभेरी रे॥ ५॥
शिवभूति सरिखो सत्यवादी, ससमें घोषें वाइ रे।
रतन देखि मन तेहनउ चलियउ, मरी नइ दुरगति जाइ रे॥ ६॥
एहवु' जाणी भवियण प्राणी, माया मूकउ अलगी रे।
समयसुन्दर कहइ सार छइ जगमें, धरम रंग सु' विलगी रे॥ ७॥

माया निवारण गीतम्

राग—रामगिरी

इहु मेरा इहु मेरा इहु मेरा इहु मेरा।
जीव तुं विमासि नहीं कुछ तेरा॥ इ०॥१।
सासतां सोस्र करइ बहु तेरा, आंखि मीची तव जग अंधेरा।इ.।२।
माल मलूक तंबू का डेरा, सब कछु छोरि चलइगा इकेरा।इ.।३।
समयसुंदर कहइ कहुँ क्या घणेरा, माया जीतइ तिणका हूं चेरा।४।

लोभ निवारण गीतम

राग—रामगिरी

रामा रामा धनं धनं,
ममतउ रहइ तूँ राति दिनं, भाई रा.।

क्रियावंत दीसइ फूटरउ,
क्रिया उपाय करम छूटरउ ।क्रि०।६।
पांगलउ ज्ञान किस्यउ कामरउ,
ज्ञान सहित क्रिया आदरउ ।क्रि०।७।
समयसुन्दर कहइ उपदेश खरउ,
मुगति तणउ मारग पाधरउ ।क्रि०।८।

जीव-व्यापारी गीतम्

राग—देव गंधार

आये तीन जणे व्यापारी । आ० ।
सदा सूत करण कुं लागे, वहुठे मांहि वखारि ।आ०।१।
मूल गमाइ चल्या एक मूरिख, एक रह्या मूल धारी।
एक चल्या लीन लाभ बहुत ले, अब देखो अरथ विचारी;
श्री उत्तराध्ययन विचारी ।आ०।२।
लाभ देख सउदा सब करणा, कुव्यापार निवारी ।
समयसुंदर कहइ इण कलजुग मइं, सब रहिज्यो हुसियारी ।आ०।३।

घड़ियाली गीतम्

राग—मिश्र

चतुर सुणउ चित लाइ कइ, कहा कहइ घरियारा ।
जीवित मांहि जायइ घरी, न कोइ राखणहारा ।च.।१।

पुण्य तइं राज नइं रिद्धि सुख पामियइ,
पुण्य पाखइ न रोटी न दोटी ।
समयसुँदर कहइ पुण्य कर प्राणिया,
पुण्य थी द्रव्य कोटान कोटी ॥पा०॥३॥

मरण भय निवारण गीतम्

राग—आसावरी

मरण तणउ भय म करि मूरिख नर, जिण वाटे जग जाइ रे।
तीर्थंकर चक्रवर्त्ती अतुल बल, तिण पणि खिण न रहाइ रे।म.।१।
तप जप संजम पालि तूँ सधुं, ध्यान निरंजन ध्याइ रे।
समयसुंदर कहइ जिम तुं जिवड़ा, परभव सुखियउ थाइ रे।म.।१।

आरति निवारण गीतम्

राग—गूजरी

मेरी जीउ आरति कांइ धरइ।
जइसा वखत मइं लिखति विधाता, तिण मइं कछु न टरइ।मे.।१॥
केइ चक्रवर्त्ती सिर छत्र धरावत, केइ कण मांगत फिरइ।
केइ सुखिए केइ दुखिए देखत, ते सब करम करइ।मे.।२॥
आरति अंदोह छोरि दे जीयुरा, रोवत न राज चरइ।
समयसुंदर कहइ जो सुख वंछत, तउ करि धम चित खरइ।मे.।३॥

हां माई स्त्री पुरुष नपुंसक सब कोउ,जोग मारग नइ मुगति जावइ।
समयसुन्दर कहइ सो गुरु साचउ,जोग मारग मोकुं समझावइ।मा.३।

कम गीतम्

राग=नटनारायण

हां माई करम थी को छूटइ नहीं । क० ।
मल्लिनाथ अस्त्री पणइ ऊपना, वीरइ कुण वेदन सही ।हा.।१।
हरिचंद राय पाणी सिर आणयउ, नंदिषेण वेश्या संग्रही।
घरि घरि भीख मांगी मुंज राजा, द्वारिका जादव कोड़ि दही। हां.।२।
लखमण राम भये वनवासी, रावण कुण विपति लही।
समयसुंदर कहै करम अतुलबल,करम की बात न जात कही। हां.।३।

नावी गीतम्

राग—कनड़ठ अडाणउ

नावा नीकी री चलइ नीर मझार, जाजरि नहीं य लगार ।ना०।
रुंधे हैं आश्रव द्वार, भरचउ हइ संजम भार ।
आउला पांच आचार, धीरिज हइ झूझार ।। ना० ।।१।।
थिर मन कूया थभउ, नांगर दया उठ भउ;
समकित भावना सुवाय ।
मालमी आगम भाखइ, जतने जिहाज राखइ;
समयसुन्दर नाउयउ, कुशले शिवपुर पाय ।। ना० ।।२।।

स्वार्थ गीतम्

राग—आसाउरी

स्वारथ की सब हइ रे सगाई,
कुण माता कुण बहिन रि भई ॥ स्वा० ॥१॥
स्वारथ भोजन भगति सबाई,
स्वारथ विण कोऊ पाणी न पाई ॥ स्वा० ॥२॥
स्वारथ मां बाप सेठ बड़ाई,
स्वारथ विण नित होत लड़ाई ॥ स्वा० ॥३॥
स्वारथ नारी दासी कहाई,
स्वारथ विण लाठी ले धाई ॥ स्वा० ॥४॥
स्वारथ चेलां गुरु गुरुहाई,
स्वारथ सब लपटाणा भाई ॥ स्वा० ॥५॥
समयसुन्दर कहइ सुणउ रे लोगाइ,
साचा एक हइ धरम सखाई ॥ स्वा० ॥६॥

अंतरंगबाह्यनिद्रानिवारणगीतम्

नींद्रड़ी निवारो रहो जागता, वालिभ म करि विश्वास रे।
सांप सिरहाणै सूतों ताहरइ रे, चोर फिरइ चिहुँ पास रे। नी.।१।
जिण पूठइ दुसमण फिरइ, गाफिल किम रहइ तेह रे।
सूतां री पाडा जिणइ, दृष्टान्त कहइ सहु एह रे। नी.।२।

विन अपराध तजइ को वालंभ, पंच राति वलि देख ॥ रू.॥३॥
हंस कहइ हूं न रहूं परवश, संबल द्यौ मुझ साथ ।
समयसुन्दर कहै ए परमारथ, हंस नहीं किण हाथ ॥ रू.॥४॥

जीव कर्म संबन्ध गीतम्

राग—भूपाल

जीव नइ करम माहो मांहि संबंध,
अनादि काल नउ कहियइ रे ।
ए पहिलउ ए पछइ न कहियइ,
धातु उपल भेद लहियइ रे ॥ जी० ॥१॥
तप जप अगनि करी नइ एहनउ,
दुष्ट करम मल दहियइ रे ।
समयसुन्दर कहइ एहिज आतमा,
सिद्ध रूप सरदहियइ रे ॥ जी० ॥२॥

सन्देह गीतम्

राग—भूपाल

करम अचेतन किम हुयउ करता, कहउ किम सकियइ थापी रे।
परमेसर पिण किम हुयइ करता, द्यइ दुख तउ ते पापी रे। क.।१।
आरीसा मांहि मुहडउ दीसइ, कहउ ते पुदगल केहा रे ।
जीव अरूपी करम सरूपी, किम संबंध संदेहा रे। क.।२।

भणया नइ हुयइ भलउ विहरावणउ,
सखर वस्त्र पहिरण ओढणउ ॥ भ.॥२॥
पद हुयइ वाचक पाठक तणउ,
बाजउठई चड़ी बइसणउ ॥ भ.॥३॥
भणयां पावइ दुख पाप देखणउ,
कांधइ झोली हाथ मइ दोहणउ ॥ भ.॥४॥
समयसुन्दर कहउ सबद मानणउ,
इह लोक परलोक सोहामणउ ॥ भ.॥५॥

क्रिया प्रेरणा गीतम्

राग—भयरव

क्रिया करउ चेला क्रिया करउ,
क्रिया करउ जिम तुम्ह निस्तरउ । क्रि० ।१।
पड़िलेहउ उपग्रण पातरउ,
जयणा सु काजउ उत्तरउ । क्रि० ।२।
पड़िक्मतां पाठ सुध ऊचरउ,
सहु अधिकार गमा सांभरउ । क्रि० ।३।
काउसग करता मन पांतरउ,
चार आंगुल पग नउ आंतरउ । क्रि० ।४।
परमाद नइ आलस परिहरउ,
तिरिय निगोद पड़ण थी डरउ । क्रि० ।५।

मन मान्या माणस जउ मेलइ, तउ कि विछोहा पाड़इ रे।
विरह वेदन उनकी ओ लाणइ, रोइ रोइ जनम गमाड़इ रे।क०।२।
देवकुमर सरखा पुत्र देइ, अधविच ल्यइ कुं उदाली रे।
पुरुप रतन घड़ी घड़ी किम भांजइ, यौवन अवला वाली रे।क०।३।
जो तूं छत्रपति राजा थापइ, तउ रंक करी कुं सलावइ रे।
जिण हाथइ करि दान दिरावइ, सो कुं हाथ उडावइ रे।क०।४।
के कहइ ईश्वर के कहइ विधाता, सुख दुख सरजन हारा रे।
समयसुन्दर कहइ मइं भेद पायउ, करम जु हइ करनारा रे।क०।५।

दुषमा-काले संयम-पालन गीतम्

राग—भूपाल

हां हो कहो संयम पथ किम पलइ, ए दुपमा काल।
किसण पाखी जीव इहां घणा, वलि गच्छ जंजाल ॥ १ ॥
हां हो तप संयम नी खप करउ, जिन आज्ञा निहालि।
समयसुन्दर कहइ श्रम करउ, राग नइ द्वेप टालि ॥ २ ॥

श्री परमेश्वर भेद गीतम्

राग—सवाब मिश्र

एक तुं ही तुं ही, नाम जुदा मूहि मूहि ।१।एक तुं ही.।
बाबा आदिम तुं ही तुं ही, अनादि मते तुं ही तुं ही।२।एक तुं ही.।
पर ब्रह्म ने तुं ही तुं ही, पुरुषोत्तम ते तुं ही तुं ही।३।एक तुं ही.।
ईसर देव ते तुं ही तुं ही, परमेसर ते तुं ही तुं ही।४।एक तुं ही.।

पहुर पहुर कइ आंतरइ, राति दिवस मझारा।
वाजा रे वाजइ जम तणा, सब रहु हुसियारा। च.।२।
तनु छाया छड़िया फिरइ, गाफिल म रहउ गमारा।
समयसुन्दर कहइ ध्रम करउ, एहीज आधारा। च.।३।

उद्यम भाग्य गीतम्

राग—गूजरी

उद्यम भाग्य विना न फलइ।
बहुत उपाय किये क्या होई, भवितव्यता न टलइ। उ०।१।
पूरब रवि पच्छिम दिस ऊगत, अविचल मेरु चलइ।
तउ भी लिखित मिटइ नहीं कबही, उद्यम क्या एकलइ। उ०।२।
सुख दुख सब कुं सरज्या होवत, उद्यम भाग्य मिलइ।
समयसुन्दर कहइ धर्म करउ जिम, मन अभीष्ट मिलइ। उ०।३।

सर्वभेषमुक्तिगमनगीतम्

राग—नटनारायण

हां माई हर कोउ भेख मुगति पावइ, ध्यान निरंजण जो ध्यावइ। मा.।
सैव सेतांबर बौध दिगम्बर, सेख कलंदर समभावइ। मा.।१।
हां माई ब्राह्मण श्रमण तापस सन्यासी, सिंगीनाद सबद बावइ।
नगन जटाधर कोउ करपात्री, के जोगीन्द्र भसम लावइ। मा.।२।

कुण गंगा वेलु कण कुं गिणइ,
कुण माथइ करि मेरु वहइ री। कु०।२।
क्रोध मान माया लोभ जीपइ,
जो तपस्या करि देह दहइ री।
समयसुन्दर कहइ ते लहइ तिणकुं,
जे जोग ध्यान की जोति रहइ री। कु०।३।

निरंजन ध्यान गीतम्

राग—वयराड़ी

हां हमारइ परब्रह्म ज्ञानं।
कुण माता कुण पिता कुटुम्ब कुण, सब जग सुपन समानं। हां.।१।
तप जप किरिया कष्ट बहुत हइ, तिण कुं तिल भी न मानं।
समयसुन्दर कहइ कोइक समझइ, एक निरंजन ध्यानं। हां.।२।

परब्रह्म गीतम्

राग—वयराड़ी

हुं हमारे परब्रह्म ज्ञानं।
कुण देव कुण गुरु कुण चेला, अउर किसी कुं न मानं रे। हुँ०।१।
कुण माता कुण पिता कुटुंब कुण, सब जग सुपन समानं।
अलख अगोचर अकल सरूपी, पर ब्रह्म एक पिछानं। हुँ०।२।
इंद्रजाल इंद्रधनुप ज्युँ, तन धन अनित्य हुं जानं।
समयसुन्दर कहइ कोइक समझइ, एह निरंजन ध्यानं रे। हुँ०।३।

जीव काया गीतम्

जीव प्रति काया कहइ, सुनइ मुकिकां समझावइ रे।
मइ अपराध न को कियउ, प्रियु को समझावइ रे ॥जी०॥१॥
राति दिवस तोरी रागिणी, राखुं हृदय मझारि रे।
सीत तावड़ हूँ सहु सहं, तूँ छइ प्राण आधार रे ॥जी०॥२॥
प्रीतड़ी बालंभ पालियइ, नवि दीजियइ छेह रे।
कठिन हियुं नवि कीजियइ, कीजइ सुगुण सनेह रे।जी०॥३॥
जीव कहइ काया प्रति, अम्ह को नहीं दोस रे।
खिण राचइ विरचइ खिण तेहनउ किसोय भरोस रे॥जी०॥४॥
कारिमउ राग काया तणउ, कूट कपट निवास रे।
गुण अवगुण जाणइ नहीं, रहइ चित्त उदास रे ॥जी०॥५॥
जीव काया प्रतिबूझवी, भागो मन मो संदेह रे।
समयसुन्दर कहइ सुगुण सुं, कीजइ धरम सनेह रे ॥जी०॥६॥

काया जीव गीतम्

राग—केदारउ गउड़ी

रूड़ा पंखीड़ा, पंखीड़ा मुन्हइ मेल्ही नइ म जाय।
धुर थी प्रीति करी मइं तो सुँ, तुझ विण चण न रहाय॥रू.॥१॥
चतुर अमृत रस मोरउ तइं चाख्यउ, कीधी कोडि विलास।
जाणयुं नहीं इम उड़ी जाइस, हुंती मोटी आस॥रू.॥२॥
काया कमलनी जापइ कुमलानी, न रहइ रूप नइ रेख।

छती रिद्धि कदि छोड़सुं, थोड़ी घणी जेह ।
आरंभ नउ मूल ए कही, तीर्थंकरे तेह । क० । २ ।
गृहस्थावास छोडी करी, होस्युँ हूं अणगार ।
संयम सूधुं पालसुं, पामिसी भव पार । क० । ३ ।
अंत समय संलेखना, कदि करस्युं शुद्ध ।
इह पर .... । क० । ४ ।
ठाणांग सूत्र मांहे कही, ए तीजे ठाणे ।
सुधर्मा स्वामी कहै जंबू ने, समयसुन्दर वखाणे । क० । ५ ।

वैराग्य सज्झाय

मोक्षनगर मारुं सासरूं, अविचल सदा सुखवास रे ।
आपणा जिनवर नइ भेटियइ, त्यां करउ लील विलास रे । मो.।१।
ज्ञान दर्शन आणे आविया, करो करो भक्ति अपार रे ।
शील सिणगार पहरो पदमणी, उठि उठि जिन समरो सार रे । मो.२।
विवेक सोवन टीलुँ तप तपे, साचो साचो वचन तंबोल रे ।
संतोष काजल नयणे भर्यां, जीवदया कुंकुम घोल रे । मो.।३।
समकित वाट सोहामणी, संयम वहेल उजमाल रे ।
तप जप बलदिया जोतर्या, भावना रास रसाल रे । मो.।४।
कारमो सासरो परिहरो, चेतो चेतो चतुर सुजाण रे ।
समयसुन्दर मुनि इम भणइ, त्यां छइ भवि निरवाण रे । मो.।५।

———

जिन सासन शिव सासन अच्छूं, पुस्तक पाना वांचुं रे।
समयसुन्दर कहइ सांसउ न भागउ, भगवत कहइ ते सांचुं रे। क.।३।

जग सृष्टिकार परमेश्वर पृच्छा गीतम्

राग—वेलाउल

पूछूं पंडित कहउ का हकीकत,
　　आ जगत सृष्टि किण कीधी रे।
जउ लाणउ तउ जुगति कहउ कोइ,
　　नहिं तरि ना कहउ सीधी रे॥ पू०॥१॥
बांभण वांचउ वेद पुराणा,
　　काजी वांचउ कुराणा रे।
सूत्र सिद्धांत वांचउ जिण शासणि,
　　पणि समभावइ ते सुजाणा रे॥ पू०॥२॥
जनम मरण दीसइ अति बहुला,
　　प्राणी सुख दुख पावइ रे।
समयसुन्दर कहइ जउ मिलइ केवलि,
　　तउ सहु विध समभावइ रे॥ पू०॥३॥

करतार गीतम्

कबहु मिलइ मुझ जउ करतारा, तउ पूछुं दोइ वतियां रे।
तूं कृपाल कि तूं हइ पापी, लखि न सकूं तोरी गतियां रे। क०।१।

कहां रावण कहां राम कहां नल, कहां पांडव परधान ।
इण जग कुण कुण आइ सिधारे, कहि नइं तूं किस थान । मू.।२।
आज के कालि आखर अंत मरणा, मेरी सीख तूं मान ।
समयसुन्दर कहइ अथिर संसारा, धरि भगवंत कउ ध्यान । मू.।३।

मान निवारण गीतम्

राग—केदारा गउड़ी

किसी के सब दिन सरिखे न होई ।
ग्रह ऊगत अस्तंगत दिनकर, दिन मइं अवस्था दोई । कि.।१।
हरि बलभद्र पांडव नल राजा, रहे वन खंड रिधि खोई ।
चंडाल कइ घरि पाणी आण्यउ, राजा हरिचंद जोई । कि.।२।
गरब म करि रे तूं मूढ गमारा, चढत पड़त सब कोई ।
समयसुन्दर कहइ ईरत परत सुख, साचउ जिन धर्म सोई । कि.।३।

यति लोभ निवारण गीतम्

राग—रामगिरि

चेला चेला पदं पदं, पुस्तक पाना लोभ मदं । चे. ।
भार भूत म मेलि परिग्रह, संयम पालहु साच वदं । भाई चे.।१।
मन चेला पद साध की पदवी, पुस्तक धरि शुभ ध्यान मुदं ।
समयसुंदर कहइ अपणे जिय कुं, अविचल एक सुगति संपदं ।भा.चे.२

राम नाम ते तुंही तुंही, वही नाम ते तुंही तुंही। ५ ।एक तुंही.।
सांई पण ते तुंही तुंही, गोसांइ ते तुंही तुंही। ६ ।एक तुंही.।
पिल्ला इल्ला तुंही तुंही, आंप एकल्ला तुंही तुंही . ७ ।एक तुंही.।
जती जोगी तुंही तुंही, भुगत भोगी तुंही तुंही। ८ ।एक तुंही.।
निराकार ते तुंही तुंही, साकार पणि ते तुंही तुंही। ९ ।एक तुंही.।
निरंजण ते तुंही तुंही, दुख भंजण ते तुंही तुंही।१०।एक तुंही.।
अलख गति ते तुंही तुंही, अकल मति ते तुंही तुंही।११।एक तुंही.।
एक रूपी तुंही तुंही, बहुय रूपी वे तुंही तुंही।१२।एक तुंही.।
घट घट भेदी तुंही तुंही, अंतर जामी तुंही तुंही।१३।एक तुंही.।
जगत व्यापी तुंही तुंही, तेज प्रतापी तुंही तुंही।१४।एक तुंही.।
पापीयां दूरि ते तुंही तुंही, धरमी हजूरी ते तुंही तुंही।१५।एक तुंही.।
अंतरजामी तुंही तुंही, सहसनामी तुंही तुंही।१६।एक तुंही.।
एक अरिहंत तुंही तुंही, समयसुन्दर तुंही तुंही।१७।एक तुंही.।

इति श्री परमेश्वर भेद गीतम्।

परमेश्वर स्वरूप दुर्लभ गीतम्

राग—धयराड़ी

कुण परमेसर सरूप कहइ री। कु०।
गगन भमत खर खोज पंखी का,
मीन का मारग कुण लहइ री। कु०। १।
कुण समुद्र पसलों करि पीयइ,
कुण अंबर कर मांहि ग्रहइ री।

त्रीकम त्रिया न घरणि जो, सिर कदी देइ ।
नदी किनारे रुंखड़उ, कदीक समूलो लेइ ॥३॥
कंठालो कालो कठण, ऊँचा देखी जाड़ ।
समयसुन्दर कहइ गुण विना, तै सुं करै तै जाड़ ॥४

अन्तरंग श्रृंगार गीतम्

हे वहिनी महारउ जोयउ सिणगार हे, वहिनी नीकउ सिणगार;
हे वहिनी साचउ सिणगार, जिण आज्ञा सिर राखड़ी रे हां ।
सिर समथउ व्रत आंखड़ी रे हां ॥१॥ हे वहिनी० ॥

कानइ उगनियां भ्रम वातड़ी रे हे व०,
सरवर सामाई चुनी रातड़ी रे । २ । हे०।
कनक कुंडल गुरु देसना रे हां व०,
दान चूड़ा पर देशना रे । ३ । हे०।
माल मोरइ हियइ हारड़उ रे हां० व०,
पदकड़ि पर उपमारड़उ रे हां० । ४ । हे०।
मुखि तंबोल सत्य बोलणउ रे हां० व०,
पड़िकमणउ अंगि लोलणउ रे हां । ५ । हे०।
जिण प्रणाम भालि चंदलउ रे हां० व०,
नकफूली लाज विंदलउ रे हां० । ६ । हे०।
नवकार गुणनउ वीटी गोलनी रे हां० व०,
ज्ञान अंगूठी बहु मोलनी रे हां० । ७ । हे०।

जीवदया गीतम्

राग—भूपाल

हां हो जीवदया धरम वेलड़ी, रोपी श्री जिनराय।
जिन सासण थाणुँ जिहां, ऊगी अविचल आइ। हां०जी०।१।
हां हो समकित जल सींची थकी,वाधी जयणा सुहाय।
गुपति मंडपि ऊंची चडी, सुख शीतल छाय। हां०जी०।२।
हां हो व्रत साखा तप पानड़ा, रूड़ि रिद्धि ते फूल।
समयसुन्दर कहइ मुगति ना, फल आपइ अमूल। हां०जी०।३।

वीतराग सत्य वचन गीतम्

राग—भूपाल

हां हो जिन भ्रम जिन भ्रम सहु कहइ, थापइ आपइ अपणी बात।
समाचारी जूजुई, कहउ किम समझात। जि० ।१।
हां हो चंद्रगुपत राजा हुयउ, सुहणउ दीठउ एम।
चंद्र थयउ जाणुं चालणी, जिण सासण तेम। जि० ।२।
हां हो अम्हे साचा भूठा तुम्हे, ए मूकउ टेव।
समयसुन्दर कहइ सत्य ते, वदइ वीतराग देव। जि० ।३।

कर्म निर्जरा गीतम्

ढाल—जशणी मन आम्या भणी

कर्म तणी कही निर्जरा, थाये त्रिहुं ठामे।
श्रमणोपासक नइ कही, रूड़े परिणामे। क०। १।

सकलचंद्र गुरु सानिध कीधी, सतासियइ न थयउ तन ज्यान।
समयसुँदर कहइ हिव तूं रे मन, करि संतोष नइ धरि ध्रम ध्यान ॥२॥
आधि व्याधि रोग को उपजइ, जीव जंजाले जायइ कही।
कुण जाणे कही अणुपूर्वी, जीवे बांधी मूकी अहीं॥
धर्म करउ ते पहिली करजो, छेहली वेला थास्यइ नहीं।
समयसुन्दर कहे हूँ तो माहरे, बे घड़ी ध्यान धरुं छूं सही ॥३॥

नव-वाड़-शील गीतम्

ढाल—तुङ्गिया गिरि सिखर सोहइ

नव वाड़ि सेती शील पालउ, पामउ जिम भव पार रे।
भगवंत विस्तर पणइ भाख्यउ, उत्तराध्ययन मझार रे। नव.।१।
पसु पडंग नइ नारि जिहां रहइ, तिहां न रहइ ब्रह्मचारि रे।
पहली वाड़ ए तुमे पालउ, शील वड़उ संसार रे। नव.।२।
कहइ सराग कथा कदे नहीं, स्त्री सुं एकांत रे।
बीजी वाड़ ए एम बोली, मानइ लोक महांत रे। नव.।३।
बइयरि जिण बइसणे बइसे, बे घड़ी न बइसे तेथ रे।
तीजी वाड़ि ए कही तीर्थंकरे, आज्ञा मोटी एथ रे। नव.।४।
स्त्री अंग उपांग सुन्दर, देखत नहीं धरि राग रे।
चउथी वाड़ि ए चतुर पालउ, पामइ जस सोभाग रे। नव.।५।
कुण्डी नइ अंतरइ पुरुष स्त्री, रमइ खेलइ रंगि रे।
पंचमी वाड़ि ए तुम्हे पालउ, टालउ तेह प्रसंगि रे। नव.।६।

औपदेशिक गीत

क्रोध निवारण गीतम्

राग—केदारउ

जियुरा तु ं म करि किण सु ं रोस । जि० ।
जु कछु जीय तु ं दुख पामइ, देइ ं करम कु ं दोस । जि.।१।
हां पारकी निंदा पाप हइ बहु, म कहि मरम नइ मोस ।
आप स्वारथ मिले सब जण, किण ही का न भरोस । जि.।२।
हां हो खमा गयसुकमाल कीनी, सासता सुख ओस ।
समयसुन्दर कहइ क्रोध तजि करि, धरे परम संतोस । जि.।३।

हुंकार परिहार गीतम्

राग—तोड़ी

जहां तहां ठउर ठउर हूं हूं हूं । ज० ।
कहा अति मान करइ तूं । ज० ।।
इण जगि कुण कुण आइ सिधारे,
तूं किस गान में हइ रे गमारे ।। ज० ।। १ ।।
इहु संसार असार असारा ।
समयसुन्दर कहइ तजि अहंकारा ।। ज० ।। २ ।।

मान निवारण गीतम्

राग—केदारा गउड़ी

मूरख नर काहे तु ं करत गुमान ।
तन धन जोवन चंचल जीवित, सहु जग सुपन समान । मू.।१।

बीजी भावना एम भावउ, जीव तुं शरणउ म जोइ रे ।
मातां पिता प्रियु कुटुम्ब छइ पण, राखणहार न कोइ रे । भा.। ३ ।
तीजी भावना एम भावउ, चउगति रूप संसार रे ।
धर्म विना जीव भम्यउ भमस्यइ, वलि अनंती वार रे । भा.। ४ ।
चौथी भावना एम भावउ, जीव छइ तूं अनाथ रे ।
एकलउ आव्यउ एकलउ जाइसि, नहिं को आवइ साथ रे । भा.। ५ ।
पंचमी भावना एम भावउ, जीव जुदउ जुदी काय रे ।
जीव न जाणइ केथ जासइ, काय कलेवर थाय रे । भा.। ६ ।
छट्ठी भावना एम भावउ, अशुचि अपवित्र देह रे ।
काया मूत्र मल तणउ कोथलउ, नाणउ तेह सु नेह रे । भा.। ७ ।
सातमी भावना एम भावउ, आश्रव रुंध अपाय रे ।
आतमा सरोवर आपणउ जिम, पाप पाणी न भराय रे । भा.। ८ ।
आठमी भावना एम भावउ, संवर सचावन्न रे ।
समिति गुपति सहु भला छइ, जीव तुं करिजे जतन्न रे । भा.। ९ ।
नवमी भावना एम भावउ, निर्जरा तप वार रे ।
छव छइ बाह्य छव छइ अभ्यंतर, पहुँचावइ भव पार रे । भा.।१०।
दसमी भावना एम भावउ, लोक स्वरूप मंथान रे ।
जिम विलोवणउ विलोवतां थकां, सरीर नउ संस्थान रे । भा.।११।
इग्यारमी भावना एम भावउ, बोधि बीज दुलभ रे ।
इण विन जीव को मोक्ष न जावइ, ए धरम नउ उट्ठंभ रे । भा.।१२।
बारमी भावना एम भावउ, अरिहंत वीतराग देव रे ।

विषय निवारण गीतम्

राग—केदारव

रे जीव विषय थी मन वालि ।
काम भोग संयोग भूंडा, नरक दुख निहाल ॥ रे० ॥१॥
अल्पकाल विषय तणा सुख, दुख थइ बहु काल ।
बलवंत विषय नइ लोभ बेहुँ, टालि जीव जंजाल ॥ रे० ॥२॥
मानखौ भव लही दुरलभ, मत गमाडइ आलि ।
समयसुन्दर कहइ आपनइ, सुधु संयम पाल ॥ रे० ॥३॥

निंदा परिहार गीतम्

राग—सयाब

निंदा न कीजइ जीव पराई,
निंदा पापइ पिंड भराई ॥ निं० ॥१॥
निंदक निश्चय नरगइ जाई,
निंदक चउथउ चंडाल कहाई ॥ निं० ॥२॥
निंदक रसना अपवित्र होई,
निंदक मांस भखक सम दोई ॥ निं० ॥३॥
समयसुन्दर कहइ निंदा म करिज्यो,
परगुण देखि हरख मनि धरज्यो ॥ निं० ॥४॥

निंदा वारक गीतम्

निंदा म करजो कोइ नी पारकी रे,
निंदा ना बोल्या महा पाप रे ।

पाणी न पीवइ राते इकि वार,
 पण न करइ रात्रे चउविहार ॥ वू० ॥२॥
नीलवण खावे नहीं दस के वार,
 पिण मायइ पाप भार अढोर ॥ वू० ॥३॥
नवरा रहइ न करइ को काम,
 पण न लियइ परमेसर नुं नाम ॥ वू० ॥४॥
गांठ रुपइया त्रण के चार,
 पिण न करइ सुंस पचास हजार ॥ वू० ॥५॥
चउपद मांहे घरि छालो नहीं,
 हाथी नुं सूंस न सके ग्रही ॥ वू० ॥६॥
विनय विवेक ने जाणे मरम,
 श्रावक होइ नइ न करे धरम ॥ वू० ॥७॥
पोषउ करइ ने दिवसे सूवै,
 ते धर्म फल पोषह नो खूवै ॥ वू० ॥८॥
क्रिया न करइ कहावइ साध,
 नाम रतन दाम न लहइ आध ॥ वू० ॥९॥
मनुष्य जन्म नवि हारो आल,
 तमे पाणी पहली बांधो पाल ॥वू०॥१०॥
जे करइ व्रत आखड़ी पच्चखाण,
 समयसुन्दर कहइ ते चतुर सुजाण ॥वू०॥११॥

——:o:——

रूड़ा प्राणिया दान समउ नहीं कोइ रे, तूँ हृदय विमासी नइ जोइ रे। आं.
सालिभद्र नी रिद्धि संगमइं लाधी, ते दान तणउ परमाण रे।
बलदेव दान थकी रथकारइ, पाम्यु अमर विमाण ॥ रू. ॥२॥
अलिय विघन सत्र दूर पुलायइ, दानइ दउलति होइ रे।
इह भवि सुजस कीरति वाधइ, पर भवि संबल सोइ ॥ रू. ॥३॥
दान तणा फल परतिख देखो, दानइ जगत वसि थायइ रे।
समयसुन्दर कहइ दान धरम ना, रामगिरी गुण गाइ ॥ रू. ॥४॥

शील गीतम्

राग—मेवाड़उ

सील व्रत पालउ परम सोहामणउ रे, सील वडउ संसार।
सील प्रमाणइ शिव सुख संपजइ रे, शील आमरण उदार। सी.।१।
कलावती कर नवपल्लव थया रे, सीता अगनि थयउ नीर।
सुदरसण सूली सिंहासण थयउ रे, द्रूपदी अखंडित चीर। सी.।२।
स्थूलिभद्र जंबू सील वखाणिमइ रे, नवि डोल्या मुनिराय।
समयसुन्दर भाव भगति धरी रे, प्रणमइ तेहना पाय। सी.।३।

तप गीतम्

राग—काफहरउ

तप तप्या काया हुई निरमल, तपतपंग इंद्री वसि थाइ।
तप तप्या परमार्थ सीझइ, तप तप्या प्रणमइ पाइ। त.।१।
ऋषभदेव वरसी तप कीधउ, छमासी कीधउ वर्धमान।
तप तपी मुगतिइ जे पहुता, ते मुनिवर नुं नहिं को मान। त.।२।

बेन्द्रिय प्रमुख जीव जे बहू, रूड़ी परि राखइ ते सहु ।
जीव एकेन्द्री जयणा सार, व्रत पहिला नउ एह विचार । २ ।
कन्यादिक बोलइ नहीं कूड, ते बोलइ तो जासइ बूड ।
सांचू बोलइ ते श्रीकार, ए बीजा व्रत नउ आचार । ३ ।
अणदीधी चोरी नी आथि, हासइ पणि झालइ नहीं हाथि ।
जूठउ बोलि न लीजइ जेह, तीजउ व्रत कहीजइ एह । ४ ।
पर स्त्री नउ कीजइ परिहार, नियत दिवस पोता नी नारि ।
रागदृष्टि राखीजइ साहि, चउथउ वरत धरउ चित मांहि । ५ ।
नव विध परिग्रह नउ परिमाण, यावज्जीव करइ हित जाणि ।
आकास सरीखी इच्छा गमउ, पालउ ए अणुव्रत पांचमउ । ६ ।
आप वसइ तिहां थी छ दिसइ, करइ कोस जाऊँ निज वसइ ।
मन मान्या राखइ मोकला, ए छट्ठा व्रत नी अरगला । ७ ।
भोग अनइ उपभोगउ बेउ, आपणइ अंगइ लागइ जेउ ।
तेह विगति जे लेवा तणी, सातमउ वरत कह्यउ जगधणी । ८ ।
आपणा अरथ विना उपदेस, पाप नउ दीजइ नहीं आदेश ।
पाड़ुया ध्यान तणउ परिहार, ए आठमा व्रत नउ अधिकार । ९ ।
आलावउ गुरु मुखि ऊचरइ, सावद्य जोग सहु परिहरइ ।
समता भावइ बि घड़ी सीम, नवमउ सामायक व्रत नीम ।१०।
सगला वरत तणउ संखेव, निरारंभ रहइ नितमेव ।
जां लगि अटकल कीजइ जेह, दसमउ देसावगासिक तेह ।११।

कहि मेखल सोहइ चमा रे हां० ब०,
गुपति वेणी दंडोपमा रे हां० । ८ । हे०।
नयण काजल दया देखणी रे हां० ब०,
किरिया हाथे मंहदी रेखणी रे हां० । ६ । हे०।
इरिजा समिति पाये वोछिया रे हां० ब०,
साधु वेयावच बांहे पुणछिया रे हां० ।१०। हे०।
देव गुरु गीत गलइ दुलड़ी रे हां० ब०,
शील सुरंगउ ओढइ चूनड़ी रे हां० ।११ हे०।
जीव जतन पाए नेउरी रे हां० ब०,
समकित चीर पहिरी नीसरी रे हां० ।१२। हे०।
नर नारी मोही रह्या रे हां० ब०,
समयसुन्दर गीत ए कह्या रे हां० ।१३। हे०।

—:०:—

फुटकर सवैया

दीक्षा ले सधी पालीजइ, सुख साता न अउला कांइ ।
कर्म खपावी केवल लहियइ, भणना गुणना रउला कांइ ॥
इवड़ी बात आज नहीं छइ, जीव थायइ तूं गउला कांइ ।
समयसुन्दर कहइ वांछा कीजइ, मन लाइ वेउ मउला कांइ ॥१॥
खाधूँ पीधूँ लीधूँ दीधूँ, वसुधा मांहि वधारउ वान ।
गुरु प्रसादे खाता सुखपाम्यौ, जिनचंद्रसूरि ते जुग परधान ॥

राति दिवस इण रहणी रहइ, उठतउ बइसतउ अरिहंत कहइ । ६ ।
व्यवहार सुद्ध करइ व्यापार, वलि ल्यइ श्रावक ना व्रत बार ।
वलि संभारइ चउदह नीम, मांगइ नहीं य सरइ तां सीम । ७ ।
निंदा पणि न करइ पारकी, ते करतउ थायइ नारकी ।
सीख भली तउ द्यइ सुविचार, पछइ न मानइ तउ परिहार । ८ ।
मिथ्यात तउ मानइ नहीं मूल, वलि विकथा न करइ वातूल ।
देव द्रव्य थी दूरि रहइ, नहि तरि नरक तणा दुख लहइ । ६ ।
साहमी नइ संतोषउ घणुं, सगपण ते जे साहमी तणुं ।
धरणउ देतां त रहइ धर्म, माणस नउ बोलइ नहीं मर्म ।१०।
अनंत अभक्ष तणी आखड़ी, जीवदया पालइ जगि वड़ी ।
वलि वहइ साते ही उपधान, सुद्ध करइ किरिया सावधान ।११।
गोती हरइ सरिखउ ग्रह वास, प्रमदा बंधण छांडइ पास ।
संजम कदि हुं लेइसि सार, इसउ मनोरथ करइ अपार ।१२।
करणी ए श्रावक जे करइ, ते भवसागर हेलां तरइ ।
वीतराग ना एह वचन्न, नर नइ नारि करइ ते धन्न ।१३।
परभाते पड़िकमणउ करइ, धर्म बुद्धि हीयइ में धरइ ।
गुणइ कुलउ ते सिव सुख लहइ, समयसुन्दर तउ साचउ कहइ ।१४।

——:०:——

पहिलुं काम नइ भोग भोगव्या, संभारइ नइ तेह रे।
छठी वाड़ ए छइ भली पणि, जतनइ पालिस्यइ जेह रे। नव.।७।
चूवते कवलिए घी सुं, जिमइ नहीं ब्रह्मचारि रे।
सातमी वाड़ि ए घणुं सखरी, पणि विगय घो विकार रे। नव.।८।
वत्तीस अट्ठावीस कवलिया, नारी नर नउ आहार रे।
आठमी वाड़ ए कही उत्तम, अधिको न ल्यइ निरधार रे। नव.।६।
सरीर नी शोभा करइ नहीं, न करइ उद्भट वेस रे।
नवमी वाड़ ए नित्य पालउ, सुयश देश प्रदेश रे। नव.।१०।
कल्पवृक्ष ए शील कहियइ, रोप्यउ श्री जिनराज रे।
वाड़ रखा भणी भाखी, सेवज्यो सुखकाज रे। नव.।११।
पानड़ा प्रत्यक्ष प्रभुता, फूटरा सुख फूल रे।
मुक्ति ना फल घणा मीठा, आपइ ए अमूल रे। नव.।१२।
संवत सत्तर मास आसू, नगर अहमदावाद रे।
समयसुन्दर वदइ वाणी, सकलचंद प्रसाद रे। नव.।१३।

बारह भावना गीतम्

ढाल—बुढ़िया गिरि सिखर सोहइ

भावना मन चार भावउ, तूटइ करम नी कोड़ि रे।
तप संजम तउ छइ भला, पण नहीं भावना नी जोड़ि रे। भा.। १।
पहलो भावना एम भावउ, अनित्य आयुर दाय रे।
तन धन यौवन कुटुम्ब सहु ते, पल मांहि खेरु थाय रे। भा.। २।

फूल अमूलिक संग थकी,
जिम तेल सुगंध कहायो जी ॥१६॥ क. ॥
ए नहिं साध सिथल दीसइ घणुं,
मूँड मिला पाखंडो जी ।
एहवी संका मनि आणइ नहीं,
साधु छइ लीजइ खंडो जी ॥१७॥ क. ॥
तरतम जोगइ साध इहां अछइ,
दुपसह सीम महंतो जी ।
महावीर नउ सासन वरतस्यइ,
एहवी बात कहंतो जी ॥१८॥ क. ॥
तुंगिया नगरी श्रावक सारिखा,
आणन्द नउ कामदेवो जी ।
संख सतक नइ सुदरसण सारिसा,
करणी करइ नित मेवो जी ॥१९॥ क. ॥
दूसम कालइ संजम दोहिलउ,
दोहिलउ श्रावक धर्मो जी ।
गुण भीजइ नइ अवगुण गाडियइ,
जिन धर्म नउ ए मर्मो जी ॥२०॥ क. ॥
तप जप किरिया नी जे खप करइ,
कुण श्रावक कुण साधो जी ।
समयसुन्दर कहइ आराधक तिके,
सफल जनम तिण लाधो जी ॥२१॥ क. ॥

धरम ना ए खरा आराधक, नाम जपउ नितमेव रे । भा.।१३।
भावना भावतइ चक्री भरतइ, पाम्यउ केवल ज्ञान रे ।
इम बीजा पणि जीव अनंता, धरता निर्मल ध्यान रे । भा.।१४।
भावना ए भली कीधी, मइ तउ म्हारइ निमित्त रे ।
समयसुन्दर कहइ सहु भणउ जिम, पायइ जीव पवित्त रे । भा.।१५।

देव गति प्राप्ति गीतम्

बारे भेद तप तपइ गति पामइ जी,
संजम सतर प्रकार देवगति पामइ जी ।
साते खेत्रे वित वावरइ गति पामइ जी,
पाळइ पंचाचार देव गति पामइ जी ॥१॥
गति पामइ जी पुण्य करइ जे जीव,
देव गति पामइ जी ॥ आंकणी ॥
प्रतिदिन पडिकमणु करइ गति पामइ जी,
सामायिक एकंत देव गति पामइ जी ।
आहार विहरावइ सूभतउ गति पामइ जी,
सांभलइ सूत्र सिद्धांत देवगति पामइ जी ॥२॥
भद्रक जीव गुणे भला गति पामइ जी,
जीवदया प्रति पाल देवगति पामइ जी ।
सद्गुरु नी सेवा करइ गति पामइ जी,
देव पूजइ त्रिहुं काल देवगति पामइ जी ॥३॥

पर प्रशंसा गीतम्

हूं बलिहारी जाऊँ तेहनी, जेहनउ अरिहंत नाम ।
जिण ए धरम प्रकाशियउ, कीयउ उत्तम काम ॥ हुं०॥१॥
हुँ बलिहारी जाऊँ तेहनी, जे श्री साधु निग्रंथ ।
आप तरइ अवर तारवइ, साधइ मुगति नउ पंथ ॥ हुं०॥२॥
हूँ बलिहारी जाऊँ तेहनी, जे श्री सूत्र सिद्धांत ।
जिण थी जिन ध्रम चालिस्यइ, दुप्पसह सूरि परजंत ॥ हुँ०॥३॥
हूं बलिहारी जाऊँ तेहनी, जे गुरु गुरणी गुणवंत ।
जिण मुझ ज्ञान लोचन दिया, ए उपगार महंत ॥ हुं०॥४॥
हुँ बलिहारी जाऊँ तेहनी, जे द्यइ गुपत कउ दान ।
पर उपगार करइ सदा, पणि न करइ अभिमान ॥ हुं०॥५॥
हुं बलिहारी जाऊँ तेहनी, निंदा न करइ जेह ।
देतां दान वारइ नहीं, हूँ गुण ल्यूँ तसु एह ॥ हुं०॥६॥
हुँ बलिहारी जाऊँ तेहनी, धरम करइ जे संसार ।
समयसुन्दर कहइ हूं कहुं, धन धन ते नर नार ॥ हुँ०॥७॥

साधु गुण गीतम्

तिण साधु के जाऊँ बलिहारे ।
अमम अकिंचन कुखी संबल, पंच महाव्रत जे धारे । ति०।१।
शुद्ध प्ररूपक नइ संवेगी, पालइ सदा पंचाचारे ।
चारित्र ऊपर खप करइ बहु, द्रव्यक्षेत्र काल अनुसारे । ति०।२।

सामायिक गीतम्

सामायिक मन शुद्धे करउ, निंदा विकथा मद परिहरउ ।
पढउ गुणउ वांचउ उपगरउ, जिम भवसागर लीला तरउ ॥१॥
दिवस प्रते कोई दियइ सुजाण, सोनारी कंडी लाख प्रमाण।
तेहनउ पुण्य हुवइ जेतलउ, सामायक लीधे तेतलउ ॥२॥
काम काज घर ना चिंतवइ, निंदा कपट करी खीजवइ ।
आर्त रौद्र ध्यान मन धरइ, ते सामायिक निष्फल करइ ॥३॥
आप परायउ सरखउ गिणइ, साचुं थोडुं गमतूं भणइ।
कंचन पत्थर समवड धरइ, ते सामायक सधूँ करइ ॥४॥
चंदवतंसक राजा जेम, सामायक व्रत पाल्युं तेम ।
कहइ श्री समयसुन्दर सीस, सामायिक व्रत पालउ निशदीस ॥५॥

गुरु वंदन गीतम्

हां मित्र म्हारा रे, चालउ उपासरइ जइयइ ।
संवेगी सदगुरु वांदी नइ, आपे कृतारथ थइयइ रे ॥१॥ हां.॥
श्री जिन वचन वखाण सुणीजइ, आपणि श्रावक थइयइ रे ।
समयसुन्दर कहइ भ्रम साचउ, हियइ मां सरदहियइ रे ॥२॥हां.॥

श्रावक बारह व्रत कुलकम्

श्रावक ना व्रत सुणजो बार, संसार मांहे एतउ सार ।
धुर थी समकित सूधउ धरइ, पणि मिथ्यात मणी परिहरइ। १ ।

कीरति कारण उपगरण मांड्यउ, लाख लोक घरि लूँटइ।
एक फूँदीकउ फड़कउ बांधइ, धरम तणी गांठ खोलइ रे। जी.।५।
रावल जातउ देवलि जातउ, ऊपरि मारज सहितउ।
दोय घड़ी नउ भूखउ रहितउ, सोइ दिन वहि जातउ रे। जी.।६।
घरि साम्ही धरमशाला हुँता, वीस विमासण थावइ।
दोय.................................... ।जी.।७।
पंच अंगुलिया वेल ज पहिरइ, ऊँचउ पहिरइ वागउ।
घर घरिणी नइ घाट घड़ावइ, निहचइ जासी नागउ। जी.।८।
साचौ अखर मस्तक मांडी, वदन कमल मुख दीपड़उ।
मारग चालइ सूधइ चालइ, पान फूल मूल कंदो। जी.।९।
ना उतरियइ उठ चलेगो, जुं सीचाणउ वंदउ।
समयसुंदर कहइ सुणउ रे भाई, धरम करइ तेहनइ वंदो। जी.।१०।

श्री संघ गुण गीतम्

राग—धन्याश्री

संघ गिरुयउ रे, श्री संघ गुणे करि गिरुयउ रे।
मात पिता सरिखउ हित वल्लभ[1], किमही करई नहीं विरुयउ रे।श्री.१।
चंद्र सूरज पथ नगर समुद्र चक्र, मेरु नी उपमा धरुयउ रे।
तीर्थंकर देवे पणि मान्यउ, दुखिया नउ दुख हरुयउ रे।श्री.२।
संघ मिल्यउ करइ[2] काम उलट पट, कनक पीतल रूप तरुयउ रे।
समयसुँदर कहइ श्रीसंघ सोहइ, वाड़ी मांहे जिम मरुयउ रे।श्री.३।

१ वच्छल। २ चिंतवेइ ते करइ काम।

चौपरवी पज्जूसण परव, वलि कल्याणक तिथि पण सर्व ।
सावद्य नउ ज कीजइ समउ, ए पोसउ व्रत इग्यारमउ ।१२।
पोसउ पारी नइ ग्रहसमइ, जतियां नइ दीधउ ते जिमइ ।
गुरु ऊपरि आणी धमराग, ए बारमउ व्रत अतिथि संभाग ।१३।
बोल्या श्रावक ना व्रत बार, मूल सूत्र सिद्धांत मझार ।
आणंद नी परि पालउ एह, जिम पामउ भवसागर छेह ।१४।
सोलह सइ नह्यासी समइ, बीकानेर रह्यां अनुक्रमइ ।
कीधउ बारां व्रत नउ कुलउ, समयसुन्दर कहइ नित सांभलउ ।१५।

श्रावक दिनकृत्य कुलकम्

श्रावक नी करणी सांभलउ, नित समकित पालउ निरमलउ ।
अरिहंत देव अनइ गुरु साध, भगवंत भाख्यउ धरम अबाध ।१।
जागइ पाछली रात जिवार, निचल चित्त गुणइ नउकार ।
काल वेला पडिक्कमणउ करइ, पाप करम दूरि परिहरइ ।२।
पछइ करइ गुरु मुख पचखाण, जयणा सु पडिलेहण जाण ।
देव जुहारइ देहरइ जाय, चैत्यवंदन करइ चित्त लगाय ।३।
वलि गुरु वांदी सुणइ वखाण, सूत्र ना पूछइ अरथ सुजाण ।
जतियां नइ विहरावी जिमइ, ते भव मांहि थोडउ भमइ ।४।
सांझइ वलि सामाइक लेइ, मन मान्यउ पचखाण करेइ ।
थापना ऊपर थिर मन ठवइ, सघा आवश्यक साचवइ ।५।
अणसण सागारी उचरइ, सूतउ चारे सरणा करइ ।

मनोरथ गीतम्

राग—आसावरी

धन धन ते दिन मुझ कदि होसइ, हुँ पालिस संजम सूधोजी।
पूरव ऋषि पंथे चालीसुं, गुरु वचने प्रति बूझो जी। ध.।१।
अनियत भिक्षा गोचरी, रन्न वन्न काउसग लेस्युं जी।
समभाव शत्रु नइ मित्र सुं, संवेग शुद्ध धरस्युं जी। ध.।२।
संसार नो संकट थकी, छूटिस जिण अवतार जी।
धन्य समयसुन्दर ते घड़ी, पामिस भव नउ पार जी। ध.।३।

मनोरथ गीतम्

ढाल—नगर सुदरसन अति भलउ

अरिहंत देहरइ आविनइ, प्रतिमा नइ हजूर।
चारित फेरी ऊचरूं, आणी आणंद पूर ॥१॥
ते दिन मुझ नइ कदि हुस्यइ, थाऊँ साधु निग्रंथ।
चारित फेरी ऊचरूँ*, पालुं साधु नउ पंथ ॥२॥ ते०॥
आपण पइ जाऊँ विहरवा, सूझतउ लूं आहार।
ऊँच नीच कुल गोचरी, लेऊँ नगर मझार ॥३॥ ते०॥
माया ममता परिहरी, करूं उग्र विहार।
उपगरण कांधे आपणइ, न लूं नफर कि वार ॥४॥ ते०॥
आपउ निंदूं आपणउ, न करूँ परताति।
चारित ऊपर खप करूँ, दिन नइ वलि राति ॥५॥ ते०॥

* परिगहउ सगलउ परिहरूँ।

शुद्ध श्रावक दुष्कर मिलन गीतम्

राग—आसाउरी-सिंधुड़उ.
ढाल—कइयइ मिलस्यइ मुनिवर एहवा-एहनी।
पाठांतर नव गीत जाणियउ.

कइयइ मिलस्यइ श्रावक एहवा,
सुणिस्यइ आवि वखाणो जी।
धरम गोष्ठी चरचा करिस्यां,
वीतराग वचन प्रमाणो जी ॥ १ ॥ क. ॥
धुरि थी सुधूं समकित जे धरइ,
मानइ नहिं य मिथ्यातो जी।
साहमी सुं धरणइ वइसइ नहीं,
नहि राग द्वेष नी वातो जी ॥ २ ॥ क. ॥
बारह व्रत सीखइ रूड़ी परि,
जां जीवइ तां सीमो जी।
सुधइ मन किरिया नी खप करइ,
साचवइ चउदह नीमो जी ॥ ३ ॥ क. ॥
काल वेलागइ जे पडिकमणउ करइ,
सूत्र अरथ पाठ सुधो जी।
बार अधिकार गमा त्रिण साचवइ,
गुरु वचने प्रतिबूधो जी ॥ ४ ॥ क. ॥
व्यवहार (१) सुध पणुं पालइ सदा,
प्रथम वडउ गुण एहो जी।

ज्ञान दर्शन चारित करी,
जे साधइ हे मुगति नउ पंथ ! अम्हा०।३।
चउथउ हे मंगल माहरउ,
सहेली हे गावउ श्री जिन धर्म । अम्हा०।
भगवंत केवलि भाखियउ,
भवियण ना हे भांजइ मन ना मर्म । अम्हा०।४।
च्यारे मंगल चिरजया,
सहेली हे करइ कोड़ कल्याण । अम्हा०।
समयसुन्दर कहइ सांभलउ,
पणि गायइ हे ते तो चतुर सुजाण । अम्हा०।५।

चार मंगल गीतम्

ढाल—महावीर जी देसणा ए, एहनी

श्री संघ नइ मंगल करउ ए, मंगल चार परम के ।
अरिहंत सिद्ध सुसाध जी ए, केवलि भाषित धरम के । श्री०।१।
पहिलुं मंगल मनि धरु ए, विहरंता अरिहंत के ।
भविक जीव प्रतिबोधता ए, केवल ज्ञान अनंत के । श्री०।२।
बीजउ मंगल मनि धरु ए, सिद्ध सकल सुविचार के ।
आठ करम नउ चय करी ए, पहुँता मुगति मझारि के । श्री०।३।
त्रीजुं मंगल मन धरु ए, सूधा साध निग्रंथ के ।
निर्मल ज्ञान क्रिया करी ए, साधइ मुगति नउ पंथ के । श्री०।४।
चउथुं मंगल मन धरु ए, श्री जिनधर्म उदार के ।
चिंतामणि सुरतरु समउ ए, समयसुन्दर सुखकार के । श्री०।५।

अंतरंग विचार गीतम्

राग—भैरव

कहउ किम तिण घरि हुयइ भलीवार,
को कहनी मानइ नहीं कार ॥१॥ क० ॥
पांच जन कुटुम्ब मिल्यउ परिवार,
जूजुइ मति जूजुयउ अधिकार ॥२॥ क० ॥
आप संपा हुयइ एक लगार,
तउ जीव पामइ सुख अपार ॥३॥ क० ॥
समयसुन्दर कहइ सु नर नारि,
अंतरंग छइ एह विचार ॥४॥ क० ॥

ऋषि महत्व गीतम्

बइठि तखत हुकम्म करइ, परभाति जाये पातसाह बड़ा;
मध्याह्न समइ हाथि ट्ठइ लीयइ, भीख मांगइ फकीर ज्युं बारि खड़ा।
न मर्द न जोरू लख्या नहीं जावत, मस्तक मुंडित कन्न फड़ा;
अचरिज भया मोहि देख नहीं एहु,कुण दुकाण देखउ रिखड़ा।१।अ.।
मध्याह्न समइ गज भिक्षा भमइ, लोक मृष्टान्न पान यइ आगइ खड़ा;
ध्रम आप तरइ तारइ अउरण कुं, नमइ लोक सलक्ख बड़ा लहुड़ा।
दुख पाप जायइ सुख देखत ही, एहु खूब दुकाण भला रिखड़ा।२।

—※—

सात लाख भू दुग तेउ वाउ, दस चउद वन ना भेदो जी।
षट विगल सुर तिरि नारकी, चार चार चउद नर वेदो जी। ल०।२।
मुझ वइर नहीं छई केह सुँ, सहु सुं जई मैत्री भावो जी।
गणि समयसुन्दर इम कहइ, पामिय पुण्य प्रभावो जी। ल०।३।

अंत समये जीव निर्जरा गीतम्

राग—आसाउरी

इण अवसर करि रे जीव सरणा,
　　ध्यान एक भगवंत का धरणा ॥ इ० ॥१॥
माया जाल जंजाल न परणा,
　　अरिहंत अरिहंत नाम समरणा ॥ इ० ॥२॥
वलि दोहिला नर भव अवतरणा,
　　समकित विन संसार मइ फिरणा ॥ इ० ॥३॥
माल मलूक महल मन हरणा,
　　साथइ नहीं आवइ इक तरणा ॥ इ० ॥४॥
साते खेत्रे वित वावरणा,
　　अथिर आथि एता उगरणा ॥ इ० ॥५॥
त्रूटी नाड़ि न को काज सरणा,
　　करि सकइ तउ करि पहिली सवरणा ॥ इ० ॥६॥
मरण तणा मत आणे डरणा,
　　ए जायइ देखि लघु वृद्ध तरुणा ॥ इ० ॥७॥

गच्छ वास छोड़इ नहीं गुणवंत, बकुश कुशील पंचम आरइ।
समयसुंदर कहइ सो गुरु साचउ,आप तरइ अवरां तारइ। ति०।३।

साधु गुण गीतम्

राग—आसावरी

धन्य साधु संजम धरइ सूधउ, कठिन दूषम इण काल रे।
जाव जीव छजीव निकायना, पीहर परम दयाल रे। ध.।१।
साधु सहै बावीस परिसह, आहार ल्यइ दोष टालि रे।
ध्यान एक निरंजन ध्याइ, वइरागे मन वालि रे। ध.।२।
सुद्ध प्ररूपक नइ संवेगी, जिन आज्ञा प्रतिपाल रे।
समयसुंदर कहइ म्हारी वंदना, तेहनइ त्रिकाल रे। ध.।३।

हित शिक्षा गीतम्

राग—सोरठ

पुण्य न मूँकइ विनय न चूकउ, रीस न करिज्यो कोई।
देव गुरु नउ विनय करीजइ, काने सुणउ भलाई रे।१।
जिवड़ा घड़ी दोइ मन राखउ ॥ आंकणी ॥
बूढा वे किम बाल कहीजइ, विरत नहीं जाणउ कोई।
एक रुपइयउ खोटउ बांध्यउ, दौड़चउ करैय दगाई रे। जी.।२।
मांकर ज्युं जीव हालइ डोलइ, थांभ्यउ किहीं नी जावइ।
नावा ऊपरि आपज बइठउ, आपण आपणइ छदइ रे। जी.।३।
लेखे बइठउ लोभे पईठउ, चार पहुर निश जागइ।
दोय घड़ी सामाइक वेला, चोखउ चित्त न राखइ रे। जी.।४।

काज किरियावर पहिलउ पछई,
जति निमित्त करइ प्रावृत्त (६) अछइ। ए०। ६।
अजुयालउ करइ गउख उघाड़ि,
घई अनापाउर दोष (७) दिखाड़ि। ए०। ७।
वेची थी आणी घई वस्त,
क्रीत दोष (८) कह्यउ अप्रशस्त। ए०। ८।
उछी नुं आणी घई जेह,
पामिच दोष (९) कहीजइ तेह। ए०। ९।
वसत्र पालटी नइ घइ कोइ,
तउ परिवर्त्तित (१०) दूषण होइ। ए०।१०।
घर थी उपासरइ आणी देइ,
ते अभ्याहृत (११) दोष कहेइ। ए०।११।
दाचउ ठामउ थामी अन्न,
आपइ ते दूषण उदभिन्न (१२)। ए०।१२।
ऊंचाथी नीचुं उतारि,
घइ मालाहृत (१३) दोष विचारि। ए०।१३।
केहना हाथ थी भूटी दिज्ञ,
असमादिक (१४) ते दोष अछिज्ञ। ए०।१४।
घणा सामि जीमइ एकट्ठ,
एक आपइ तउ ते अनिसिट्ठ (१५)। ए०।१५।
आध्रण माहि अधिक अनकूर,
साध निमित्त ते अध्यवपूर (१६)। ए०।१६।

सिद्धान्त श्रद्धा सज्झाय

आज आधार छइ सूत्र नउ, आरइ पांचमइ एह ।
सुधरम सामी सइं मुखइ, कह्यउ जंबू नइ तेह ॥ आ०॥१॥
तीर्थंकर हिवणा नहीं, नहीं केवली कोई ।
अतिशयवंत इहां नहीं, संशय भांजइ सोई ॥ आ०॥२॥
भरत मइं जीव भारी कर्मा, मत खांचे गमार ।
पणि सूत्र में कह्यउ ते खरउ, ए छइ मोटी कार ॥ आ०॥३॥
आज सिद्धान्त न हुँत तउ, किम लोक करंत ।
पणि वीतराग ना वचन थी, भ्रम बुद्धि धरंत ॥ आ०॥४॥
इकवीस सहस वरस इहां, जिन धर्म जयवंत ।
सूत्र तणइ बलि चालस्यां, भाख्यौ भगवंत ॥ आ०॥५॥
श्री महावीर प्ररूपियउ, धरम नउ मरम एह ।
समयसुन्दर कहइ सद्दहु, कह्यउ तीर्थंकर तेह ॥ आ०॥६॥

अध्यातम सज्झाय

राग—आसाउरी

इण योगी ने आसन दृढ कीना, पवन बंधि परब्रह्म सुं लीना । इ.।१।
नासा अग्र नयन दोऊ दीना, भीतरि हंस ढुंढत मन भीना । इ.।२।
अपनि पवन दसमें द्वार आण्या, प्राणायाम का भेद पिछाण्या । इ.।३।
वार अंगुल जल पवनेपइसार्या, पूरक ध्यान पवन सवार्या। इ.।४।

वसीकरण (३०) नइ चूरण (३१) देइ,
अन पाणी मन वंछित लेइ ।ए०।२७।
गरभ पाडइ ते तउ मूल कर्म्म (३२),
अन पाणी ल्यइ महा अधर्म्म ।ए०।२८।
ए सोलह उपजावइ जती,
संजम नी खप नहीं छइ रती ।
पणि ते आगलि थास्यइ दुखी,
टालइ दोष ते थायइ सुखी ।ए०।२६।
आधाकरमी संकित (३३) ग्रहइ,
जल प्रमुख अचित (३४) लहई ।ए०।३०।
सचित ऊपरि मूक्युं अन्न पाण,
विहरइ ते निक्खित्त (३५) अजाण ।ए०।३१।
फासु ऊपरि धरचउ सचित्त,
ते पिण्ड पिहित (३६) दूषण नित्त ।ए०।३२।
एक ठाम थी बीजइ ठामि,
घाल्यउ ल्यइ साहरिय (३७) सुनाम ।ए०।३३।
बालवृद्ध अयोग्य नउ दत्त,
दायक दूषण (३८) कह्यउ अजुत्त ।ए०।३४।
सचित अचित बे भेला कीया,
मिश्र दोष (३९) लागइ ते लीयां ।ए०।३५।
फासु पूरुं प्रणम्युं नहीं,
अपरिणत (४०) दूषण जाणउ सही ।ए०।३६।

लालच लोभ करूँ नहीं, छोड़ूँ जीभ नउ स्वाद।
सूत्र सिद्धान्त भणूँ गणूँ, न करूँ परमाद ॥६॥ तै०॥
दूषम कालइ दोहिलउ, अधिकउ पंथ एह।
वर्ष मास दिन जो पलई† तो पण मलउ तेह ॥७॥ तै०॥
एह मनोरथ माहरउ, फलीजो करतार।
समयसुन्दर कहइ जिम करूं, हूं सफलउ अवतार ॥८॥ तै०॥

चार मंगल गीतम्

अम्हारइ हे आज वधामणा,
सहेली हे गावउ मंगल च्यार। अम्हा०।
पहिलउ हे मंगल माहरइ,
सहेली हे गावउ अरिहंत देव। अम्हा०।
तित्थंकर त्रिभुवन तिलो,
कर जोड़ी हे करि सुरनर सेव। अम्हा०।१।
बीजउ हे मंगल माहरइ,
सहेली हे गावउ सिद्ध सुहाग। अम्हा०।
सिद्ध शिला ऊपर रह्या,
जोयण नइ हे चउवीसमइं भाग। अम्हा०।२।
तीजउ हे मंगल माहरइ,
सहेली हे गावउ साधु निग्रंथ। अम्हा०।

† मास पाख दिन जउ पलउ।

उद्गम दोष ए सोलह कह्या,
अपादान पणि सोलह लह्या ।
दस एषणा ना कह्या केवली,
पांच दूषण मांडलि ना वली ।४६।
सगला मिलि सइंतालीस दोस
जिण सासण माहें परिघोष ।
साधनइ जोइयइ सूध आहार,
श्रावक नइ साचउ व्यवहार ।४७।
वत्तच्चार सुरा गो मंस,
ए दृष्टांत कह्या अप्रशंस ।
भद्रबाहु स्वामी नी किद्ध,
पिण्ड निर्युक्ति मांहे प्रसिद्ध ।४८।
रूप वर्ण बल पुष्टि नइ काज,
आहार निषेध्यउ जु श्री जिनराजि ।
ज्ञान दर्शन चारित्र निमित्त,
देह नइ अउठंभ द्यइ समचित्त ।४६।
तर्या तरइ नइ तरिस्यइ तेह,
सूझता नी खप करिस्यइ जेह ।
तेहनइ वंदना करुं त्रिकाल,
जे श्री जिन आज्ञा प्रतिपाल ।५०।
संवत सोल एकाणुं समइ,
सझाय कीधी सहु नइ गमइ ।

चार शरणा गीतम्

राग—आसाउरी सिंधुड़उ

मुझ नइ चार शरणा हो जो, अरिहंत सिद्ध सुसाधो जी।
केवली धर्म प्रकासियउ, रतन अमोलिक लाधो जी। मु०।१।
चिहुँ गति तणा दुख छेदिवा, समरथ सरणा एहो जी।
पूर्वे मुनिवर जे हुआ, तेण किया सरणा तेहो जी। मु०।२।
संसार मांहे जीवसुं, तां सीम सरणा चारो जी।
गणि समयसुँदर इम कहइ, कल्याण मंगलकारो जी। मु०।३।

अठारह पाप स्थानक परिहार गीतम्

राग—आसाउरी

पाप अठारह जीव परिहरउ, अरिहंत सिद्ध सुसाखो जी।
आलोयां पाप छूटियइ, भगवंत इणि परि भाखो जी। पा०।१।
आश्रव कपाय दुबंधना, वलि कलह अभ्याख्यानो जी।
रतिअरति पैसुन निंदा, माया मोस मिथ्या ज्ञानो जी। पा०।२।
मन वच काये किया सहु[1], मिच्छामि दुक्कडं तेहो जी।
गणि समयसुन्दर इम कहइ, जिन धरम मरमो एहो जी। पा०।३।

चौरासी लक्ष जीव योनि क्षामणा गीतम्

राग—आसाउरी

लख चउरासी जीव खमावइं, मन धरि परम विवेको जी।
मिच्छामि दुक्कडं दीजियइ, त्रिकरण सुद्ध प्रत्येको जी। ल०।१।

---

१ इण भव परभव जे किया।

हरियाली रे चतुर नर हरियाली रे, सुंदर नर जी हो कहिजो हियइ
विमासि ।
साचा पांच कारण कह्या जी हो, कहइ तेहनइ साबासि । ह.।२।
चांचा सदा चरतउ रहइ जी हो, वमन करइ आहार ।
राति दिवस भमतउ रहइ जी हो, न चढइ नर घर बार । ह.।३।
भूखउ बोलइ अति घणु जी हो, बोल्यू नवि समझाय ।
नारी संघातइ नेहलउ जी हो, विनु अपराध बंधाय । ह.।४।
ते पणि पंखी थापड़उ जी हो, प्रमदा पाड्यउ पास ।
समयसुंदर कहइ ते भणी जी हो, नारी नउ म करिस्यउ विश्वास[२] । ह.।५।

हीयाली गीतम्

राग—मिश्र

एक नारी वन मांहि उपनी, आवी नयर मझारि ।
पातलड़ी रूपइ अति रूयड़ी, चतुर लोक लेइ धारी रे ।१।
कहिज्यो अरथ हियाली केरउ, वहिलउ हियइ विमासी ।
विनतवंत गुणवंत तुम्हारी, नहि तउ थास्यइ हांसी रे । आं.।क.।
काज पियारइ देह कमावइ, नयण विना अखियाली ।
सामल वरण सदा मुख सोहइ, जल पीवइ तृप टाली रे । क. ।२।
मुखि नवि बोलइ मस्तकि डोलइ, वचन शुभाशुभ जास ।
साजण दूजण पासि रमंती, दीठी लील विलास रे । क. ।३।
ए हीयाली हियइ विमासी, कहज्यो चतुर सुजाण ।
समयसुन्दर कहइ जेम तुम्हारु, कीजइ घणु वखाण । क. ।४।

२ बेसास

अणसण अपणइ मुखि ऊचरणा,
सूरवीर साहस आदरणा ॥ इ० ॥८॥
पाप अठार दूर परिहरणा,
सहु सु मिच्छामि दुकड करणा ॥ इ० ॥९॥
समयसुन्दर कहइ पंडित मरणा,
संसार समुद्र थी पारिं उतरणा ॥ इ०॥१०॥

आहार ४७ दूषण सज्झाय

ढाल—चउपई नी

साध निमित्त छजीव निकाय,
हणतां आधा करमी (१) थाय।
एहवउ ल्यइ नहीं जे आहार
ते कहियइ सुधा अणगार । १ ।
लाडू चूरण अगनि तपावि,
आपइ उद्देसक (२) प्रस्तावि । ए० । २ ।
आधा करमी नउ कण मिलइ,
ते अनपूति दूषण (३) अटकलइ । ए० । ३ ।
साध असाध निमित्त रंधाय,
एकठउ अन्न ते मिश्र (४) कहाय । ए० । ४ ।
साध आवा विहरविसि एह,
राखी मूँकइ थापना (५) तेह । ए० । ५ ।

(१) तृणाष्टकम्

अच्छंदकविवादे त्वं भज्यमानं तु नाऽभनक् ।
वीरोक्तिं कृतवान् सत्यां तद्धन्यं जन्म ते तृण ॥१॥
साधुचक्षुर्यथोद्भृत—पापशुद्धिकृते तृणम् ।
पुनः पुनर्ज्वलन्त्याशु कृशानौ जनसाक्षिकम् ॥२॥
राज्यर्द्धिं त्यक्तवान् सर्वां निःस्पृहः करकण्डुराट् ।
परं त्वां तृण नामो च श्लाघ्यं भुवि ते महत् ॥३॥
अहो ते तृण माहात्म्यं विवादे पतिते त्वयि ।
सत्याय मस्तके न्यस्ते तत्क्षणं भज्यते कलिः ॥४॥
कृते पंचामृते भोज्ये ताम्बूले भक्षिते तृण ।
वक्त्रशुद्धिकरन्तु त्वं वरांगस्थिति तन्महत् ॥५॥
अहो ते तृण सौभाग्यं शर्कराभः समं ततः ।
अन्तरालिंग्यसे स्त्रीभिर्यथा सौभाग्यवान् नरः ॥६॥
तृणशक्तिरहोदर्भ—तृणझाटेन मन्त्रतः ।
दुष्टस्फोटकभूतादि दोषा यांति यतः क्षयं ॥७॥
छाया सर्वोपरिस्थस्त्वं दंतस्थं युधि जीवनम् ।
गो-जग्ध-मसि-दुग्धं तदुपकारि महत् तृण ॥८॥
विद्वद्गोष्टिविनोदेषु तृणाष्टकमचीकरत् ।
श्रीविक्रमपुरे रंगाद्गणिः समयसुन्दरः ॥९॥

इति श्री समयसुन्दरोपाध्याय कृतं तृणाष्टकम् ।

ए सोलह कह्या उद्गम दोष,
गृहस्थ लगाडइ रागि के रोस।
पण सूझतउ विहरावइ जोइ,
तेहनई लाभ अनंता होइ। ए०।१७।
बाल हुलरावइ राखइ वली
धात्री (१७) दोष कह्यउ केवली। ए०।१८।
संदेसा कहइ नाणइ सर्म्म,
मिवा ल्यइ ते दूती (१८) कर्म्म। ए०।१९।
जो तिप निमित्त प्रजुंजइ नित्त,
ल्यइ आहार ते दोष निमित्त (१९)। ए०।२०।
जाति प्रकासी ल्यइ आहार,
आजीव (२०) दूषण ते निरधार। ए०।२१।
दाता नउ प्रीतउ जे कोइ,
तसु प्रसंसवणी मग (२१) होइ। ए०।२२।
वैद्य पणुं करइ पिण्ड निमित्त,
दोष चिकित्सा (२२) जाणउ चित्त। ए०।२३।
क्रोध (२३) मान (२४) माया (२५) नइ लोभ (२६),
करी पिण्ड ल्यइ न रहइ सोभ। ए०।२४।
अन्नदाता नउ पहिली पछइ,
संस्तव (२७) करतां दूषण अछइ। ए०।२५।
विद्या (२८) मंत्र (२९) प्रजुंजी लेइ,
केवल वेउ दोष कहेइ। ए०।२६।

(३) उद्गच्छत्सूर्यबिम्बाष्टकम्

चतुर्यामेषु शीतार्चायामिनी कामिनी किमु ।
तापाय तपनोद्गच्छद्बिम्बमङ्गेष्टिकां व्यधात् ॥१॥
दिनश्रीधिक्कृता यांती रुष्टा रात्रि निशाचरी ।
वन्हिज्वालावलीमुञ्चतीव भानुप्रकाशतः ॥२॥
प्राचीदिग्प्रमदा चक्रे विशाले भालपट्टके ।
बालारुणरवेर्बिम्बं चारुसिन्दूरचन्द्रकम् ॥३॥
पश्यन्त्या वदनं प्राची पद्मिन्यां दर्पणेऽरुणः ।
प्रवालाधररागेण रविबिम्बमिव प्रगे ॥४॥
प्रतीच्याऽभिमुखं क्रीडोच्छालनाय नवाऽरुणः ।
प्राचीकन्याकरस्थः किं रक्तद्युतरत्नकंदुकः ॥५॥
जगद्ग्रसित्वा पापिष्ठः क्व गतोद्धांत राक्षसः ।
तं द्रष्टुमिति बालार्को दीपिका दिन भूभुजः ॥६॥
प्राचीदिग्नर्त्तकीव्योमवंशाग्रमधिरोहति ।
कृतरक्ताम्बराशीर्ष न्यस्तार्कस्वर्णकुम्भभृत् ॥७॥
त्वत्कीर्त्ति कान्तया दध्रे बालार्कस्तप्तगोलकः ।
दिव्याय स्वेच्छया भ्रान्त्या कुसतीत्वहते नृप ॥८॥
रवेः प्रकाशं बिंबं चारक्तं दृष्ट्वा प्रगे रयात् ।
कौतुकादष्टकं चक्रे गणिसमयसुन्दरः ॥९॥

इति श्री समयसुन्दरोपाध्याय कृतं उद्गच्छत्सूर्यबिम्बाष्टकम् ॥३॥

वसादि कै करि खरडयुं अन्न,
विहरइ लित्त दोष (४१) घरमउ मन्न। ए०।३७।
विहरतां थी कण भूमि नखाय,
ते छर्दित दूषण (४२) कहिवाय। ए०।३८।
दस एपणा ना दूषण कह्या,
साघ तीए सघा सरदह्या।
संकादिक विहुँ नइ उपजइ,
दायक ग्राहक नइ ते ‥जइ।३९।
खीर खंड घृत संजोजना (४३),
धन करि नइ जीमइ जे एक मना।४०।
संजम नउ निरवाहण थाय,
तेह थी अधिक प्रमाण (४४) कहाय।४१।
सखर आहार वखाणइ घणुं,
जिम तउ दूषण अंगार (४५) तणुं।४२।
कव खोड़इ भुंडउ आहार,
धूम दोष (४६) तणउ अधिकार।४३।
वेयण प्रमुख छ कारण विना,
लेतां दोष अकारण (४७) तणा।४४।
मांडलि ना ए दूषण पंच,
तेह तणउ बोल्यउ पर संच।
स्वाद तणउ जे करिस्यइ त्याग,
जेहनइ मनि साचउ वयराग।४५।

परस्परं बुधोल्लापे शतचन्द्रनभस्तलम् ।
समस्यामिति सम्पूर्णां चक्रे समयसुन्दरः ॥१०॥

इति समस्याष्टकम् ।

—:o:—

ग्रस्यते राहुणा नित्यमेक एकहि मत्प्रियः ।
सृष्टमासात्तदा श्रेष्ठं शतचन्द्रनभस्तलम् ॥१४॥
हीनाधिककलाभेदाद्विविधो दृश्यते विधुः ।
वर्त्तेत सुभगं तत्के शतचंद्रनभस्तलम् ॥१५॥
न पश्येत्पुण्यहीनो हि निधानं पुरतः स्थितम् ।
किमन्धः शतसूर्यं वा शतचंद्रनभस्तलम् ॥१६॥

[स्वयं लिखित अन्य प्रति में अधिक]

× × × × ×

नेमिस्नात्रांबुकल्लोलैः चणं मेरोस्तदाऽभवत् ।
रामयोषितसिंहैण शशभृङ्गे पयोनिधिः ॥३॥

× × × × ×

पृथ्वीकुक्षि भवा वयं त्रिलगृहास्त्वं चासिपृथ्वीपतिः ।
तस्माद्विज्ञपयाम इत्यनुदिनं संत्राशिनः शौण्डिकाः ॥
निर्नाथा इव नाथमन्तु रहिता मार्यामहे भिल्लकैः ।
तस्माद्राउलभीमभूपकृपयाऽस्मान् रक्ष रक्ष प्रभो ! ॥१॥

श्री खंभायत नगर मझारि,
खारुयावाड़इ वसति अपार ।५१।
दीवाली दिन आणंद पूर,
श्री खरतर गच्छ पुण्य पड्डर ।
मेघ विजय शिष्य नइ आग्रहइ,
समयसुन्दर ए सझाय कहइ ।५२।

इति श्री आहार ४७ दोष सज्झाय ।

—:o:—

हीयाली गीतम्

कहिज्यो पंडित एह हियाली, तुम्हे छउ चतुर विचारी ।
नारी एक त्रण अक्षर नांमे, दीठी नयर मझारी रे । क.।१।
मुख अनेक पण जीभ नहीं रे, नर नारी सु राचइ ।
चरण नहीं ते हाथे चालइ, नाटक पाखे नाचइ रे । क.।२।
अन्न खायइ पानी नहीं पीवइ, तृप्ति न राति दिहाड़इ ।
पर उपगार करइ पणि परतिख[1], अवगुण कोडि दिखाड़इ । क.।३।
अवधि आठ दिवस नी आपी, हियइ विमासी जोज्यो ।
समयसुंदर कहइ समझी लेज्यो, पणि ते सारिखा मत होज्यो ।क.।४।

हीयाली गीतम्

पंखि एक वनि ऊपनउ, आव्यउ नयर मझार ।
आंखड़ली अणियालड़ी जी हो, देखइ नहिय लगार ।१।

---

१ पार्पाण

त्वद्यशःपुञ्जशुभ्रश्रियाः युद्धया पश्चिमांभोविनीरे निमज्जनमपि।
सम्प्रमाष्टुं निजं नीलिमानं श्रगे पूर्णिमेन्दुः प्रभोधात्‌ तव तुलम्।३।
मेरु धैर्य्यात्‌ क्षमातः क्षितिरहमपि गाम्भीर्य्यतस्ते. यं ।
सूर्यो जिग्ये यथेह त्वमपि सुत तथा तेन वक्त्रश्रिया०ः (?) ॥
अकाहंर्भयेहि (?) दुःखादुदधिरिति विधुं गर्जितैः प्रीणयत्सुत्‌ ।
अचे यल्लोकवाक्यं विदितमिदमिमा पंचभिर्नैव दुःखाम्‌ ॥४॥

× × × × ×

आदित्यो[१] निजतेजसा सुवचसा चन्द्रोरि[२]दृष्ट्या कुजो[३] ।
ज्ञानाधिक्यवशाद्‌ बुधो[४] गुरुरपि स्पष्टं सुतत्त्वोक्तितः[५] ॥
शुक्रो[६] विक्रमतः शनि[७] प्रकुपितो राहुश्च के हः ।
त्र्प्यात्मा जिन........सर्व ग्रहात्मा चासि तत्‌ (?) ॥१॥
लक्ष्मी वाचि पदं विभक्तिरहितं किं तद्विशिष्टार्थकृत्‌ ।
जेता रंजनमाह्वय प्रमुदिता नारायणं का गताः ॥
कः कंसं यमसद्मनि प्रहितवान्‌ किं वष्टि शिष्टं नरः ।
के संत्यत्र तपोनिधौ गणधराः सौभाग्यभाग्याधिकाः ॥२॥

श्रीविक्रमसा मंबस्त वयशः ।
मज्याभिधादि पद मन्मथ पक्षिजातसा।
हर्ष सुण्डपदशंकररिप्रयोगाः ॥
द्वन्द्वं विधाय वद कोविद कीदृशास्ते ।
के सन्ति सम्प्रति पया जनभापमुख्याः ॥

इदं पद्यद्वयं पराभ्यर्थना कृत्वा दत्तमस्ति ।

——:o:——

सांझी गीतम्

ढाल—गुरु जी रे वधामणइं—एहनी

सांझि रे गाई सांझी रे, म्हारी सांझी हुया रंगरोल रे।
संघ सहु को हरखियउ, आरु दीधा नवल तंबोल रे। सां.।१।
गुण गाया अरिहंत ना, वलि साध तणा अधिकार रे।
गुणतां भणतां गावतां, सांभलतां हरख अपार रे। सां.।२।
घरि घरि रंग वधामणा, कोइ घरि घरि मंगलाचार रे।
घरि घरि आणंद अति घणा, श्री जिन शासन जयकार रे। सां.।३।
सांझी गीत सोहामणा, ए मइं गाया एकवीस*-* रे।
समयसुंदर कहइ संघ नइ, नित पूरवउ मनह जगीस रे। सां.।४।

राती जागी गीतम्

राग—धन्याश्री

गायउ गायउ री राती जगउ रंगइ गायउ।
मन गमती मिलि सहिय समाणी, मन गमतउ गवराव्यउ री। रा.१।
देव अनइ गुरु ना गुण गाया, दोहग दूरि गमायउ।
सफल जनम समकित थयउ निरमल, भवियण के मन भायउ री। रा.२।
चतुर सुजाण सुण्यउ इक चित्ते, भलउ भलउ भेद सुणायउ।
पुण्यवंत श्रावक परिघल नित, तुरत तंबोल दिवायउ री। रा.३।
गीत पंचास अनोपम गाया, आणंद अंगि न मायउ।
चतुर्विध संघ थयउ अति हर्षित, समयसुन्दर गुण पायउ री। रा.४।

* पंचवीसो रे * जगदीशो रे।

आपणा वाल्हा आंत्र[२२], पड्या जे आपणां पेटा;
नाण्यो नेह लिगार, वापइ पिण वेच्या बेटा।
लाधउ जतीए लाग, मूँडिनइं मांहइ लीधा;
हुंती जितरी[२३] हुंस, तीए तितराहिज कीधा।
कूकीया[२४] घणु श्रावक किता, तदि दीक्षा नाम देखाडीया;
'समयसुन्दर' कहइ सत्यासीया, तइं कुटुम्ब विछोहा पाडीया।१०।

खातां खूटा गरथ, पछइ घर वेच्या परगट;
वलि ग्रहणा दीया वेचि, किमही रहइ घरनी कुलवट।
पणि पसर्यो दुरभिक्ष, कहउ केहीपर कीजइ;
आपइ न को उधारि, सत्त नही सगइ सुणीजइ[१]।
लाजते[२] भीख लीधो नहीं, मुंहडइं[३] पग ग्रही मूआ;
'समयसुन्दर' कहइ सत्यासीया, ते हवाल[४] ताहरा हूआ।११।

तइं हींदू किया तुरक, विप्र तो मूल विटाल्या;
वणिके गइ विगत्ति, रांक करि लंगरि राल्या।
दरसणी दुखिया कीध, जती जोगी सन्यासी;
जटाधारि जलधारि, प्रगट जे पवन अभ्यासी।
अन्न मात्रइ ए [५]अपामेत, आगा सुंस भूखालूए[६];
'समयसुन्दर' कहइ सत्यासीया, ते तुझ पाप त्रिकालूए।१२।

---

२२ अत्र, अत्रो. २३ जितांनि. २४ कूक्या.

१ सणोजइ, सणीजे. २ लाजैते. ३ मुंहइ. ४ तेह चाल
५ अणापामते. ६ भूखालूए.

(२) रजोष्टकम्

देवगुर्वोरिव शेषां शीर्षच्चां स्थापयन्त्यमी ।
हस्तेन हस्तिनो हर्षादहो ते धूलि मान्यता ॥१॥
स्वस्ति श्रीमति लेखेपि यत्नतः प्रेषितेपि च ।
परं सिद्धिस्तवाधीना शक्तिस्ते रज इदृशी ॥२॥
जगदाधारभूतेन जलदेन पुरस्कृताम् ।
वातेनोढां निरीक्ष्य त्वां धनाशा जायते नृणां ॥३॥
सर्वसहा प्रभृतित्वात्मर्घ मानं पदैरधः ।
न कुप्यसि कदापि त्वं रजस्ते क्षांतिरुत्तमा ॥४॥
यस्या नाम पदाधस्त्थां त्वां लात्वा रविवासरे ।
मस्तके क्षिप्यते मंत्रात् सा स्त्री वश्या रजो नृणाम् ॥५॥
गालिदाने न रुड् लज्जे यत्र स्वेच्छा कृतं सुखम् ।
रजः पर्व यतो जज्ञे तन्मान्यं कस्य नो रजः ॥६॥
रथ्यासु रममाणानां शिशुनां पांसुशालिनाम् ।
धूले त्वं स महर्घ्यापि भृङ्गारादतिरिच्यसे ॥७॥
अप्राप्याप्यनभीष्टापि सुलभापि पदे पदे ।
अहो ते धूलि माहात्म्यं[1] लक्ष्मीरित्यभिधीयसे ॥८॥
श्रीमद्विक्रम सद्रङ्गे विद्वद्गोष्टिषु नोदितः ।
रजोष्टकमिदं चक्रे शीघ्रं समयसुन्दरः ॥९॥

इति श्री समयसुन्दरोपाध्याय कृतं रजोष्टकम् ।

---

१ सौभाग्यं

पाटण अम्हदावाद, खरो[2] सूरत खंभाइत;
लाइक लखपति लोक, वणिक पिण हुंता विलाइत ।
जगड़ भीमो[3] शाह, उव्यो को नाम उगारइ;
सवलउ सत्रूकार, मांडि महियलि साधारइ ।
केतेक दिवस दीधउ कीए, पिण थिर थोभ न को थयउ;
'समयसुन्दर' कहइ सत्यासीया, तेतइं तूं व्यापी गयउ ।१६।

मूआ घणा मनुष्य, रांक गलीए रडवडिया;
सोजो वल्यउ सरीर, पछइं पाज मांहे पडिया ।
कालइ[4] कवण वलाइं, कुण उपाडइ किहां काठी;
तांणी नाख्या तेह, मांडि[5] थइ सगली माठी ।
दुरगंधि दशोदिशि ऊछली, मडा पड्या दीसइ मूआ;
'समयसुन्दर' कहइ सत्यासीया, किण घरि न पड्या कुकुआ ।१७।

जैनाचार्य जो स्वर्गवासी हुए—

श्रीललितप्रभु सूरि, पाटण पूनमिया सुगुरु[6];
प्रभु लहुडीपोसाल, पूज्य वे पींपलिया-खरतर ।
गुजराती गुरु वेउ, बडउ जसवंत नइ केसव;
शालिवाडीयउ सूरि, कहूं कितो पूरो हिसव ।
सिरदार वणोरा संहर्या, गीतारथ गिणती नहीं;
'समयसुन्दर' कहइ सत्यासीया, तुं हतियारउ सालो सही ।१८।

२ पूरो. ३ शाहनी जोडी. ४ बालक. ५ मांड. ६ सद्गुरु ।

(४) समस्याऽष्टकम्

प्रभुस्तात्रकृते देवा नीयमानान् नभे घटान् ।
रौप्यान् दृष्ट्वा नराः प्रोचुः शतचन्द्रनभस्तलम् ॥ १ ॥
रामया रममाणेन कामोद्दीपनमिच्छता ।
प्रोक्तं तत्राह यद्येवं शतचन्द्रनभस्तलम् ॥ २ ॥
सर्वज्ञेन समादिष्टं सार्द्धद्वीपद्वयेध्रुवम् ।
द्वात्रिंशताधिकं भाति[१] शतचन्द्रनभस्तलम् ॥ ३ ॥
हस्त्यारोहशिरस्त्राणश्रेणिमालोक्य संगरे ।
पतितो विह्वलोऽवादीत् शतचन्द्र नभस्तलम् ॥ ४ ॥
दीपान् दीपालिकापर्वे कृतानुच्चैस्तरं निशि ।
वीक्ष्य विस्मयतो ज्ञानं शतचन्द्रनभस्तलम् ॥ ५ ॥
भुक्तधत्तूरपूरत्वाद्भ्रान्तदृष्टिरितस्ततः ।
अपश्यत्कोऽपि सर्वत्र शतचन्द्रनभस्तलम् ॥ ६ ॥
दर्पणश्रेणिमालोक्य सौधाग्रे लिहतोरणे ।
स्माह सुप्तोत्थितः कोपि शतचन्द्रनभस्तलम् ॥ ७ ॥
नभः प्रकाशयत्याति यथैकेन खरांशुना ।
तथा सखि कदापि स्यात् शतचन्द्रनभस्तलम् ॥ ८ ॥
यत्र तत्र जलस्थाने दृश्यते जलचन्द्रमाः ।
तत्कि सखि संजातं शतचन्द्रनभस्तलम् ॥ ९ ॥

---

१ इदं द्वात्रिंशदायुक्त

सागर जिके साहमी हूया[३], सहु तेहनइ[४] संतोपिया;
'समयसुन्दर' कहइ सत्यासीया, तें सागरनैं न संतापिया ।२१।
कुंवरजी करमसी रतन, वच्छराज ऊदो वछियाइत;
जीवउ सुखीयो जाण, वलि वीरजी विख्याइत[५] ।
मनजी केसव मेल, साह सूरजी सवायउ;
पंचपरवी कीयउ पुन्न, मास च्यार पांच चलायउ ।
जिनसागर† समवाय जस, हाथीशाह‡ उद्यम हूयउ;
'समयसुन्दर' कहइ सत्यासीया, तां सीम साहमी न को हूअउ ।२२।
नागोरी नामजाद, शाहलट्टक्को[६] सुणीयइ;
वस्यउ ते अहमदावाद, भलउ प्रतापसी भणीयइ ।
वडउ पुत्र वर्द्धमान, भलउ तिलोकसी भाई;
कीजइ पुन्य करतूत, इण परि एह वडाई ।
सांभले वात सत्यासीया, तुं म करे केहनइं आकुला;
प्रतापसीसाहरी प्रौलमइं, दीजइं रोटी बाकुला ।२३।
पाटणमाहि प्रसिद्ध, मोटउ सांमलदास मारू;
जयतारणियउ जाण, विरा तिण वावर्यो वारू ।
तपा जतीनइ तेडि, अन्न बे टंक वहिराव्यउ;
सो- सवासो साधु सको, शाता सुख पायउ ।
दोहिला दुखीया दूबला, सत्रूकार दीयउ सदा;
'समयसुन्दर' कहइ सत्यासीया, ताहरो वल न चाल्यउ तदा ।२४।

३ किया. ४ जिहनी ५ वि छयाइत ६ सादुलट्टककउ.

† सं० १६८६ में इनसे गच्छभेद हुआ । ‡ इनके आग्रह से कविवर ने १८ नात्रक सभाय रची है ।

नास्माभिर्विद्यते कदापि किमपि चैत्रादिविध्वंशनं ।
नो चौर्य्यं न च सार्थलुण्ठनमपि त्याज्यं पुनर्नेतरत् ॥
नीरक्षीरविवेचके नरपते रामावतारे त्वयि ।
श्रीधामोटनमारणं किमिति नः पूत्कर्म हे शौण्डिकाः ॥२॥
प्रजायां नीतितो धर्मो धर्माद्राज्यसमुन्नति ।
ततस्त्वं वसुधाधीश ! नीतिधर्मं प्रपालय ॥३॥

× × × × ×

रघुवंशोद्भवत्वेन रामचन्द्र इवाद्भुतः ।
श्रीशाहे न्यायधर्माभ्यां राज्ये पालयसि प्रभो ! ॥३॥

× × × × ×

जय जयेति वदन्ति तवाशिष, शुकमयूरपिकप्रमुखाः प्रभो !
जगति जीवदयाप्रतिपालनात् यदिह जंतुगणाः सुखिनः कृताः ॥४॥
श्रीशाहे सूर्यदेवस्य पाणिनार्थं प्रयच्छतः ।
तव हस्तार्कयोगोयं सर्वसिद्धिकरोऽभवत् ॥६॥
सौम्यदृष्टिस्त्वं स्वामिन् क्र राकान्तेपि चेद्भवेत् ।
तथापि सर्वकार्यस्य सिद्धिः साधयति स्फुटम् ॥७॥

× × × × ×

चतुर्मुखोपि नो ब्रह्मा जटाभृन्न च शङ्करः ।
श्रीधरो न च दाशार्हः स श्रीआदिजिनोऽवतात् ॥१॥
चतुरशीतिगणोपि यदीश्वरः, स्मरहरोपि च यत्पुरुषोत्तमः ।
विलसदेकमुखोपि भवान्तकृत्, तदतिचित्रमिदं प्रथमप्रभो ॥२॥

श्रावक कहइ सुगाल, सहु धान थया सुंहगा;
दरसणी कहै दुकाल, अम्हे जाणां छां मुँहगा।
आदरसुं को अन्न, अजो आपे नही अम्हनैं;
श्रावक पिता समान, तिण कहीछइ तुम्हनें।
दया मया दिल धर्म धरी, श्रावक सार सहु करइ;
'समयसुंदर' कहै अठ्यासीया, धीरज तउ सहू को धरइ।३४।

अठ्यासी कहै एम, म करो तुम्ह चिंता मुनिवर;
करौ क्रिया अनुष्ठान, तप जप संजम तत्पर।
वांचो सूत्र-सिद्धांत, भलउ धरम मारग भाखउ;
महावीरनो वेश, रीति रूडीपरि राखउ।
वखाण खाण थास्यै वली, श्रावक सार सहु करैं;
'समयसुंदर' कहै सत्यासीया, धीरज तउ सहु को धरैं।३५।

दुरभिक्ष महादुकाल, वरस सत्यासीयउ कूरो;
दीठा घणा दुकाल, पणि एहवउ को न हूवो।
सत्यासीया-सरूप, दीठउ मइ तेहवो दाख्यउ;
गया मूआ गइंद, रह्यौ भगवंत तौ राख्यउ।
रागद्वेष नही को माहरइ, मइ ख्याल-विनोदइ ए कीयउ;
'समयसुंदर' कहइ सहु सुखी, कवि कल्लोल आणंद करउ।३६।

——:o:——

सत्यासीया दुष्काल वर्णन छत्तीसी

गरूई[1] श्रीगुजरातदेश, सगलां मांहे दाखो;
धरम करम परधान[2], लोक मुख मीठुं भाखो।
सुखी रहइ सरीर, साग तो सखरा मावइ;
ऊँचा करइ आवास, लाख कोडि द्रव्य लगावइ।
गेहणी देह गहणे भरइ, हुँसी[3] लोकतणो हीयउ;
'समयसुन्दर' कहइ, सत्यासीयउ इसड(ह[4]) पड्यउ अभागीयउ।१।
जोयउ टीपणउ जोष, साठि संवच्छरि साथइ;
गुराचार शनिचार, हुंता ते लीधा हाथइ।
कपूरचक्र पिण काढी, जांण ज्योतिषीए जोयउ;
आराधक थया अंध, खिलमति फल सगलउ खोयउ।
निपट किणइ जाण्यउ नहीं, खरो शास्त्र खोटो कीयउ;
'समयसुन्दर' कहइ सत्यासीयउ, पड्यो अजांण्यउ[5] पापीयउ।२।
महियलि न हुआ मेह, हुवा तिहां थोडा हूआ;
खड्या पड्या रह्या खेत्र, कलंबी लोतरिया कूआ।
कदाचि निपनो केथ, कोली ते लीधुं कापी;
घटा करी घनघोर, पिण वूठो नहीं पापी।
खलक लोक सहु खलभल्या, जीवइं किम जलबाहिरा;
'समयसुन्दर' कहइ सत्यासीया, ते क्रतूत सहु[6] ताहरा।३।

पाठ भेद:–१ रूडी, २ सुविवेक, ३ होंसि, ४ असइ, ५ अचिंत्यो, ६ सहि

जे पंचामृत जीमता रे, खाता द्राख अखोड ।
कांटी खायै कोरणी रे, के खेजडना छोड । ६ ।
जतीयांनै देई जीमता रे, ऊभा रहता आडि ।
ते तउ भाव तिहां रह्या रे, जीमता जडै किमाडि । १० ।

दांन न द्यै के दीपता रे, सहु बैठा सत छांडि ।
भीख न द्यइ को भावसु रे, द्यै तो दुख दिखाडि । ११ ।

देव न पूजै देहरै रे, पडिकमइ नही पोसाल ।
सिथल थया श्रावक सहू रे, जती पड्या जंजाल । १२ ।

रडवडता गलीए मूआ रे, मडा पड्या ठांम ठांम ।
गलिमांहे थइ गंदगी रे, द्यै कुण नांखण दांम । १३ ।

संवत सोल सत्यासीयौ रे, ते दीठै ए दीठ ।
हिव परमेसर एहनइ रे, अलगौ करे अदीठ । १४ ।

हाहाकार सबल हूऔ रे, दीसै न को दातार ।
तिण वेला उठ्यौ तिहां रे, करवा काल उद्धार । १५ ।

अवसर देखी दीजियै रे, कीजै पर उपगार ।
लखमीनौ लाहौ लीजीयै रे, 'समयसुंदर' कहै सार । १६ ।

विशेषशतक ग्रन्थलेखन प्रशस्ति में इस दुष्काल
का स्मरणोल्लेखः—

मुनिवसुषोडशवर्षे (१६८७) गूर्जरदेशे च महति दुःकाले ।
मृतकैरस्थिग्रामे जाते श्रीपत्तने नगरे ॥ १ ॥

दुखी थया दरसणी, भूख[7] आधी[8] न खमावइ;
श्रावक न करी सार, तिण[9] धीरज किम[10] थायइ ।
चेले कीधी चाल, पूज्य परिग्रह परहउ छांडउ;
पुस्तक[11] पाना वेचि, जिम तिम अम्हनइं जीवाडउ ।
वस्त्र[12] पात्र वेची करी, केतोक तो काल काढीयउ;
'समयसुन्दर' कहइ सत्यासीया, तुनइ निपट[13] निरघाटीयउ ।१३।

घर तेडी घणीवार, भगवानना पात्रा भरता ।
भागा ते सहू भाव, निपट थया वहिरण निरता ।
जिमता लडइ किमाड, कहै सवार छै केई;
घइ फेरा दस पांच, जती निठ[14] जायइं लेई ।
आपइ दुखइ अणछूटतां, ते दूषण सहु तुझ तणउ;
'समयसुन्दर' कहइ सत्यासीया, विहरण नहीं विगुचणउ[15] ।१४।

पडिकमणउ पोसाल, करण को श्रावक नावइ;
देहरा सगला दीठ, गीत गंधर्व न गावइ ।
शिष्य भणइ नहीं शास्त्र, मुख भूखइ मचकोडइ;
गुरुवंदण गइ रीति, छती प्रीत माणस छोडइ ।
वखाण[1] खाण माठा पड्या गच्छ चौरासी एही गति;
'समयसुन्दर' कहइ सत्यासीया, कांइ दीधी तइं ए कुमति ।१५।

---

७ क्षुधा. ८ आंधी. ९ थिर. १० नहीं. ११ चयत करउ विहार, मांड काइ बीजी मांडो. १२ पुस्तक पाना. १३ थीप. १४ नेठि. १५. विगोवणउ । १ पद्धइ माण.

जगति सृष्टि करता उपगारी, संहरता पणि नाणइ खेद;
समयसुन्दर कहइ हुँ तो मानुं, करम एक करता अ वेद। २।
पंखी ऊडि भमइ आकासइ, मीन कउ मारग कुंण ग्रहइं;
तारा मंडल कुण गिणइ कहउ, माथइ करि कुण मेरु वहइ।
बेड़ी विण बाहां करि दरियउ, कुंण तरइ भावी कुण कहइ;
समयसुन्दर कहइ भेद भली परि, परमेसर कउ कुण लहइ। ३।
वरण अढार छत्रीस पवन छइ, सहुनइं गुरु निगुरउ नहि कोइ;
पणि आरंभ करइ अगन्यांनी, जीव दया विण धरम न होइ।
गुरु तउ ते जे सुद्ध परूपइं पग मुंकइ जइणा सुं जोइ;
आप तरइं अवरां नइ तारइं, समयसुन्दर कहइ सद्गुरु सोइ। ४।
कष्ट करइ पंचागनि साधइ, जाग होम करइ बहु कर्म;
जाणइं अम्हे मुगति पणि जास्यां, ए तउ सगलउ खोटउ भर्म।
आगन्या सहित दया पालो जइ, सगलां धर्मनउ एहिज मर्म;
समयसुंदर कहइ दुरगति पडतां थइ आडी बांहि श्रीजिन धर्म। ५।
गछ चउरासी दीसइ गिरुया पिण ते (हुना) भिन्न २ आचार;
कहउ केहा गछनी कीजइ विधि, नाणी विण न हुयइं निरधार।
आंप आंपणा गछनी करउ किरिया, पणि म करो परतात लगार;
समयसुंदर कहइ हुँ इम जाणुं, इण बात मांहइं गणउ सकार। ६।
चंद्रगुपत राजा लह्या सुहणा, तिहां चंद्र दीठउ चालणी समांय;
ते तउ वात साची दीसइ छइ भद्रबाहू सामी नउ न्यांन।
जिण सासण मइ गच्छ गछांतर, हुया घणा वली हुस्यइ तोफान;
समयसुंदर कहै आंप आंपणउ, गच्छ काठउ ग्रहउ जाणि निधान। ७।

कवि की आप बीती कथा—

पछि आव्यउ मो पासि, तु आवतउ मइं दीठउ;
दुरबल कीधी देह, म करि कह्यउ भोजन मीठउ।
दूध दही घृतघोल, निपट जिमिवा न दीधा;
शरीर गमाडि शक्ति, केई लंघण पणि कीधा।
धर्मध्यान अधिका धर्या, गुरु दत्त गुणणउ पिण गुण्यउ;
'समयसुंदर' कहइ सत्यासीया, तुं नें हाक मारिनइ मइं हण्यउ।१९।

पाटण थकी पांगुरी, इहां अहमदाबाद आयउ;
देखी माहरी देह, माच्छ गलबंध[१] गमायउ।
गरढउ गीतारत्थ, गच्छ चउरासी चावउ;
श्रावक न करी सार, पिण रहिस्यइ पछतावउ।
श्रावक दोष न को सही, मत जांणउ वांक माहरउ।
'समयसुन्दर' कहइ सत्यासीया, ते दूषण[२] सहु ताहरउ।२०।

सहायकर्त्ता-दानी श्रावक—

साबास शांतिदास, परघल अपणा गुरु पोष्या;
पात्रा भरि भरपूर, साधनइ घणा संतोष्या।
उसा पाणि आंणि, वस्त्र पिण भला वहराव्या;
सखर कीया लघु शिष्य, गच्छ पिण गरुयडि पाया।

१ बंध. २ कसूर.

सूत्र मांहि एक दसवैकालिक जती मांहि दुपसह सूरि जांणि ।
समयसुंदर कहइ कुण जांणइ रे कहउ गछ रहिस्यइ परमांणि ।१३।
गछनायक हुयइ अति गिरुया भारी खमानइ अति गंभीर;
चालइं आप भलइं आचारइं तउ को गिणइ हटक नइं हीर ।
फाडि त्रोड़ि नइ गछ गमाड़इ दिन नइ राति रहइं दिलगीर;
समयसुंदर कहइ ते गछनायक, तरकस मांहे थोथा तीर ।१४।
आसा तना सूतरनी उपजइ कथक अप्रीति ते कही नी जात[२];
परमारथ एक आंपन प्रीछइं बीजानइं पणि करइं व्याघात ।
रली रोहिणी विकथा करती, वारंता करनी परतात;
समयसुंदर कहइ सहुको सुणिज्यो वखांण मांहि मत करिज्यो वात १५
कोलो करावउ मुंड मुंडावउ, जटा धरउ को नगन रहउ;
को तप्प तपउ पंचागनि साधउ कासी करवत कष्ट सहउ ।
को भिक्षा मांगउ भस्म लगावउ मौन रहउ भावइं[३] कृष्ण कहउ;
समयसुंदर कहइ मन[४] सुद्धि पाखइ, मुगति सुख किमही न लहउ।१६।
आव्यां ऊठि ऊभी थइयइं दीजइ आदर मांन घणां;
भली परिं भोजन पाणि दीजइं, कीजइं पाय कमल नमणां ।
कुटंब कारिमां लह्यां अनंता, स्वारथ नां सहु प्रेम पणां,
समयसुंदर कहइ सही करि जाणउ सगपण ते जे साहमी तणां।१७।
काम काज विणजइं व्यापारइं, सारउ दिन सगलइ हांढ़िवउ;
धरम नियम किहांथी थायइ थायइ[५] पणि जउ मन आंढिवउं ।

१ साध एक. २ वात. ३ को. ४ भाव विनातउ. ५ ऊनइ थायइ ।

श्रीमाली श्रावक, गच्छ कडूआमती गिरुयउ;
पूजा करइ प्रधान, चढावइ[1] चांपउ नैं मरूयउ।
दानवुद्धि दातार, पच्चउ ते दुरभिख पेखी;
खोल्या धानभखार, अन्न द्यइ अवसर देखी।
दरसणी सहूनइ अन्न द्यइ, थिरादरे थोभी लीया;
'समयसुन्दर' कहइ सत्यासीया, तिहां तु नइ धक्का दीयां।२५।

सत्यासीयै संहार, कीयउ नरनारी केरउ;
आणदाण वरताविं, ढुंढ ढंढेरउ फेरयउ।
महावीरथी मांडी, पड्या त्रिण वेला पापी;
बारवरपी दुःकाल, लोक लोघा संतापी।
पणि एकलइ एक तइं ते कीयउ, स्युं भ.र वरसी बापडा;
'समयसुन्दर' कहइ सत्यासीया, थारे[2] लोके न लद्या लाकडा।२६।

अठ्यासीया आगमन—

इसइ प्रस्तावइं इंद्र, सभा सुधर्मा बइठउ;
दीठउ अवधि दुःकाल, पाप भरतमइं पइठउ।
गिरूइ श्रीगुजराति, निपट दुखी करि नांखी;
सीदाणा सहु[3] साध, सही हुँ न सकुं सांखी;
तुरत अठ्यासीयउ तेडिनइ, ए हुकम इंद्रइ कीयउ;
'समयसुन्दर' कहइ अठ्यासीया, तुं मार काढि सत्यासीयउ।२७।

---

१ चाढइ. २ थारै. ३ घणु ।

वागी घड़ी ते पाछी नावइं करउ धरम तप जप नइं नेम;
समयसुंदर कहइ सहु को सुणिज्यो, घड़ियालउ बोलइ छइ एम ।२३।
धरम करतूत करिवु ते करिज्यो, ताणी तूँणी नइं ततकाल;
मन परिणाम अनित्य आउखु, पापी जीव पड़इ जंजाल ।
मत विलंब करउ ध्रम करता आवी पड़इ अंतराय विचाल;
समयसुंदर कहइ सहु को समझउ, घड़ी मांहि वाजइ घड़ीयाल ।२४।
केहनइं पुत्र अस्त्री नहि केहनइं केहनइं अन्न तरणी नहि चूणि;
केहनइं रोग सोग घर केहनइं, केहनइं गरथनी ताणां तूंणि ।
के विधवा के विरहिणी दीसइ, माथइं भार वहइं के गूँणि;
समयसुंदर कहइं संसार मांहइं, कहउ नइ आज सुखी छइ कूँणी ।२५।
बेटा बेटी वइयरि भाई बहिनी तणउ नहि क्लेस लगार;
विणज व्यापार मसाकति का, नहि उपाड़िवउ माथइ नहि भार ।
सखर उपासरै बइसी रहिवउं, नमणि करइं मोटा नर नारि;
समयसुंदर कहइ जउ जाणइ तउ आज सुखी काइंक अणगार ।२६।
सूरिज कोढ़ी चंद कलंकी मंगल तणी उदंगल रुक्ख;
बुध तउ जड़ विरोध बापसुं नास्तिक गुरु तिहां केहउ सुक्ख ।
सनि पांगलउ पितानइं वयरी राहु देह पखइ धरइं मुक्ख;
समयसुंदर कहइ सुक्र कहइ हुं काणउ पणि पंचसु नहिं दुक्ख ।२७।
महावीर नइं काने खीला, गोवालिए ठोक्या कहिवाय;
द्वारिका दाह पांणी सिर आंण्यउ, चंडाल नइं घरि हरिचंद राय ।
लखमण राम पांडव वनवासि, रावण बध लंका लूँटाय;
समयसुंदर कहइ कहउ ते कहुं पणि, करम तणी गति कही न जाय ।१८।

[२] 'पंचकश्रेष्ठि चौपाई' के दूसरे खंड की छठी ढाल में अकाल का इस प्रकार वर्णन किया है :—

तिण देसइ हिव एकदा रे, पापी पड्यउ दुकाल ।
बार बरस सीम बापड़ारे, कीधो लोक कराल । १ ।
चली मत पडिज्यो एहवो दुकाल,
जिणै विछोह्या मावाप बाल, जिणै भागा सबल भूपाल ।
खातां अन्न खूटी गया रे, कीजइ कवण प्रकार ।
भूख लगी नही केहनों रे, पेट करइ पोकार । २ ।
सगपण तउ गिणै को नही रे, मित्राइ गई भूल ।
को कदाचि मांगै कदी रे, तौ माथे पिडइ त्रिशूल । ३ ।
मांन मूकि वडे मांणसे रे, मांगवा मांडी भीख ।
तउ पिण को आपइ नहीं रे, दुखीए लीधी दीख । ४ ।
केई बईयर मूंकी गया रे, के मूँकी गया बाल ।
के मा-बाप मूँकी गया रे, कुण पडइ जंजाल । ५ ।
परदेसे गया पाधरा रे, सांभल्यउ जेथ सुकाल ।
मांणस संबल विण मूआ रे, मारग मांहि विचाल । ६ ।
बापे बेटा वेचिया रे, माटी वेची बयर ।
बयरे मांटी मूँकीया रे, अन्न न द्यइ ए बयर । ७ ।
गुखे बैठी गोरड़ी रे, वींजणे ढोलति वाय ।
पेटनै काजै पदमणी रे, जाचै घर घर जाय । ८ ।

चाड़ चुगल नइं राजा रूठउ, जीभ छेदि द्यइ डांम निलाड़ि।
झूठानउ वेसास को न करइ बाहिर काढ़िनइ जड़इ कंवाड़;
समयसुंदर कहइ झूठा माणस नइ सहु को कहइ ए महा लबाड़।३४।

ए संसार असार जांणिनइ छोड़ी दीधउ सगलउ रज्ज;
पंच महाव्रत पालइ सूधा सील वरत पणि धरइ सलज्ज।
तप जप किरिया करइ उतकृष्टी एहवा पिण केइक छइ अज्ज;
समयसुन्दर कहै मइं तउ न पलइ, पणि हुँ छु' तेहना पगनी रज्ज।३५।

खाधू' पीधू' लीधू' दीधू' वसुधा मांहि वधारचउ वांन।
गुरु प्रसादि साता सुख पायउ जिण चंद सूरि ते जुगपरधान।
सकलचंद गुरुसांनिधि कीधी सत्यासियइ तन थयउ ज्यांन;
समयसुन्दर कहइ हिवहुं[1] करिस्यु' उत्कृष्टी करणी ध्रम ध्यान।३६।

संवत सोलनेउया वरषें श्री खंभाइत नयर मझारि;
कीया सवाया ख्याल विनोदइं मुख मंडण श्रवणे सुखकारि।
साचउ एक धरम भगवंत नउ दुरगति पड़तां द्यइ आधार;
समयसुन्दर कहइ जैन धरम जिहां तिहां हइज्यो माह अवतार।३७।

[संशोधिता प्रतिरियं पत्र ४ स्वयं कविलिखिता:—

इति प्रस्ताव सवायाछत्रीसी समाप्ता। सं० १६४८ वर्षे भाद्रपद सुदि २ दिने। श्रीअहमदावादपार्श्ववर्त्ति श्रीअहम्मदपुरे श्रीपासचंदोपाश्रये चतुर्मास्यां स्थितैः श्रीसमयसुन्दरोपाध्यायैः स्वपरार्थं लिखिता। शुभं भवतु लेखकपाठकयोः।]

---

१ हिव तुं रे मन करि संतोष नइ धरि धर्मध्यान।

भिक्षुभयात् कपाटे जटिते व्यवहारिभिर्भृशं बहुभिः।
पुरुषैर्माने मुक्ते सीदति सति साधुवर्गेऽपि। २।
जाते च पंचरजतैर्धान्यमणे सकलवस्तुनि महर्घ्ये।
परदेशगते लोके मुक्त्वा पितृमातृबन्धुजनान्। ३।
हाहाकारे जाते मारिकृतानेकलोकसंहारे।
केनाप्यदृष्टपूर्वे निशि कोलिकलुंठिते नगरे। ४।
तस्मिन् समयेऽस्माभिः केनापि च हेतुना च तिष्ठद्भिः।
श्रीसमयसुंदरोपाध्यायैर्लिखिता च प्रतिरेषा। ५।
मुनिमेघविजयशिष्यो गुरुभक्तो नित्यपार्श्ववर्ती च।
तस्मै पाठनपूर्वं दत्ता प्रतिरेषा पठतु मुदा। ६।
प्रस्तावोचितमेतत्तु श्लोकषट्कं मया कृतम्।
वाचनीयं विनोदेन गुणग्राहिविदांवरैः। ७।

—:o:—

प्रस्ताव सवैया छत्तीसी

परमेसर परमेसर सहु कहइ, पणि परमेसर दीठउ किणइ;
वेहनइ आघउ तेड़ि पूछि जइ, परमेसर दीठउ हुयइ जिणइ।
अलख अगोचर लख्यउ न जायइ, निराकार निरंजन पणइ;
'समयसुन्दर' कहइ जे जोगीसर, परमेसर दीठउ छइ तिणइं। १।
के कहइं कृष्ण के कहइ ईसर, के कहइं ब्रह्मा किया जिण वेद;
के कहइं अल्ला सहज कहइ के, परमेसर जू दे बहू भेद।

कुण चंडाल कहीजइ बिहुँ मइं, निरति नहीं कहइ देव जी।
ऋषि चंडाल कहीजइ विढतो, टालइ वेढ नी टेव जी। आ.।११।
सातमी नरक गयउ ते ब्रह्मदत्त, काढी ब्राह्मण आंख जी।
क्रोध तणा फल कडुआ जाणी, राग द्वेष द्यो नांखजी। आ.।१२।
खंधक ऋषि नी खाल उतारी, सह्यउ परिसह जेण जी।
गरभावास ना दुख थी छूट्यउ, सबल क्षमा गुण तेण जी। आ.।१३।
क्रोध करी खंधक आचारज, हुओ अगनिकुमार जी।
दंडक नृप नउ देश प्रजाल्यउ, भमसे भवह मझार जी। आ.।१४।
चंडरुद्र आचारज चलतां, मस्तक दीध प्रहार जी।
क्षमा करंता केवल पाम्यउ, नव दीक्षित अणगार जी। आ.।१५।
पांच वार ऋषि नइं संताप्यउ, आणी मन मां द्वेष जी।
पंच भव सीम दह्यो नंदनादिक, क्रोध तणा फल देख जी। आ.।१६।
सागरचंद नउ सीस प्रजाली, निशि नभसेन नरिंद जी।
समतां भाव धरी सुरलोके, पहुँतो परमानंद जी। आ.।१७।
चंदणा गुरुणीए घणी निभ्रन्छी, धिक धिक तुझ आचार जी।
मृगावती केवल सिरी पामी, एह क्षमा अधिकार जी। आ.।१८।
सांब प्रद्युम्न कुमार संताप्यउ, कृष्ण द्विपायन साह जी।
क्रोध करी तप नउ फल हार्‌यउ, कीधउ द्वारिका दाह जी। आ.।१९।
भरत नइ मारण मूठि उपाड़ी, बाहूबलि बलवंत जी।
उपशम रस मन मांहे आणी, संयम ले मतिमंत जी। आ.।२०।
काउसग्ग मइं चढियउ अति कोपे, प्रसन्नचंद्र रिषिराय जी।
सातमी नरक तणां दल मेल्यां, कडुआ तेणे कषाय जी। आ.।२१।

कुण जाणइ साचउ कुण भूठउ, पूछ्यउ नही परमेसर पास;
सूत्र सिद्धांत अक्षर तउ एहीज, पणि जू जूया थया वचन विलास।
रागद्वेष किण अरथ मरोड्या किणही कि अरथ न श्रीछ्या तास;
समयसुंदर कहइ ए परमारथ सहु को जोज्यो हीयइ विमास। ८।
जे धम करिस्यइ ते निस्तरिस्यइ पणि पारकी को मकरउ वात,
आंपणी करणी पारि उतरणी, पुण्य पाप आवस्यइ संघात।
साची भूठी मन सरदहणा दीपावइ सहु को दिन रात,
समयसुंदर कहइ वीतराग वचनइं मिलइ तिका जइ साची वात। ९।
संका कंखा सांसउ मकरउ कियउ धरम सहु धूडि मिलइं;
सउकि मात साचउ दीयउ ओखघ पणि सांसइं सुत देह गलइ।
अमृत जांणि पांणी पणि पीधइ सर्प तणउ विषवेगि टलइ;
समयसुंदर कहइ आस्ता आंणी धर्म कर्म कीजइ ते फलइ। १०।
तपां कहइं इरियावही पहिली खरतर कहइ पडि कमियइं पछइ,
मुंहपति आंचलिया गुरु कडुआ, लुंका कहइ जिन प्रतिमा न छइ।
स्त्रीनइं मुगति न मांनइ ढुँवड़ एहवा बोल घणा ही अछइ;
पणि समयसुंदर कहै सांसउ भांजइ, जउ को केवली पासइ गछइ।११।
खरतर तपा आंचलिया पासचंद आगमीया पुंनमिया सार;
कडुयामती दिगंबर लुँका चउरासी गछ अनेक प्रकार।
आंप आंपणउ गछ[1] थापइ सगला खवउं ठोकि आंणी अहंकार;
समयसुँदर कहइ कहा न करउ पणि, भगवंत माखइ ते श्रीकार। १२।
मोटउ गछ अम्हारउ देखउ माणस वइसइं घणां वखांणि;
गर्व म करि रे मूढ़ गमारा समय समय अणंती हांणि।

---

१ मत

वलि सुभूम अति सुख भोगवतो,
छः खंड लील विलास जी ।
सातमी नरक मांहे ले नांख्यउ,
कर्म नउ किसउ विसास जी ।क०। ६ ।
ब्रह्मदत्त नइ आंधउ कीधो,
दीठा दुख अपार जी ।
कुरु मती कुरु मती खड्यो पुकारे,
सातमी नरक मझार जी ।क०।१०।
इंण वखाण्यो रूप अनोपम,
ते विणस्यो तत्काल जी ।
सात से वरस सही बहु वेदन,
सनत्कुमार कराल जी ।क०।११।
कृष्णे कोण अवस्था पामी,
दीठउ द्वारिका दाह जी ।
माता पिता पण काढी न सक्या,
आप रह्यउ वन मांह जी ।क०।१२।
राणउ रावण सबल कहातो,
नवग्रह कीधउ दास जी ।
लक्ष्मण लंका गढ लूंटायो,
दस सिर छेद्या तास जी ।क०।१३।

जे ध्रम करिस्यइं ते निरतरस्यइं, केहनउ पाड़ कांई चाढ़िवउ;
समयसुंदर कहइ जे[1] ध्रम दीजइ ते वलतइ मांहि दांडउ[2] काढ़िवउ।१८
व्याव्या विना खेत्र किम लुणियइ, खाधां पाखइ भूख न जाइ;
आंप मुयां विण सरग न जइयइं, वाते पापड़ किमही न थाइ।
साधु साधवी श्रावक[3] श्राविका एतउ खेत्र सुपात्र कहाइ;
समयसुंदर कहइ तउ सुख लहियइ, जउ घर सारउ दत्त दिवाइ।१९।
मस्तिकि मुगट छत्र नइं चामर वइंसउ सिंहासन नइं रोकि;
आंण दांण वरतावइ अपणी आइ नमइ नर नारी लोक।
राजरिद्धि रमणी घरि परिघल जे जोयइ ते सगला थोक;
पणि समयसुंदर कहइ जउ ध्रम न करइ,तउ ते पाम्युं सगलुं फोक।२०।
सीस फूल स मथउ नकफूली, कानइ कुन्डल हीयइ हार;
भालइं तिलक भली कटि मेखल, बांहे चूड़ि पुणछिया सार।
दिव्य रूप देखंती अपछर, पगि नेउर झांझर झणकार;
पणि समयसुंदर कहइ जउ ध्रम न करइ,तउ भार भूत सगलौ सिणगार
मांस म खायउ मदिरा म पीयउ म करउ भांगि नइ घुंटाघुंटि;
चोरी म करउ वाट म पाड़उ, म करो झांझी झूठा झूंठि।
पर स्त्री मत भोगवउ पापी, म करउ लोक नइ लूंटा लूंटि;
समयसुंदर कहइ नरगइ पड़िस्यइ वधारा जिम कूटा कूटि।२२।
मनुष्य तणुं आउखुं जायइं धरम विना बैइसी रहा केम;
जम नीसाण चडत रा वरजइं पहुर पहुर तिहां किहां थी खेम।

१ ज धरम। २ डांड। ३ साहमी साहमिणी।

वाचना पांचसे साधु ने देतो,
योगी वटे थयो गृद्ध जी।
अनारज देशे सुमंगल उपनो,
जोगी वड़े सम्बुद्ध जी।क.।१६।

कृष्ण पिता नइ गुरु नेमीश्वर,
द्वारिका ऋद्धि समृद्ध जी।
ढंढण ऋषि तिहां आहार न पामइ,
पूर्व कर्म प्रसिद्ध जी।क.।२०।

आर्द्र कुमार महंत मुनीसर,
व्रत लीधउ वैराग जी।
श्रीमती नारि संघाते लुब्धउ,
एह करम विपाक जी।क.।२१।

सेलग नाम आचारज मोटउ,
राज पिण्ड थयउ गृद्ध जी।
मद्य पान करी रहे सूतउ,
नहीं पड़िकमणा सुद्धि जी।क.।२२।

कुवलप्रभ उत्सूत्र थकी थयउं,
सावद्याचारिज जी।
तीर्थंकर दल मेलि गमाड़्या,
एह देखउ अचरिज जी।क.।२३।

वखत मांहि लिख्यउ ते लहियइ, निश्चय वात हुयइ हुणहार;
एक कहइं काछड़ बांधीनइं, उद्यम कीजइ अनेक प्रकार।
नीखण करमां वाद करंतां, इम झगड़उ भागउ पहुतौ दरवारि;
समयसुंदर कहइ वेऊ मानउं, निश्चय मारग नइं व्यवहार ।२६।
विषम काल अरउ पणि पांचमउ, कृष्ण पाखी पणि जीव घणा;
मत चउरासी गच्छ मंडाणा ते पणि ताणा ताणि तणा ।
संघयण नही मनो बल माठा, चरित्र ऊपरि किहां चालणा;
पणि समयसुंदर कहइ खप तउ कीजइं पंचाचार पछइ पालणा।३०।
आप वखाणइं पर नइ निंदइ, ते तउ अधम कह्या नर नारि;
सहु को भलउ पणि हुं कांई, नहीं इम बोलइ तेहनइं बलिहारि।
गुण लीजइ अवगुण गाडीजइ समकित जू ए लक्षण सारि;
समयसुंदर कहइ इण अधिकारइं दृष्टांत कह्यो श्रीकृष्णमुरारि ।३१।
देवतउ अरिहंत गुरु सुसाधनइं केवलि भाषित सूधउ धर्म्म;
सूधुं सरदहियइ ते समकित जिनसासन नु एहीज मर्म्म ।
सात आठ भव माहइं सीझइ संजम सुं मत आणउ भर्म्म;
समयसुँदर कहइ सर्व धर्म नउ, मूल एक समकित सुभकर्म्म ।३२।
अपणी करणी पारि उतरणी पारकी वात मइ कांइ पड़उ;
पूठि मांस खालउ परनिंदा लोकां सेती कांइ लड़उ ।
(निंदा म करो कोइ केहनी तात पराई में मत पड़उ)
निंदक नर चंडाल सरीखउ, एहनइ मत कोई आभड़उ;
समयसुंदर कहइ निंदक नर नइं नरक मांहि वाजिस्यइ दड़उ ।३३।
भूठ बोलइ ते नरकइं जायइं पड़इ तिहां जई मोटी खाड;

मुइ जाणी मूकी वन मांहे,
सुकुमालिका सरूप जी ।
सार्थवाह घर घरणी कीधी,
कर्म नउ अकल सरूप जी ।क.।२६।

रोहिणी साधु भणी वहरायो,
कडुओ तूंबो तेडि जी ।
भव अनंत भमी चउ गति मइं,
करम न मूंके केडि जी ।क.।३०।

इम मृगांकलेखा मृगावती,
सतानीक नी नार जी ।
कष्ट पड़ी कमला रति सुंदरी,
कहता न आवइ पार जी ।क.।३१।

कर्म विपाक सुणी इम कडुआ,
जीव करइ जिन धर्म जी ।
जीव अछइ करमे तूं जीतो,
पिण हिव जीपि तूं कर्म जी ।क.।३२।

श्री मुलतान नगर मूलनायक,
पार्श्वनाथ जिन जोय जी ।
वासुपूज्य श्री सुमति प्रसादे,
लोक सुखी सहु कोय जी ।क.।३३।

क्षमा छत्तीसी

आदर जीव क्षमा गुण आदर, म करि राग नइ द्वेष जी।
समताये शिव सुख पामीजे, क्रोधे कुगति विशेष जी। आ.। १।
समता संयम सार सुणीजे, कल्पसूत्र नी साख जी।
क्रोध पूर्व कोडि चारित थाले, भगवंत इण परि भाख जी। आ.। २।
कुण कुण जीव तर्या उपशम थी, सांभल तूँ दृष्टांत जी।
कुण कुण जीव भम्या भव मांहे, क्रोध तणाइ विरतंत जी। आ.। ३।
सोमल ससरे सीस प्रजाल्यउ, बांधी माटी नी पाल जी।
गज सुकुमाल क्षमा मन धरतउ, मुगति गयउ ततकाल जी। आ.। ४।
कुलवालुओ साधु कहातउ, कीधो क्रोध अपार जी।
कोणिक नी वेश्या वसि पड़ियउ, रड़वड़ियउ संसार जी। आ.। ५।
सोवनकार करी अति वेदन, वाध्र सुं वींट्यु सीस जी।
मेतारज मुनि मुगते पहुँता, उपशम एह जगीश जी। आ.। ६।
कुरुड़ अकुरुड़ बे साधु कहाता, रह्या कुणाला खाल जी।
क्रोध करी कुगते ते पहुँता, जन्म गमायो आल जी। आ.। ७।
करम खपावी मुगते पहुँता, खंधकसूरि ना सीस जी।
पालक पापीए घाणी पील्या, नाणी मन मां रीस जी। आ.। ८।
अच्चंकारी नारि अच्चंकी, तोड्यो पियु सुं नेह जी।
भव्वरकूल सह्या दुख बहुला, क्रोध तणा फल एह जी। आ.। ९।
वाघणे सरव सरीर विलूर्यो, ततखिण छोड्या प्राण जी।
साधु सुकोशल शिवसुख पाम्या, एह क्षमा ना जाण जी। आ.।१०।

साधु श्रावक धर्म तीरथ यात्रा,
शील धर्म तप ध्यान जी ॥ पु०॥ २ ॥
सामायिक पोषह पड़िकमणो,
देव पूजा गुरु सेव जी ।
पुण्य तणा ए भेद परूप्या,
अरिहंत वीतराग देव जी ॥ पु०॥ ३ ॥
सरणागत राख्यउ पारेवउ,
पूरव भव परसिद्ध जी ।
शांतिनाथ तीर्थंकर पदवी,
पाम्या चक्रवर्त्ती रिद्ध जी ॥ पु०॥ ४ ॥
गज भवे ससलउ जीव उगार्यो,
अधिक दया मन आणिजी ।
मेघ कुमार हुयो महा भोगी,
श्रेणिक पुत्र सुजाण जी ॥ पु०॥ ५ ॥
साधु तणउ उपदेश सुणी नइ,
मूक्यउ मछली जाल जी ।
नलिनी गुल्म विमान थकी थयो,
अयवंती सुकमाल जी ॥ पु०॥ ६ ॥
पंच मच्छ राख्या मालि भवि,
पंच यक्ष दियउ राज जी ।
राजकुमर लीला सुख लीधा,
सुभट कटक गया भाज जी ॥ पु०॥ ७ ॥

आहार मांहे क्रोधे रिषि थूक्यउ, आएयउ अमृत भाव जी।
कूरगडूए केवल पाम्यउ, क्षमा तणइ परभाव जी। आ.।२२।
पार्श्वनाथ नइ उपसर्ग कीधा, कमठ भवांतर धीठ जी।
नरक तिर्यंच तणा दुख लाधां,क्रोध तणा फल दीठ जी। आ.।२३।
क्षमावंत दमदंत मुनीसर, वन मां रह्यउ काउसग्ग जी।
कौरव कटक हएयउ इंटाले, त्रोड्यउ करम ना वग्ग जी। आ.।२४।
सज्यापालक काने तरुओ, नाम्यो क्रोध उदीर जी।
बिहुँ काने खीला ठोकणा, नवि छूटा महावीर जी। आ.।२५।
चार हत्या नो कारक हुँतो, दृढ प्रहारी अतिरेक जी।
क्षमा करी नइ मुगति पहुँता, उपसर्ग सही अनेक जी। आ.।२६।
पहुर मांहि उपजंतो हारयो, क्रोधे केवल नाण जी।
देखो श्री दमसार मुनीसर, सूत्र गएयो उट्ठाण जी। आ.।२७।
सिंह गुफा वासी ऋषि कीधउ,थूलिभद्र ऊपर कोप जी।
वेश्या वचने गयउ नेपाले, कीधउ संजम लोप जी। आ.।२८।
चंद्रावतंशक काउसग्ग रहियउ, क्षमा तणउ भंडार जी।
दासी तेल भरयउ निसि दीवउ,सुर पदवी लहि सार जी। आ.।२६।
एम अनेक तरया त्रिभुवन में, क्षमा गुणे भवि जीव जी।
क्रोध करी कुगते ते पहुँता, पाडंता मुख रीव जी। आ.।३०।
विष हलाहल कहियइ विरूयउ, ते मारइ इक वार जी।
पण कषाय अनंती वेला, आपइ मरण अपार जी। आ।३१।
क्रोध करंता तप जप कीधा, न पडइ कांइ ठाम जी।
आप तपे पर नइ संतापइ, क्रोध सुं के हो काम जी। आ.।३२।

राज ऋद्धि ततक्षण पामी इहां,
कोनहीं उधार जी ॥ पु०॥१३॥
मोटो ऋषि बलदेव मुनीसर,
प्रतिबोध्या पशु वर्ग जी ।
दान सुपात्र दियो रथकारक,
पाम्यउ पांचमउ स्वर्ग जी ॥ पु०॥१४॥
चंपक सेठ कीधी अनुकम्पा,
दीधुं दान दुकाल जी ।
कोड़ि छत्रु सोनइया केरी,
विलसइ रिद्धि विसाल जी ॥ पु०॥१५॥
सुव्रत साधु समीपे कातिंक,
लीधउ संजम भार जी ।
बत्तीस लाख विमान तणो धणी,
इन्द्र हुयउ ए सार जी ॥ पु०॥१६॥
सनतकुमार सही अति वेदन,
सात सौ वरसां सीम जी ।
देवलोक तीजइ सुख दीठा,
निश्चल पाल्यो नीम जी ॥ पु०॥१७॥
रूप थकी अनरथ देखी नइ,
गयो बलभद्र वनवास जी ।
तप संयम पाली नइ पहुंतउ,
पांचमइ स्वर्ग आवास जी ॥ पु०॥१८॥

दसरथ राय दियो देसवटउ,
राम रहउ वनवास जी ।
वलि वियोग पड्यउ सीतानउ,
आठे पहर उदास जी ।क.।१४।

चिर प्रतिपाल्यउ चारित छोड़ी,
लीधो बांधव राज जी ।
कंडरीक नइ कर्म विटंब्यउ,
कोइ न सरधउ काज जी ।क.।१५।

कोणिक कठ पंजर मंइ दीधउ,
श्रेणिक आपणो बाप जी ।
नरग गयउ नाड़ी मारंतउ,
प्रगट्यउ हिंसा पाप जी ।क.।१६।

जसु अठार मुकुट बद्ध राजा,
सेव करइ कर जोड़ जी ।
कोणिक थी बीहतउ राय चेड़उ,
कूप पड़चउ मल छोड़ जी ।क.।१७।

लुब्धो मुंज मृणालवती सुं,
उज्जैनी नउ राय जी ।
भीख मंगावी बली दीधर,
कर्णाट राय कहाय जी ।क.।१८।

काचे तांतणा पाणी काढ्यउ,
जिन शासन जयकार जी ॥ पु०॥२४॥
काकंदी नगरी नउ वासी,
धन धन्नउ अणगार जी ।
श्रेणिक आगइ वीर वखाण्यउ,
अति उग्र तप अधिकार जी ॥ पु०॥२५॥
हुँ त्रियंच किसुं वहरावुं,
रथकार नइ सहु थोक जी ।
मृगलउ भावना मन भावंतउ,
गयो पंचम देवलोक जी ॥ पु०॥२६॥
थिर सामायिक कीधउ थविरा,
राजकुमारी थइ रंग जी ।
भोग संजोग घणा तिहां भोगवी,
शिव सुख लाधा संग जी ॥ पु०॥२७॥
संख श्रावक पोषह सुद्ध पाल्यउ,
वीर प्रशंस्यो तेह जी ।
तीर्थंकर पदवी ते लहिस्यइ,
पुण्य तणा फल एह जी ॥ पु०॥२८॥
सागरचंद कियउ वलि पोषह,
रह्यउ काउसग्ग राय जी ।
निसि नभसेण तणो सह्यउ उपसर्ग,

नंदिषेण श्रेणिक नउ बेटउ,
महावीर नउ शिष्य जी ।
बार बरस वेश्या सुं लुब्धउ,
कर्म नी वात अलक्ष जी ।क.।२४।

भगवंत नउ भाणेज जँवाई,
वीर सुं कीधी वेढि जी ।
तीर्थंकर ना वचन उथाप्या,
हुयउ जमालि सुर ढेढ जी ।क.।२५।

रजा साधवी रोग ऊपनो,
विणाठो कोढ सरीर जी ।
भव अनंत भमी दुख सहती,
दोष दिखाड़यउ नीरि जी ।क.।२६।

सील सन्नाह घणुं समझावी,
तोहि न मूक्यां साल जी ।
रूपी राय रुली भव मांहे,
भंडे घणुं हवाल जी ।क.।२७।

लख भव रुली वलि लखमणा,
कुवचन बोल्या एम जी ।
तीर्थंकर परपीड़ न जाणी,
मैथुन वारयउ केम जी ।क.।२८।

संवत निधि दरसण रस ससिहर,
सिंधपुर नगर मझार जी ।
शांतिनाथ सुप्रसादे कीधी,
पुण्य छत्तीसी सार जी ॥ पु०॥३५॥
युगप्रधान जिनचंद सवाई,
सकलचंद तसु शिष्य जी ।
समयसुन्दर कहइ पुण्य करो सहु,
पुण्य तणा फल परतक्ष जी ॥ पु०॥३६॥

—(:•:)—

संतोष छत्तीसी

साहमी सुं संतोष करीजइ, वयर विरोध निवार जी ।
सगपण ते जे साहमी केरउ, चतुर सुणो सुविचार जी । सा.। १ ।
राय उदायन मोटउ राजा, कीधो सबल संग्राम जी ।
चंड प्रद्योतन मूकी खाम्यउ, सांभल्यौ साहमी नाम जी । सा.। २ ।
कोणिक चेड़इ संग्राम कीधा, माणस मार्या कोड़ि जी ।
असी लाख वलि ऊपरि कहियइ, वैर विरोध द्यउ छोड़ि जी । सा.। ३ ।
उदायन दीधउ केसी नइ, भाणेजा नइ राज भार जी ।
वैर वहंतउ थयउ विराधक, अभीचि असुर कुमार जी । सा.। ४ ।
संखे कीधउ पोसौ सखरउ, पक्खुलि कीधी तात जी ।
मिच्छामि दुक्कडं श्री महावीरे, दिवरायो परभात जी । सा.। ५ ।
दाविड़ वारिखिल्ल बे भाई, पंच पंच कोड़ि परिवार जी ।

श्री जिनचंद्रसूरि जिनसिंहसूरि,
गच्छपति गुण भरपूर जी ।
सिंघी जेसलमेरी श्रावक,
खरतर गच्छ पडूर जी । क.।३४।
सकलचंद सदगुरु सुपसाये,
सोलह सइ अइसड्ड जी ।
करम छत्तीसी ए मइं कीधी,
माह तणी सुदी छड्ड जी । क.।३५।
करम छत्तीसी काने सुणि नइ,
करजो व्रत पच्चखाण जी ।
समयसुंदर कहइ सिव सुख लहिस्यउ,
धर्म तणे परमाण जी । क.।३६।

—०)क(०—

पुण्य छत्तीसी

पुण्य तणा फल परतिख देखो,
करो पुण्य सहु कोय जी ।
पुण्य करंतां पाप पुलावे,
जीव सुखी जग होय जी ॥ पु०॥ १ ॥
अभयदान सुपात्र अनोपम,
वलि अनुकंपा दान जी ।

रेवती ऊपर रीस करी बहु, महाशतक अवहीर जी।
गौतम मूकी नइ मिच्छामि दुक्कड़, दिवरायो महावीर जी। सा.।१७।
सारंग साह धरी मद मच्छर, बांध्यउ कोचर साह जी।
पणि देपाल नइ वचने मूक्यउ, साहमी जाणि उच्छाह जी। सा.।१८।
लखमण राम नइ घर थी काढ्या, कपिले भूंडो कीध जी।
पणि साहमी भणी राम संतोष्यउ, आदर मान धन दीधजी। सा.१६।
वरस वरस मांहे त्रिण वेला, वस्तुपाल तेजपाल जी।
साहमी वच्छल सवला कीधा, भक्ति जुगति सुविसाल जी। सा.।२०।
वेउ इंद्र बुलाया कोणिक, मारौ चेडो राय जी।
इंद्र कहै सुण अम्हे किम मारूं, साहमी सगपण थायजी। सा.।२१।
साहमी सगपण नवउ करी नइ, प्रीति संतोष विशेष जी।
आद्रकुमार भणी प्रतिबोध्यउ, अभयकुमारे देख जी। सा.।२२।
खमत खामणा करउ खरे मन, मूकी निज अभिमान जी।
मृगावती नइ चंदनबाला, पाम्यउ केवलज्ञान जी। सा.।२३।
पण कुंभार ने चेला वाला, मिच्छामि दुक्कडं टालि जी।
मन शुद्ध विन कदि मुक्ति न होइ, निश्चय दृष्टि निहालि जी। सा.२४।
सासू जंवाई वाला कीजइ, अलिया गलिया जाण जी।
सामायिक पड़िकमणो सूजइ, जीवत जन्म प्रमाण जी। सा.।२५।
सामायक पोसो पड़िकमणो, नित सभाय नवकार जी!
राग द्वेष करतां सूझइ नहीं, न पड़ै ठाम लगार जी। सा.।२६।
समता भाव धरी नइ करतां, सहु किरिया पड़ै ठाम जी।
अरिहंत देव कहइ आराधक, सीझइ वंछित काम जी। सा.।२७।

धन्य धन्य सार्थवाहन धन्नउ,
दीधउ घृत नउ दान जी।
तीर्थंकर पदवी तिण पामी,
आदीश्वर अभिधान जी ॥ पु०॥ ८ ॥
उत्तम पात्र प्रथम तीर्थंकर,
श्री श्रेयांस दातार जी।
सेलड़ी रस प्रथउ वहरायो,
पाम्यउ भव नउ पार जी ॥ पु०॥ ६ ॥
चंदन बाला चढते भावे,
पड़िलाम्या महावीर जी।
देव तणी दुंदुभी तिहां वाजी,
सुन्दर थयउ सरीर जी ॥ पु०॥१०॥
सुमुख नाम गाथापति मुनिवर,
दीधउ साधु नइ दान जी।
हुओ सुबाहुकुमर सोभागी,
वधता सुख विमान जी ॥ पु०॥११॥
संगमे साधु भणी वहिराव्यउ,
खीरखांड घृत सार जी।
गोभद्र सेठ तणे घरि लाधउ,
सालिभद्र नउ अवतार जी ॥ पु०॥१२॥
मूलदेव मुनिवर पड़िलाम्यउ,
मास खमण अणगार जी।

आलोयणा छत्तीसी

ढाल—ते मुझ मिच्छामि दुक्कडं, एहनी

पाप आलोय तूँ आपणां, सिद्ध आतम साख।
आलोयां पाप छूटियइ, भगवंत इणि परि भाख ॥ पा.॥ १ ॥
साल हिया थी काढियइ, जिम कीधा तेम।
दुख देखिस नहीं सर घणा, रूपी लखमण जेम ॥ पा.॥ २ ॥
वृद्ध गीतारथ गुरु मिले, आतम सुद्ध कीध।
तो आलोयण लीजियइ, नहीं तर स्पुंस लीध ॥ पा.॥ ३ ॥
ओछो अधिकउ धै जिके, पारका ल्यइ पाप।
लैणहार छूटइ नहीं, साहमों ल्यइ संताप ॥ पा.॥ ४ ॥
कीधा तिम को कहइ नहीं, जीभ लइ थइ झूठ।
कांटो भांगो आंगुली, खोत्रीजइ अंगूठ ॥ पा.॥ ५ ॥
गाडर प्रवाह तूं मूंकिजे, दूषम काल दुरंत।
आतम साख आलोइजे, छेद ग्रंथ कहंत ॥ पा.॥ ६ ॥
कर्म निकाचित जे किया, ते भोगव्यां छूट।
सिथल बंध बांध्या जिके, ते तो जायइ त्रूट ॥ पा.॥ ७ ॥
पृथ्वी पाणी आगिना, वाउ वनस्पति जीव।
तेहनउ आरंभ तूं करइ, स्वाद लीधउ सदीव ॥ पा.॥ ८ ॥
आंधउ बोलउ बोबड़उ, मृगापुत्र ज्यूं देख।
अंगोपांगे तेहनइ, मारइ लोह नी मेख ॥ पा.॥ ९ ॥

भद्रबाहु स्वामी पूरवधर,
सज्जंभव यशोभद्र जी ।
साधु आचार थकी सुख लाधा,
वयर स्वामी थूलभद्र जी ॥ पु०॥१६॥
महावीर थी नवसै असीयां,
सकल सूत्र सिद्धान्त जी ।
पुस्तकारूढ किया देवर्द्धि गणि,
मोटा साधु महंत जी ॥ पु०॥२०॥
आनंद कामदेव सुश्रावक,
व्रत रुड़ी परि राख जी ।
प्रथम देवलोक सुख पाम्या,
सूत्र उपासक साख जी ॥ पु०॥२१॥
साढी बारै सत्रुंजे यात्रा,
कीधी इण कलिकाल जी ।
संघपति थई सुरलोक सिधाया,
वस्तुपाल तेजपाल जी ॥ पु०॥२२॥
पाल्यउ शील कष्ट पणि पड़ियउ,
कुलधज नाम कुमार जी ।
इरत परत लाधा सुख उत्तम,
सलहीजे संसार जी ॥ पु०॥२३॥
चंपानगरी पोल उग्घाड़ी,
सती सुभद्रा नार जी ।

राग द्वेष खाम्या नहीं, जां जीव्यउ तां सीम ।
अनंतानुबंधी ते थया, कहि करिस तूं केम ॥ पा.॥२१॥
तड़ तड़ते नांख्या तावड़े, सुल्या धान जिवार ।
तड़ फड़ नइ जीव ते मूआ, दया न रही लगार ॥ पा.॥२२॥
अणगल पाणी लूगड़ा, धोया नदी तलाव ।
जीव संहार कियो घणउ, साबू फरस प्रभाव ॥ पा.॥२३॥
वैरी विष दे मारिया, गलै फांसी दीध ।
ते तुझ नइ पिण मारस्यै, मूकस्यै वैर लीध ॥ पा.॥२४॥
कोऊ अंगीठो तइ करी, थाप्यौ सिगड़ी कुंड ।
रातें दीवो राखियो, पापे भरचा पिंड ॥ पा.॥२५॥
मां थी विछोड़्या वाछड़ा, नीरी नहीं चारि ।
ऊनालै तिरस्या मूआ, कीधी नहीं सारि ॥ पा.॥२६॥
मां बाप नइं मान्या नहीं, सेठ सुं असंतोष ।
धर्म नो उपगार नवि धरचो, ओसिकल किम होस ॥ पा.॥२७॥
आंधो टूंटो पांगलो, कोढियो जार चोर ।
मरि फीट जाइ बोल तुं, कह्या वचन कठोर ॥ पा.॥२८॥
मद्य नइ मांस अभक्ष जे, खाधा हुस्यइ हूंसि ।
मिच्छामि दुक्कडं देइ नै, पछइ लेजे तूं सूंसि ॥ पा.॥२९॥
सामाइक पोसह कीया, लीधा साधु नो वेस ।
मन संवेग धरचो नहीं, कहि तूं केम करेस ॥ पा.॥३०॥
सूत्र नै प्रकरण समझता, कह्या विपरीत कोय ।
जण जण मति छइ जूजुइ, सुणतां भ्रम होय ॥ पा.॥३१॥

लाधी ऋद्धि अथाह जी ॥ पु०॥२६॥
तुंगिया नगरी श्रमणोपासक,
सुध क्रिया सावधान जी ।
उभय काल पड़िक्कमणो करता,
पामी गति परधान जी ॥ पु०॥३०॥
पूरव भव तीर्थंकर पूज्या,
लाधा अठारह राज जी ।
पद्मनाभ ना गणधर थास्ये,
कुमारपाल सारचा काज जी ॥ पु०॥३१॥
राणे रावण श्रेणिक राजा,
अरच्या अरिहंत देव जी ।
येहुं गोत्र तीर्थंकर बांध्या,
सुरनर करस्यै सेव जी ॥ पु०॥३२॥
केसी गुरु सेव्यउ परदेसी,
सुर उपनो सुरिआभ जी ।
चार हजार वरस एक नाटक,
आगे अनंता लाभ जी ॥ पु०॥३३॥
इम अनेक विवेक धरंतां,
जीव सुखिया थया जाण जी ।
संप्रति छै सुखिया वलि थास्यै,
पुण्य तणै परमाण जी ॥ पु०॥३४॥

जैन तापस ऋपि विद्दता राख्या, सेत्रुंजइ सीधा अपार जी। सा.। ६।
भरत बाहूबलि बेहूँ भाई, आदीसर अंगजात जी।
बार बरस बहु जन संहारचा, एह विरोध नी वात जी। सा.। ७।
अरिहंत साधु विना प्रणमे नहीं, वज्रजंघन भ्रम धीर जी।
सिंहोदर सु संतोष करायो, रामचंद्र करि भीर जी। सा.। ८।
सागरचंद्र अन्याये परखी, कमला मेला वहर जी।
माथइ सिगड़ी मूकी मारचो, नभसेन वाल्यो वैर जी। सा.। ९।
आप थकी जे अधिका जाणइ, तेहनइ तु जीमाड़ि जी।
भरते साहमी वच्छल कीधउ, तात वचन सिरबाड़ि जी। सा.।१०।
उदायन राय बंधावी ले गयउ, चंड प्रद्योतन राय जी।
वासवदत्ता नइ तिण अपहरी, इण विरोध न कराय जी। सा.।११।
सिंहोदर पासे दिवरायो, रामे आधउ राज जी।
वज्रजंघन स्वामी जाणी नइ, सखर समारचउ काज जी। सा.।१२।
कोणिक कीधी ते को न करइ, चेडो पाम्यउ रूप जी।
नगरी विशाला भांजी नांखी, एह विरोध सरूप जी। सा.।१३।
विजउ विखमी चोरी पइठउ, मूंक्यउ कुंडल नाग जी।
वज्रजंघन नइ भेद जणाव्यउ, साचउ साहमी राग जी। सा.।१४।
मांहो मांही नगर विध्वंस्या, पांडव दवदंत राय जी।
मुनि दवदंत इंटाले मारचो, कौरव न तज्यो कषाय जी। सा.।१५।
रुक्मिणी नइ सत्यभामा राणी, सउकी नउ रावल संताप जी।
खमत खामणा किया खरै मन, व्रत लेवा प्रस्ताव जी। सा.।१६।

विकथा चार कीधी वलि, सेव्या पंच प्रमाद ।
इष्ट वियोग पड्यां किया, रोदन विषवाद ॥ ते०॥२७॥
साध अनइ श्रावक तणा, व्रत लेई भांगा ।
मूल अनइ उत्तर तणा, मुझ दूषण लागा ॥ ते०॥२८॥
सांप विच्छू सींह चीतरा, सकरा नइ समली ।
हिंसक जीव तणे भवे, हिंसा कीधी सबली ॥ ते०॥२९॥
सूयावड़ि दूषण घणा, वलि गरभ गलाया ।
जीवाणी ढोल्या घड़ा, सील वरत भंजाया ॥ ते०॥३०॥
भव अनंत भमतां थकां, कीया कुटुम्ब संबंध ।
त्रिविध त्रिविध करी वोसरूं, तिण सुं प्रतिबंध ॥ ते०॥३१॥
भव अनंत भमतां थकां, कीया देह संबंध ।
त्रिविध त्रिविध करी वोसरूं, तिण सुँ प्रतिबंध ॥ ते०॥३२॥
भव अनंत भमतां थकां, किया परिग्रह संबंध ।
त्रिविध त्रिविध करो वोसरु, तिण सुँ प्रतिबंध ॥ ते०॥३३॥
इण परि इण भवि परभवइ, कीधा पाप अखत्र ।
त्रिविध त्रिविध करी वोसरूं, करूं जनम पवित्र ॥ ते०॥३४॥
राग वयराडी जे सुणइ, ए त्रीजी ढाल[१] ।
समयसुन्दर कहइ पाप थी, छूटइ ते ततकाल ॥ ते०॥३५॥

इति आराधना संपूर्णा। (स्वय लिखित पत्र से)



---

१ वास्तव में यह स्वतन्त्र कृति न होकर चार प्रत्येक बुद्ध चौपई की एक ढाल है।

राग द्वेष कियां रडवड़ियइ, पड़ियइ नरक मझार जी।
दुख अनंता लहियइ दुरगति, तेह तणउ नहीं पार जी। सा.।२८।
जिहां जीव जायइ तिहां कणि पामइ, सकल कुटुंब परिवार जी।
पण साहमी नउ सगपण किहां थी, ए दुर्लभ अवतार जी। सा.।२६।
दूषम काल तणै परभावे, हुइ मांहो मां विषवाद जी।
तो पणि तुरत खमावी लीजइ, पंडित गुरु परसाद जी। सा.।३०।
सुगुरु वचन मानइ ते उत्तम, श्रावक सुजस लहंत जी।
भद्रक जीव आसन्न सिद्धिगामी, अरिहंत एम कहंत जी। सा.।३१।
जिम नागोर क्षमा छत्तीसी, कर्म छत्तीसी मुलतान जी।
पुण्य छत्तीसी सिद्धपुर कीधी, श्रावक नइ हित जाण जी। सा.।३२।
तिम संतोष छत्तीसी कीधी, लूणकरणसर मांहि जी।
मेल थयउ साहमी मांहो मांहि, आणंद अधिक उच्छाह जी। सा.३३।
पाप गयउ पांचां वरसां नउ, प्रगट्यउ पुण्य पड्डूर जी।
प्रीति संतोष वध्यउ मांहो मांहे, वाज्या मंगल तूर जी। सा.।३४।
संवत सोल चउरासी वरसइ, सर मांहे रह्या चउमास जी।
जस सोभाग थयउ जग मांहे, सहु दीधी सावास जी। सा.।३५।
युगप्रधान जिनचंद सूरीसर, सकलचंद तसु शिष्य जी।
समयसुन्दर संतोष छत्तीसी, कीधी संघ जगीस जी। सा.।३६।

—:o:—

सेत्रुंजइ द्रव्य सफल कीयउ ए, अढार कोडि छन्नुं लाख। ध.।
गिरिनारि द्रव्य सफल कीयउ ए, अढार कोडि असीलाख। ५। ध.।
आबू द्रव्य सफल कीयउ, लाख त्रेपन कोडि बार। ध.।
नेमि प्रासाद मडावीयउ ए, लूणगवसही उद्धार। ६। ध.।
ब्राह्मणसाला सातसइ ए, सातसइ सत्रूकार। ध.।
प्रासाद कराव्या महेसरा ए, ते पणि त्रिण्हे हजार। ७। ध.।
तापसना मठ सातसइ ए, चउसठि करावी मसीति। ध.।
जिन बिंब नी रक्षा भणी ए, म्लेछ तणइ मनि प्रीति। ८। ध.।
पाषाण बद्ध करावीया ए, सरोवर चउराशीय। ध.।
वारू सयंवर[1] वावड़ी ए, च्यार-सइ चउसठि कीय। ९। ध.।
मोटा गढ मंडावीया ए, छत्रीस[2] पाखाण बद्ध। ध.।
ए सहुँ संघ रक्षा भणी ए, परिधल पाणि किद्ध। १०। ध.।
परब मंडावी च्यारसइ ए, पर उपगार निमित्त। ध.।
चालती चरम तलावड़ी ए, चारसउ चउरासी नित्त। ११। ध.।
तोरण त्रिण चढावीया ए, शत्रुंज १ हुज २ गिरनार ३। ध.।
सोनहियां त्रिहुँ लाख नउ ए, एकैकउ श्रीकार १२। ध.।
त्रि लाख सोनहियां तणउ ए, खंभायत व्यय कीध। ध.।
वस्तपाल तेजपालना ए, सकल मनोरथ सीध। १३। ध.।
उदयप्रभसूरि प्रमुख ना ए, पदठवणां एकवीस। ध.।
महुछव सेती करावीया, जाचकां पूरी जगीस। १४। ध.।
जैन ना रथ नीपजावीया ए, दांत तणा चउवीस। ध.।
जैन देहरासर सागना ए, ते पणि एकसउ वीस। १५। ध.।

---

१ चारसय वर. २ बत्तीस

बोलइ नहीं ते बापड़उ, पिण पीड़ा होय।
तेहवी तीर्थंकर कहइ, आचारांग जोय ॥ पा.॥१०॥
आदौ मूलौ आदि दे, कंद मूल विचित्र।
अनंत जीव सूई अग्र में, पन्नवणा सूत्र ॥ पा.॥११॥
जीभ नइ स्वाद मारयाजिके, ते मारस्यइ तुज्झ।
मन मांहे ममता थकां, थास्यै जिहां तिहां जुज्झ ॥ पा.॥१२॥
झूठ बोल्या घणा जीभड़ी, दीघा कूड़ कलंक।
गल जीभी थास्यै गलै, हुस्यइ मुंहड़ो त्रिवंक ॥ पा.॥१३॥
परधन चोर्या लूटिया, पाड़्यउ ध्रसकउ पेट।
भूख्यो भमि संसार मां, निर्धन थकउ नेट ॥ पा.॥१४॥
परस्त्री नइ भोगवी, तुच्छ स्वाद तूं लेसि।
पिण नरके ताती पूतली, आलिंगन देसि ॥ पा.॥१५॥
परिग्रह मेल्यो कारमो, इच्छा जिम आकास।
काज सर्यो नहीं ते थकां, उत्तराध्ययन प्रकाश ॥ पा.॥१६॥
घाणी घट्टी ऊंखले, जीव जे पीड़ेसि।
स्वामिस तूं नहिं तरि नरक मइं, घाणी मांहि पीलेसि ॥ पा.॥१७॥
छाना अकारिज करि पछइ, गर्भ नांख्या पांड़ि।
परमाधामी ते तुज्झ ने, नित नांखिस्यै पाड़ि ॥ पा.॥१८॥
गोधा ना नाक वींधीया, खासी कीधा वलध।
आरंभी उठाड़िया, राते ऊँचे सबद ॥ पा.॥१९॥
वाला चढाव्या टांकता, मांकण खाटला कूटि।
विरेच लेइ कमि पाड़िया, गलणी गयउ छूटि ॥ पा.॥२०॥

चालता साधि पाणी तलाव, ए सहु पुण्य तणउ परभाव ।
तेत्रीस सइ दांतना देवाला, बारह सइ सागना सुविसाला । ५ ।
संघ मांहे माणस सात लाख, ए सहूना परबंधे साख ।
सरसती कंठाभरण विरुद, चउवीस बोलइ भट्ट सुसद । ६ ।
दल बादल डेरा तंगोटी, फरहर नेजा धजा अति मोटी ।
सबल आडंबर रायनी रीति, संघ चालइ सहु संतोष प्रीति । ७ ।
जयत पताका तेत्रीस वार, संग्राम करि नइ पामी सार ।
एहवी साढ़ा बारह जात्रा कीधी, सेत्रुञ्ज संघवी पदवी लीधी । ८ ।
हिव सहू पुण्यवरानी वात, जे द्रव्य खरच्या तेह कहात ।
तेत्रीसइ कोडि़ चउदह लाख, अढार सहस आठसइ सहु साख । ९ ।
त्रिहुं लोहडि़ ए ऊणा सोनहिया, पुण्यवरइ खरच्याते कहिया ।
जिण सासण मांहे सोह चड़ावी, बारसइ अठाणुँ देवगति पावी । १० ।
वस्तपाल तेजपाल पुण्य प्रधान, जेह नइ पगि २ प्रगट्या निधान ।
पुण्य थी पामी तेजम तूरी, दक्षिणभरत संघ आसा पूरी । ११ ।
इम जाणी सहु को वित सारू, धन खरचउ विवहारी वारू ।
सफल करउ अपणउ अवतार, जिम तुम्हे पामउ भवनउ पार । १२ ।
श्री खरतरगछ श्री जिणचंद, शिष्य सकलचंद नाम मुणिंद ।
समयसुन्दर पाठक तसु सीस, रास भणयउ श्री संघ जगीस । १३ ।
संवत सोल सइ ब्यासीया वरषे, रास कीधउ तिमिरीपुरी हरषे ।
वस्तपाल तेजपाल नऊ ए रास, भणतां सुणतां परम हुलास । १४ ।

इति श्रीवस्तपाल तेजपाल रासः सम्पूर्णः ।

वचन जिके वीतरागना, ते तो सही साच ।
भगवती सूत्र धुरे भणी, वीर नी ए वाच ॥ पा.॥३२॥
करमादान पनरे कह्या, वलि पाप अढार ।
खिण खिण ए सहु खामिज्यो, संभारी संभारि ॥ पा.॥३३॥
इण भव परभव एहवा, कीधा हुवे जे पाप ।
नाम लेइ तूं खामजे, करिजे पछताप ॥ पा.॥३४॥
खरच कोई लागस्यै नहीं, देह नें नहिं दुख ।
पण मन वैराग वालजे, सही पामिस सुख ॥ पा.॥३५॥
संवत सोल अठाणुए, अहमदपुर मांहि ।
समयसुन्दर कहइ मइं करी, आलोयणा उच्छाहि ॥ पा.॥३६॥



पद्मावती–आराधना

हिव राणी पद्मावती, जीव रासि खमावइ ।
जाण पणुं जगि ते भलुं, इण वेला आवइ ॥ १ ॥
ते मुझ मिच्छामि दुक्कडं, अरिहंत नी साख ।
जे मइं जीव विराधिया, चउरासी लाख ॥ ते०॥ २ ॥
सात लाख पृथिवी तणा, साते अपकाय ।
सात लाख तेऊकाय ना, साते वलि वाय ॥ ते०॥ ३ ॥
दस प्रत्येक वनस्पति, चउदह साधार ।
बि ति चउरिन्द्री जीव ना, बि बि लाख विचार ॥ ते०॥ ४ ॥

ढाल

गुजरात मांहि रातिज गाम, करडुआ पटिल गोत्र नो नाम।
बाप गोरो माता धन बाई, उत्तम जाति नहीं खोट कांइ ॥१०॥
श्रीपार्श्वचंदसूरि पाट समरिचंद्रसूरि, श्रीराजचंद्रसूरि विमलचंद सनूरि
तेहना वचन सुणि प्रतिबुद्धो, असार संसार जाण्यो अति सुद्धो ॥११॥
वैरागइ आपणौ मन वाल्यौ, कुटुंब माया मोह जंजाल टाल्यो।
संवत् सोलइसे सित्तरा वर्षे, संयम लीनो सदगुरु परखइ ॥१२॥
दिक्षा महोत्सव अहमदाबादइ, श्रावक कीधौ नवलै नादै।
पुञ्जो ऋषि सुद्धो व्रत पालइ, दूषण सघला दूरइ टालइ ॥१३॥
ए ऋषि पुञ्जो सूझतो ल्ये आहार, न करै लालच लोभ लिगार।
ऋषि पुञ्जो अति रूड़ो होवइ, जिन शासन मांहे शोभ चढावइ ॥१४॥
तेहना गुण गातां मन मांहि, आनंद उपजै अति उच्छाहे।
जीभ पवित्र हुवे जस भणतां, श्रवण पवित्र थाये सांभलतां ॥१५॥

ढाल

ऋषि पुंजे तप कीधौ ते कहुं, सांभलजो सहु कोई रे।
आज नइ कालै करइ कुण एहेवा, पणि अनुमोदन थाइ रे ॥१६॥
आठ उपवास कीधा पहिली, आठ अति चोवीहार रे।
मासखमण कीधा दोइ मुनिवर, वीस वीस बे वार रे ॥१७॥
पक्ष-खमण पैंतालीस कीधा, सोल कीधा सोलह वार रे।
चउद चउद चवदे बारइ कीधा, तेर तेर करचा तेरह रे ॥१८॥

कुंभार नइ भवि जे किया, नीमाह पजावा।
तेली भवि तिल पीलिया, पापी पेट भराव्या ॥ ते०॥१६॥
हाली नइ भवि हल खड्या, फाड्या पृथिवी पेट।
सूड़ निंदाण किया घणा, दीधी बलद चपेट ॥ ते०॥१७॥
माली नइ भवि रोपिया, नाना विधि वृक्ष।
मूल पत्र फल फूल ना, लागा पाप लक्ष ॥ ते०॥१८॥
अद्धोवाई आंगमी, भरया अधिका भार।
पोठी ऊंठ कीड़ा पड्या, दया न रही लगार ॥ ते०॥१९॥
छींपा नइ भवि छेतरयउ, कीधा रांगणि पास।
अगनि आरंभ किया घणा, धातुर्वाद अभ्यास ॥ ते०॥२०॥
सूरपणइ रण जूझता, मारया माणस वृन्द।
मदिरा मांस माखण भख्या, खाधा मूला नइ कंद ॥ ते०॥२१॥
खाणि खणावी धातु नी, पाणी उलिंच्या।
आरंभ कीधा अति घणा, पोतइ पाप संच्या ॥ ते०॥२२॥
अंगार कर्म किया वली, धरमइ दव दीधा।
सुंस कीधा वीतराग ना, कूड़ा कोस पीधा ॥ ते०॥२३॥
बिल्ली भवि उंदरि लीया, गलोई हतियारी।
मूढ गमार तणइ भवे, मइं जूं लीख मारी ॥ ते०॥२४॥
भाभड़-भूंजा नइ भवे, एकेन्द्री जीव।
ज्वारि चिणा गोहुं सेकिया, पाड़ंता रीव ॥ ते०॥२५॥
खांडण पीसण गारि ना, आरंभ अनेक।
रांधण इंधण आगि ना, किया पाप उदेक ॥ ते०॥२६॥

छट्ठम अट्ठम आकरा तप कीधा, ऋषि पुंजे वलि जेह रे।
तेह तणी कहुँ वात केती, कहतां नावै छेह रे ॥३०॥
अठावीस वरस लगि तप कीधा,ते सघला कह्या एम रे।
आगलि वलि करिस्यै ऋषि पुंजो, ते आणिस्यइ तेम रे॥३१॥

ढाल

पुंजराज मुनिवर वंदो, मन भाव मुनीसर सोहै रे।
उग्र करइ तप आकरौ, भवियण जन मन मोहइ रे ॥३२॥
धन कुल कलंबी जाणीयइ, बाप गोरो ते पिण धन्न रे।
धन धना बाइ कुखड़ी तिहां, उपनो एह रतन्न रे ॥३३॥
धन विमलचंद सूरि जिणै, दीख्या दीधी निज हाथ रे।
धन श्री जयचंद्र गच्छ धणी, जसु साहु रहै ए पास रे ॥३४॥
आज तो तपसी एहवो, पुंजा ऋष सरीखो न दीसइ रे।
तेहनें वंदता विहरावतां, हरखै करि हियड़ो हींसइ रे ॥३५॥
एक बे वैरागी एहवा, श्री पासचंद गच्छ मांहिं सदाई रे।
गरुअइ वाडइ गच्छ मांहि, श्री पासचंदसूरि नी पुण्याइ रे॥३६॥
संवत सोल अठाणुअइ, श्रावण पंचमी अजुवालइ रे।
रास भण्यो रलियामणो, श्री समयसुन्दर गुण गाइ रे ॥३७॥

——०:——

वस्तुपाल तेजपाल रास

सरसति सामिणि मनि धरुं, प्रणमुं सुह गुरु पाय ।
वसतपाल तेजपाल नउ, रास कहुं सुपसाय ॥१॥
पोरुयाड़ वंसइ प्रगट, जिण सासण सिणगार ।
करणी मोटी जिण करी, सहु जाणइ संसार ॥२॥
चंड प्रचंड अनुक्रमइ, सोम अनइ आसराज ।
वस्तपाल तेजपाल बे, तसु नन्दन सिरताज ॥३॥
माता कुंयरि उरि रतन, पाटण नगर निवास ।
वीरधवल राजा तणा, मुहुता पुण्य प्रकास ॥४॥
वरप अढार गया पछी, वरस अठारह सीम ।
वस्तपाल तेजपाल बे, भ्रम करणी कर ईम ॥५॥

ढाल पहिली—भरत नृप भावसुं ए, एहनी ढाल

धरम करणी करइ ए, वस्तपाल तेजपाल साह । ध.।
साते खेत्रे वित वावरइ ए, ल्यइ लछमी नउ लाह । १ । ध. ।
जैन प्रासाद करावीया ए, तेरह सइ नइ च्यार । ध.।
त्रिसहस गिणसइ करावीया ए, जीरण चैत्य उद्धार । २ । ध. ।
भगवंत बिंब भरावीया ए, सवा लाख अतिसार । ध.।
अढार कोड़ि द्रव्य लगाडीया ए, त्रिण्ह भराया भंडार । ३ । ध. ।
पांचसइ सिंहासन दांत ना ए, नव सह चउरासी पोसाल । ध.।
समोसरण पटकूलना ए, पांचसइ पांच रसाल । ४ । ध. ।

तउ हुँ यांधूं मारूं तेहनइ, ते कहे मूकि लगारो जी।
कुटंब नइ कहि आवुं हुँ एहवुं, मत करउ एह प्रकारो जी। ६ के.।
तउ तुं मूकइ ना मूकुं नहीं, तिण परि नारकी जीवो जी।
परमाहम्मी खिण मूकइ नहीं, तिहां पच्यउ ते करइ रीवो जी। ७ के.।
वलि प्रदेशी कहइ दादी हुँती, करती तुमारउ धर्मो जी।
तुम्हारे वचने ते थई देवता, सुखी हुस्यइ शुभ कर्मो जी। ८ प्र.।
हुँ पणि दादो नइ वल्लभ हुँतउ, तिण पणि न कह्यउ मुज्झो जी।
जीवदया पाले जिन धर्म करे, सुख संपति छइ तुज्झो जी। ६ प्र.।
सुणी नृप स्नान करि तुं नीसर्यउ, देहरा भणी सुपवित्तो जी।
विष्टा घर मांहि वइठउ आदमी, तेडइ तुं आवि तुरंतो जी।१० के.।
तिहां तुं जायइ कहइ जाउं नहीं, तउ ते आवइ केमो जी।
काम भोग लपटाणा ते रहइ, इहां दुर्गन्ध छइ एमो जी।११ के.।
कोटवाल चोर झाली आणी दियउ, मइं ते परीक्षा निमित्तो जी।
लोह कुंभी मांहि घाली काठउ, जच्यउ ब्युं घउ वार विछित्तो जी।१२।
वलि कुंभी उघाडी एकदा, मूयउ दीठउ तिवारउ जी।
कहउ ते जीव हुंतउ तउ किहां गयउ, छिद्र न दीसइ लगारउ जी।१३।
कूड़ागार शाला जिहां छिद्र नहीं, ते मांहि वइठउ कोयो जी।
जउ ते भेरि वजाडइ जोर सुं, शब्द सुणइ तुं सोयउ जी।१४ के.।
कहि ते शब्द किहां थी नीसर्यउ, छिद्र पड्यउ नहीं कोयउ जी।
तिम ए जीव सरूप तुं जाणिज्ये, अप्रतिहत गति होयोजी।१५ के.।
चोर कुंभी मांहि घाल्यउ मारिनइ, वलि एकदा ते दीठउ जी।
जीवाकुल दीठी देही तिहां, छिद्र विण किम ते पइठउ जी।१६ प्र.।
लोह नउं गोलउ धमणी मांहइ, धम्यउ लाल थयउ तत्कालउ जी।

चेदीया ब्राह्मण पांचसइ ए, वेद भणइ दरबारि । ध.।
गछवासी जती सातसइ ए, सूझतउ ल्यइ आहार ।१६। ध. ।
एक सहस नइ आठसइ ए, विहरइ एकल विहार । ध.।
एक हजार तापस वली ए, मठवासी अधिकार ।१७। ध. ।
परिघल सहु नइ पोखीयइ ए, अन पाणी भरपूर । ध.।
दय दयकार दीसइ सदा ए, अगव्यउ पुण्य पडूर ।१८। ध. ।
संघ पूजा वलि कीजीयइ, वरस माहे त्रिण वार । ध.।
साहमीवछल कीजीयइ ए, आभ्रण वस्त्र अपार ।१६। ध. ।
सेत्रुँजना संघवी थई ए, साढ़ी बारह जात्र । ध.।
वस्तपाल तेजपाल करी ए, निरमल कीधा गात्र ।२०। ध. ।

सर्वगाथा २५

दूहउ—१ ।

संवत बार सत्योतरइ, पहिली सेत्रुञ्ज जात्र ।
कीधी सबल पडूर सुं, ते कहियइ लव मात्र ।।१।।

सर्वगाथा २६

ढाल—त्रीजी

तिमरी पासइ वडलु गाम, एहनी ढाल.

वस्तपाल तेजपाल बेहु भाई, सेत्रुञ्ज जात्र नी कीधी सजाई।
पांच सहस पांचसइ सेजवाली, वलीय अढारसइ वहिली रंगाली।१।
सातसइ वलि सिंहासन सोहइ, पांचसइ पालखी जन मन मोहइ।
उगणीस सइ सींकरी अतिसार, चपल तुरंगम च्यार हजार। २।
करहलां कोटइ घूघरमाल, बि सहस सोहइ संघ विचाल ।
जैन गायन च्यार सइ चउरासी, तेत्रीस सइ बंदीजन भासी। ३।
तेत्रीसइ वलि वादी भट्ट, सातसइ आचारिज गह गट्ट ।
इग्यारह सइ दिगंबर साध, एकत्रीस सइ सेतंबर बाध। ४।

इहां वलि बीजउ दृष्टांत दाखव्यउ, भारवाहक नउ विचारो जी।
भारवाहइ तणउ कावड़ी भली, साज विना नाकारो जी ।२६ के.।
सूत्र वांची नइ सगलुं समझज्यो, तिहां विस्तर संबंधो जी।
केशी प्रदेशी राजा तणउ, समयसुंदर कहइ प्रबन्धो जी ।३० के.।

ढाल तीजी—राजिमती राणी इण परि बोलइ, नेमि विना
कुण घुंघट खोलइ ।

इत्यादिक प्रश्नोत्तर करतां, हेतु जुगति हिया मांहि धरतां ।
परदेशी राजा प्रतिबोध्यउ, केशी गुरु श्रावक कियो सूधउ । २ । प.।
मिथ्यात नी मति दूर निवारी, साची सद्दहणा मन धारी । ३ । प.।
हिंसा दुर्गतिना दुख खाणी, जीव दया साची करि जाणी । ४ । प.।
जूदउ जीव नइ जूदो काया, परलोकगामी जीव जणाया । ५ । प.।
जड्ड तणी वात जाणी जिवारइ, मइं जाणुं तुमे ज्ञानि तिवारइ। ६ ।प.।
पणि जाणतउं हुँ वांकउ बोल्यउ, हेतु जुगति करतां हियउ खोल्यउ ।७।
आपणउ सगलउ अपराध खामइ, केशी गुरु नइ निज शीस नामइ।
श्रावक ना बारह व्रत लीधा, जन्म जीवित सफला सहु कीधा। ६ प.।
उतपति सातसै गामनी कीधी, त्रिहुं बाटे वांटी नइ दीधी ।१० प.।
राज, अंतेउर, पुण्य नइ खातइ, इण परिठः रहइं दिन रातइं ।११।प.।
रमणिक पणुं रूडो परि राख्युं, भलो परि मान्युं गुरु भाख्युं ।१२।प.।
त्रीजी ढाल थई ए पूरी, समयसुन्दर कहि वात अधूरी ।१३। प.।

ढाल ४—राग धन्याश्री—पास जिन जुहारियइ, एहनी ढाल

परदेशी श्रावक थयउ, बारह व्रत सूधा पालइ रे ।
मूल अनइ उत्तर तणा, दूषण ते सगला टालइ रे । १ । प.।

पुंजरत्न ऋषि रास

श्री महावीर ना पाय नमूं, ध्यान धरुं निशदीश।
तीरथ वर्ते जेहनो, वरस सहस इक्वीस ॥ १ ॥

साधु साध सहु को कहै, पिण साधु छै विरला कोइ।
दुःषम काले दोहिलो, सबल पुण्य मिलइ सोय ॥ २ ॥

पण तप जप नी खप करै, पालइ पंचाचार।
सूत्रे बोल्यो साधु ते, वंदनीक व्यवहार ॥ ३ ॥

भला दान शील भावना, पिण तप सरिखो नहीं कोय।
दुःख दीजइ निज देह नें, 'घातें वड़ा न होय' ॥ ४ ॥

मुनिवर चउद हजार मइं, श्रेणिक सभा मझार।
वीर जिणंद वखाणियो, धन धन्नो अणगार ॥ ५ ॥

वासुदेव करै वीनति, साधु छै सहस अढार।
कुण अधिको जिनवर कहै, ढंढण ऋषि अणगार ॥ ६ ॥

ए तपसी आगइ हुआ, पणि हिवे कहुं प्रस्ताव।
आजनइ कालइ एहवा, पुञ्जा ऋषि महानुभाव ॥ ७ ॥

श्री पार्श्वचंद ना गच्छ मांहे, ए पुञ्जो ऋषि आज।
आप तरें नैं तारवै, जिम वड़ सफरी जहाज ॥ ८ ॥

पुञ्जै ऋषि पृच्छा धरम, संयम लीधो सार।
कीधा तप जप आकरा, ते सुणज्यो अधिकार ॥ ६ ॥

क्षुल्लक ऋषि रास

राग--गउड़ी । इकदिन महाजन आवए अथवा श्री नवकार मनि ध्याइयइ, ए गीता छन्द नी ढाल

पारसनाथ प्रणमी करी, जालोर ज्योति प्रकाशो जी ।
भाव भगति सुं हुँ भणुँ, ऋषि क्षुल्लक नउ रासो जी ॥
ऋषि क्षुल्लक नउ रास हुं भणुँ, गिरुयानां गुण गाववां ।
आंपणी जीभ पवित्र थायइ, श्रावक नइं संभलावतां ॥
ए भरत क्षेत्र मइं अति मनोहर, अयोध्या नामइ पुरी ।
तिहां लोक ऋद्धि समृद्धि सहु को, पारसनाथ प्रणमी करी ॥ १ ॥

राज करइ तिहां राजियउ, पुण्डरीक नाम नरिंदो जी ।
गुणसुन्दरी तसु भारिजा, पामइ परमाणंदो जी ॥
पामइ परमाणंद तेहनइ, कंडरीक भाई भलउ ।
भारिजा तेहनइ जसोभद्रा, रूप शील कला निलउ ॥
एक दिवस सुन्दर रूप देखी, राजा चित्त विचारियउ ।
भोगवुं जिम तिम करी भउजाई, राज करइ तिहां राजियउ ॥ २ ॥

कामातुर न करइ किसुं, क्रोधी किसुं न करेउ जी ।
लोभी पिण न करइ किसुं, आप मरइ मारेवउ जी ॥
आपण मरइ न मारेउ कांइ, अकारिज कारिज किसुं ।
करतो न जाणइ पछइ परवसि, मद पीधइ माणस जिसुं ॥
पापियउ प्राणी इम न जाणइ, नरग ना दुख देखिसुं ।
इह लोक मांहे हुस्यइ अपजस, कामातुर न करइ किसुं ॥ ३ ॥

चार चार बारह व.र कीधा, दस दस चउ चौवीस रे ।
बे सै पंचास अठाइ कीधी, मन संवेग सुँ मेल रे ॥१६॥
छट्ठ कीधा वलि सित्तर दिन लगै, पारणै छासि आहार रे।
ते मांहि पिण एक अठाइ, कीधी इण अणगार रे ॥२०॥
बासठ दिन तांइ छठि कीधी, पारणइ छासि आहार रे।
चार बरस लगि विगय न लीधी, ऋषि पुंजा नै सावासरे॥२१॥
बरस पांच लग वस्त्र न ओढ्यो, सह्यो परिसह सीत रे।
साढा पांच बरस सीम आढो, सूतो नहीं सुविदीत रे॥२२॥
अभिग्रह एक कीधो वलि एहवो, चिठी लिखी तिहां एम रे।
च्यार जणी पूजा करि इहां, तो घी वहिरावइ सुप्रेम रे॥२३॥
तौ पुंजो ऋषि लें नहीं तर, जावजीव तांइ सुंस रे।
ते अभिग्रह तीजै वर्षे फलीयो, श्री संघ नी पहुँची हुंस रे॥२४॥
इण परि तेह अभिग्रह पहुतो, ते सांभलज्यो वात रे।
अहमदाबादी संघ नरोड़इ, वांदवा गयो परभात रे॥२५॥
तिण अवसर फूलां गमतांदे, जीवी राजुलदे च्यार रे।
पूजा करि वांदी विहरायो, सूझतो घी सुविचार रे॥२६॥
मोटो लाभ थयो श्राविका ने, टाल्यौं तिहां अंतराय रे।
इण चिहुँ नैं मन वंछित वस्तु नो, अंतराय नवि थाय रे॥२७॥
वलि धन्ना अणगार तणो तप, कीधो नव मासी सीम रे।
ते मांहिं वी अठाइ उपवास, च्यार अठम च्यार नीम रे॥२८॥
छमास सीम अभिग्रह कीधा, कोई फल्यो उपवास च्यार रे।
उपवास सोल फल्यो कोइ, एह तप नो अधिकार रे॥२६॥

पाधरी पहुँती धरमसाला, साधवी धरम सुणावियउ।
चारित लीधउ चतुर नारी, भाई मारि मुंडउ कीयउ ॥ ७ ॥

ढाल बीजी। राग—कालहरउ, तुङ्गिया गिरि शिखरि सोहइ
अथवा—वृझि रे तूं वृझि प्राणी ए गीत नी ढाल.

भली साधवी यशोभद्रा, पालइ पंचाचार रे।
विनय वेयावच करइ वारू, गिणइ गुरुणी नी कार रे। १। भ.।
एक दिन पेट नउ गरभ दीठउ, गुरुणी पूछयु स्युं एह रे।
पति नउ गरभ ए हुतउ पहिलउ, नहिं पछिलउ निसंदेह रे।२। भ.।
बाई तुं बाहिर म जाई, करिस्यां अम्हे सहु काज रे।
गुरु गुरुणी मा बाप सरिखा, राखै छोरू लाज रे। ३। भ.।
पूरे मासे पुत्र जायउ, नामइ खुल्ल कुमार रे।
सज्यातरी श्राविका पाल्यउ, पइदा पोश प्रकार रे। ४। भ.।
आठ वरस नउ थयउ ग्रहइ, माता नी मानी सीख रे।
आचारिज श्री अजितसूरि नइ, पासइ लीधा दीख रे। ५। भ.।
सूत्र सिद्धांत भण्या भली परि, बार वरस थया जाम रे।
हरिहर ब्रह्मा जिण हराव्या, ते तसु जाग्यउ काम रे। ६। भ.।
मा पास जइ कहइ मुनिवर, मन नहीं माहरुं ठाम रे।
आ ल्यइ ओघउ मुंहपती तुं, को नहीं माहरइ काम रे। ७। भ.।
कठिन लोचनइ कठिन किरिया, कठिन मारग जोग रे।
सील पालिवउ नहीं सोहिलउ, हुँ भोगविसुं काम भोग रे। ८। भ.।

केशी प्रदेशी प्रबन्ध

धन धन अयवंती सुकुमालनइ एहनी, ढाल।

श्री सावत्थी समोसर्या, पांचसइ मुनि परिवारो जी।
चउनाणी चारित्तिया, केशी श्रमण कुमारो जी।१।
केशी नइ करुं वंदना, पारसनाथ संतानो जी।
परदेशी प्रतिबोधियउ, मिथ्यामति अज्ञानो जी।२। के.। श्रां.
श्रावक थयउ चित्र सारथी, ते लेइ गयउ तेथोजी।
परदेशी पापी हुतउ, कहइ जीव जुदउ न केथो जी।३। के.।
केशी प्रदेशी भेला थया, चित्र प्रपंच थी दोयो जी।
प्रश्न उत्तर थया परगड़ा, ते सुणजो सहु कोयो जी।४। के.।

ढाल बीजी—नींदड़ीयानी

प्रश्न करइ परदेशी एहवउ, परलोक मानुं केमो जी।
जीव नइ काया ते नहीं जूजुआ, इह लोक ऊपरि प्रेमो जी। १ प्र.।
दादउ हुँतउ माहरइ दीपतउ, करतउ पाप अघोरो जी।
तुम्हारइ वचने ते नरके गयउ, जिहां वेदन छइ जोरो जी। २ प्र.।
हुँ पणि तेहनउ अति वल्लभ हुँतउ, ते आविनइ कहंतउ जी।
पाप म करिजे तुं माहरी परि, दुःख देखिस दुर्दन्तो जी। ३ प्र.।
केशी गुरु उत्तर कहइ एहवउ, सुणि परदेशी रायउ जी।
जीव काया छइ बेउ जूजुआ, जुगति थकी समझायउ जी। ४ प्र.।
केशी गुरु उत्तर द्यइ एहवउ ॥ आंकणी ॥
सुणि परदेशी ताहरी भारजा, सूरिकंता नामो जी।
भोगवतउ देखइ तुं तेहनइ, नरनइ स्युं करइ तामो जी। ५ के.।

रतन कंबल मुंद्रड़ी ल्यइ, करिस्यइ ए सहु काज रे ।
इण दीठइ आपस्यइ तुझ नइ, आधउ आंपणउ राज रे ।२०। भ.।
रिषड़उ रमतउ थकउ, चाल्यउ चंचल चित्त रे ।
उतावलउ आव्यउ अयोध्या, राज लेवा निमित्त रे ।२१। भ.।

ढाल त्रीजी, जाति परिया नी । सखि जादव कोडि सुं परिवरे प्रियु आये तोरण बारि रे एह गीत नी ढाल ॥

तिणि अवसर नाटक तिहां राजा, आगला पड़इ राति रे ।
मिली खलक लोगाई, पयरो मांटी बहु भांति रे । १ ।
नटुई नाटक करइ, मुखि गायइ मीठा गीत रे ।
नर नारी मोही रह्या, पणि रीझइ नहीं चित्त रे । २ ।न.।
राति सारी नटुई रमी, पणि द्यइ नहीं राजा दान रे ।
नटुई नीरस थइ भमती, भांजइ तान मान रे । ३ ।न.।
दिलगीर दान विना थई, ऊँघ सेती आंखि घोलाई रे ।
नटुयउ गाथा कही, रंग मइ भंग म करे काई रे । ४ ।न.।

गाथा यथा—सुट्ठु गाईयं सुट्ठु वाइयं सुट्ठु नच्चियं साम सुन्दरि अणुपालिय दीह रायं सुमिणंते मास मास माय ए ॥१॥

रतन कंबल क्षुल्लक दीयउ, कुमरइ दिया कुण्डल दोइ रे ।
मुहतइ कड़ओ आपियउ, राजा निजरि जोय रे । ५ ।न.।
अंकुश पीलवाण आपियउ, सारथवाही दीयउ हार रे ।
ए पांचे अति रंजिया, तिण दीधउ दान अपार रे । ६ ।न.।

छिद्र विण अगनि पइठी कहि किम इहां, तिम तुँ जीव निहालउजी।१७के.।
जीवतउ नइ मुंयउ चोर मइं तोलियउ, लाकड़ि घाली तंतो जी।
बेउ बराबरि सरखा उतर्या, विण जीव ओछउ हुँतउ जी।१८ प्र.।
दइड़ी धाय भरी ठाली थकी तोलीजइ जउ बेयो जी।
वधइ घटइ नहीं बे तोली थकी, ए दृष्टान्त कहेयो जी।१९ के.।
चोर एक मइं तिल तिल चीरनइ, जोयउ जीव छइ केथो जी।
पणि ते जीव न दीठउ मइं किहां, जीव जुदउ नहीं एथो जी।२० प्र.।
अगनि लेइ नइ केइ गया काननइ, काष्ट लेआ नइ काजो जी।
भोजन भणी ते सहु मेला थया, सगलउ मेल्यउ साजो जी।२१ के.।
आगि ओल्हाइ गई ते एहवइ, कहि कुण करिस्यइ चालो जी।
अरणी नउ सरियउ घसि लाकड़इ, अगनि पाड़ी तत्कालो जी।२२ के.।
काष्ट मांहि ते अगनि न दीसती, पण ते प्रगटी प्रत्यक्षो जी।
तिम ते जीव जुदउ काया थकी, अमूरत एह अलक्षो जी।२३ के.।
तरुण पुरुष कोई सबल पराक्रमी, सकल कला नउ जाणो जी।
तिम ते बालक मंद पराक्रमी, नांखी न सकइ बाणो जी।२४ प्र.।
तिण काया तेहिज जीव जाणिवउ, जउ जुदउ जीव हुँतउ जी।
तउ जीव तरुण बालक बिहुँ मइं हुँतउ, बालक नांखि सकंतउ जी।२५प्र.
तरुण नांखइ बालक नांखइ नहीं, प्रबल मंद बल हेतो जी।
जीवनइ काया तिण जुदो नहीं, सरदहणाए फेरो जी।२६ प्र.।
तरुण पुरुष अति सबल पराक्रमी, पणि धनुष घण खाधो जी।
पणच जुनी नइ घण खाधो वली, तार सल्यउ नइ आधो जी।२७ के.।
तरुण तिकउ तीर कां नांखइ नहीं, नृप कहइ नहीं काज कोयो जी।
तिम ते बालक मांहि सगति नहीं, पण जुदउ जीव होयो जी।२८ के.।

ढ.ल चउथी—नीबइयानी अथवा चरण करण धर मुनिवर बंदियइ ए.—श्री पुण्यसागर उपाध्याय नी कीधी साधु वंदना नी ढाल।

ए पांच जणे संजम आदर्यउ, श्री सद्गुरु नइ पासो जी।
अचरिज लोक सहू नइ उपनउ, सहु आपइ साबासो जी। १ ए.।
पाप थकी पाछा वल्या, सफल कियउ अवतारो जी।
तप जप किरिया कीधी आकरी, पाम्यउ भव नउ पारो जी। २ ए.।
क्षुल्लक कुमर मांहे सबलउ हुँतउ, दाक्षिण गुण अभिरामो जी।
पाप करंतां विचमें विलंब करी, आणयउ शुभ परिणामो जी। ३ ए.।
परमादइ पहिलुं हुयइ पापिया, पछइ आणयउ मन ठामो जी।
दशवैकालिक सूत्र मांहे कह्यो, ते उत्तम गति पामो जी। ४ ए.।
ते पांचे प्रतिबूधा देखि नइ, प्रतिबूधा बहु लोको जी।
समकित श्रावक ना व्रत आदर्यां, जीव दया यथा योगो जी। ५ ए.।
श्रावक श्राविका सहु को सांभलउ, तुम्हे छउ चतुर सुजाणो जी।
जन्म जीवित सफलउ करउ आपणउ, करउ आखड़ी पचक्खाणो जी
संवत सोलइ सइ चउराणुयइ, श्री जालोर मझारो जी।
समयसुन्दर चउमासउ इहां रह्या, जाणयउ लाभ जिवारो जी।७ ए.।
लूणीए फसले लाग देखी करी, राख्या आपणइ पासो जी।।
रूड़ी रहणी देखी रंजिया, सहु को कहइ साबासो जी। ८ ए
लूणिया फसला दृढ़ साउंसखा, सकज कांकरिया साहो जी।
जिनसागरसूरि श्रावक　　आणी मनि उल्लासो जी। ६ ए.।
रिषि मंडल टीका　　क्षुल्लक कुमर नउ रासो जी।
समयसुंदर कहइ　　लील विलासो जी।१० ए.।

रासः समाप्तः।

पोषउ पडिकमणउ करइ, साथ सावची नइ थइ दानो रे ।
शीलव्रत सुधुं धरइ, रात दिवस करइ धमध्यानो रे । २ । प.।
निज स्वारथ अन-पहुंचतां, निज सुरिकन्ता नारो रे ।
पापिणी पति नइ विष दियउ, पिण देखस्यइ दुःख भारो रे । ३ । प.।
अणसण नइ आराधना छेहडइ, करि सद्गुरु शाखि रे ।
पाप आलोइ पडिकमी, वलि मिच्छामि दुक्कडं दाखि रे । ४ । प.।
काल करीनइ ऊपनउ, पहिलइ देवलोक मझारो रे ।
सुरिआभ नामइ देवतां, आउखुं पल्योपम चारो रे । ५ । प.।
आमलकल्पा आविनइ, श्री महावीर नइ आगइ रे ।
छत्तीस बद्ध नाटक कियउ, रुडि परि मन नइ रागिइ रे । ६ । प.।
भगवंत नइ भव पूछिया कहाउ, तुं छइ चरम शरीरी रे ।
सुरियाभ वार्ता सहु, गौतम पूछी कहि वीरो रे । ७ । प.।
सुरियाभ तिहां थी चवी, उपजस्यइ महा-विदेहो रे ।
उत्तमकुल ते पामिस्यइ, पणि नहीं करइ कुटम सनेहो रे । ८ । प.।
थविर पासि संजम धरी, तप आम आदरस्यइ रे ।
केवलज्ञान लही करी, आठ कर्म तणउ अंत करिस्यइ रे । ९ । प.।
रायपसेणी सूत्र थी, केशी प्रदेशी प्रवन्धो रे ।
समयसुन्दर कहइ मैं कियउ, सज्झाय भणी संबंधो रे ।१०। प.।

सर्वगाथा ५७ ॥ इति श्री केशी प्रदेशी प्रबन्धः समाप्तः ।
सं० १६६६ वर्षे चैत्र सुदि २ दिने कृतोलिखितश्च श्री अहमदावाद नगरे श्रीहाजापटेल पोल मध्यवर्ती श्रीबृहत्खरतरोपाश्रये भट्टारक श्रीजिनसागरसूरि विजयिराज्ये श्रीसमयसुन्दरोपाध्यायैः पं० हर्षकुशलगणि सहाय्यैः ।

ढाल पहिली—नयरी द्वारामती कृष्ण नरेस एहनी, राग रामगिरि ।

सेत्रुञ्ज[१] नइ श्री पुण्डरीक[२], सिद्धक्षेत्र[३] कहुं तहतीक ।
विमलाचल[४] नइ करूँ प्रणाम, ए सेत्रुञ्ज ना एकवीस नाम ॥१॥
सुरगिरि[५] नइ महागिरि[६] पुण्यरासि[७], श्रीपद पर्वत इंद्रप्रकासि ।
महातीरथ[८] पूरवइ सुखकाम, ए सेत्रुञ्ज ना एकवीस नाम ॥२॥
सासतउ पर्वत नइ दृढशक्ति, मुक्ति निलउ तिण कीजइ भक्ति ।
पुष्पदंत महापद्म सुठाम, ए सेत्रुञ्ज ना एकवीस नाम ॥३॥
पृथिवीपीठ सुभद्र कैलास, पातालमूल अकर्मक तास ।
सर्व कामद कीजइ गुण गाम, ए सेत्रुञ्ज ना एकवीस नाम ॥४॥
ए सेत्रुञ्ज नां एकवीस नाम, जपइ जे वइठइ[१] अपणी ठाम ।
सेत्रुञ्ज यात्रा नउ फल लहइ, महावीर भगवंत इम कहइ ॥५॥

सर्व गाथा ११

दूहा

सेत्रुञ्जउ पहिलइ अरइ, असी जोयण परिमाण ।
पहिलउ मूलइ ऊँच पणि, छव्वीस जोयण जाणि ॥१॥
सत्तरि जोयण जाणिवउ, बीजइ अरइ विसाल ।
वीस जोयण ऊँचउ कह्यउ, मुझ वंदणा त्रिकाल ॥२॥
साठ जोयण त्रीजइ अरइ, पिहुलउ तीरथराय ।
सोल जोयण ऊँचउ सही, ध्यान धरूँ चितलाय ॥३॥

---

[१] वैठौ आपणी ।

मल मला करइ राव मेटणा, चंदन चोवा अबीरो जी ।
माणिक मोती मूँगिया, चोली चरणा चीरो जी ॥
चोली मइ चरणा चीर सखरा, सुंखड़ा सुसबद ए ।
रली रंग स्युं लइ जसोभद्रा, जाणइ जेठ प्रसाद ए ॥
उपाय मांड्यउ राय एहवा, मन धीरिज ना मेटणा ।
पुण्डरीक कामातुर थयउ घणुं, मल मला करइ भेटणा ॥ ४ ॥
एक दिन एकान्ते आव ए, प्रारथना करइ राजो जी ।
भोग भोगवि भला मुझ सुं, मन सेती मन लायो जी ॥
मन सेती मन लाय मुझ सुं, मकरिस ताणा ताण ए ।
वाहरउ जोवन जाइ लहरे, तुं छइ चतुर सुजाण ए ॥
एहवइ धीरिज रहइ ते घन, परलोक सुख पाव ए ।
पणि करम नइ वसि पड्यउ माणी,एक दिन एकांत आवए॥ ५ ॥
एह सराग वचन सुणी, मुहड़इ आंगुली देयो जी ।
भउजाई कहइ मत भणइ, लोक मइं लाज मरेयो जी ॥
लोक मइं लाज मरेप बांधव, थकी इम किम वोलियइ ।
धीरिज धरंता धरम थायइ, धरम थी नवि डोलियइ ॥
उपाय मांड्यउ अधम राजा, भाई नउ मारण भणी ।
कामान्ध माणस किसुं न करइ,ए सराग वचन सुणी ॥ ६ ॥
भाई मारि मूँडउ कियउ, हुयउ हाहाकारो जी ।
शील राखण नारी सती, शील वडउ संसारो जी ॥
शील वड़उ जाणी जसोभद्रा, साथ मइं भेली थई ।
हा दैव ! स्युं थयुं दुःख करती, सावथी नगरी गई ॥

पोतरा प्रथम तिर्थंकर केरा, द्राविड नइ [1]वालखिल्ल रे ।
काती सुदि पुनिम दिन सीधा, दस कोडि मुनि सुं निसल्ल रे । ७ । से. ।
पांचे पांडव इण गिरि सीधा, नव नारद रिषीराय रे ।
संब प्रजूण गया इहां मुगति, आठे करम खपाय रे । ८ । से. ।
नेमि विना तेवीस तिर्थंकर, समोसरचा गिरि शृङ्गि रे ।
अजित शांति तिर्थंकर बेऊ, रह्या चौमासउ रंगि रे । ६ । से. ।
सहस साधु परिवार संघाति, थावच्चा सुत साथ रे ।
पांचसइ साध सूँ सेलग मुनिवर, सेत्रुञ्ज शिवसुख लाधरे । १० । से. ।
असंख्यात मुनि सेत्रुञ्ज सीधा, भरतेसर नइ पाट रे ।
राम अनै भरतादिक सीधा, मुगति तणो ए वाट रे । ११ । से. ।
जालि मयालि अनै उवयालि, प्रमुख साधुनी कोडि रे ।
साध अनंता सेत्रुञ्ज सीधा, प्रणमूँ बेकर जोडि रे । १२ । से. ।
सर्वगाथा २६

ढाल त्रीजी चउपई नी

सेत्रुञ्जना कहूँ सोल उद्धार, ते सुणिज्यो सहु को सुविचार ।
सुणतां आणंद अंगि न माइ, जनम जनम ना पातक जाइ ॥ १ ॥
रिषभदेव अयोध्यापुरी, समोसरचा सामी हित करी ।
भरत गयउ वंदणनइ काजि, ए उपदेस दियउ जिनराजि ॥ २ ॥
जग मांहि मोटा अरिहंत देव, चउसट्ठि इंद्र करउ जसु सेव ।
तेथी मोटउ संघ कहाय, जेहनइ प्रणमइ जिणवर राय ॥ ३ ॥

[1] वार

साधवी माता कहइ सांभलि, झूंडा ए काम भोग रे ।
आलिंगन लोह पूतली सुं, परमाहम्मी प्रयोग रे । ६ । म.।
कुण जाणइ आगल किस्यूँ छइ, प्रत्यच मीठउ प्रेम रे ।
गुरुणी कीर्तिमती छइ माहरइ, ते कहइ तुं करि तेम रे ।१०। म.।
सीख द्यउ मुझ शील न पलइ, मुझ तुमे मात समान रे ।
बार बरस रह्यो मां नइ आग्रहइ, बार बरस मुझ मान रे ।११। म.।
क्षुल्लक मांहि दाक्षिण्य भलउ, ते पणि मानी बात रे ।
बार बरस जिम तिम रह्यौ, पणि धुरिली न गई धात रे।१२। म.।
गुरुणी कहइ गुर पासि जा तुं, जिणि तुँनइ दीधी दीख रे।
गच्छनायक पासि जइ कहइ, सामी द्यउ मुझ सीख रे ।१३। म.।
गच्छनायक प्रतिबोधि दीधउ, पणि लागउ नहीं कोई रे ।
करम विवरउ न द्यइ त्यां सीम, जीव नउ जोर न होइ रे।१४। म.।
आचारिज कहइ गच्छ अम्हारउ, उपाध्याय नइ हाथि रे ।
एकला अम्हे कांइ न करुं, सहु उपाध्याय साथि रे ।१५। म.।
मन विना पणि वचन मानी, पहुँतउ उपाध्याय पासि रे।
उपाध्याय कहइ परखि इणि परि, वलि सउ तिम पंचास रे।१६। म.।
बार बरस लगि रह्यउ अबोलउ, दाखिण गुण निसदीस रे।
ऊचल चिच चित्त रह्यउ इसी परि, वरस अठतालीस रे।१७। म.।
आंपणी माता पासि आव्यउ, बोलइ बेकर जोडि रे ।
आ ओघउ हुं रहि न सकुं, जाउं छुं व्रत छोडि रे ।१८। म.।
मोहनी वसि कहइ माता, संपति विणुं नहीं सुख रे ।
पीतरिया पासि जा तुं पाधरउ, देखिस नहीं तरि दुःख रे।१९। म.।

गणधर देव तणइ उपदेस, इंद्रइ वलि दीधउ आदेस।
आदिनाथ तणउ देहरउ, भरत करायउ गिरि सेहरउ ॥१५॥
सोना नउ प्रासाद उत्तङ्ग, रतन तणी प्रतिमा मन रंग।
भरतइ श्री आदीसर तणी, प्रतिमा थापी सोहामणी ॥१६॥
मरुदेवी नी प्रतिमा वली, माही पुनिम थापी रली।
ब्राह्मी सुंदरि प्रमुख प्रासाद, भरतइ थाप्या नवल* निनाद ॥१७॥
इम अनेक प्रतिमा प्रासाद, भरत कराया गुरु सुप्रसाद।
भरत तणउ पहलउ उद्धार, सगलउ ही जाणइ संसार ॥१८॥
सर्वगाथा ४७

ढाल चौथी-राग आसाउरी-सिंधुडउ।
(जीवड़ा जिन ध्रम कीजयइ, एहनी ढाल)

भरत तणइ पाटि आठमइ, दंडवीरज थयउ रायो जी।
भरत तणी परि संघ कियउ, सेत्रुंज संघवी कहायो जी।१।
सेत्रुंज उद्धार सांभलउ, सोल मोटा श्रीकारो जी।
असंख्यात बीजा वली, तेनहि† कहूँ अधिकारो जी।२। से.।
चैत्य करायउ रूपा तणउ, सोना नउ बिंब सारो जी।
मूलगउ बिंब भंडारियउ, पछिम दिस तिण वारो जी।३। से.।
सेत्रुंज नी यात्रा करी, सफल कीयउ अवतारो जी।
दंडवीरज राजा तणउ, ए बीजउ उद्धारो जी।४। से.।
सउ सागरोपम व्यतिक्रम्या, दंडवीरज थी जिवारो जी।
ईसानेंद्र करावियउ, ए त्रीजउ उद्धारो जी।५। से.।

* नवलइ नाद † तेहना

लाख लाख मोल पांचनउ, नइइ हुई सबल निहाल रे।
बीजे पणि लोके, मन मान्यउ दीधो माल रे।७।न.।
रीस करी राय ऊठियउ, परमावे तेड्या पंच रे।
पहिलउ दान किम दियउ खरइ, कहइं ते नहिं खल खंच रे।८।न.।
कुमर कहइ राजि सांभलउ, मुझनइ तुम्हे द्यउ नहीं राज रे।
नाटक उठतां पछो, राजा मारी लेउं आज रे।६।न.।
एहवइ नाटकणी दियउ, मुझ नइ प्रतिबोध अपार रे।
घणउ काल गयउं हिव थोड़इ, लियइ जनम म हारि रे।१०।न.।
मंत्रि कहइ राजि संभलउ, मुझ नइ न द्यउ वाडी ग्रास रे।
आज वयरी तेड़ि नइ, राज तणउ करूँ नास रे।११।न.।
चुल्लक ऋषि योल्यउ खरउ, दोक्षा मांहि दीठा दुक्ख रे।
आज आयउ राज लेईनइ, संसार ना मोगवुं सुक्ख रे।१२।न.।
मीठ कहइ राजि मुझनइ, तुं द्यइ नहीं पूरउ ग्रास रे।
हाथी नइ अपहरी, जाणुं जासुं बीजा पासि रे।१३।न.।
सार्थवाही साचूं कह्यउ, आज लोपसि कुलाचार रे।
बार वरस पूरा थया, अजी नाव्यउ मुझ भरतार रे।१४।न.।
राजा कहइ पांचां प्रति, हूँ पूरूं सगली आस रे।
पणि ते पांचइ कहइ अम्हे, न पड़ुं पाप नइ पासि रे।१५।न.।
अम्हे काम भोग थी ऊभगा, जाण्यउ संसार असार रे।
जोबन धन कारिमुं, अम्हे संजम लेस्युं सार रे।१६।न.।

—:o:—

पोरुयाड* जावड करावियउ, ए तेरमो उद्धारो जी ।१६। से.।
संवत बार तिरोतरइ, श्रीमाली सुविचारो जी ।
बाहडदे मुँहतइ करावियउ, ए चवदमउ उद्धारो जी ।१७। से.।
संवत तेर इकोतरइ†, देसलहर अधिकारो जी ।
समरइ साह करावियउ, ए पनरमउ उद्धारो जी ।१८। से.।
संवत पनर सित्यासियइ, वैसाख वदि सुभ वारो जी ।
करमइ दोसी करावियउ, ए सोलमउ उद्धारो जी ।१९। से.।
संप्रति कालइ सोलमउ, ए वरतइ छइ उद्धारो जी ।
नित नित कीजइ वंदना, पामीजइ भव पारो जी ।२०। से.।

सर्वगाथा ६७

दूहा

वलि सेत्रुंज महातम कहुं, सांभलउ जिम छइ तेम ।
सूरि धनेसर इम कहइ, महावीर कहइ एम ॥१॥
जेहवउ तेहवउ दरसणी, सेत्रुंजइ पूजनीक ।
भगवंत नउ वेस वांदतां¶, लाभ हुवइ तहतीक ॥२॥
श्री सेत्रुँजा ऊपरइ, चैत्य करावइ जेह ।
दल परमाणू समलहइ‡, पल्योपम सुख तेह ॥३॥
सेत्रुञ्ज ऊपरि देहरउ, नवउ नीपावइ कोय ।
जीरणोद्धार करावतां, आठ गुणउ फलहोय ॥४॥
सिर ऊपर गागरि धरि, स्नात्र करावइ नारि ।
चक्रवति नी अस्त्री थई, सिव सुख पामइ सार ॥५॥

* पोरवाड़, † एकोतरइ, ¶ मानवां, ‡ समो

श्री शत्रुंजय तीर्थ रास[†]

श्री रिसहेसर पय नमी, आणी मनि आणंद ।
रास भणुं रलियामणउ, सत्रुञ्ज नउ सुखकंद ॥१॥
संवत च्यार सत्योतरइ, हुयउ धनेसरसूरि ।
तिण सेत्रुंज महातम कीयउ, सिलादित्त हजूरि ॥२॥
वीर जिणिंद समोसर्या, सेत्रुंज उपरि जेम ।
इंद्रादिक आगइ कह्यउ, सेत्रुंज महातम एम ॥३॥
सेत्रुंज तीरथ सारखउ, नहीं छइ तीरथ कोय ।
सर्ग* मृत्य पाताल मइ, तीरथ सगला जोय ॥४॥
नामइ नवनिध संपजइ, दीठां दुरित पलाय ।
भेटंतां भवभय टलइ, सेवतां सुख थाइ ॥५॥
जंबू नामइ दीप ए, दखिण भरत मझार ।
सोरठ देस सोहामणउ, तिहां छइ तीरथ सार ॥६॥

---

† १८वीं शती के भक्तिविशाल के ओसियां में लिखित प्रति में प्रारम्भ में निम्नोक्त दो श्लोक अधिक हैं—

श्री शत्रुञ्जय तीर्थस्य संति रासा अनेकशः ।
प्रवर्त्तमानास्सर्वत्र नाना कवि विनिर्मिताः ॥१॥
परं मया स्वजिह्वायाः पवित्र करणार्थिना ।
ग्रन्थानुसारतश्चक्रे रासः स्वपरहेतवे ॥२॥ युग्मम्
कृतं श्री समयसुन्दरैः ।

* स्वर्ग मृत्यु

अंबिल करी पूजा करइ, तिण[1] टंक सुध[2] आचारो जी ।५। से.।
धांन पाणी रस चोरिया, ते[3] भेटइ सिध[4]खेत्रो जी ।
सेत्रुंज तलहटी साध नइं, पडिलाभइ सुध[5] चितो जी ।६। से.।
वस्त्राभरण जिणे हर्या, ते छूटइ इण मेलो जी ।
आदिनाथ नी पूजा करइ, अहऊठी बिहुँ वेलो जी ।७। से.।
देवगुरु नउ धन जे हरइ, ते सुध थायइ एमो जी ।
अधिक द्रव्य खरचइ तिहां, पात्र पोषइ बहु प्रेमो जी ।८। से.।
गाइ भइंसि घोडा मही, गज गृह चोरणहारो जी ।
द्यइ ते ते वस्तु तीरथइ, अरिहंत ध्यान प्रकारो जी ।९। से.।
पुस्तक देहरा पारका, तिहां लिखइ आंपणउ नामो जी ।
छूटइ छम्मास[6] तप कीयां, सामायिक तिण ठामो जी ।१०। से.।
कुमारी परिव्राजिका, सधव अधव गुरु नारो जी ।
व्रत भांजइ तेहनइ कह्यउ, छम्मासी तप सारो जी ।११। से.।
गो विप्र स्त्री बालक रिषी, एहनउ घातक जेहो जी ।
प्रतिमा आगइ आलोयतउ[*], छूटइ तप करि तेहो जी ।१२। से.।

सर्वगाथा ८७

ढाल छठी—रिषभप्रभु पूजीयइ, एहनी
राग—धन्यासिरी

सांप्रत[†] कालइ सोलमउ ए, भरतइ छइ उद्धार ।
सेत्रुँज जात्रा करूँ ए, सफल करूँ अवतार । १ । से.।

---

१ त्रिण, २ शुद्ध, ३ जे, ४ सिद्ध, ५ शुभ, ६ छमासी
* आलोयतां, † संप्रति

पंचास जोयण पहिलपणि, चउथइ अरइ मझारि ।
उंचउ दस जोयण अचल, नित प्रणमइ नरनारि ॥४॥
बार जोयण पंचम अरइ, मूल तणउ विस्तार ।
दो जोयण उंचउ अछइ, सेत्रुञ्ज तीरथ सार ॥५॥
सात हाथ छइ अरइ, पहिलउ परवत एह ।
उँचउ होस्यइ सउ धनुष, सासतउ तीरथ तेह ॥६॥
सर्वगाथा १७

ढाल बीजी—जिणवर सूँ मेरो मन लीणउ, राग आसावरी

केवलज्ञानी प्रमुख तिर्थंकर, अनंत सीधा इण ठाम रे ।
अनंत वली सीझस्यइ इण ठामइ, तिण करूँ नित्य परणाम रे । १ ।
सेत्रुञ्ज साध अनंता सीधा, सीझस्यइ वलिय अनंत रे ।
जिण सेत्रुञ्ज तीरथ नहिं भेट्यउ, ते गर्भवास कहंत रे । २ । से. ।
फागुण सुदि आठमिनइ दिवसइ, ऋषभदेव सुखकार रे ।
राइणि रूंखि समोसरथा सामी, पूरव निवाणूँ वार रे । ३ । से. ।
भरतपुत्र चैत्री पुनिम दिन, इण सेत्रुञ्ज गिर आई रे ।
पांच कोडि सूँ पुंडरीक सीधा, तिण पुंडरीक कहाइ रे । ४ । से. ।
नमि विनमी राजा विद्याधर, बि बि कोडि संगाति रे ।
फागुण सुदि दसमी दिन सीधा, तिण प्रणमूँ परभाति रे । ५ । से. ।
चैत्रमास वदि चवदस नइ दिन, नमि पुत्र चउसट्ठि रे ।
अणसण करि सेत्रुञ्जगिरि ऊपरि, ए सहु सीधा एकट्ठि रे । ६ । से. ।

सेत्रुञ्ज ऊपरि कीजोयइ ए, पांचे ठामे सनात्र । से. ।
कलस अट्ठोतर सउ करी ए, निरमल नीर सुगात्र ।१२। से. ।
प्रथम आदीसर आगलइ ए, पुण्डरीक गणधार । से. ।
रायणि नइ पगलां वली ए, शांतिनाथ सुखकार ।१३। से. ।
रायणि तलि पगलां नमुँ ए, चउमुख प्रतिमा च्यार । से. ।
वीजी भूमि विंवा* वली ए, पुण्डरीक गणधार ।१४। से. ।
सूरज कुण्ड निहालीयइ ए, अति भलि उलखी‡ झोल । से. ।
चेलणा तलाई सिधसिला ए, अंगि फरसुँ उल्लोल ।१५। से ।
आदिपुर पाज ऊतरूँ ए, सिधवड लुं विश्राम । से. ।
चेत्र परिवड इण परि करी ए, सीधा वंछित काम ।१६। से. ।
जात्रा करी सेत्रुञ्ज तणी ए, सफल कीयउ अवतार । से. ।
कुसल खेमसुँ आवीयउ ए, संघ सहु सपरिवार ।१७। से. ।
सेत्रुञ्ज रास सोहामणउ, सांभलजो सहु कोय । से. ।
घरि बइठां भणइ भाव सुं ए, तसु जात्रा फल होय ।१८। से. ।
संवत सोलसइ ब्यासीयइ ए, श्रावण वदि सुखकार । से. ।
रास भण्यउ सेत्रुंज तणउ, नगर नागोर मझार ।१९। से. ।
गिरुयउ गच्छ खरतर तणउ ए, श्री जिणचंद सूरीस से. ।
प्रथम शिष्य श्री पूज्य ना ए, सकलचंद सुजगीस ।२०। से. ।
तासु सीस जगि परगडा ए, समयसुन्दर उवझाय । से. ।
रास रच्यउ तिण रुयडउ ए, सुणता आणंद थाय ।२१। से. ।

* विंब, ‡ उलखा

तेथी मोटउ संघवी कहयउ, भरत सुखी नइ मन गह गह्यउ।
भरत कहइ ते किम पामियइ, प्रभू कहइ सेत्रुञ्ज यात्र कीयइ ॥ ४ ॥
भरत कहइ संघवी पद मुज्झ, ते आपउ हूं अंगज तुज्झ।
इंद्रइ आएया अक्षत वास, प्रभु आपइ संघवी पद तास ॥ ५ ॥
इंद्रइ तिण वेला ततकाल, भरत सुभद्रा बिहुँ नइ माल।
पहिरावी घरि संप्रेडिया, सखर सोना ना रथ आपिया ॥ ६ ॥
रिषभदेव नी प्रतिमावली, रतन तणी दीधी मन रली।
भरतइ गणधर घर तेड़िया,शांतिक पौष्टिक सहु तिहां किया॥ ७ ॥
कंकोत्री मूकी सहु देस, भरत तेड़ाया संघ असेस।
आया संघ अयोध्यापुरी, प्रथम थकी रथयात्रा करी ॥ ८ ॥
संघ भगत कीधी अति घणी, संघ चलायउ सेत्रुञ्ज भणी।
गणधर वाहुवलि केवली, मुनिवर कोडि साथि लिया वली॥ ९ ॥
चक्रवर्ती नी सगली रिद्धि, भरतइ साथि लीधी सिद्धि।
हय गय रथ पायक परिवार, ते तउ कहतां न आवइ पार ॥१०॥
भरतेसर संघवी कहिवाय, मारगि चैत्य उधरतउ जाय।
संघ आयउ सेत्रुञ्जा पासि, सहु नी पूगी मन नी आस ॥११॥
नयणे निरख्यउ सेत्रुञ्जराय, मणि माणिक मोती सूँ वधाय।
तिण ठामइ रहि महुछव कियउ, भरतइ आणंदपुर वासियउ ॥१२॥
संघ सेत्रुंजा ऊपरि चढ्यउ, फरसंतां पातक झड़ि पड्यउ।
केवलज्ञानी पगला तिहां, प्रणम्या रायण रूँख छइ जिहां ॥१३॥
केवलज्ञानी स्नात्र निमित्त, ईसानेंद्र आणि सुपवित्त।
नदी सेत्रुंजी सुहामणि, भरतइ दीठी कौतुक भणि ॥१४॥

तीर्थंकर नइ पारणे, कुण करसइ मुझ होडि ।
वृष्टि करूँ सोवन तणी, साढी बारह कोडि ॥६॥
हुँ जग सगलउ वसि करुं, मुझ मोटी छइ बात ।
कुण कुण दान थकी तर्यां, ते सुणिज्यो अवदात ॥७॥

ढाल—मधुकर नी

धनसारथवाहं साधु नइ, दीधुं घृत नुं दान । ललनां ।
तीथंकर पद मइं दीउं, तिण मुझ ए अभिमान । ल.। १ ।
दान कहइ जगि हुँ वडउ, मुझ सरिखउ नही कोय । ल.।
रिद्धि समृद्ध सुख संपदा, दानइ दउलति होइ । ल.।२ दा.।
सुमुख नाम गाथापती, पडिलाभ्यउ अणगार । ल.।
कुमर सुबाहु सुख लहइ, ते तउ मुझ उपगार । ल.।३ दा.।
पांचसइ मुनि नइ पारणइ, देतउ विहरी आणि । ल.।
भरत थयउ चक्रवति भलउ, ते तउ मुझ फल जाणि । ल.।४ दा.।
मासखमण नइ पारणइ, पडिलाभ्यउ रिपीराय । ल.।
सालिभद्र सुख भोगवइ, दान तणइ सुपसाय । ल.।५ दा.।
आप्या उडद ना बाकुला, उत्तम पात्र विशेष । ल.।
मूलदेव राजा थयउ, दान तणा फल देखि । ल.।६ दा.।
प्रथम जिणेसर पारणइ, श्री श्रेयांस कुमार । ल.।
सेलडि रस विहरावियउ, पाम्यउ भवनउ पार । ल.।७ दा.।
चंदनबाला बाकुला, पडिलाभ्या महावीर । ल.।

चउथा देवलोक नउ धणी, माहेन्द्र नाम उदारो जी।
तिण सेत्रुंज नउ कराविउ, ए चउथउ उद्धारो जी।६।से.।
पांचमा देवलोक नउ धणी, ब्रह्मेंद्र समकित धारो जी।
तिण सेत्रुंज नउ कराविउ, ए पांचमउ उद्धारो जी।७।से.।
भवनपती इंद्र नउ कियउ, ए छट्ठउ उद्धारो जी।
चक्रवर्त्ती सगर तणउ कियउ, ए सातमो उद्धारो जी।८।से.।
अभिनंदन पासइ सुणयउ, सेत्रुंज नउ अधिकारो जी।
व्यंतर इंद्र कराविउ, ए आठमउ उद्धारो जी।९।से.।
चंद्रप्रभ सामि नउ पोतरउ, चंद्रशेखर नांउ मल्हारो जी।
चंद्रजसराय कराविउ, ए नवमउ उद्धारो जी।१०।से.।
शान्तिनाथ नी सुणि देशणा, शांतिनाथ सुत सुविचारो जी।
चक्रधर राय कराविउ, ए दसमो उद्धारो जी।११।से.।
दशरथ सुत जगि दीपतउ, मुनिसुव्रत सामि वारो जी।
श्री रामचन्द्र कराविउ, ए इग्यारमउ उद्धारो जी।१२।से.।
पंडव कहइ अम्हे पापिया,' किम छूटां मोरी मायो जी।
कहइ कुंती सेत्रुंज तणी, जात्रा कियां पाप जायो जी।१३।से.।
पांचे पांडव संघ करि, सेत्रुंज भेट्यउ अपारो जी।
काष्ट चैत्य बिंब लेपनउ, ए बारमो उद्धारो जी।१४।से.।
मम्माणी पाषाण नी, प्रतिमा सुन्दर रूपो जी।
श्री सेत्रुंज नउ संघ करि, थापी सकल सरूपो जी।१५।से.।
अट्ठोतर सउ वरस गयां, विक्रम नृपथी जिवारो जी।

जनम मरण ना दुख थकी, मइं छोडाव्या अनेक ।
नाम कहुं हिव तेहना, सांभलिज्यो सुविवेक ॥७॥

ढाल—पास जिणंद जुहारीयइ एहनी

सील कहइ जगि हुँ वडउ, मुझ वात सुणउ अति मीठी रे ।
लालच लावइ लोक नइ, मइ दाण तणी वात दीठी रे ।१ सी०।
कलिकारक जगि जाणियइ, वलि विरति नही पणि काइ रे ।
ते नारद मइ सीझव्यउ, मुझ जोवउ ए अधिकाइ रे ।१ सी०।
बांहे पहिर्या बहिरखा, संख राजा दूपण दीधा रे ।
काप्या हाथ कलावती, पणि मइ नवपल्लव कीधा रे ।३ सी०।
रावणि घरि सीता रही, तउ रामचंद्र कां आणी रे ।
सीता कलंक उतारीयउ, मइ पावक कीधुं पाणी रे ।४ सी०।
चंपा बार उघाडीयां, वलि चालणि काढ्यु नीरो रे ।
सती सुभद्रा जस थयउ, ते मइं तस कीधी भीरो रे ।५ सी०।
राजा मारण मांडीयउ, राणी अभया दूपण दाख्यउ रे ।
सूली सिंहासन थयुं, मइ सेठ सुदरसण राख्यउ रे ।६ सी०।
सील सनाह मंत्रीसरइं, आवंता अरिदल थंभ्या रे ।
तिहां पणि सानिध मइं कीधी, वलि धरम कारज आरंभ्या रे ।७ सी०।
पहिरण चीर प्रगट कीआ, मइ अट्ठोतर-सइ वारो रे ।
पांडव हारी द्रूपदी, मइं राखी माम उदारो रे ।८ सी०।
ब्राह्मी चंदनबालका, वलि सीलवंती दवदंती ।
चेडा नी साते सुता, राजीमती सुन्दरि कुन्ती रे ।९ सी०।

काती पुनिम सेत्रुञ्जइ, चढि* नइ करइ उपवास ।
नारकी सउ सागर समउ, नर करइ करमनउ नास ॥६॥
काती परब मोटउ कह्यउ, जिहाँ सीधा दस कोडि ।
ब्रह्म स्त्री बालक हत्या, पाप थी नांखइ छोडि ॥७॥
सहस लाख श्रावक भणी, भोजन पुण्य विशेखि ।
सेत्रुँज साध पडिलाभता, अधिकउ तेह थी देखि ॥८॥
सर्वगाथा ७५

ढाल पांचमी—धन धन अवंती सुकुमाल नइ, एहनी
राग—बइराडी

सेत्रुंज गया पाप छूटियइ, लीजइ आलोयण एमो जी ।
तप जप कीजइ तिहां रही, तीर्थंकर कह्यउ तेमो जी ।१। से. ।
जिण सोना नी चोरी करी, ए आलोयण तासो जी ।
चैत्री दिन सेत्रुंज चडी, एक करइ उपवासो जी ।२। से. ।
वस्त्र तणी चोरी करी, सात आंबिल सुध थायो जी ।
काती सात दिन तप कीयां, रतन हरण पाप जायो जी ।३। से. ।
कांसी पीतल त्रांबा रजतणी, चोरी कीधी जेणो जी ।
सात दिवस पुरमढ करइ, तउ छूटइ गिरि एणो जी ।४। से. ।
मोती प्रवाली मुंगिया, जिण चोर्या नरनारो जी ।

* चढो

ढाल—नणदल नी

दृढप्रहारि अति पापीयउ, हत्या कीधो च्यारि हो। सुन्दर।
ते मइं तिण भवि ऊधर्यउ, मुंक्यउ मुगति मझारि हो। सु. ।१।
तप सरिखउ जगि को नहीं, तप करइ करम नउ छेह हो। सु. ।
तप करतां अति दोहिलउ, तप मांहि नही को कूड हो। सु. ।२। त.।
सात माणस नित मारतउ, करतउ पाप अघोर हो। सु. ।
अरजुन माली मइं ऊधर्यो, छेद्या करम कठोर हो। सु. ।३। त.।
नंदिसेण नइ मइ कीयउ, स्त्री वल्लभ वसुदेव हो। सु. ।
बहुतरि सहस अंतेउरी, सुख भोगवइ नित मेव हो। सु. ।४। त.।
रूप कुरूप कालउ घणुं, हरिकेसी चंडाल हो। सु. ।
सुर नर कोडि सेवा करइ, ते मइं कीधी चाल हो। सु. ।५। त.।
विष्णुकुमार लवधि कीयउ, लाख जोयण नउ रूप हो। सु. ।
श्री संघ केरइ कारणइ, ए मुझ सकति अनूप हो। सु. ।६। त.।
अष्टापदि गौतम चढ्या, वांद्या जिन चउवीस हो। सु. ।
तापस पिण प्रतिबूझव्या, तिणि मुझ अधिक जगीस हो। सु. ।७। त.।
चउदस सहस अणगार मइं, श्री धन्नउ अणगार हो। सु. ।
वीर जिणंद वखाणीयउ, ए पणि मुझ अधिकार हो। सु. ।८। त.।
कृष्ण नरेसर आगलइ, दुक्कर कारक एह हो। सु. ।
ढंढण नेम प्रसंसीयउ, मुझ महिमा सवि तेह हो। सु. ।९। त.।
नंदिषेण विहरण गयउ, गणिका कीधुं हास हो। सु. ।
वृष्टि करी सोनातणी, मइं तसु पूरी आस हो। सु.।१०।त.।

छआरी° पालतां चालीयइ, सेत्रुञ्ज केरी वाट।से.।
पालीताणइ पहुँचीय ए, संघ मिल्या बहु थाट।२।से.।
ललित सरोवर पेखीयइ ए, वली सचा नी वावि।से.।
तिहां वीसामउ लीजीयइ ए, वड नइ चउतर आवि।३।से.।
पालीताणा पाजडी ए, चडियइ ऊठि परभाति।से.।
सेत्रुञ्ज नदीय सोहामणी ए, दूरि थकी देखात।४।से.।
चडियइ हींगुलाज नइ हडइ ए, कलि कुँड नमियइ पास।से.।
वारी माहे पइसीयइ ए, आणी अंगि उल्हास।५।से.।
मरुदेवी टूँक मनोहरु ए, गज चडी मरुदेवी माय।से.।
सांतिनाथ जिण सोलमउ ए, प्रणमीजइ तसु पाय।६।से.।
वंस पोरूयाडइ परगडउ ए, सोमजी साह मल्हार।से.।
रूपजी संघवी करावीयउ ए, चउमुख मूल उद्धार।७।से.।
चउमुख प्रतिमा चरचीयइ ए, भमती मांहि भला बिंब।से.।
पांचे पांडव पूजीयइ ए, अदबुद आदि प्रलब।८।से.।
खरतर वसही खांति सुँ ए, बिंब जुहारू अनेक।से.।
नेमिनाथ चउरी* नमुँ ए, टालुं अलग उदेक†।९।से.।
धरमद्वार मांहि नीसरुं ए, कुमति करुं अति दूर।से.।
आवुं आदिनाथ देहरइ ए, करम करूँ चकचूर।१०।से.।
मूलनायक प्रणमुं मुदा ए, आदिनाथ भगवंत।से.।
देव जुहारूँ देहरी ए, भमती मांहि भमंत।११।से.।

° छहरी, * चयरी, † उद्वेगव

ढाल चउथी—कपूर हुयइ अति ऊजलु रे, एहनी

कांनन मांहि काउसग रह्यउ रे, प्रसनचंद रिषिराय ।
ते मइं कीधउ केवली रे, ततखिण करम खपाय ।१।
सोभागी सुन्दर भाव वडउ संसारि, एतउ बीजा मुझ परिवार ।
दानादिक विण एकलउ रे, पहुँचाडुं भवपार ।२।सो.।
वंस उपरि चढ्यउ खेलतउ रे, इलापुत्र अपार ।
केवलज्ञानी मइं कीयउ रे, प्रतिबोध्यउ परिवार ।३।सो.।
भूख खमा वेउ अतिघणा रे, करतउ कूर आहार ।
केवल महिमा सुर करइ रे, कूरगडू अणगार ।४।सो.।
लाभ थी लोभ वाधइ घणउ रे, आणयउ मन वयराग ।
कपिल थयउ ते केवली रे, ते मुझ नइ सोभाग ।५।सो.।
अन्निका सुत गछ नउ धणी रे, खीण जंघा बल जाणि ।
कीधउ अंतगड केवली रे, गंगाजलि गुण खाणि ।६।सो.।
पनरहसइं तापस भणी रे, दीधी गोतम दीख ।
ततखिण कीधी केवली रे, जउ मुझ मानी सीख ।७।सो.।
पालक घाणी* पीलीआ रे, खंदक सूरि† ना सीस ।
जनम मरण थी छोडव्या रे, आपउ मुझ आसीस ।८।सो.।
चंडरुद्र निसि चालतइ रे, दीधा दण्ड प्रहार ।
नव दीक्षित थयउ केवली रे, ते गुरु पणि तिणवार ।९।सो.।
धन धन रथकार साधु नइ रे, पडिलाभइ उल्लासि ।
मृगलउ भावन भावतउ रे, पहुतउ सुर आवास ।१०।सो.।

*पापी, †सु

परवर्ती प्रति में अंत में निम्नोक्त दो गाथाएं अधिक हैं —

भणसाली थिरु अति भलो ए, दयावंत दातार । से. ।
सेत्रुञ्ज संघ करावीयउ ए, जेसलमेर मझार ।२२। से ।
सेत्रुञ्ज महातम ग्रन्थ नइ ए, रास रच्यो अनुसार । से. ।
भाव भगति सुणतां थकां ए, पामीजइ भवपार ।२३। से. ।

सर्वगाथा १०८ इति श्री शत्रुञ्जय रास सम्पूर्णः ।

सं० १६८३ वर्षे बीकानेर मध्ये शिष्य पंचाइण लिखतं ।

दानशील तप भाव संवाद शतक

प्रथम जिणेसर पय नमी, पामी सुगुरु प्रसाद ।
दान सील तप भावना, बोलिसि बहु संवाद ॥१॥
वीर जिणिंद समोसर्या, राजगृह उद्यान ।
समोवसरण देवे रच्युँ, बयठा श्री वर्धमान ॥२॥
बइठी बारह परषदा, सुणिवा जिणवर वाणि ।
दान कहइ प्रभु हूं वडउ, मुझ नइ प्रथम वखाणि ॥३॥
सांभलिज्यो सहु को तुम्हे, कुण छइ मुझ समान ।
अरिहंत दीक्षा अवसरइं, आपइं पहिलुँ दान ॥४॥
प्रथम पहरि दातार नँु, ल्यइ सहु कोई नाम ।
दीधां री देवल चडइं, सीझइ वंछित काम ॥५॥

परनिंदा करतां थकां, पापइं पिंड भराइ ।
वेढि राढि बाधइं घणी, दुर्गति प्राणी जाइ ॥२॥
निंदक सरिखउ पापीयउ, मुँड उकोइ न दीठ ।
त्रलि चंडाल समउ कह्यउ, नंदक मुख अदीठ ॥३॥
आप प्रसंसा आपणी, करता इंद नरिंद ।
लघुता पामइ लोक मइ, नासइ निज गुणवृन्द ॥४॥
को केहनी म करउ तुम्हे, निंदा नइ अहंकार ।
आप आपणो ठामइ रह्यउ, सहु को भलउ संसार ॥५॥
तउ पणि अधिकउ भाव छइ, एकाकी समरत्थ ।
दानसील तप त्रिण भला, पणि भाव विना अकयत्थ ॥६॥
अंजन आंखे आंजतां, अधिकी आणि ए रेख ।
रज मांहे तज काढतां, अधिकउ भाव विशेष ॥७॥
भगवंत हठ भांजण भणी, च्यारे सरिखा गणंति ।
च्यार करी मुख आंधला, चतुर्विध धरम भणंति ॥८॥

ढाल पंचमी—चेति चेतन करी एहनी

वीर जिणेसर इम भणइ रे, बइठी परषदा बार ।
धरम करउ तुम्हे प्राणीया रे, जिम पामउ भव पारो रे।१।
धरम हीयइं धरउ, धरम ना च्यार प्रकारो रे ।
भवियण सांभलउ, धरम सुगति सुखकारो रे ।२।
धरम थकी धन संपजइ रे, धरम थकी सुख होय ।
धरम थकी आरति टलइ रे, धरम समउ नही कोयो रे।३। ध०।

पंच दिव्य परगट थया, सुन्दर रूप सरीर।ल.।८दा.।
पूरव भव पारेवडउ, सरणइ राख्यउ धर।ल.।
तीर्थंकर चक्रव्रति तणउ, प्रगट्यउ पुण्य पडूर।ल.।९दा.।
गज भव ससिलउ राखियउ, करुणा कीधी सार।ल.।
श्रेणिक नइ घरि अवतर्यउ, अंगज मेघकुमार।ल.।१०दा.।
इम अनेक मइ ऊधर्या, कहतां नावइ पार।ल.।
समयसुन्दर प्रभु वीरजी, पहिलउ मुझ अधिकार।ल.।११दा.।

दूहा

सील कहइ सुणि दान तुं, किसउ करइ अहंकार।
आडंबर आठे पहुर, याचक सुं विवहार॥१॥
अंतराय वलि ताहरइ, भोग्य करम संसार।
जिणवर कर नीचो करइ, तुम्ह नइ पडउ धिकार॥२॥
गर्व म कर रे दान तूं, मुझ पूठइ सहु कोय।
चाकर चालइ आगलि, तउ स्युं राजा होइ॥३॥
जिन मंदिर सोना तणउ, नवउ नीपावइ कोय।
सोवन कोडि को दान यइ, सील समउ नहि कोय॥४॥
सीलइ संकट सवि टलइ, सीलइ जस सोभाग।
सीलइ सुर सानिध करइ, सील वडउ वइराग॥५॥
सीलइ सर्प न आभडइ, सीलइ सीतल आगि।
सीलइ अरि करि केसरी, भय जायइ सब भागि॥६॥

पौषध-विधि गीतम्

जेसलमेरु नगर भलउ, जिहां श्री पास जिणंद ।
प्रह उठी नइ प्रणमतां, आपइ परमाणंद ॥ १ ॥
तासु चरण प्रणमी करी, पोपध विधि विस्तार ।
पभणुं श्रावक हित भणी, आगम नइ अनुसारि ॥ २ ॥
पोसउ पोसउ सहु कहइ, पोसउ करइ सहु कोइ ।
पण पोसा विधि सांभलउ, जिम निस्तारउ होइ ॥ ३ ॥

ढाल पहिली—प्रभु प्रणमुं रे पास जिणेसर थंभणउ, एहनी ढाल.

पहिलइ दिन रे, सांझ समइ उपग्रहण सहु।
पडिलेही रे, रुड़ी परि राखइ वहु ॥
पहिली रातइं रे, साधु समीपि आवी करी ।
राइ प्राछित रे, प्रथम करइ मन संवरी ॥
संवरी श्रावक करइ पोसउ, आठ पुहरि गुरु मुखइ ।
उचरइ दंडक त्रिण्ह वेला, सामाइक पणि तिणि रुखइ ॥
पछइ करइ पडिकमणउ आंतरणी, साधु वांदइंता गिणइ ।
कमभूमि अठावयंमि उसभो मंगलीक कुलक भणइ ॥ ४ ॥
पडिलेहण रे, अंग उही सगली करइं ।
उपासरउ रे, पुंजी काजउ ऊधरइ ॥
इरियावही रे, थापना आगइं पडिकमइं ।
करि सज्झाय रे, साधु सहुना पाय नमइ ॥

इत्यादिक मइ ऊधर्या, नरनारी केरा वंदो रे।
समयसुन्दर प्रभु वीरजी, मुझ पहिलउ करउ आणंदे रे।१० सी०।

दूहा

तप बोल्यउ अटकी करी, दान नइ तु अवहीलि।
पणि मुझ आगलि तुं किस्यउ रे, तुं सांभलि सील ॥१॥
सरसा भोजन तइ तज्या, न गमइ मीठी नाद।
देह तणी सोभा तजी, तुझ नइ किस्यउ सवाद ॥२॥
नारि थकी डरतउ रहइ, कायरि किस्यउ वखाण।
कूड कपट बहु केलवी, जिम तिम राखइ प्राण ॥३॥
को विरलउ तुझ* आदरइ, छांडइ सहू संसार।
एक आपतुं भाजतउ, बीजा भांजइ च्यार ॥४॥
करम निकाचित ओडवुं, भांजुं भव भड भीम।
अरिहंत तुझ नइ आदर्यउ, वरस छमासी सीम ॥५॥
रुचक नंदीसर पर्वते, मुझ लबधइ मुनि जाय।
चैत्य जुहारइ सासतां, आणंद अंग न माय ॥६॥
मोटा जोयण लाखनां, लघु कंथुक आकार।
हय गयरथ पायक तणां, रूप करइ अणगार ॥७॥
मुझ कर फरसइ उपसमइ, कुष्टादिक ना रोग।
लबधि अट्ठावीस ऊपजइ, उत्तम तप संयोग ॥८॥
जे मइं तार्या ते कहुं, सुणिज्यो मन उल्लास।
चमतकार चित पामस्यउ, देस्यउ मुझ साबासि ॥९॥

*सुझ

ढाल—बीजी, वीसामा रो गीतनी ढाल.

हिव भवियण तुम्हें सांभलउ जी, गुरु नइं नामी सीस ।
सामाइक पोसा तणा जी, दूषण टालउ बत्रीस ॥
बत्रीस दूषण बारह तनुना, मारि बइसइ पालठी ।
अति अथिर आसण दिष्टि चंचल, करइ काया एकठी ॥
करइ काम सावद्य ल्यइ उटिंगण आलस करडक मोड ए ।
खणइ खाजि वीसामण करावइ उंघ करइ मल छोड ए ॥ ८ ॥

वचन तणा दूषण दसे जी, जाणउ एणि प्रकार ।
कुवचन बोलइ लोकनइ जी, घइ दोष सहसातकार ॥
सहसातकार कलंक घइ वलि आप छंदइ बोल ए ।
संखेप सूत्र कहइ आलावउ करइ कलह निटोल ए ॥
विकथा करइ उपहास मांडइ न राखइ पद संपदा ।
जा आवि बइठि तुं ऊठि एहवी कहइ भाषा सरवदा ॥ ६ ॥

दस दूषण हिव मन तणा जी, सांभलिज्यो चित एक ।
नून अधिक न लहइ क्रिया जी, मन मांहि नहीं य विवेक ॥
सुविवेक जस धन लाभ वांछइ करइ पोसउ बीहतउ ।
पोसउ करीनइ करइ नियाणउ पुत्र प्रमुख नइं ईहतउ ॥
अभिमान रीसइ करइं पोसउ धरइ फल संदेह ।
वलि विनय भगति लगार न करइ मन दूषण दस एह ॥१०॥

काया वचन नइ मन तणा जी, दूषण एह बत्रीस ।
जे टालइं दोष तेहनउ जी, पोसउ विसवा बीस ॥

इम बलभद्र प्रमुख बहु, तार्या तपसी जाव हो। सु.।
समयसुन्दर प्रभु वीरजी, पहिलउ मुझ प्रस्ताव हो। सु.।११।त.।
सर्वगाथा ४५

दूहा

भाव कहइ तप तुं कीस्युं, छेह्यउ* करइ कषाय।
पूरब कोडि तप तुं तप्यउ, खिण मांहि खेरू थाय ॥१॥
खंदक आचारिज प्रतइं, तइं बालाव्यउ देस।
असुभ निआणउ तुं करइ, चमा नहीं लवलेस ॥२॥
दीपायन रिषि दूहव्यउ, संब प्रजूने साहि।
तइं तप क्रोध करी तिहां, कीधउ द्वारिका दाह ॥३॥
दानसील तप सांभलउ, म करउ जूठ गुमान।
लोक सहू बड़े साखि द्यइ, धरमइं भाव प्रधान ॥४॥
आप नपुँसक सहु त्रिण्हे, द्यइ व्याकरणी साखि।
काम सरइ नहीं को तुम्हे, भाव भणइ मो पाखि ॥५॥
रस विण कनक न नीपजइ, जल विण तरुवर वृद्धि।
रसवती रस नहीं लवण विण, तिम मुझ विण नहिं सिद्धि ॥६॥
मंत्र तंत्र मणि औषधि, देव धरम गुरु सेव।
भाव विना ते सवि वृथा, भाव फलइ नित मेव ॥७॥
दानसील तप जे तुम्हे, निज निज कह्या वृतांत।
तिहां जउ भाव न हूंत हु, तउ को सिद्धि न जांत ॥८॥
भाव कहइ मइ एकलइ, तार्या बहु नर नारि।
सावधान थइ सांभलउ, नाम कहुँ निरधारि ॥९॥

*छोयेठ

अरध विंब रवि आथम्यौ रे, सूत्र कहइ सुविचार ।
तवन कहइ तेहवइ समइं रे, तारा दीसइ त्रि च्यार ।१६।सो.।
काल वेलायइं पडिकमइं रे, लांबी खमासरण देइ ।
सुध क्रिया नी खप करइ रे, मन संवेग धरेइ ।१७।सो.।
जिणदत्तसूरि काउसग करइ रे, पडिकमणा नइ छेह ।
पडिकमणउ पूरउ थयोरे, खरतरनी विधि एह ।१८।सो.।
मधुरइ सरि रातइं करइ रे, पोरस सीम सभाय ।
गीत गायइ वइरागना रे, पातक दूरि पुलाइ ।१९।सो.।

ढाल चौथी—(चेति चेतन करो, एहनी ढाल)

बहु पडिपन्ना पोरसी रे, वांदइ देव उल्लास ।
संथारा गाथा सुणइ रे, खामइ जीवनी रासो रे ॥२०॥
धन धन ते नर-नारि, सफल करइं अवतारो रे ।
निसि पोसउ करइं भावनइं भावना वारो रे ।२१ध.।
पाप अठारइ परिहरे रे, चित धरइ सरणा च्यारि ।
डाभ संथारइ संथरइ रे, ध्यान धरइ सुविचारो रे ।२२ध.।
धरम जागरिया जागतां रे, करइ मनोरथ एह ।
संजम लेइसि जिणी दिनइ रे, धन दिवस मुझ तेहो रे ।२३ध.।
संख श्रावक पोषउ कीयौ रे, वीर वखाणउ तेह ।
तिण परि तुम्हे पोसौ करउ रे, जिम पामउ सिव गेहो रे ।२४ध.।
वीतभय पाटण नउ धणी रे, नाम उदयन राय ।

निज अपराध खमावतो रे, मुंकी मन थी मान।
मृगावती नइं मइं दीयुं रे, निरमल केवलज्ञान।११।सो.।
मरुदेवी गज चडी मारगइं रे, पेखी पुत्र नी रिद्धि।
सुभ नइ मनमांहे धर्यउ रे, ततखिण पामी सिद्धि।१२।सो.।
वीर वांदण चाल्यउ मारगइं रे, चांप्यउ चपल तुरंगि।
ददुर नामइं देवता रे, तेह थयउ मुझ संगि।१३।सो.।
प्रभु पाय पूजण नीसरी रे, दुर्गता नामइ नारि।
काल-धरम विचि मइं करी रे, पहुती सरग मझारि।१४।सो.।
काया सोभा कारमी रे, मुंक्यउ मन अभिमान।
भरत आरीसा भवन मइं रे, पाम्युं केवलज्ञान।१५।सो.।
आषाढ भूति कला निलउ रे, प्रगट्यउ भरत सरूप।
नाटक करतां पामीयुं रे, केवलज्ञान अनूप।१६।सो.।
दीक्षा दिन काउसगि रह्यउ, गयसुकमाल मसाणि।
सोमिल सीस प्रजालीउं रे, सिद्धि गयउ सुह झाणि।१७।सो.।
गुणसागर थयउ केवली रे, सांभल्यउ पृथिवीचंद।
पोतइ केवल पामीयुं रे, सेव करइ सुरवृन्द*।१८।सो.।
इम अनंत मइं ऊधर्या रे, मुंक्या सिवपुर वासि।
समयसुन्दर प्रभु वीर जी रे, मुझ नइ प्रथम प्रकासि।१६।सो.।

दूहा

वीर कहइ तुम्हे सांभलउ, दानसील तप भाव।
निंदा छइ अति पाड्ई, धरम करम प्रस्तावि ॥१॥

*इंद

पोसउ ओसउ कर्मनउ हो, टालइ दुरगति दुख।
असुभ करम नउ खय करइ हो, आपइ सासतां सुख।३५।सं.।
उतकृष्टी पोसा तणी हो, ए विधि कही उपगार।
जेसलमेरी संघ नइं हो, आग्रह करि सुविचार।३६।सं.।
सोलइ सइ सत सठि समइ हो, नगर मरोट मझार।
मगसिर सुदी दसमी दिनइ हो, सुभ दिन सुर गुरुवार।३७।सं.।
श्री जिणचंद सूरीसरू हो, श्री जिनसिंघ सूरीस।
सकलचंद सुपसाउलइं हो, समयसुन्दर भणइ सीस।३८।सं.।

इति पौषध विधि गीतं सपूर्णं
श्री शुभं भवतु। जेसलमेरु संघमभ्यर्थनया कृतं च

——:०:——

दुर्गति पडतां प्राणियां रे, राखइ श्री जिन धर्म ।
कुटंब सहू को कारिमुं रे, मति भूलउ भव मर्मो रे ।४। ध०।
जीव जिके सुखीश्रा हुआ रे, वलि हुस्यइ छइ जेह ।
ते जिणवर ना धर्म थी रे, मति को करज्यो संदेहो रे ।५। ध०।
सोलइ सइ छासठि समइ रे, सांगानयर मझारि ।
पदम प्रभु सुपसाउ लइ रे, एह भणयउ अधिकारो रे ।६। ध०।
सोहम सामि परंपरा रे, खरतरगच्छ कुलचंद ।
जुगप्रधान जगि परगडा रे, श्री जिनचंद सूरिंदो रे ।७। ध०।
तास सीस अति दीपतां रे, विनयवंत जसवंत ।
आचारिज चडती कला रे, श्री जिनसिंघसूरि महंतो रे ।८। ध०।
प्रथम शिष्य श्रीपूजना रे, सकलचंद तसु सीस ।
समयसुन्दर वाचक भणी रे, संघ सदा सुजगीसो रे ।९। ध०।
दानसील तप भावना रे, सरस रच्यउ संवादो रे ।
भणतां गुणता भावसुं रे, रिद्धि समृद्धि सुप्रसादो रे ।१०।ध०।

इति श्री दानसील तप भाव संवाद शतकं संपूर्णम् ।
सर्वगाथा १०१ ग्रन्थाग्रन्थ श्लोक १३५ ।



॥ ढाल ॥

ततखिण तिहां मिलिया चलियासण सुर कोडि ।
प्रभुना पद पंकज प्रणमइ वेकर जोडि ॥
वेकर जोड़ी मछर छोडी समवसरण विरचंति ।
माणिक हेम रूप मय त्रिगढ छत्र त्रय झलकंति ॥
सिंहासन वइठा तिहां सामी चउविह धरम प्रकासइ ।
वार परषदा आगलि वइठी निसुणइ मन ऊलासइ ॥१०॥

तप नइ अधिकारइ पखवासउ तप सार ।
पडिवा थी लीजइ पनरह तिथि सुविचार ॥
पनरह तिथि कीजइ गुरु मुखि लीजइ जिण दिन हुइ उपवास ।
श्री मुनिसुव्रत नाम जपीजइ, वांदी देव उल्लास ॥
तप ऊजमणइ रजत पालणउ सोवन पूतलि चंग ।
मोदक थाल देहरइ ढोइ जिनवर स्नात्र सुचंग ॥११॥

तप कीजइ रे निरंतर अदुख दर्शनी जेम ।
मन वंछित सुख संपति पामीजइ तेम ॥
संपति पामीजइ लील करीजइ राज रिद्धि विस्तार ।
पुत्र मित्र परिवार परंपर अति वल्लभ भरतार ॥
जस कीरति सोभाग वधइ महियल महिमा जाण ।
पर भवि मुगति तणा फल लहियइ ए तप तणइ प्रमाण ॥१२॥

थिर थापी रे चतुर्विध संघ तणउ अधिकारि ।
भरुयच्छि प्रमुख नगरादिक करिय विहार ॥

पाय नमइं सगला साधु केरा, सुणइं सुगुरु वखाण ए ।
ध्यान करइ अथवा गुणइ, प्रकरण कहइ अरथ सुजाण ए ।।
पुँण पहुर पडिलेहण करीनइ, मातरा पडिलेइ ए ।
जल घड़ा लोटो वाटका, पडिलेहवा वलि तेह ए ।। ५ ।।

गुरु सांयइ रे, चैत्य प्रवाडि करइ खरी ।
देव वांदइ रे, शक्र स्तव· पांचे करी ।।
उपासिरइ रे, आवी इरिया पडी कमी ।
आगमणउ रे, आलोयइ नीचउं नमी ।।

नीचउ नमी वइसणइ वइसइ, मिछामि दुक्कड देहि नइं ।
त्रिविहार हुयइ तउ पाणी पारइ, मुहपत्ती पडिलेह नइं ।।
नउकार गुणतां पाठ भणतां, पहुर त्रीजइ दिवस रइ ।
पडिकमी इरियावही पहिली, वेउ पडिलेहण करइ ।। ६ ।।

धमसाला रे, पुंजी इरिया पडिकमी ।
थे पालउ रे, थापना पडिलेही समी ।।
मुहपत्ती रे, पडिलेही उभउ थई ।
करइ गुरु मुखि रे, पचखाण मनि गह गई ।।

गह गई आठे दे खमासण, वस्त्र सगला आंपणा ।
पडिलेहिवा मातरा तिण परि, चलवला पुंजण तणा ।।
देहनी चिंता काजि जातां, कहइ भगवन आवस्सही ।
मारगइं इरिया समिति सोधइ, आवता कहे निस्सही ।। ७ ।।

प्राकृत संस्कृत स्तवन संग्रह—

ऋषभ-भक्तामर-स्तोत्रम् ।

नम्रेन्द्रवन्द्र ! कृतभद्र ! जिनेन्द्र ! चन्द्र !,
ज्ञानात्मदर्श-परिदृष्ट-विशिष्ट-विश्व ! ।
त्वन्मूर्तिरर्त्तिहरणी तरणी मनोज्ञे—
वालम्बनं भवजले पततां जनानाम् ॥ १ ॥

टीका—ऐं नमः । हे जिनेंद्र ! त्वन्मूर्ति जनानामालंबनं । किं० भवजले पततां । केव ? तरणीव । किं० त्वन्मूर्ति ? अर्त्तिहरणी-संताप-नाशिनी । हे नमेंद्र ! नम्र इन्द्राणां वंद्रः-समुहो यस्य यस्मिन्वा । शेषं सुगमम् ॥१॥

गृह्णाति यज्जगति गारुडिको हि रत्नं,
तन्मंत्र-तंत्र-महिमैव बुधोप्यशक्तः ।
स्तोतुं हि यं यदवुधोप्यदशीयशक्तिः,
स्तोष्ये किलाहमपि तं प्रथमं जिनेन्द्रम् ॥ २ ॥

टीका—'किलेति' सत्येऽहमबुधोपि तं प्रथम जिनेंद्रं स्तोष्ये । तत्र अदशीयशक्तिः । तं कथं: स्तोतुं बुधोपि-सौम्योपि अथवा पण्डितोपि असक्तोऽसमर्थः ? दृष्टांतमाह—यज्जगति गारुडिकोऽहिरत्नं-सर्पमणिं गृहणाति तन्मंत्र-तंत्र-महिमैव । इत्यनेन निजगर्वनिरासः जिनमहात्म्यैव दर्शितं । मणि-शब्दः इकरांतोऽपि स्त्रीलिंगेप्यस्ति ॥२॥

त्वां संस्मरन्नहमरं करमीप्सितस्य,
दूरं चिरं परिहरामि हरादिदेवान् ।

वीस विसा बोलइ नहीं वलि उघाडइ मुखि आंपरइ।
छूटी ग्रही सुं वात न करइ पांच दूषण परिहरइ॥
उपवास करिनइ दिवस पोसउ कीधउ नहि निस करइ।
एक पत्त छोडइ नहीं उत्तराध्यन अत्तर अनुसरइ॥११॥
चउपरवी पोसउ कह्यउ जी, सूत्र सिद्धांत मझारि।
हरिभद्र सूरि विवरउ कीयौजी, बावीस सहस्री सार॥
बावीस सहस्री सार बोलै दिवस प्रति करिव्यौ नही।
पोसहउ अथिति संविभाग बेऊ परव दिन करि वासही॥
उद्दिष्ट सबद तणउ अरथ हिव, सीलांगा-च्यारिज करइ।
पोसउ पजूसण परव कल्याणक तिथि पखि आदरइ॥१२॥
उपधाने पोसउ कह्यउ जी, सूत्र निसीथ प्रमाणि।
त्रिविहार चउविहार जीमणइ जी, एक विगय घृतजाणि॥
घृत जाण आचरणा परंपर पूरवाचारिज कही।
भगवंत भाष्यउ सत्य तेहिज खांचा-ताण करिवी नहीं॥
त्रिविहार पोसउ च्यार पहुरी पुण पहुर सीमा करी।
ए त्रिएह गछ तणी आचरणा अविधि छइ पखि आदरी॥१३॥

ढाल त्रीजी—(सोभागी सुन्दर भाव वडउ संसारि, एहनी ढाल।)
सांझ समइ थंडिला करइ रे, वारे बाहिर मांहि चार।
इरियावहि वलि पडिकमी रे, जइ तिहुअण कहइ सार।१४।
सोभागी श्रावक साचउ पोसउ एह, एतउ भगवंत भाख्यउ तेह।
त्रिकरण सुद्ध करउ तुम्हे रे, जिम पामउ भव छेह।१५।सो.।

नेत्रामृते भवति[1] भाग्यबलेन दृष्टे,
हर्षप्रकर्षवशतस्तव भक्तिभाजाम् ।
वक्षस्थल-स्थित तु ते चरणतश्च्युतोऽसौ,
मुक्ताफलद्युतिमुपैति ननूदबिंदुः ॥ ८ ॥

श्रीनाभिनंदन ! तवाननलोकनेन,
नित्यं भवंति नयनानि विकस्वराणि ।
भव्यात्मनामिव दिवाकरदर्शनेन ।
पद्माकरेषु जलजानि विकासभाञ्जि ॥ ९ ॥

त्वत्पादपद्मशरणानुगतान्नरांस्त्वं,
संसारसिंधुपतितपारगतान्करोषि ।
निःपाप ! पारगत ! यच्च स एव धन्यो,
भूत्याश्रितं च य इह नात्मसमं करोति ॥१०॥

टीका—हे पारगत ! त्वं नरान् संसारसिंधुपतितान् पारगतान् करोषि। संसारसिंधुपतेः पारे गतान्-तीरे प्राप्तान् सृजसि-स्वसदृशान् करोषीत्यर्थः। किं० न०? त्वत्पादपद्मेति, सुगमं। यत्-यस्मात्कारणात् स एव ना-पुमान् धन्यो य इह जगति आश्रितं नरं प्रति भूत्या कृत्वा आत्मसमं करोति—आत्मतुल्यं कुर्यात्। अतः त्वं पारगतः सन् परान्नरानपि पारगतान्करोषीति युक्तम् ॥१०॥

युक्तं त्वदुक्तवचनानि निशम्य सम्यक्,
नो रोचते किमपि देव! कुदेववाक्यम्।

---

[1] भवति=त्वयि.

तिणि रातइं पोसउ कीयौरे, वीर वांदण चित लायरे ।२५घ.।
तुंगिया नगरी तणा रे, श्रावक सुघ अनेक ।
जिण विधि तिणि पोसउ कीयौ रे, ते विधि करउ सुविवेक रे ।२६घ.।
सेप श्रावक पोसउ लीयौ रे, आणंद नइं कामदेव ।
वलि दिप्टांत सुवाहुनउ रे, मनि घरिजो नितमेव रे ।२७ध.।

ढाल पांचमी—(जग जीवन वीरजी कुवण तुम्हारइ सीस, एहनी ढाल)

पाछिली रातइ उठइं नइ हो, श्रावक हुयइ सावधान ।
राइ पायछत काउसग करी हो, देव वांदइ सुभ ध्यान ।२८।
संवेगी श्रावक पोसउ नी विधि एह ।
मिलती सूत्र सिद्धांत सुं हो, मति करउ करिज्यो संदेह ।२६।सं.।
उंचइ सरि बोलइ नहीं हो, दोप कह्या भगवंत ।
वलि सामाइक ल्यइ नवउ हो, पडिकमणउ करइ तंत ।३०।सं.।
पडिलेहण किरिया करइ हो, सगली पूरव रीति ।
सहु सज्झाय कियां पछी हो, लिण पडलइ दृढ चीति ।३१।सं.।
पहिलउ पोसी पारिनइं हो, सामाइक पारेइ ।
पडिलाभइ अणगारनइ हो, अतिथि संभाग करेइ ।३२।सं.।
विधि सेती पोसउ कीयउ हो, नइ फलदायक होइ ।
अविधि संघाति कीजतां हो, काज सरइ नही कोइ ।३३।सं.।
पणि विधिनी खप कीजतां हो, अविधि हुवइ जिकाय।
मिच्छा दुक्कड दीजतां हो, छुटक वारउ थाय ।३४।सं.।

सिंहासनं विमलहेममयं विरेजे,
मध्यस्थितत्रिजगदीश्वरमूर्त्तिरम्यम् ।
नोद्योतनार्थमुपरिस्थितसूर्यबिंबं,
किं मन्दराद्रिशिखरं चलितं कदाचित् ॥१५॥

टीका—किं मन्दराद्रिशि० न कदाचिच्चलितम् ।

दोषाकरो न सकरो न कलंक युक्तो,
नास्तंगतो न सतमानसविग्रहो न ।
स्वामिन् विधुर्जगति नाभिनरेंद्रवंश—
दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ ! जगत्प्रकाशः ॥१६॥

टीका—हे स्वामिन् ! जगति त्वमपरो विधुरसि-नवीनचन्द्र असि । कथं ? विलक्षणधर्मानाह—स तु विधुर्दोषाकरो-दोषा-रात्रिं करोतीति दोषाकरोऽथवा दोषायां-रात्रौ कराः-किरणाः यस्य स, त्वं तु न दोषाकरो दोषाणामन्तरायादीनामष्टानामाकरः । पुनः स तु सकरः-सहकरैः-किरणैर्वर्त्तते यः सः, त्वं तु न सकरः-सह करेण-दण्डेन वर्त्तते यः सः । पुनः स तु कलंकयुक्तः-कलंकेनाभिज्ञानेन युक्तो य सः । त्वं तु न कलङ्कयुक्तो—न दोष-विशेष सहितः । पुनः स तु अस्तंगतोऽस्तमस्ताचलङ्गतः-प्रातः सायमित्यर्थात् ग्राह्यः । त्वं तु नास्तंगतः । नास्तमित उद्गत् इत्यर्थः । पुनः स तु 'सतमा' सह तमसा—राहुणा वर्त्तते यः सः, त्वं तु न सतमा—सह तमसाऽज्ञानेन वर्त्तते य सः एवंविधो न । पुनः स तु विग्रहः-सह विशिष्टैर्ग्रहैर्वर्त्तते यः सः, त्वं तु सविग्रहः सह विग्रहेण-संग्रामेण वर्त्तते यः सः, एवंविधो न, शेषं सुगमम् ॥१६॥

श्री मुनिसुव्रत पच्चोपवास स्तवन

जंबूदीव सोहामणुं, दखिण भरत उदार ।
राजगृह नगरी भली, अलकापुरि अवतार ॥ १ ॥
श्री मुनिसुव्रत स्वामि जी, समरंतां सुख थाय ।
मन वंछित फल पामियइ, दोहग दूरि पुलाय ॥ २ ॥ श्री.॥
राज करइ तिहां राजियउ, सुमित्र नरेसर नाम ।
पटराणी पदमावती, शील गुणे अभिराम ॥ ३ ॥ श्री.॥
श्रावण ऊजल पूनिमइ, श्री जिनवर हरिवंश ।
माता कुखि सरोवरइ, अवतरियउ रायहंस ॥ ४ ॥ श्री.॥
जेठ पढम पखि अष्टमी, जायउ श्री जिनराय ।
जनम महोच्छव सुर करइ, त्रिभुवन हरख न माय ॥ ५ ॥ श्री.॥
सामल वरण सोहामणउ, निरुपम रूप निधान ।
जिनवर लांछन काछवउ, वीस धनुष तनुमान ॥ ६ ॥ श्री.॥
परणी नारि प्रभावती, भोग पुरंदर सामि ।
राजलीला सुख भोगवइ, पूरइ वंछित काम ॥ ७ ॥ श्री.॥
नव लोगान्तिक देवता, आवि जंपइ जयकार ।
प्रभु फागुण सुदि बारसइ, लीधउ संजम भार ॥ ८ ॥ श्री.॥
फागुण वदि प्रभु बारसइ, मनि धरि निर्मल ध्यान ।
च्यार करम प्रभु चूरियां, पाम्यउ केवल ज्ञान ॥ ९ ॥ श्री.॥

ज्ञानस्य शिष्टतरदृष्टसमस्तलोका-
लोकस्य शीघ्रहतसंतमसस्य शश्वत् ।
दाता त्वमेव भुवि देव ! हि भानुमंतं,
प्राच्येव दिग्जनयति स्फुरदंशुजालम् ॥२२॥
सिंहासनस्थ भवदुक्त चतुर्विधात्मा,
धर्म्मावृते‡ त्रिजगदीश ! युगादिदेव ! ।
सद्दानशीलतपनिर्मलभावनाख्या,
नान्यः शिवः शिवपदस्य मुनीन्द्र पंथाः ॥२३॥
टीका—तपशब्दः शब्दप्रभेदेऽकारांतोप्यस्ति अतो नात्र दोषः।
स्वामिन्ननंतगुणयुक्तकषायमुक्तः,
साक्षात्कृतं त्रिजगदेव भवत्सदृक्षाः ।
नान्ये विभंगमतयो रुचिरं च पंच-
ज्ञानस्वरूपममलं प्रविदंति संतः ॥२४॥
चिंतामणिर्मणिषु धेनुषु कामधेनु-
र्गंगानदीषु नलिनेषु च पुण्डरीके ।
कल्पद्रुमस्तरुषु देव ! यथा तथात्र*,
व्यक्तं त्वमेव भगवन्पुरुषोत्तमोसि ॥२५॥
भास्वद्गुणाय करणाय सुदोरणाय,
विद्याचणाय कमलप्रतिमेक्षणाय ।
सल्लक्षणाय जनताकृतरक्षणाय ।
तुभ्यं नमो जिन ! भवोदधिशोषणाय ॥२६॥

‡ धर्मावृते-पुण्यमन्तरेणेति पर्यायः. * जगति.

विहार करी प्रतिबोधी खंधग पंच सयां परिवार ।
कार्तिक सेठ जितशत्रु तुरंगम सुव्रत नाम कुमार ॥
त्रीस सहस वरस आउखुं पाली जगदाधार ।
श्री सम्मेत शिखरि परमेसर पहुँता मुगति मझारि ॥१३॥
इम पंच कल्याणक थुणियउ त्रिभुवन ताय ।
मुनि सुव्रत सामी वीसमउ जिणवर राय ॥
वीसमउ जिणवर राय जगत्र गुरु भय भंजण भगवंत ।
निराकार निरंजण निरुपम अजरामर अरिहंत ॥
श्री जिणचंद विनेय शिरोमणि सकलचंद गणि सीस ।
वाचक समयसुंदर इम बोलइ पूरउ मनह जगीस ॥१४॥

इति श्री मुनि सुव्रत स्वामी पञ्चोपवास स्तवनम् ॥

——:०:——

सोपानपंक्तिमरजांसि भवद्वचांसि,
स्वर्गाधिरोहणकृते यदि नो कथं तत् ।
तत्राश्रितास्त्रिजगदीश्वर ! यांति जीवा,
पद्मानि तत्र विबुधाः परिकल्पयंति ॥३२॥

भाति त्वया भुवि यथा न तथा विना त्वां,
श्रीसंघनायकगुणैस्सहितोपि संघः ।
शोभा हि यादृगमृतद्युतिना विना तं,
तादृक्कुतो ग्रहगणस्य विकाशिनोऽपि ॥३३॥

त्वत्स्कंधसंस्थचिकुरावलिकृष्णवल्लिं,
वक्त्रस्फुरद्विषनिजाक्षिविनिर्यदग्निम् ।
सर्प्पोपि न प्रभवति प्रबलप्रकोपो,
दृष्ट्वा भयं भवति नो भवदाश्रितानाम् ॥३४॥

संप्राप्तसंयमदरी वसनं प्रलंब-
पुण्यौषधं परमशर्म्मफलोपपेतम् ।
मर्त्त्यं महोदयपते ! भववैरिवृन्दो,
नाऽऽक्रामति क्रमयुगाचलसंश्रितं ते ॥३५॥

धर्म्मे धनानि विविधानि सनादहंतं,
मानुष्य मानसवने नियतं वसंतम् ।
प्रोद्यत्तरस्मरसमीपसखं वृषांक !
त्वन्नामकीर्त्तनजलं शमयत्यशेषम् ॥३६॥

हित्वा मणिं करगतामुपलं हि विज्ञं,
मन्यः क इच्छति जनः सहसा ग्रहीतुम् ॥ ३ ॥

ध्यानानुकूलपवनं गुण-पुण्य पात्रं,
त्वामद्भुतं भुवि विना जिन यानपात्रं।
मिथ्यात्वमत्स्य-भवनं भवरूपमेनं,
को वा तरीतुमलमंबुनिधिं भुजाभ्याम् ॥ ४ ॥

क्षुत्क्षाम-कुक्षि-तृपिताऽऽतप-शीत-वात,
दुःखीकृताद्भुत-ततोर्मरुदेविमाता।
अद्याप्युवाच भरतेति भवान् जिनस्य,
नाभ्येति किं निजशिशोः परिपालनार्थम् ॥ ५ ॥

टीका—मरुदेविमाता इति उवाच। इतीति किं? हे भरत! भवान् जिनस्य परिपालनार्थं अद्यापि किं न अभ्येति?

मुक्तिप्रदा भवति देव! तवैव भक्ति-
र्नान्यस्य देवनिकरस्य कदाचनापि।
युक्तं यतः सुरभिरेव न रौद्रमास-
स्तच्चारु-चूत-कलिकानिकरैकहेतुः ॥ ६ ॥

गांगेयगात्र* ! नृतमस्तृणसत्रदात्र,
त्वन्नाम मंत्रवशतो गुणरत्नपात्र!।
मिथ्यात्वमेति विलयं मम हृन्निलीनं,
सूर्यांशुभिन्नमिव शार्वरमन्धकारम् ॥ ७ ॥

*स्वर्ण.

वाङ्मुद्गरेण भवगुप्तिगृहात्तवासाः ।
कर्मावली-निगडितापि-भक्त-सत्वा,
सद्यः स्वयं विगतबंधभया भवंति ॥४२॥

रोषादिवेलिसहगामपहाय मामसौ संपदाभिरमते सह······पत्न्या ।
द्राक्चक्रवालमगमद्विपदेव तस्य,
य स्तावकस्तवमिमं मतिमानधीते ॥४३॥

तस्यां गणे सुरतरुसुरधेनुरंहो-
चिंतामणिंकरतलं निजमंदिरं च ।
यः श्रीयुगादिजिनदेवमलंस्तवीति,
तं मानतुंगमवशा समुपैति लक्ष्मीः ॥४४॥

श्रीमन्मुनीन्द्रजिनचन्द्रयतीन्द्रशिष्यं,
पूर्णेंदुशिष्यसमयादिमसुंदरेण ।
भक्तामरस्तवनतुर्यपदं समस्या,
काव्यैः स्तुतः प्रथमतीर्थपतिर्गृहीत्वा ॥४५॥

इति श्रीमदादीश्वरस्य गृहीतभक्तामरचतुर्थपादसमस्यास्तवः समाप्तः ।



पीयूषपानमसमानमहो विधाय,

क्षारं जलं जलनिधेरसितुं क इच्छेत् ॥११॥

शंभुस्वकीयललनाकलिताङ्गभोगो,

विष्णुर्गदासहितपाणिरितीव देव ! ।

प्रद्वेपरागरहितोऽसि जिन ! त्वमेव,

यत्ते समानमपरं न हि रूपमस्ति ॥१२॥

टीका—हे देव ! ईशः-शंभुः स्वकीयललनाकलितांगभगः, विष्णुर्गदासहितपाणिरितीव हेतो रागद्वेपरहितः त्वमेवासि। यत्-यस्मात्कारणात्ते समानं-तव तुल्यमपरं रूप नास्ति। अयं भावार्थः। देवत्वं त्रिष्वपि-हरं-हरि-जिनेपु वर्त्तते पर रागद्वेपरहितो जिन एव। कथं? हरस्तु स्त्रीसहितत्वाद्रागवान्। हरिस्तु गदाशस्त्रकलितपाणित्वात् द्वेपवान्।

तेजस्विनं जिन ! सदेह भवंतमेव,

मन्येऽस्तमेति सविता दिवसावसाने ।

दीपोऽपि वर्तिविरहे विधुमंडलं च,

यद्वासरे भवति पांडुपलासकल्पम् ॥१३॥

ये व्याप्नुवंति जगदीश्वर ! विश्व-विश्व,

मेऽध्यान् जनापि सृजतितरां ? त्रिलोक्याम्।

त्वां भास्करं जिन ! विना तमसः समूहान्,

कस्तान्निवारयति संचरतो यथेष्टम् ॥१४॥

टीका—हे जिन ! त्वां भास्करविना तान् तमसः समूहान्-अज्ञानप्रतान, पक्षे-अन्धकारप्रतान् को निवारयति ? कोपीत्यर्थः, इत्युक्तिः, शेषं सुगमम्।

पालय मांप स्तवालक परतिकं जगतांगज,
मानमहीरुहनाभिदेशजितकंजगतांगज !
ऊचे तरश्रमिह प्रमोदवरमालसदायक,
ईतिभीतिविततेः सहावरमालसदायक ।१०।
नमतामजहारवंदित, स्मरसुजनैर्विजहारवंदित ।
विनुवे विभवालयादरं, तं त्वां नष्टभवालयादरम् ।११।
प्रथमदेव सतानयनामृत, पदनता जनतानयनामृत ।
तव सुरेधृतपंकजगामया, समलकोलवृपांक जगाम या ।१२।
त्वां नुवे यस्य तं शं करे मे मते, देवपादांबुजेशं करे मे मते ।
मन्मनश्चंचरीकोपसंतापते, नाभिभूपांगभूः कोपसंतापते ।१३।
एवं श्रीजिनचंद्रसूरिसुगुरो पादा नत स्वगुरो,
श्रीनाभेयसमेन्दुकुन्दयशसा संछन्नगौरीगुरो ।
भंगं श्लेषविशेषकाव्यकलितं स्तोत्रं तवाश्चर्यकृत्,
संकुर्यात्समयादिसुन्दरकृतं कर्त्तुः सदा संपदम् ।१४

—:o:—

नानाविधकाव्यजातिमयं नेमिनाथ स्तवनम्

....वारं स सायं वरं ।
सज्जो नंदित वायरं पणामिमो हे देव ! सम्मं तुमं ॥ ७ ॥

अत्र काव्ये प्राकृतश्लोकोऽनुक्रमेण निस्सरति, सचायं—

नेमिनाहं सया वंदे, वरायमपयासयं ।
सायरंतरगंभीरं, भयवं स दिवायरं ॥ ८ ॥

नित्योदयस्त्रिजगतीस्थतमोपहारी,
भव्यात्मनां वदनकैरवबोधकारी।
मिथ्यात्वमेघपटलैर्न समावृतो यत्,
सूर्यातिशायिमहिमासि मुनींद्र लोके ॥१७॥

लावण्यपुण्यसुवरेण्य सुधानिधानं,
प्रह्लादकं जनविलोचनकैरवाणाम्।
वक्त्रं विभो! तव विभाति विभातिरेकं,
विद्योतयज्जगदपूर्व्वशशांकबिम्बम् ॥१८॥

ध्यातस्त्वमेव यदि देव! जनाभिलाप–
पूर्त्तीकरः किमपरैर्विविधैरुपायैः।
निःपद्यते यदि च भौमजलेन धान्यं,
कार्यं कियज्जलधरैर्जलभारनम्रैः ॥१९॥

माहात्म्यमस्ति यदनंतगुणाभिराम,
सर्व्वज्ञ ते हरिहरादिषु तद्भवो न।
चिंतामणौ हि भवतीह यथा प्रभावो,
नैवं तु काचशकले किरणाकुलेपि ॥२०॥

तद्देव! देहि मम दर्शनमात्मनस्त्व–
मत्यद्भुतं नृनयनामृत यत्र* दृष्टे।
स्वामिन्निहापि परमेश्वर †मेऽन्यदेवं,
कश्चिन्मनोहरति नाऽथ¶ भवांतरेपि ॥२१॥

*दर्शने. †मम. ¶अत्रभवे.

नेमिनाथ गीतम्

राग—आसावरी

जादवराय जीवे तुँ कोडि वरीस ।
गगन मंडल उडत प्रमुदित चित्त, पांख्या देत आसीस ।१। जा.।
हम उपरि करुणा तइं कीनी, जगजीवन जगदीस ।
तोरण थी रथ फेरि सिधारे, जोग ग्रह्यउ सुजगीस ।२। जा.।
समुद्र विजय राजाकउ अंगज, सुरनर नामइं सीस ।
समयसुंदर कहइ नेमि जिणंद कउ, नाम जपुँ निस दीस ।३। जा.।

इति नेमिनाथ गीतं (३३)
(नेमिनाथ गीत छत्तीसी में स्वयं लिखित ।)

यमकबद्ध-प्राकृतभाषायां पार्श्वनाथलघुस्तवनम्

परमपासपहू महिमालयं, जस विणिज्जिय सोमहिमालयं ।
सम······य रायमयं गयं, सिव पए य पयो अमयं गयं ।१।
चरणपाणिज्जिय (?) नीरयं, सयलदूपणवज्जियनीरयं ।
नमिर-नाग-पुरंदर-देवयं, भविअ-माणव-सुन्दर-देवयं ।२।
तणुविहा वि जिअं जणपव्वयं, कयकसायखयं जणपव्वयं ।
महिमवम्महमाणस हं सयं, जणमंजुलमाणसहंसयं ।३।
वरमरुज्जयणामहिआयमं, भुवणलच्छिललामहिआयमं ।
ललिअलच्छणलंछणलच्छिअं, कणयतामरसेच्छणलच्छिअं ।४।

पुंसां छलेन पतितं पुरतो हि रत्नं,
दृश्येत किं नियतमंतरतत्त्वदृष्ट्या।
मोहावृतेन मयि का त्वयि संस्थितेऽग्रे,
स्वप्नांतरेपि न कदाचिदपीक्षितोऽसि ॥२७॥

मन्मानसान्तरगतं भवदीय नाम,
पापं प्रणाशयति पारगत प्रभूतम्।
श्रीमद्युगादिजिनराज! हिमं समंता–
द्विम्बंरवेरिव पयोधरपार्श्ववर्त्ति ॥२८॥

जन्माभिषेकसमये गिरिराजशृङ्गे,
प्रस्थापितं तव वपुर्विधिना सुरेंद्रैः।
प्रद्योतते प्रवलकांतियुतं च बिंबं,
तुङ्गोदयाद्रिशिरसीव नवांबुवाहम्[1] ॥२९॥

केशच्छटां स्फुटतरां दधदंगदेशे,
श्रीतीर्थराज! विबुधावलिसंश्रितस्त्वम्।
मूर्धस्थकृष्णलतिका सहितं च शृङ्ग–
मुच्चैस्तटं सुरगिरेरिव शातकौम्भम् ॥३०॥

स श्रीयुगादिजिन! मेऽभिमतं प्रदेहि,
धर्मोपदेशसमये दिवि गच्छदूर्ध्वम्।
ज्योतिर्दतां जयति यस्य शिवस्य मार्गं,
प्रख्यापयत् त्रिजगतः परमेश्वरत्वम् ॥३१॥

---

[1] सहस्ररश्मेः.

श्रीवामेयगुणप्रगेयमहिमासेयाभिधेयाभिध-
त्वत्पादाम्बुजसुप्रसादवशतः राजत् त्रिलोकीपते ! ॥
अंधो पश्यति निर्धनो धनपती रंकोपि राजायते ।
मूको जल्पति संशृणोति वधिरः पंगुर्नरी नृत्यति ॥ ३ ॥
सिंहासनं समधिरोहयतः प्रभाते,
भामंडलं भगवतः प्रविलोक्य दूरात् ।
प्राच्यां स्थितेन पुरुषेण विनिश्चितं य-
दभ्युद्यतो दिनकरः खलु पश्चिमायाम् ॥ ४ ॥
त्वय्यशोभिरभितस्त्रिविष्टपे, शुभ्रितेऽप्रशरदिंदुसुन्दरे ।
पार्श्वदेव ! गुणरत्ननीरधे, कज्जलं रजतसन्निभं वभौ ॥ ५ ॥
लोकोत्तरां धर्मधुरां दधाने, देव ! त्वयि ज्ञानगुणप्रधाने ।
त्वद्वादिवक्त्रेषु तवोरुकीर्ति-सुधाव्ययादंजननीलिमानम् ॥ ६ ॥
मा दृष्ट दोषोस्त्वतिसुंदरत्वान्मात्रा कृतां कज्जलकृष्णरेखाम् ।
प्रभोः कपोले प्रविलोक्य कोप्यवक्, पिपीलिका चुंवति चंद्रबिंवम् ७
मनोभवे क्षोभयितुं भवन्तं, समुद्यते तीर्थपते ! नितान्तम् ।
...स्त्वया तत्र नियन्त्रितं यत्सुतापराधे जनकस्य दण्डः ॥ ८ ॥
अस्यौपरिश्यामफणामणीनां, प्रभा प्र.... ..... ।
पार्श्वप्रभो ! कोपि विदो वदत्कि, चन्द्रोपरि क्रीडति सैंहिकेयः ॥९॥
दशशतनयनौघैः स्वर्ण कुंभ.......
विमलसलिलपूर्णैः स्नापिते श्रीजिनेंद्रे ।
प्रवहदतुलपाथः प्रोच्छ.............
....................था दुरासीत्पयोधिः ॥१०॥

यत्रोद्गता शितिलताहि गिरेर्गुहायां,
किं तत्र तिष्ठति फणी गुणगेह तस्मात् ।
मिथ्यात्वमेतदगमन्नितरामुवष्ट,
त्वन्नाम नागदमनी हृदि यस्य पुंसः ॥३७॥

पीडां करोति न कदापि सतां जनानां,
सूर्योदयादमृतद्व सरसीरुहाणाम् ।
दुःखीकृत त्रिभुवनो विपदां च यस्त्र,
त्वत्कीर्तनात्तम इवांशुभिदामुपैति ॥३८॥

त्वद्वाणिमंजुलमरंदरसं पिबंत-
स्तापोष्मितां परमनिर्वृतिमादिदेव ! ।
पुण्याढ्यपंचजनचंचुरचंचरीका-
स्त्वत्पादपङ्कजवनाश्रयिणो लभंते ॥३९॥

कंदर्पदेयरिपुसैन्यमपि · अजित्य,
त्वन्मोहकारकृतमार्गसु धर्मितांगाः ।
देव ! प्रभो जय जयारवमंगिधीरा-
स्त्रासं विहाय भवतः स्मरणाद् व्रजंति ॥४०॥

त्वत्पादपद्मनखदीधितिकुंकुमेन,
चित्रीकृतः प्रणमतां स्वललाटपट्टः ।
येषां तयेव सुतरां शिवसौख्यभाजो,
मर्त्या भवंति मकरध्वजतुल्यरूपाः ॥४१॥

भग्ने च कर्मनिगडे जिन ! लोहकार-

पञ्चां विपञ्चां विदुषां दिशन्तं शान्तं निशान्तं नियतं गुणानाम्।
सेवामि सेवामि तमुत्त्रिलोकी-नाथं सनाथं समया मयाहम् ॥५॥
संकल्प संकल्पसमं नतेन्द्र ! कोटीरकोटीरमणीयपादम् ।
तारं जितारं जिनपं वरेण्य !, दन्तं भदन्तं भविका भजध्वम् ॥६॥
योगाय यो गाय······शस्ते, सोमानसोमाननदेव धन्यः ।
देवाधिदेवाधिमतंगसिंहा, सत्कीर्ति-सत्कीर्त्तितमोक्षमार्गः ॥७॥
इति नुतो जिनचन्द्र दिवाकरः, सकलचंद्रमुख प्रभुतावरः ।
यमकबन्धकवित्त्वकदम्बकैः, समयसुन्दरभक्तिविनिर्मितैः ॥८॥

इति श्रीपार्श्वनाथस्य लघुस्तवनं यमकमयम् ॥

यमकमयं महावीरबृहद्स्तवनम्

जयति वीरजिनो जगतांगज, सकलविघ्नवने विगतांगजः ।
क्षणनिरस्तसमस्त···मानवग्रहनिषेव्य पदो नत मानवः ॥१॥
विधुवरेण्ययशः प्रसरो वर-प्रविलसद्गुणहंससरोवर ।
दिशतु मेऽभिमतं सुमनोहर, स्मरतिरस्कृतरूपमनोहरः ॥२॥
जिनवरं विनुवामि कलापदं, हृतनमत्सुमनः सकलापदम् ।
त्रिजगतीयुवतीतिलकोपमं, कमलकान्तदृशं मलकोपमम् ॥३॥
पिबत निर्मलवाक्यसुधारसं, जिनपते जन···द्रसुधारसम् ।
त्रिभुवनस्य तिरस्कृततामसं, मुखशशिप्रसृतं वितताम सम् ॥४॥
कुशलकंदपयः कुशलाभवं, भज नतं हतवांस्त्रिशलाभवम् ।
शिवसरोजरविं शमतामलं, सुखकरं कृतिनां नमतामलम् ॥५॥

नानाविधश्लेषमयं श्रीआदिनाथस्तोत्रम्

विनौति यो नो सकलानिकेतनं, कुले जिनं हंसकलानिकेतनम् ।
सुखानि लेभे समहंस किन्नर, प्रणम्य पादं समहंसकिन्नरः । १ ।
निर्मुक्तराग प्रमदाभिराम, वने मतंगप्रमदाभिराम ।
नश्रीभवन्मंदरविग्रहाम, जय प्रभो ! मंदरविग्रहाम । २ ।
पुण्यांकुरे जीवन्मुक्तमोहं, गुणह–राजीवनमुक्तमोहम् ।
विनौम्यहं स्कंधरमंगदांतं, जिनं वचस्कं धर मंगदान्तम् । ३ ।
जय प्रभो ! कैतवचक्रहारी, यस्य स्मृतेस्त्वं तव चक्रहारी ।
मायामहीदारहलो भवामः, स्वर्गाधियामारह–लोभवाम । ४ ।
प्रथमजिनवरा संकल्पभावप्रमाणं,
प्रगटभुवनकीर्त्ते कल्पभावप्रमाण ।
प्रदलितरिपुवृन्दः सर्वदा तातमेशं,
प्रथय मदतिमिश्रे सर्वदाता तमेश । ५ ।
अपवर्गसरोवरराजहंस, कुमतानलसंवरराजहंस ।
भुवनोत्तमवंशमतागमेन, जय हेमतनो ! शमतागमेन । ६ ।
सुमनस्कृतसातपपातकान्त, भववारिधि भूत पपात कान्त ।
ददृशे तव येन सनावृषांक, वदनं नयनेन सना वृषांक । ७ ।
पत्कजे चंचरीकायते नायका, द्वेषविध्वंसनाकायते नायकः ।
उन्मुखस्त्वप्रगांगेयनालीकरुग्, भक्तिभाजां सतां गेयनालीकरुग् । ८ ।
नम्रीभवत्सुरपुरन्दरमौलिरंगत्पादांबुजो नलिनसुंदरमौलिरंग ।
अज्ञानपंकहरणं न रराज चक्रे, जीयात्सकेवलवने नरराजचक्रे । ९ ।

अल्पाबहुत्व-विचारगर्भित-श्रीमहावीर-वृहतस्तवनम्

जेण परूविअमेयं, दिसाणुवाएण अप्पबहुठाणं ।
जीवाण बायराण य, थुणामि तं वद्धमाणजिणं ॥ १ ॥
सामन्नेणं जीवा आऊ-वण - विगल - तिरिअ - पंचिंदी ।
पच्छिमथोवा - अहिआ, पुव्वादिसि दाहिणुत्तरओ ॥ २ ॥
मणुया सिद्धा तेऊ, सव्व - थोवा य दाहिणुत्तरओ ।
पुव्वि संखा पच्छिम, अहिआ कहिआ तुमे नाह ! ॥ ३ ॥
वाउ थोवा पुव्वि, तत्तो अहिआ य पच्छिमुत्तरओ ।
दाहिण नारय थोवा, पुव्वुत्तर पच्छिमासु समा ॥ ४ ॥
दाहिण असंख पुढवी, दाहिण थोवा कमेण अहिअ तओ ।
उत्तर पुव्वा वरदिसि, तुज्झ नमो जेण निद्दिट्ठा ॥ ५ ॥
भवणवइ-पुव्व-पच्छिम, थोवा तुल्ला य उत्तर असंखा ।
दाहिण तओ असंखा, वंतर - थोवा य पुव्वदिसिं ॥ ६ ॥
पच्छिम उत्तर दाहिण, अहिआ थोवा य जोइसा तुल्ला ।
पुव्वा वरदिसि दाहिण, उत्तर अहिआ कमा भणिआ ॥ ७ ॥
पढम - चउकप्प - देवा, सव्वत्थोवा य पुव्वपच्छिमओ ।
उत्तर-असंख दाहिण, अहिआ तुह मय विऊविंति ॥ ८ ॥
बंभाइ - कप्प - चउगे, पुव्वुत्तर पच्छिमासु थोवसमा ।
दाहिण संखा तत्तो, उवरिम देवा य सम सव्वे ॥ ९ ॥
थोवा पुग्गल उड्ढं, अहिअ अहे तह य संखतुल्ला य ।
उत्तरपुरत्थिमेणं, दाहिणं पच्चत्थिमेण तओ ॥१०॥

भक्त्या जे······हं जरागणमदानंदाद्यध्वंसकं।
लक्ष्मीदोप्रतनुं दयागुणभुवं तातां सतां दे वरम् ॥
कृष्णस्फीतरुचिं नरा नमत भो जीवामतीति क्षिपं।
त्यागश्रेष्ठपसोरसं कृतनतिं नेमिं मुदा त्रायक ॥ ९ ॥

अत्र कवित्वे संस्कृतश्लोकोऽनुक्रमेण निरसरति सचार्थ—

भजेहं जगदानंद सकलप्रभुतावरम् ।
कृतराजीमतीत्यागं श्रेयः संततिदायकम् ॥१०॥

पद्कजनत सदमरशरण वरकमलवदन वरकरचरण ।
शमदमधर नरदरहरण जय जलजधरणमरकरकरण ॥११॥

एक स्वर मय काव्यम्—

श्रीसर्वज्ञं प्रोद्यतप्रज्ञं, मोचांत्रासं दत्तोल्लासम् ।
भव्याधारं रम्भाकारं, वंदे नित्यं नष्टासत्यं ॥१२॥

सर्वगुरुवर्णमयं काव्यम्—

प्रोत्सर्पद्गुणपुष्पपुञ्जकलितः कृष्णच्छविः सर्वदा ।
मर्त्यानां शिवसौख्यवंछितफलं सद्बाहुशाखावरः ॥
दद्यादद्य दरिद्रताभरहरः सद्धर्मपत्राकरः ।
श्रीमद्रैवतमेरुमण्डनमसौ श्रीनेमिकल्पद्रुमः ॥१३॥
विविधवरकाव्यभेदः, स्तुत एवं सकलचंद्रचिरमुखः ।
प्रणतेन्द्रसमयसुन्दर गुणविततिर्नेमितीर्थेशः ॥१४॥

इति श्रीनेमिनाथस्तवनं नानाविधकाव्यजातिमयं समाप्तं ।

—०※०—

श्री संघ जाच करत विधि सेती । मन सुधि भावना भावइ ।
आरथिया······························
·········· ····सुख संपति पूरति । खरतर सोह वडावइ ।
जागति जोति कुसलसूरि जागइ······························

·· ···लसूरि गीतं ॥३॥

५. दादा श्री जिनकुशलसूरि गीतं

राग—जयतसिरी-धन्यासिरी

देराउर उंचउ गढ······························
··········ट घट अलि विघन विडारण । मांग्या मेह वरीस ।
पुत्र कलत्र आसा सुख······························
नाम जपुं निसदीस ।······························
·························समयसुन्दर मांगति पद सेवा ।
साहिब करउ बगसी (स) ।······························

मुलताण मंडन जिनदत्तसूरि जिनकुशलसूरि गीत

राग—भूपाल

जिणदत्त जि० २ सूरि कुस······························
················राजी । जग बोलई जसवाद ॥१॥ जि०॥
हितकरि हि० एक गुरु दुखह······························
··············परिजी । मनोरथ चाढइं प्रमाण ॥२॥ जि०॥

तिअरणाभिणवामरपाययं, . परमसुक्खकरामरपाययं ।
लहुअरं परवाइसयासयं, सुपणतीसरवाइसया सयं ।५।
परमपुण्णलयावणनीरयं, दुहदवाणलजीवणनीरयं ।
सुकइकेरवरंगनिसायरं, गुणमणीभवणंगणिसायरं ।६।
दुरिअयं दवणेगयमच्छरं, पवरसुक्खकरं गयमच्छरं ।
णयणनिज्जिअ-पंकयसंपयं, सरयसोममुहं कयसंपयं ।७।
कलिकसायकलंकमलावहं, निरुवमाणकलाकमलावहं ।
अहिणुयामि तुमं समयालयं, जयइदीव समं समयालयं ।८।
इय थुओ पहुपासजिणेसरो, सुहगसुक्खनिवासजिणेसरो ।
सयलचंदजसप्पसरो वरो, समयसुन्दरकप्पसरोवरो ।६।

इति श्रीपार्श्वनाथस्यशुद्धप्राकृतभाषायां लघुस्तवनसम्पूर्णम् ।

—:०:—

समस्यामयं पार्श्वनाथबृहत्स्तवनम्

त्वद्भामंडलभास्करे स्फुटतरे भास्वत्प्रभाभासुरे ।
दृष्टे त्वेकपदे त्वदीयवदने पूर्णेन्दुबिम्बात्प्रति ॥
धर्माख्यानविधौ त्वयीति भगवन् व्यज्ञायि······ ।
सूर्याचन्द्रमसौ प्रभातसमये ह्येकत्र किं रेजतुः ? ॥ १ ॥
विष्णुब्रह्ममहेश्वरप्रभृतयः सर्वेपि शु················
·······: खलु पर्यवाः प्रतिदिनं प्रोच्चार्यमाणः परैः ॥
श्रीअर्हन् भगवन् जगत्त्रयपदेस्त्वव्धेर्जलानां यथा ।
अम्भोधिर्जलधिः पयोधिरुदधिर्वारांनिधिर्वारिधिः ॥ २ ॥

प्रबोधगीतम्

साझां थकां सहु भ्रम करउ, पछइ आपणउ काम ।
दुख आव्यां थायइ दोहिलउ, मन न रहइ ठाम ॥१॥सा०
जीवण जाणइ.........णु, सउ वरस नी आस ।
पणि वेसास नहीं घड़ी, आविउ नाव्यो के सास ॥२॥सा०
अमर तो को दीसइ नहीं, जग ऊलटय ....।
वइसि रह्यउ किउं बापड़ा, करि जउ काइ थाइ ॥३॥सा०
ए सामग्री दोहिली, वली नीरोग डील ।
भोजन प्राण.........उ, हिवइ काइं करइ ढील ॥४॥सा०
पहिलुं परिवारी रह्यु, लेजे संबल साथि ।
समयसुन्दर कहइ....., हुस्यइ सहु सुख हाथि ॥५॥सा०

साजा० इति गीतं ।

लिखितं पंडित जगजीवनेन साध्वी लखमी माला पठन कृते
शुभम् भवतु कल्याणमस्तु ।



❀ (पत्र १ आधा त्रुटित मिला, इसमें दादा गुरु के १० गीत हैं जिनमें पूर्व प्रकाशित ५ गीतों को छोड़ अन्य ५ गीत यहाँ दिये गये हैं ।)

शस्त्रो हस्तप्रशस्तो ऽभिनवकिशलयं शो··········
············भिरामौ मधुकरनिकरप्रस्फुरन्नीलपद्मौ ॥
कान्ता-दन्ताश्च कुन्दान् कथयत कवयः पार्श्वनाथस्य शंभो।
·····कौ केकंम्कौ (?) कान् प्रहसति हसतः फुल्लगल्लं हसंति ।११।
स जयत्वनिशं भुवनाधिपते स्त्र···सि स्व···तन्न त्रि···।
भुवि यास्मयदीय वचोनधि (?) सं वदते वदते वदते वदते ।१२।
इत्थं श्रीजिनचन्द्रसुन्दरजगत्स्वामिन् ! समस्यास्तवो ।
············पुरतः प्रधाय वदते विज्ञप्तियुक्त्क्तये ॥
मोहेनात्तचतुर्गतिस्थितिनिजग्रासाय रोपात्वशान् ।
मह्यं देह्यथ पार्श्वदेव ! पदवीं स्वच्छासनस्थेयसीम् ॥१३॥

इति श्रीपार्श्वनाथस्य समस्यास्तवनवृहत्समाप्तम् ।

यमकमयं पार्श्वनाथ-लघुस्तवनम्

विज्ञान-विज्ञा न नुनंति केत्वां, भासार-भासारमधर्मधंके ।
नीराग-नीरागम-कानने सहेला-महेला-भव-हेलयंतम् ॥१॥
सद्यः प्रसद्य प्रकटोपदेश-नावासनावासवसेवितांहे ।
मेधार मे धारय दुःखतोये, साद-प्रसाद-प्रणतं पतंतम् ॥२॥
सत्याग-सत्यागम-केवलेन, विस्फार-विस्फारय मे सुखानि ।
वामामवामामव - पार्श्व नाथा - पद्मार - पद्मारतिराज - राज ॥३॥
चिन्ताम-चिंतामणि-नीश देवमायाति मायातिमिरे गभस्तिम्।
तस्या-मत स्यामहरं करे त्वं, दानं ददानं-दहिनं विनोति ॥४॥

८. चंद्र नी परि सौम्य प्रभा छइ जेहनी, ते चंद्रप्रभ। ए सामान्य।
गर्भि थकां माता नइ चंद्रमा नउ डोहलउ थयउ,
ते भणी चंद्रप्रभ। ए वि० ।८।
६. शोभन भलउ विधि आचार जेहनउ, ते सुविधि। ए सामान्य।
गर्भि थकां माता सर्व विधि नइ विषइ कुशल थई,
ते भणी सुविधि। ए वि० ।६।
१०. समस्त जीव नइ सन्ताप पाप उपशमावी शीतल करइ,
ते शीतल ।ए सामान्य।
गर्भि थकां माताना कर स्पर्श थी पिता नउ पूर्वोत्पन्न असाध्य
रोग उपशम्यउ, ते भणी शीतल। ए वि०।१०।
११. समस्त लोक नइ श्रेय हित करइ, ते श्रेयांस। ए सामान्य।
गर्भि थकां मातायइ किणइ अनाक्रमी शय्या आक्रमी
श्रेय कल्याण थयउ ते भणी श्रेयांस। ए वि०।११।
१२. वसु देव विशेष तेहनइ पूज्य, ते वसुपूज्य ।ए सामान्य।
गर्भि थकां वसु रत्ने करी इंद्रराज कुल पूरतउ हुयउ अथवा
वसुपूज्य राजा नउ बेटउ, ते वासुपूज्य। ए वि०।१२।
१३. विमल निर्मल ज्ञान छइ जेहनउ, ते विमल।
अथवा गयउ छइ मल जेहथी, ते विमल। ए सामान्य।
गर्भि थकां माताती मति अनइ देह विमल निर्मल थई,
ते विमल। ए वि०।१३।
१४. अनन्त कर्म ना अंश जीता अथवा अनन्त ज्ञानादि छइ
जेहनां, ते अनन्त। ए सामान्य।
गर्भि थकां माता रत्न खचित अनन्त कहतां महत्प्रमाण
दाम स्वप्नइं दीठुं, ते भणी अनन्त। ए वि०।१४।
१५. दुर्गति पडतां प्राणी नइ धरइ ते धर्म ।ए सामान्य।
गर्भि थकां माता दानादि धर्म नइ विषय तत्पर थई,
ते भणी धर्म। ए वि० ।१५।

सुजनकैरवसोमसमोदयस्तनुसमस्तसुखालस मोदय।
त्वमिह मां करुणाखिलभूघनः, कमलकुड्मलकोमलभूघनः।६।
जयति नाम जनो जिन तावकं, स्पृशति ते न विपज्जनतावकम्।
सुखकरण्डमणिं महिमाशुभं, हृदयकैरवपूर्णहिमां शुभम् ॥७॥
जिन जडोपि जनस्तव नामतः, कवि पदं लभते स्तवनामतः।
सुकृतिसज्जनसंचयसोदर, प्रबलपुण्यलतापयसोदर ॥८॥
तव वचौ जिन मे सरसंशय, द्यु तिजितांबुजविस्मरसंशय।
हरतु सर्वतमः पुन रत्तणं, भवपयोधिपतज्जनरत्तण ॥९॥
त्वमिह पुण्यगुणेन समुद्धर, ऽपतितं भववारिसमुद्धर।
रतिपतौ जिन मां सहसालसन्नलनवल्ललनैकहसालस ॥१०॥
कनककैरवकायकलाप का''''''रुपमानतलोककलापस्रक्।
सुजननेत्रसुधारविराजते, चरमतीर्थप ! कापि विराजते ॥११॥
समय मे जिनराज भवानल, पदकजं प्रणतस्य भवानलम्।
परिहरन् प्रतिपापपरंपर, व्रतकृताद्भुतपपापरंपरः ॥१२॥
तव विलोक्य रुचिं शुचि कांचनं, कृत तदा'''नो भवि कांचन।
प्रविशतीव शुचौ शमतालसद्भवपयोनिधिपोतमतालस ॥१३॥
इति मयका महितो जिनचंद्रश्चरमजिनश्चरमोदधिमंद्रः
स्तुति करणेन वितन्द्रः।
करुणाकैरविणीसमचंद्रः समयमनोहरकृतिकृतमद्रः
प्रदलितभवभयचंद्रः ॥१४॥

इति श्री महावीरस्य वृहत्स्तवनं यमकमयं सम्पूर्णम् ॥

ज्ञानस्य शिष्टतरदृष्टसमस्तलोका-

लोकस्य शीघ्रहतसंतमसस्य शश्वत् ।

दाता त्वमेव भुवि देव ! हि भानुमंतं,

प्राच्येव दिग्जनयति स्फुरदंशुजालम् ॥२२॥

सिंहासनस्थ भवदुक्त चतुर्विधात्मा,

धर्म्मावृते‡ त्रिजगदीश ! युगादिदेव ! ।

सद्दानशीलतपनिर्मलभावनाख्या,

नान्यः शिवः शिवपदस्य मुनीन्द्र पंथाः ॥२३॥

टीका—तपशब्दः शब्दप्रभेदेऽकारांतोप्यस्ति अतो नात्र दोषः ।

स्वामिन्ननंतगुणयुक्तकषायमुक्तः,

साक्षात्कृतं त्रिजगदेव भवत्सदृक्षाः ।

नान्ये विभंगमतयो रुचिरं च पंच-

ज्ञानस्वरूपममलं प्रविदंति संतः ॥२४॥

चिंतामणिर्मणिषु धेनुषु कामधेनु-

र्गंगानदीषु नलिनेषु च पुण्डरीकं ।

कल्पद्रुमस्तरुषु देव ! यथा तथात्र*,

व्यक्तं त्वमेव भगवन्पुरुषोत्तमोऽसि ॥२५॥

भास्वद्गुणाय करणाय मुदोरणाय,

विद्याचणाय कमलप्रतिमेक्षणाय ।

सल्लक्षणाय जनताकृतरक्षणाय ।

तुभ्यं नमो जिन ! भवोदधिशोषणाय ॥२६॥

‡ धर्मावृते-पुण्यमन्तरेणेति पर्याय. * जगति.

दाहिण - पुरत्थिमेणं, उत्तरपच्चत्थिमेण अहिअसमा ।
पुव्विं असंख अहिआ, पच्छिम तह दाहिणुत्तरओ ॥११॥
अप्पबहुत्तसरूवं, इय दिट्ठं केवलेण नाह ! तुमे ।
अह तह कुणसु पसायं, अहमवि पासेमि जह सक्खं ॥१२॥
इय चउदिसासु भमिओ, तुह आणा वज्जिओ य वीर ! अहं ।
गणिसमयसुंदरेहिं, थुणिओ संपइ सिवं देसु ॥१३॥

इति श्री अल्पबहुत्व विचारगर्भितं श्री महावीरदेववृहत्स्तन संपूर्ण ।१६।*

संवत् १६५४ वर्षे मार्गशीर्ष वदि १ दिने बुधवासरे श्रीपत्तने श्रीकंसारपाटके कृतं चोपड़ा पा० देवजी समभ्यर्थनया ।

मणिधारी जिनचंद्रसूरि गीत

....
....

...केसर अगर कपूर पूजा करी। चाढउ कुसुम की माला।१।डि०।
नगर विश्राम विमान.......................................
......................वि । खरतरगच्छ प्रतिपाल।१।डि०।
महतीयाण श्रावक प्रतिबोधक । नागत बाल गोपा(ला).......।
....।३।डि०।

इति श्री ढिल्ली मण्डन श्री जिनचन्द्रसूरि गीतं ॥१॥

जिनकुशलसूरि गीत

राग—सारङ्ग

दादउ..
.................................। रसाइ।१।दा०।स०।

* यह टीका सहित आत्मानन्द सभा भावनगर से बहुत वर्षों पूर्व छपा था, अब अप्राप्य है ।)

सोपानपंक्तिमरजांसि भवद्वचांसि,
स्वर्गाधिरोहणकृते यदि नो कथं तत् ।
तत्राश्रितास्त्रिजगदीश्वर ! यांति जीवा,
पद्मानि तत्र विबुधाः परिकल्पयंति ॥३२॥

भाति त्वया भुवि यथा न तथा विना त्वां,
श्रीसंघनायकगुणैस्सहितोपि संघः ।
शोभा हि यादृगमृतद्युतिना विना तं,
तादृक्कुतो ग्रहगणस्य विकाशिनोऽपि ॥३३॥

त्वत्स्कंधसंस्थचिकुरावलिकृष्णवर्णं,
वक्त्रस्फुरद्विषनिजाग्निविनिर्यदग्निम् ।
सर्प्पोपि न प्रभवति प्रबलप्रकोपो,
दृष्ट्वा भयं भवति नो भवदाश्रितानाम् ॥३४॥

संग्रामसंयमदरी वसनं प्रलंब–
पुण्यौपधं परमशर्म्मफलोपपेतम् ।
मर्त्यं महोदयपते ! भववैरिवृन्दो,
नाऽऽक्रामति क्रमयुगाचलसंश्रितं ते ॥३५॥

धर्म्मे धनानि विविधानि सनादहंतं,
मानुष्य मानसवने नियतं वसंतम् ।
प्रोद्यत्तरस्मरसमीपसखं वृषांक !
त्वन्नामकीर्त्तनजलं शमयत्यशेषम् ॥३६॥

परतखि २ थई कहइ·······························
···········गोजी। सबलउ देस्यइ सोभाग ॥३॥ जि०॥
केसर के० २ भरिय कचोल ···························
·········· ·······। अगर उखेवउ अति भाय ॥४॥ जि०॥
दिन २ दिन २ वेउ दादा दीपताजी·························
····························ऊगत भांण ॥५॥ जि०॥

इति श्री सुलताण मण्डन श्री जिनदत्तसूरि श्री जि ·······
········रण समये ॥७॥

अजयमेरु मंडन जिनदत्तसूरि गीतम्

राग—मारुणी

पूजिजी अ································
·······गुरु एह विचारवा। संघ उदय करिज्यो संभारवा ।१। पू०।
जागति जोति·································
······भय संकट भागइ । मोटा महिपति सेवा मांगइ ।२। पू०।
मेदनि तटसंघ································
·· ·····तणइ परमाणइ । वखतवंत गुरु एह वखाणइ ।३। पू०।
समरवउ सद·································
····ण दत्तसूरि दादा। समयसुंदर कहइ सुगुरु प्रसादा।४ पू०।

इति श्री मेड·······························
······करणे श्री अजयमेरु मंडन श्री जिनदत्तसूरि गीतं ॥६॥
सं० १६८८ वर्षे मार्गशीर्ष ५ दिन श्रीसमयसुन्दरोपाध्यायैः
लिखितम्················ ॐ

वाङ्मुद्गरेण भवगुप्तिगृहात्प्रवासाः ।
कर्मावली–निगडितापि–भक्त–सत्वा,
सद्यः स्वयं विगतबंधभया भवंति ॥४२॥

रोषादिवेलिसहगामपहाय माम–
सौ संपदाभिरमते सह······पत्न्या ।
द्राक्चक्रवालमगमद्विपदेव तस्य,
य स्तावकस्तवमिमं मतिमानधीते ॥४३॥

तस्यां गणे सुरतरुसुरधेनुरंह्री–
चिंतामणिकरतलं निजमंदिरं च ।
यः श्रीयुगादिजिनदेवमलंस्तवीति,
तं मानतुंगमवसा समुपैति लक्ष्मीः ॥४४॥

श्रीमन्मुनीन्द्रजिनचन्द्रयतीन्द्रशिष्यं,
पूर्णेंदुशिष्यसमयादिमसुंदरेण ।
भक्तामरस्तवनतुर्यपदं समस्या,
काव्यैः स्तुतः प्रथमतीर्थपतिगृहीत्वा ॥४५॥

इति श्रीमदादीश्वरस्य गृहीतभक्तामरचतुर्थपादसमस्यास्तवः समाप्तः ।



परिशिष्ट

कविवर के गद्य रचना का एक उदाहरण

२४ तीर्थंकरों के नामों का अर्थ व कारण

(चउवीस तीर्थंकर ना सामान्य अनइ विशेष अर्थ)

१. । ॐ । संयम धुरा वहिवा भणी ऋषभ-समानि,
ते ऋषभ । ए सामान्य अर्थ ।
उरू नइ विषय ऋषभ लांछन अथवा चउद सुपना
माहे पहिलउ मरुदेवायइ ऋषभ दीठउ,
ते भणी ऋषभ। ए विशेष ।१।

२. परीसहेन जीतउ, ते अजित । ए सामान्य ।
गर्भे थकां माता नइ पासा सारी रमतां राजायइ जीती नहीं
। ए वि० ।२।

३. चउत्रीस अतिसय अथवा सुख जेहनइ विषय संभवइ,
ते संभव । ए सामान्य ।
जिणइ गर्भि थकां पृथिवी मांहि धान्य निष्पत्ति अधिकी थई,
ते सम्भव । ए वि० ।३।

४. अभिनंदियइ देवेंद्रादिके ते अभिनन्दन । ए सामान्य ।
गर्भि आव्यां पछी वार २ इंद्रइ अभिनंदयउ ते अभि० । ए वि० ।४।

५. जेह नी भली मति ते सुमति । ए सामान्य ।
गर्भि थकां सउकि नइ झगडइ माता नइ भली मति ऊपनी,
झगडउ भागउ ते भणी सुमति । ए वि० ।५।

६. पद्म नी परि प्रभा ते भणी पद्मप्रभ । ए सामान्य ।
गर्भि थकां माता नइ पद्म नी शय्या नउ डोहलउ ऊपनउ,
ते भणी पद्मप्रभ । ए वि० ।६।

७. शोभन छइ पसवाड़ा जेहना, ते सुपार्श्व । ए सामान्य ।
गर्भि थकां माता ना पसवाडा भला थया, रोग गयउ,
ते भणी सुपार्श्व । ए वि० ।७।

पालय मांप स्तवालक परतिकं जगतांगज,
मानमहीरुहनाभिदेशजितकंजगतांगज !
ऊचे तत्त्वमिह प्रमोदवरमालसदायक,
ईतिभीतिवितते: सहावरमालसदायक ।१०।
नमतामजहारवंदित, स्मरसुजनैर्विजहारवंदित ।
विनुवे विभवालयादरं, तं त्वां नष्टभवालयादरम् ।११।
प्रथमदेव सतानयनामृत, पदनता जनतानयनामृत ।
तव सुरेध्र्तपंकजगामया, समलकोलवृपांक जगाम या ।१२।
त्वां नुवे यस्य तं शं करे मे मते, देवपादांबुजेशं करे मे मते ।
मन्मनश्चंचरीकोपसंतापते, नाभिभूपांगभूः कोपसंतापते ।१३।
एवं श्रीजिनचंद्रसूरिसुगुरो पादा नत स्वगुरो,
श्रीनाभेयसमेन्दुकुन्दयशसा संछन्नगौरीगुरो।
भंगं श्लेषविशेषकाव्यकलितं स्तोत्रं तवाश्चर्यकृत्,
संकुर्यात्समयादिसुन्दरकृतं कर्त्तुः सदा संपदम् ।१४

—:o:—

नानाविधकाव्यजातिमयं नेमिनाथ स्तवनम्

....वारं स सायं वरं ।
सज्जो नंदित वायरं पणमिमो हे देव ! सम्मं तुमं ॥ ७ ॥
अत्र काव्ये प्राकृतश्लोकोऽनुक्रमेण निस्सरति, सचात्र—
नेमिनाहं सया वंदे, वरायमपयासयं ।
सायरंतरगंभीरं, भयवं स दिवायरं ॥ ८ ॥

१६. शांति करइ, ते शांति । ए सामान्य।
गर्भि थकां अशिव उपशाम्यउ शांति थई, ते भणी शांति । ए वि० ।१६।
१७. कु कहतां पृथिवी विषइ रहउ, ते कुन्थु । ए सामान्य।
गर्भि थकां माता सर्व रत्नखचित कुन्थु कहतां थूभ देखती हुई, ते भणी कुन्थु । ए वि० ।१७।
१८. कुल नी वृद्धि भणी हुयइ ते अर । ए सामान्य।
गर्भि थकां माता सर्व रत्नमय अरउ दीठउ, ते भणी अर । ए वि० ।१८।
१६. परीषहादि मल्ल जीता ते भणी मल्लि । ए सामान्य।
गर्भि थकां माता नइ सर्व ऋतु कुसुम माल्य शय्या नउ डोहलउ देवता पूरयउ, ते भणी मल्लि । ए वि० ।१६।
२०. जगत् नी त्रिकालावस्था जाणइ ते मुनि, अनइ भला व्रत छइ जेहना ते सुव्रत, (बे) पद मिल्यां मुनि सुव्रत । ए सामान्य।
गर्भि थकां माता मुनिनी परि सुव्रत थई, ते भणी मु०। ए वि० ।२०।
२१. परीसहां नइ नमाड्या, ते भणि नमि । ए सामान्य।
गर्भि थकां गढ परि माता नइ देखी नइ वैरी नम्या, ते भणि नमि । ए वि० ।२१।
२२. अरिष्ट उपद्रव छेदिवा नइ नेमि कहतां चक्रधारा समानि, ते नेमि । ए सामान्य।
गर्भि थकां माता अरिष्ट रत्नमय नेमि दीठउ ते भणी, नेमि । ए वि० ।२२।
२३. सर्व भाव देखइ ते पार्श्व । ए सामान्य।
गर्भि थकां माता अन्धारइ सांप दीठउ, ते भणी पार्श्व । ए वि० ।२३।
२४. ज्ञानादि के वध्यउ ते वर्द्धमान । ए सामान्य।
गर्भि थकां ज्ञान, कुल, धन, धान्यादिक करी वध्यउ, ते भणी वर्द्धमान । ए वि० ।२४।
ए चउवीस तीर्थंकर ना सामान्य अनइ विशेष अर्थ आखिया।
(पत्र १ स्वयं लिखित समयसुन्दर)

नेमिनाथ गीतम्

राग—आसाउरी

जादवराय जीवे तुँ कोडि वरीस ।
गगन मंडल उडत प्रमुदित चित्त, पांख्या देत आसीस ।१। जा.।
हम उपरि करुणा तइं कीनी, जगजीवन जगदीस ।
तोरण थी रथ फेरि सिधारे, जोग ग्रह्यउ सुजगीस ।२। जा.।
समुद्र विजय राजा कउ अंगज, सुरनर नामइं सीस ।
समयसुंदर कहइ नेमि जिणिंद कउ, नाम जपुँ निस दीस ।३। जा.।

इति नेमिनाथ गीतं (३३)
(नेमिनाथ गीत छत्तीसी में स्वयं लिखित ।)

यमकबद्ध-प्राकृतभाषायां पार्श्वनाथलघुस्तवनम्

परमपासपहू महिमालयं, जस विणिज्जिय सोमहिमालयं ।
सम······य रायमयं गयं, सिव पए य पयो अमयं गयं ।१।
चरणपाणिज्जिय (?) नीरयं, सयलदूपणवज्जियनीरयं ।
नमिर-नाग-पुरंदर-देवयं, भविअ-माणव-सुन्दर-देवयं ।२।
तणुविहा वि जिअं जणपव्वयं, कयकसायखयं जणपव्वयं ।
महिमवम्महमाणस हं सयं, जणणमंजुलमाणसहंसयं ।३।
वरमरुज्जयणामहिआयमं, भुवणलच्छिललामहिआयमं ।
ललिअलच्छणलंछणलच्छिअं, कणयतामरसेच्छणलच्छिअं ।४।

तिअरणाभिणवामरपाययं,   परमसुक्खकरामरपाययं ।
लहुअरं परवाइसयासयं, सुपणतीसरवाइसया सयं ।५।
परमपुण्णलयाघणनीरयं, दुहदवाणलजीवणनीरयं ।
सुकइकेरवरंगनिसायरं, गुणमणीभवणंगणिसायरं ।६।
दुरिअयं दवणेगयमच्छरं, पवरसुक्खकरं गयमच्छरं।
णयणनिज्जिअ-पंकयसंपयं, सरयसोममुहं कयसंपयं ।७।
कलिकसायकलंकमलावहं, निरुवमाणकलाकमलावहं ।
अहिणुवामि तुमं समयालयं, जयइदीव समं समयालयं ।८।
इय थुओ पहुपासजिणेसरो, सुहगसुक्खनिवासजिणेसरो।
सयलचंदजसप्पसरो वरो, समयसुन्दरकप्पसरोवरो ।६।

इति श्रीपार्श्वनाथस्यशुद्धप्राकृतभाषायां लघुस्तवनसम्पूर्णम् ।

—:०:—

समस्यामयं पार्श्वनाथबृहत्स्तवनम्

त्वद्धामंडलभास्करे स्फुटतरे भास्वत्प्रभाभासुरे ।
दृष्टे त्वेकपदे त्वदीयवदने पूर्णेन्दुबिम्बाकृति ॥
धर्माख्यानविधौ त्वयीति भगवन् व्यज्ञायि······ ।
सूर्याचन्द्रमसौ प्रभातसमये ह्येकत्र किं रेजतुः ? ॥ १ ॥
विष्णुब्रह्ममहेश्वरप्रभृतयः सर्वेपि श्र················
······: खलु पर्यवाः प्रतिदिनं प्रोच्चार्यमाणः परैः ॥
श्रीअर्हन् भगवन् जगत्त्रयपदेस्त्वब्धेर्जलानां यथा ।
अम्भोधिर्जलधिः पयोधिरुदधिर्वारांनिधिर्वारिधिः ॥ २ ॥

श्रीवामेयगुणाग्रगेयमहिमासेयाभिधेयाभिध-
त्वत्पादाम्बुजसुप्रसादवशतः राजत् त्रिलोकीपते ! ॥
अंधो पश्यति निर्धनो धनपती रंकोपि राजायते ।
मूको जल्पति संशृणोति बधिरः पंगुर्नरी नृत्यति ॥ ३ ॥
सिंहासनं समधिरोहयतः प्रभाते,
भामंडलं भगवतः प्रविलोक्य दूरात् ।
प्राच्यां स्थितेन पुरुषेण विनिश्चितं य--
दभ्युद्यतो दिनकरः खलु पश्चिमायाम् ॥ ४ ॥
त्वय्यशोभिरभितस्त्रिविष्टपे, शुभ्रितेऽभ्रशरदिंदुसुन्दरे ।
पार्श्वदेव ! गुणरत्ननीरधे, कज्जलं रजतसन्निभं बभौ ॥ ५ ॥
लोकोत्तरां धर्मधुरां दधाने, देव ! त्वयि ज्ञानगुणप्रधाने ।
त्वद्वादिवक्त्रेषु तवोरुकीर्ति-सुधाव्यधादंजननीलिमानम् ॥ ६ ॥
मा दृष्ट दोषोस्त्वतिसुंदरत्वान्मात्रा कृतां कज्जलकृष्णरेखाम् ।
प्रभोः कपोले प्रविलोक्य कोप्यवक्, पिपीलिका चुंबति चंद्रबिंबम् ७
मनोभवे क्षोभयितुं भवन्तं, समुद्यते तीर्थपते ! नितान्तम् ।
...स्त्वया तत्र नियन्त्रितं यत्सुतापराधे जनकस्य दण्डः ॥ ८ ॥
अस्यौपरिश्यामफणामणीनां, प्रभा प्र.... ..... ।
पार्श्वप्रभो ! कोपि विदो वदत्किं, चन्द्रोपरि क्रीडति सैंहिकेयः ॥९॥
दशशतनयनौघैः स्वर्ण कुंभ.......
विमलसलिलपूर्णैः स्नापिते श्रीजिनेंद्रे ।
प्रवहदतुलपाथः प्रोच्छ..............
.....................था दुरासीत्पयोधिः ॥१०॥

शस्त्रो हस्तप्रशस्तो ऽभिनवकिशलयं शो··········
············भिरामौ मधुकरनिकरप्रस्फुरन्नीलपद्मौ ॥
कान्त्या-दन्ताश्च कुन्दान् कथयत कवयः पार्श्वनाथस्य शंभो।
·····कौ केकंम्कौ (?) कान् प्रहसति हसतः फुल्लगल्लं हसंति।११।
स जपत्वनिशं भुवनाधिपते स्त···सि स्व···तत्त्व त्रि···।
भुवि यास्मयदीय वचोनधि (?) सं वदते वदते वदते वदते ।१२।
इत्थं श्रीजिनचन्द्रसुन्दरजगत्स्वामिन् ! समस्यास्तवो ।
··· ··········पुरतः प्रधाय वदते विज्ञप्तियुङ्क्तये ॥
मोहेनात्तचतुर्गतिस्थितिनिजग्रासाय रोषावशान् ।
मह्यं देहय पार्श्वदेव ! पदवीं त्वच्छासनस्थेयसीम् ॥१३॥

इति श्रीपार्श्वनाथस्य समस्यास्तवनवृहत्समाप्तम् ।

यमकमयं पार्श्वनाथ-लघुस्तवनम्

विज्ञान-विज्ञा न नुवंति केत्वां, मासार-मासारमधर्मपंके ।
नीराग-नीरागम-कानने सहेला-महेला-मद-हेलयंतम् ॥१॥
सद्यः प्रसह्य प्रकटोपदेश-नावासनावासवसेवितांह्रे ।
मेधार मे धारय दुःखतोये, साद-प्रसाद-प्रथतं पवंतम् ॥२॥
सत्याग-सत्यागम-केवलेन, विस्फार-विस्फारय मे सुखानि ।
वामामवामामत्र - पार्श्वनाथा - पद्मार - पद्मारतिराज - राज ॥३॥
चिन्ताम-चिंतामणि-रीश देवमायाति मायातिमिरे गमस्तिम् ।
तस्या-मत स्यामहरं करे त्वं, दानं ददानं-दहिनं विनोति ॥४॥

पद्मां विपद्मां विदुषां दिशन्तं शान्तं निशान्तं नियतं गुणानाम्।
सेवामि सेवामि तमुत्त्रिलोकी-नाथं सनाथं समया मयाहम् ॥५॥
संकल्प संकल्पसमं नतेन्द्र ! कोटीरकोटीरमणीयपादम् ।
तारं जितारं जिनपं वरेण्य !, दन्तं भदन्तं भविका भजध्वम् ॥६॥
योगाय यो गाय······शस्ते, सोमानसोमाननदेव धन्यः।
देवाधिदेवाधिमतंगसिंहा, सत्कीर्ति-सत्कीर्त्तितमोक्षमार्गः ॥७॥
इति नुतो जिनचन्द्र दिवाकरः, सकलचंद्रमुख प्रभुतावरः ।
यमकबन्धकवित्त्वकदम्बकैः, समयसुन्दरभक्तिविनिर्मितैः ॥८॥

इति श्रीपार्श्वनाथस्य लघुस्तवनं यमकमयम् ॥

यमकमयं महावीरबृहद्स्तवनम्

जयति वीरजिनो जगतांगज, सकलविघ्नवने विगतांगजः ।
क्षणनिरस्तसमस्त···मानवग्रहनिषेव्य पदो नत मानवः ॥१॥
विधुवरेण्ययशः प्रसरो वर-प्रविलसद्गुणहंससरोवर ।
दिशतु मेऽभिमतं सुमनोहर, स्मरतिरस्कृतरूपमनोहरः ॥२॥
जिनवरं विनुवामि कलापदं, हतनमत्सुमनः सकलापदम् ।
त्रिजगतीयुवतीतिलकोपमं, कमलकान्तदृशं मलकोपमम् ॥३॥
पिबत निर्मलवाक्यसुधारसं, जिनपते जन···द्रसुधारसम्।
त्रिभुवनस्य तिरस्कृततामसं, मुखशशिप्रसृतं विततामसम् ॥४॥
कुशलकंदपयः कुशलाभवं, भज नतं हतवांस्त्रिशलाभवम् ।
शिवसरोजरविं शमतामलं, सुखकरं कृतिनां नमतामलम् ॥५॥

सुजनकैरवसोमसमोदयस्तनुसमस्तसुखालस मोदय।
त्वमिह मां करुणाखिलभूघनः, कमलकुड्मलकोमलभूघनः ।६।
जयति नाम जनो जिन तावकं, स्पृशति ते न विपज्जनतावकम्।
सुखकरण्डमणि महिमाशुभं, हृदयकैरवपूर्णहिमां शुभम् ॥७॥
जिन जडोपि जनस्तव नामतः, कवि पदं लभते स्तवनामतः।
सुकृतिसज्जनसंचयसोदर, प्रबलपुण्यलतापयसोदर ॥८॥
तव वचो जिन मे सरसंशय, द्युतिजितांबुजविस्मरसंशय।
हरतु सर्वतमः पुन रक्षणं, भवपयोधिपतज्जनरक्षण ॥६॥
त्वमिह पुण्यगुणेन मसुद्धर, ऽपतितं भववारिसमुद्धर।
रतिपतौ जिन मां सहसालसज्वलनवज्ज्वलनैकहसालस ॥१०॥
कनककैरवकायकलाप का······रुपमानतलोककलापरुक्।
सुजननेत्रसुधारविराजते, चरमतीर्थप! कापि विराजते ॥११॥
समय मे जिनराज भवानल, पदकजं प्रणतस्य भवानलम्।
परिहरन् प्रतिपापपरंपर, व्रतकृताद्भुतपपापरंपरः ॥१२॥
तव विलोक्य रुचिं भुवि कांचनं, कृत तदा···नो भवि कांचन।
प्रविशतीव शुचौ शमतालसद्भवपयोनिधिपोतमतालस ॥१३॥
इति मयका महितो जिनचंद्रश्चरमजिनश्चरमोदधिमंद्रः
स्तुति करणेन वितन्द्रः।
करुणाकैरविणीसमचंद्रः समयमनोहरकृतिकृतभद्रः
प्रदलितभवभयवंद्रः ॥१४॥

इति श्री महावीरस्य बृहत्स्तवनं यमकमयं सम्पूर्णम् ॥

अल्पाबहुत्व-विचारगर्भित-श्रीमहावीर-वृहतस्तवनम्

जेण परूविअमेयं, दिसाणुवाएण अप्पबहुठाणं ।
जीवाण बायराण य, थुणामि तं वद्धमाणजिणं ॥ १ ॥
सामन्नेणं जीवा आऊ-वण - विगल - तिरिअ - पंचिंदी ।
पच्छिमथोवा - अहिआ, पुव्वादिसि दाहिणुत्तरओ ॥ २ ॥
मणुया सिद्धा तेऊ, सव्व - थोवा य दाहिणुत्तरओ ।
पुव्वि संखा पच्छिम, अहिआ कहिआ तुमे नाह ! ॥ ३ ॥
वाउ थोवा पुव्वि, तत्तो अहिआ य पच्छिमुत्तरओ ।
दाहिण नारय थोवा, पुव्वुत्तर पच्छिमासु समा ॥ ४ ॥
दाहिण असंख पुढवी, दाहिण थोवा कमेण अहिअ तओ ।
उत्तर पुव्वा वरदिसि, तुज्झ नमो जेण निद्दिट्ठा ॥ ५ ॥
भवणवइ-पुव्व-पच्छिम, थोवा तुल्ला य उत्तर असंखा ।
दाहिण तओ असंखा, वंतर - थोवा य पुव्वदिसि ॥ ६ ॥
पच्छिम उत्तर दाहिण, अहिआ थोवा य जोइसा तुल्ला ।
पुव्वा वरदिसि दाहिण, उत्तर अहिआ कमा भणिआ ॥ ७ ॥
पढम - चउकप्प - देवा, सव्वत्थोवा य पुव्वपच्छिमओ ।
उत्तर-असंख दाहिण, अहिआ तुह मय विऊविंति ॥ ८ ॥
बंभाइ - कप्प - चउगे, पुव्वुत्तर पच्छिमासु थोवसमा ।
दाहिण संखा तत्तो, उवरिम देवा य सम सव्वे ॥ ९ ॥
थोवा पुग्गल उड्ढं, अहिअ अहे तह य संखतुल्ला य ।
उत्तरपरत्थिमेणं. दाहिणं पच्चत्थिमेण तओ ॥१०॥

दाहिण - पुरत्थिमेणं, उत्तरपच्चत्थिमेण अहिअसमा ।
पुव्विं असंख अहिआ, पच्छिम तह दाहिणुत्तरओ ॥११॥
अप्पबहुत्तसरूवं, इय दिट्ठं केवलेण नाह ! तुमे ।
अह तह कुणसु पसायं, अहमवि पासेमि जह सक्खं ॥१२॥
इय चउदिसासु भमिओ, तुह आणा वज्जिओ य वीर ! अहं ।
गणिसमयसुंदरेहिं, थुणिओ संपइ सिवं देसु ॥१३॥

इति श्री अल्पाबहुत्व विचारगर्भितं श्री महावीरदेववृहत्स्तवन संपूर्ण ।१६।❀

संवत् १६५४ वर्षे मार्गशीर्ष वदि १ दिने बुधवासरे श्रीपत्तने श्रीकंसारपाटके कृतं चोपड़ा पा० देवजी समभ्यर्थनया।

मणिधारी जिनचंद्रसूरि गीत

....

....

...केसर अगर कपूर पूजा करी। चाढउ कुसुम की माला।१।डि०।
नगर विश्राम विमान.................................
.....................धि। खरतरगच्छ प्रतिपाल।१।डि०।
महतीयाण श्रावक प्रतिबोधक। जागत वाल गोपा(ला)......।
....।२।डि०।

इति श्री दिल्ली मण्डन श्री जिनचन्द्रसूरि गीतं ॥१॥

जिनकुशलसूरि गीत

राग—सारङ्ग

दादउ...
.................................।रसाचइ।१।दा०।स०।

❀ यह टीका सहित आत्मानन्द सभा भावनगर से बहुत वर्षों पूर्व छपा था, अब अप्राप्य है।)

श्री संघ जाच करत विधि सेती । मन सुधि भावना भावइ ।
प्रारथिया··································
·········· · ····सुख संपति पूरति । खरतर सोह वडावइ ।
जागति जोति कुसलसूरि जागइ······················

······लसूरि गीतं ॥३॥

५. दादा श्री जिनकुशलसूरि गीतं

राग—जयतसिरी-धन्यासिरी

देराउर उंचउ गढ································
··········ट घट अलि विघन विडारण । मांग्या मेह वरीस ।
पुत्र कलत्र आसा सुख····························
नाम जपुं निसदीस ।·····························
··························समयसुन्दर मांगति पद सेवा ।
साहिब करउ बगसी (स) ।·························

मुलताण मंडन जिनदत्तसूरि जिनकुशलसूरि गीत

राग—भूपाल

जिणदत्त जि० २ सूरि कुस·························
·················राजी । जग बोलई जसवाद ॥१॥ जि०॥
हितकरि हि० एक गुरु दुखह·························
··············परिजी । मनोरथ चाढइं प्रमाण ॥२॥ जि०॥

परतखि २ थई कहइ ....

...............गोजी। सबलउ देस्यइ सोभाग ॥३॥ जि०॥

केसर के० २ भरिय कचोल ....

....। अगर उखेवउ अति भाय ॥४॥ जि०॥

दिन २ दिन २ चेउ दादा दीपताजी ....

..............................ऊगत भांण ॥५॥ जि०॥

इति श्री मुलताण मण्डन श्री जिनदत्तसूरि श्री जि ....
.........रण समये ॥७॥

अजयमेरु मंडन जिनदत्तसूरि गीतम्

राग—मारुणी

पूजिजी अ....... ....

.......गुरु एह विचारवा। संघ उदय करिज्यो संभारवा।१। पू०।

जागति जोति ....

.......भय संकट भागइ। मोटा महिपति सेवा मांगइ।२। पू०।

मेदनि तटसंघ ....

.. ..तणइ परमाणइ। वखतवंत गुरु एह वखाणइ।३। पू०।

समरवउ सद ....

.....ण दत्तसूरि दादा। समयसुंदर कहइ सुगुरु प्रसादा।४ पू०।

इति श्री मेड ....
.......फरणे श्री अजयमेरु मंडन श्री जिनदत्तसूरि गीतं ॥६॥
सं० १६८८ वर्षे मार्गशीर्ष ५ दिन श्रीसमयसुन्दरोपाध्यायैः लिखितम् .... ❀

प्रबोधगीतम्

साझां थकां सहु भ्रम करउ, पछइ आपणउ काम।
दुख आव्यां थायइ दोहिलउ, मन न रहइ ठाम ॥१॥सा०
जीवण जाणइ·········णु, सउ वरस नी आस।
पणि वेसास नहीं घड़ी, आविउ नाव्यो के सास ॥२॥सा०
अमर तो को दीसइ नहीं, जग ऊलटय ·········।
वइसि रहउ किउं बापड़ा, करि जउ काइ थाइ ॥३॥सा०
ए सामग्री दोहिली, वली नीरोग डील।
भोजन प्राण·········उ, हिवइ काइं करइ ढील ॥४॥सा०
पहिलुं परिवारी रह्युं, लेजे संबल साथि।
समयसुन्दर कहइ·····, हुस्यइ सहु सुख हाथि ॥५॥सा०

साजा० इति गीतं।

लिखितं पंडित जगजीवनेन साध्वी लखमी माला पठन कृते
शुभम् भवतु कल्याणमस्तु।



* (पत्र १ आधा त्रुटित मिला, इसमें दादा गुरु के १० गीत हैं जिनमें पूर्व प्रकाशित ५ गीतों को छोड़ अन्य ५ गीत यहाँ दिये गये हैं।)

परिशिष्ट

कविवर के गद्य रचना का एक उदाहरण

२४ तीर्थंकरों के नामों का अर्थ व कारण

(चउवीस तीर्थंकर ना सामान्य अनइ विशेष अर्थ)

१. । ॐ । संयम धुरा वहिया भणी ऋषभ-समानि, ते ऋषभ । ए सामान्य अर्थ ।

ऊरू नइ विषय ऋषभ लांछन अथवा चउद सुपना माहे पहिलउ मरुदेवायइ ऋषभ दीठउ, ते भणी ऋषभ । ए विशेष ।१।

२. परीसहेन जीतउ, ते अजित । ए सामान्य ।
गर्भ थकां माता नइ पासा सारी रमतां राजायइ जीती नहीं । ए वि० ।२।

३. चउत्रीस अतिसय अथवा सुख जेहनइ विषय संभवइ, ते संभव । ए सामान्य ।
जिणइ गर्भि थकां पृथिवी मांहि धान्य निष्पत्ति अधिकी थई, ते सम्भव । ए वि० ।३।

४. अभिनंदियइ देवेंद्रादिके ते अभिनन्दन । ए सामान्य ।
गर्भि आव्यां पछी वार २ इंद्रइ अभिनंदयउ ते अभि० । ए वि० ।४।

५. जेह नी भली मति ते सुमति । ए सामान्य ।
गर्भि थकां सउकि नइ झगडइ माता नइ भली मति ऊपनी, झगडउ भागउ ते भणी सुमति । ए वि० ।५।

६. पद्म नी परि प्रभा ते भणी पद्मप्रभ । ए सामान्य ।
गर्भि थकां माता नइ पद्म नी शय्या नउ डोहलउ ऊपनउ, ते भणी पद्मप्रभ । ए वि० ।६।

७. शोभन छइ पसवाड़ा जेहना, ते सुपार्श्व । ए सामान्य ।
गर्भि थकां माता ना पसवाडा भला थया, रोग गयउ, ते भणी सुपार्श्व । ए वि० ।७।

८. चंद्र नी परि सौम्य प्रभा छइ जेहनी, ते चंद्रप्रभ। ए सामान्य।
गर्भि थकां माता नइ चंद्रमा नउ डोहलउ थयउ,
ते भणी चंद्रप्रभ। ए वि० ।८।

९. शोभन भलउ विधि आचार जेहनउ, ते सुविधि। ए सामान्य।
गर्भि थकां माता सर्व विधि नइ विषइ कुशल थई,
ते भणी सुविधि। ए वि० ।९।

१०. समस्त जीव नइ सन्ताप पाप उपशमावी शीतल करइ,
ते शीतल। ए सामान्य।
गर्भि थकां माताना कर स्पर्श थी पिता नउ पूर्वोत्पन्न असाध्य
रोग उपशम्यउ, ते भणी शीतल। ए वि० ।१०।

११. समस्त लोक नइ श्रेय हित करइ, ते श्रेयांस। ए सामान्य।
गर्भि थकां मातायइ किणइ अनाक्रमी शय्या आक्रमी
श्रेय कल्याण थयउ ते भणी श्रेयांस। ए वि० ।११।

१२. वसु देव विशेष तेहनइ पूज्य, ते वसुपूज्य। ए सामान्य।
गर्भि थकां वसु रत्ने करी इंद्रराज कुल पूरतउ हुयउ अथवा
वसुपूज्य राजा नउ बेटउ, ते वासुपूज्य। ए वि० ।१२।

१३. विमल निर्मल ज्ञान छइ जेहनउ, ते विमल।
अथवा गयउ छइ मल जेहथी, ते विमल। ए सामान्य।
गर्भि थकां मातानी मति अनइ देह विमल निर्मल थई,
ते विमल। ए वि० ।१३।

१४. अनन्त कर्म ना अंश जीता अथवा अनन्त ज्ञानादि छइ
जेहनां, ते अनन्त। ए सामान्य।
गर्भि थकां माता रत्न खचित अनन्त कहतां महत्प्रमाण
दाम स्वप्नइं दीठुं, ते भणी अनन्त। ए वि० ।१४।

१५. दुर्गति पडतां प्राणी नइ धरइ ते धर्म। ए सामान्य।
गर्भि थकां माता दानादि धर्म नइ विषय तत्पर थई,
ते भणी धर्म। ए वि० ।१५।

१६. शांति करइ, ते शांति । ए सामान्य।
गर्भि थकां अशिव उपशाम्यउ शांति थई, ते भणी शांति । ए वि० ।१६।
१७. कु कहतां पृथिवी विषइ रहाउ, ते कुन्थु । ए सामान्य।
गर्भि थकां माता सर्व रत्नखचित कुन्थु कहतां थूम देखती हुई, ते भणी कुन्थु । ए वि० ।१७।
१८. कुल नी वृद्धि भणी हुयइ ते अर । ए सामान्य।
गर्भि थकां माता सर्व रत्नमय अरउ दीठउ, ते भणी अर । ए वि० ।१८।
१६. परीषहादि मल्ल जीता ते भणी मल्लि । ए सामान्य।
गर्भि थकां माता नइ सर्व ऋतु कुसुम माल्य शय्या नउ डोहलउ देवता पूरयउ, ते भणी मल्लि । ए वि० ।१६।
२०. जगत् नी त्रिकालावस्था जाणइ ते मुनि, अनइ भला व्रत छइ जेहना ते सुव्रत, (बे) पद मिल्यां मुनि सुव्रत । ए सामान्य।
गर्भि थकां माता मुनिनी परि सुव्रत थई, ते भणी सु० । ए वि० ।२०।
२१. परीसहां नइ नमाड्या, ते भणि नमि । ए सामान्य।
गर्भि थकां गढ परि माता नइ देखी नइ वैरी नम्या, ते भणि नमि । ए वि० ।२१।
२२. अरिष्ट उपद्रव छेदिवा नइ नेमि कहतां चक्रधारा समानि, ते नेमि । ए सामान्य।
गर्भि थकां माता अरिष्ट रत्नमय नेमि दीठउ ते भणी, नेमि । ए वि० ।२२।
२३. सर्व भाव देखइ ते पार्श्व । ए सामान्य।
गर्भि थकां माता अन्धारइ सांप दीठउ, ते भणी पार्श्व । ए वि० ।२३।
२४. ज्ञानादि के वध्यउ ते वर्द्धमान । ए सामान्य।
गर्भि थकां ज्ञान, कुल, धन, धान्यादिक, करी वध्यउ, ते भणी वर्द्धमान । ए वि० ।२४।
ए चउवीस तीर्थंकर ना सामान्य अनइ विशेष अर्थ आलिया।
(पत्र १ स्वयं लिखित समयसुन्दर)